प्लेग

लेखक

आल्बेयर कामू

अनुवादक

शिवदानसिंह चौहान

विजय चौहान
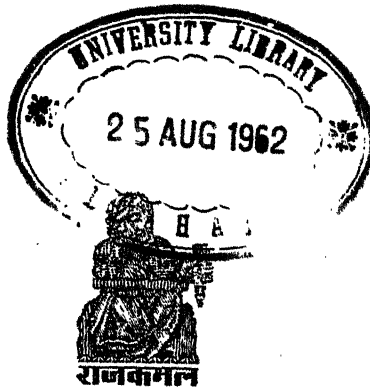
राजकमल प्रकाशन

पहला भाग

१

इस वृत्तान्त में जिन अनोखी घटनाओं का ज़िक्र किया गया है, वे सन् १६४··· में, ओरान में हुई थीं। इन घटनाओं की असाधारणता को देखते हुए सभी लोग इस बात से सहमत थे कि उनके लिए ओरान उपयुक्त स्थान नहीं था, क्योंकि ओरान एक मामूली शहर है, जिसकी ख़ूबी सिर्फ़ यह है कि वह अल्जीरियाई तट पर स्थित एक बड़ा फ्रान्सीसी बन्दरगाह है और वहाँ एक फ्रान्सीसी 'विभाग' के प्रीफेक्ट का हेडक्वार्टर है।

हमें यह क़बूल कर लेना चाहिए कि यह शहर अपने-आप में निहायत बदसूरत है। यहाँ का वातावरण इतना शान्त और आत्म-सीमित है कि आपको यह पता लगाने में कुछ समय लगेगा कि आखिर वह कौनसी बात है जिसके कारण यह शहर दुनिया के दूसरे व्यापारिक केन्द्रों से भिन्न है! मिसाल के लिए आप एक ऐसे शहर की कल्पना कैसे करेंगे, जिसमें कबूतर न हों, पेड़-पौधे और बाग़ न हों, जहाँ आपको न तो कभी पंखों की फड़-फड़ाहट सुनाई देती है न पत्तियों की सरसराहट, यानी जो पूरी तरह से एक नकारात्मक जगह हो! यहाँ पर मौसमों का फ़र्क़ सिर्फ़ आसमान में नज़र आता है। वसन्त के आगमन की सूचना आपको सिर्फ़ हवा के स्पर्श से मिलती है या पड़ौस की बस्तियों से फेरीवालों द्वारा लाई हुई फूलों की टोकरियों से। इस वसन्त की आवाज़ें बाज़ारों में ही लगाई जाती है। गरमियों के मौसम में सूरज मकानों को सुखा देता है, हमारी दीवारों पर सलेटी रंग की धूल का छिड़काव कर देता है और आपके सामने इसके सिवा और कोई चारा नहीं रह जाता कि आप बन्द दरवाज़ों के भीतर जलने वाली आग में दिन काटकर

किसी तरह जीते रहें। पतझड़ के दिनों में, इसके विपरीत, हमारा शहर दलदल से आप्लावित हो जाता है।

किसी शहर से परिचित होने के लिए शायद सबसे आसान तरीका यह है कि यह जानने की कोशिश की जाए कि उसमें रहने वाले लोग किस तरह काम करते हैं, किस तरह प्यार और मुहब्बत करते हैं और किस तरह मरते हैं। हमारे इस छोटे-से शहर में (आश्चर्य होता है कि क्या यह भी यहाँ की जलवायु का ही असर है?) ये तीनों बातें बहुत-कुछ एक ही ढंग से की जाती हैं, उसी उत्तेजनापूर्ण, किन्तु आकस्मिक अन्दाज़ से। सच तो यह है कि यहाँ हर आदमी ज़िन्दगी से ऊबा हुआ है और अच्छी आदतें डालने की कोशिश में लगा रहता है। हमारे नागरिक कठोर परिश्रम करते हैं, लेकिन इसमें उनका एकमात्र उद्देश्य धनवान बनना होता है। उनकी मुख्य दिलचस्पी व्यापार में है और जीवन में उनका मुख्य उद्देश्य, उनके ही शब्दों में 'कारोबार करना' है। इसलिए यह स्वाभाविक है कि वे लोग इश्क-मुहब्बत करने, समुद्र में नहाने या सिनेमा देखने-जैसे सीधे-सादे मनोरंजनों से अपने को वंचित नहीं रखते। लेकिन बड़ी बुद्धिमानी से उन्होंने इन मनोविनोदों के लिए शनिवार की शाम और रविवार के दिन रिज़र्व कर रखे हैं, और सप्ताह के बाक़ी दिन वे ज़्यादा-से-ज़्यादा पैसा कमाने में इस्तेमाल करते हैं। शाम के वक्त दफ़्तरों से निकलकर वे लोग एक नियत समय पर रोज़ शहर के जलपान-गृहों में जमा होते हैं, एक ही बुलेवर[1] पर चहलकदमी करते हैं, या अपनी-अपनी बालकनी में बैठकर हवा खाते हैं। नौजवानों में मुहब्बत का जोश तो बहुत ज़ोर से उमड़ता है, लेकिन वह क्षण स्थायी ही होता है। बुज़ुर्गों के गुनाह गेंद के खेलों, दावतों और महफ़िलों में शामिल होने या क्लबों में, जहाँ हर बाज़ी के ख़त्म होने पर बड़ी-बड़ी रक़मों की अदला-बदली होती रहती है, ताश खेलने तक ही सीमित हैं।

इसमें शक नहीं कि लोग कहेंगे कि ये आदतें सिर्फ़ हमारे नगर की ही विशेषता नहीं हैं; दरअसल हमारे सभी नगरों में समकालीन स्थिति बहुत-

१. चौड़ी सड़क, जिसके दोनों ओर वृक्षों की पंक्तियाँ होती हैं।

कुछ ऐसी ही है। निश्चय ही आजकल सबसे साधारण बात जो हमें देखने को मिलती है वह यह कि लोग सुबह से लेकर शाम तक काम करते हैं और फिर ज़िन्दा रहने के लिए उनके पास जो समय बच रहता है, उसको बरबाद करने के लिए ताश खेलने की मेज़ों, जलपान-गृहों या गपशप करने की जगहों की ओर चल पड़ते हैं। इसके बावजूद, कुछेक शहर और देश आज भी ऐसे हैं, जहाँ के लोगों को कभी-कभी इससे भिन्न ज़िन्दगी का आभास मिल जाता है। आम तौर पर इससे उनकी ज़िन्दगी का ढर्रा नहीं बदलता, लेकिन उनको कुछ नया एहसास तो हो ही जाता है, और उनके हक़ में इतना ही काफ़ी है। ख़ैर, ओरान एक ऐसा शहर है जिसको कभी कोई नया एहसास नहीं होता, दूसरे शब्दों में वह पूरी तरह आधुनिक है। इसलिए हमारे नगर में प्यार-मुहब्बत कैसे की जाती है, इसका वर्णन करने की ज़रूरत मुझे नहीं दिखाई देती। जिसे 'प्रेम-क्रीड़ा' कहा जाता है, उसमें हमारे यहाँ के लोग या तो एक-दूसरे का बहुत तेज़ी से भक्षण कर लेते हैं या फिर दाम्पत्य-सम्बन्ध की हलकी-फुलकी आदत डालकर ज़िन्दगी बसर करने लगते हैं। इन अतिवादों के बीच का जीवन हमें यहाँ अक्सर देखने को नहीं मिलता। और शहरों की तरह ओरान में भी, समय और चिन्तन की कमी के कारण लोगों को एक-दूसरे से मुहब्बत करनी पड़ती है, बिना यह जाने हुए कि मुहब्बत क्या चीज़ होती है।

हमारे शहर की अगर कोई विशेषता है तो वह यह कि यहाँ पर आदमी को मरने में कठिनाई का अनुभव करना पड़ता है। 'कठिनाई' शायद काफ़ी उपयुक्त शब्द नहीं है, 'परेशानी' सत्य के अधिक निकट है। बीमार होना कभी रुचिकर नहीं लगता, लेकिन कुछ शहर ऐसे हैं जो आपके बीमार पड़ जाने पर जैसे आपसे हमदर्दी करते हैं, जिनमें आप अपने प्रति लापरवाह हो सकते हैं। रोगी को मामूली देखभाल की ज़रूरत रहती है। वह चाहता है कि किसी पर भरोसा कर सके और यह बिलकुल स्वाभाविक बात है। लेकिन ओरान में तापमान के अतिवाद, व्यापार-धन्धे की तात्कालिक ज़रूरतें और मन को प्रेरणा और स्फूर्ति न देने वाला वातावरण, एकाएक आ जाने वाली रातें और उनके बँधे-बँधाए मनोरंजन इस

बात की माँग करते हैं कि आदमी का स्वास्थ्य बहुत अच्छा हो। रोगी यहाँ अपने को बेगाना महसूस करता है। ज़रा सोचिए तो कि एक मरणासन्न व्यक्ति को यहाँ कैसा लगेगा, जो गरमी से तपती हुई हज़ारों दीवारों के बीच आ फँसा हो, जब कि शहर के सारे बाशिन्दे जलपान-गृहों में बैठे हों या टेलीफ़ोन से कान लगाए सामान से लदे जहाज़ों के आने, सामान उतरवाई की उजरत और अपने कमीशनों की बहस में लगे हों। तब स्पष्ट हो जाएगा कि मृत्यु के साथ कितनी परेशानी जुड़ी हुई है—हर आधुनिक मृत्यु के साथ जब वह एक खुश्क जगह की इन परिस्थितियों में आपको पछाड़ के रख देती है।

इन कुछ उलटे-सीधे विचारों से शायद आप अनुमान लगा सकें कि हमारा शहर कैसा है। जो भी हो, हमें अतिरंजना से काम नहीं लेना चाहिए। दरअसल, आपको यह आभास करा देना ही हमारा उद्देश्य था कि इस शहर का बाहरी रूप और इसके अन्दर की ज़िन्दगी कितनी क्षुद्रता-पूर्ण है! लेकिन अगर आपकी आदत पड़ जाए तो आप यहाँ बिना किसी दिक्कत के दिन काट सकते हैं। और चूँकि हमारे शहर आदतों को ही प्रोत्साहन देते हैं, इसलिए समझ लीजिए कि सब-कुछ अच्छे के लिए है। इस दृष्टिकोण से देखें तो इसकी ज़िन्दगी विशेष रूप से आकर्षक नहीं है, इतना तो मानना ही पड़ेगा। लेकिन, कम-से-कम, हमारे यहाँ सामाजिक असन्तोष-जैसी चीज़ एकदम अज्ञात है। और हमारे स्पष्टवादी, स्नेहपूर्ण और परिश्रमी नागरिक बाहर से आये यात्रियों के हृदयों में हमेशा से उचित सम्मान का भाव जगाते आए हैं। वृक्षरहित, आकर्षणरहित, आत्मारहित ओरान का यह शहर अन्त में शान्तिपूर्ण दिखाई देने लगता है और कुछ दिन में ही आप यहाँ निश्चिन्त भाव से गाढ़ी नींद में सोने लगेंगे।

यहाँ पर इतना और कह देना उचित होगा कि ओरान एक अनोखी पृष्ठभूमि में स्थापित किया गया है—एक नंगे पठार के केन्द्र में, जिसके तीन ओर चमकती हुई पहाड़ियों का घेरा है और उत्तर की दिशा में खाड़ी है, जिसकी आकृति अपने-आप में पूर्ण है। हमें अगर किसी बात का अफ़सोस

हो सकता है तो सिर्फ़ इसका कि यह शहर कुछ इस तरह बसाया गया है कि इसने खाड़ी की ओर अपनी पीठ कर ली है, जिससे कि समुद्र को देख पाना असम्भव हो गया है। समुद्र देखने के लिए आपको उस तक चलकर जाना पड़ता है।

ओरान की साधारण ज़िन्दगी चूँकि ऐसी थी, इसलिए उस साल के वसंत में जो घटनाएँ हुईं, उनकी आशंका हमारे नागरिक क्यों नहीं कर पाए, यह बात आसानी से समझ में आ सकती है। ये घटनाएँ (जैसा कि हमने बाद में महसूस किया) उन गम्भीर और दुखदायी घटनाओं की पूर्व-सूचनाएँ थीं, जिनका विवरण हम यहाँ पेश करेंगे। कुछ लोगों को ये घटनाएँ बिलकुल स्वाभाविक लगेंगी; लेकिन दूसरों को एकदम अविश्वसनीय लगेंगी। लेकिन स्पष्ट है कि कहानी कहने वाला लोगों के दृष्टिकोणों की इन भिन्नताओं को महत्त्व नहीं दे सकता। उसका काम तो सिर्फ़ यह बताना है कि "जो हुआ वह यह था," क्योंकि वह जानता है कि वास्तव में हुआ भी तो यही था, कि इसने शहर के सारे निवासियों की ज़िन्दगी को निकट से प्रभावित किया था और यह कि यहाँ के हज़ारों व्यक्ति, जिन्होंने इन घटनाओं को अपनी आँखों से देखा था, इसके गवाह हैं और वे अपने दिलों में इस बात की दाद दे सकते हैं कि कहानी कहने वाला जो लिख रहा है वह सच ही है।

जो भी हो कहानी कहने वाला (जिसका नाम आपको यथावसर बता दिया जाएगा) इस कार्य के लिए उपयुक्त व्यक्ति न होता, अगर घटनाओं ने उसे तथ्य एकत्र करने की स्थिति में न डाल दिया होता, और अगर परिस्थितिवश वह उन सब घटनाओं में निकट से भाग लेने के लिए मजबूर न होता, जिनका वर्णन वह करना चाहता है। एक इतिहासकार की भूमिका अदा करने का उसके पास सिर्फ़ यही एक औचित्य है। ज़ाहिर है कि एक इतिहासकार के पास, चाहे वह यह काम शौकिया ही क्यों न करता हो, हमेशा कुछ 'तथ्य' होते हैं—व्यक्तिगत अनुभव से प्राप्त या दूसरों के बताए, जो उसका पथ-प्रदर्शन करते हैं। इस कहानी को कहने वाले के पास तीन प्रकार के तथ्य हैं—सबसे पहले, जो उसने खुद अपनी आँखों से देखा; दूसरे,

उन अनेक लोगों के बयान, जिन्होंने अपनी आँखों से देखा था (उसने जो पार्ट अदा किया था उसकी वजह से वह उन तमाम लोगों के व्यक्तिगत अनुभवों को जान सका था जिनका इस वृत्तान्त में ज़िक्र हुआ है); और अंत में उसे उन दस्तावेज़ों से मदद मिली, जो बाद में उसके हाथ लगे। उसका इरादा है कि वह जहाँ भी मुनासिब समझेगा उनका सहारा लेगा और अपने मन के मुताबिक उनका इस्तेमाल करेगा। उसका यह भी इरादा है कि···

लेकिन शायद अब समय आ गया है कि वृत्तान्त की भूमिका और चेतावनी की टिप्पणियों को छोड़कर सीधा वृत्तांत को शुरू किया जाए। शुरू के कुछ दिनों की घटनाओं को विस्तारपूर्वक बताने की ज़रूरत है।

२

१६ अप्रैल की सुबह जब डॉक्टर रियो अपने ऑपरेशन-रूम से निकले तो उन्हें अपने पैरों के नीचे किसी नरम चीज़ का स्पर्श महसूस हुआ। ज़ीने के बीचों-बीच एक मरा हुआ चूहा पड़ा था। डॉक्टर ने तत्काल पैर से ठोकर मारकर चूहे को एक तरफ हटा दिया और उसके बारे में और अधिक सोचे बगैर ज़ीने से नीचे उतरते गए। लेकिन सड़क पर जाने से पहले उन्हें खयाल आया कि आखिर उनके ज़ीने पर मरा हुआ चूहा क्यों पड़ा रहे, इसलिए उन्होंने मकान के चौकीदार को बुलाकर चूहा हटाने का आदेश दिया। इस खबर की बूढ़े माइकेल पर जो प्रतिक्रिया हुई, उसे देख-कर डॉक्टर को एहसास हुआ कि बात इतनी मामूली नहीं है। व्यक्तिगत रूप से तो उन्होंने यही सोचा था कि मरे हुए चूहे का होना एक अजीब बात ज़रूर है, लेकिन इससे ज्यादा कुछ नहीं। लेकिन चौकीदार सचमुच बेहद परेशान हो उठा था। एक बात के बारे में उसका दावा बिलकुल पक्का था, "इस घर में कोई चूहा नहीं था।" डॉक्टर उसे बेकार ही समझाते रहे कि एक चूहा तो है ही और वह अब शायद ज़ीने की सीढ़ी पर मरा पड़ा है। लेकिन माइकेल अपने विश्वास पर अडिग बना रहा। "इस घर में कोई

चूहा नहीं था," उसने अपनी बात दुहराई, इसलिए इस चूहे को कोई बाहर से लाया होगा। शायद कोई बच्चा शरारत करने की खातिर डाल गया होगा।

उस दिन शाम को, जब डॉक्टर रियो अपने फ्लैट के ज़ीने पर चढ़ने से पहले दरवाज़े के पास खड़े होकर जेब में चाबी टटोल रहे थे कि उन्होंने बरामदे के अँधेरे कोने की तरफ से एक मोटा चूहा अपनी ओर आते हुए देखा। चूहा डगमगाता हुआ चल रहा था और उसकी बालदार खाल भीगी हुई थी। उसने रुककर अपने को गिरने से बचाने की कोशिश की, डॉक्टर की ओर आगे बढ़ा, फिर रुका और एक चीख के साथ कलाबाज़ी-सी खाकर बग़ल की ओर उलट गया। चूहे का मुँह थोड़ा-सा खुला हुआ था और उसमें से खून की धार निकल रही थी। उसकी ओर एक क्षण तक ग़ौर से देखने के बाद डॉक्टर ज़ीने पर चढ़कर ऊपर चले गए।

वह चूहे के बारे में नहीं सोच रहे थे। खून की उस धार ने उनका ध्यान उस चीज़ की ओर खींचा जो सारे दिन उनके दिमाग़ पर छायी रही थी। उनकी पत्नी, जो एक साल से बीमार थीं, अगले दिन पहाड़ के एक सेनेटोरियम में भरती होने जाने वाली थीं। उन्होंने अपनी पत्नी को सोने के कमरे में लेटकर आराम करते हुए पाया। इतनी लम्बी और कठिन यात्रा से पहले, ऐसा करने की वे उसे ताकीद कर गए थे। पत्नी ने उनकी ओर देखकर मुस्करा दिया।

"जानते हो, मैं आज बेहतर महसूस कर रही हूँ!"

डॉक्टर ने उस चेहरे की ओर ग़ौर से देखा जो सिरहाने के लैम्प की रोशनी में उनकी ओर मुखातिब था। उसकी पत्नी की उम्र तीस बरस की थी, और इस लम्बी बीमारी ने उसके चेहरे पर अपनी छाप छोड़ दी थी। फिर भी, उसे देखकर, डॉक्टर रियो के मन में यह विचार उठा कि वह कितनी छोटी दिखाई देती है, बिलकुल एक लड़की-जैसी! लेकिन उसे ऐसा शायद उस मुस्कान के कारण लगा, जो बीमारी के सारे चिह्नों को मिटा देती थी।

"अब सोने की कोशिश करो," उसने सलाह दी। "नर्स ग्यारह बजे

आएगी और तुम्हें दोपहर की गाड़ी से सफ़र करना है।"

उसने पत्नी का पसीने से तर माथा चूमा। पत्नी की मुस्कराहट ने दरवाज़े तक डॉक्टर का साथ दिया।

अगले दिन १७ अप्रैल के आठ बजे जब डॉक्टर बाहर जा रहा था तो पोर्टर ने उसे रोककर बताया कि कुछ निकम्मे बदमाश छोकरे हॉल में तीन मरे हुए चूहे पटक गए हैं। साफ़ ज़ाहिर है कि उन चूहों को बड़े मज़बूत स्प्रिंग वाले शिकंजे में पकड़ा गया था, क्योंकि उनमें से खून की धार बह रही थी। पोर्टर बहुत देर तक चूहों को टाँगों से पकड़कर दरवाज़े में खड़ा, सड़क से गुज़रने वाले लोगों को ग़ौर से देखता रहा था। उसका ख़याल था कि शायद शरारती छोकरे खीसें निपोरेंगे या मज़ाक करेंगे, जिससे उनकी पोल खुल जाएगी। लेकिन उसकी यह सतर्कता बेकार गई।

"लेकिन मैं उनको पकड़कर ही दम लूंगा," माइकेल ने आशापूर्वक कहा।

इस घटना से हैरान रियो ने उस दिन पहले शहर के छोर की बस्तियों का मुआयना करने का फैसला किया, जहाँ उसके गरीब मरीज़ रहते थे। इन मोहल्लों में कूड़े-कचरे की सफ़ाई काफ़ी दिन चढ़े होती थी, और जब वह अपनी मोटर ड्राइव करते हुए सीधी, धूल-भरी सड़कों से गुज़रा तो उसने सड़क के दोनों ओर फुटपाथ के किनारे रखे कूड़े के कनस्तरों पर नज़र डाली। एक सड़क में ही डॉक्टर ने गिना कि सब्ज़ियों के छिलकों और दूसरे कचरे से भरे टिनों के ऊपर एक दरजन से भी ज्यादा मरे चूहे पड़े थे।

उसे अपना पहला मरीज़, जो दमा से पीड़ित था, सड़क की जानिब वाले उस कमरे के भीतर बिस्तर में पड़ा मिला, जो डाइनिंग-रूम और बेड-रूम दोनों का काम देता था। यह रोगी कठोर और खुरदरे चेहरे वाला एक बूढ़ा स्पेनवासी था। उसके सामने चद्दर पर सूखी मटर से भरे दो पतीले रखे हुए थे। जब डॉक्टर कमरे में दाखिल हुआ उस वक्त वह बूढ़ा बिस्तर में बैठा, अपनी गरदन को पीछे की ओर मोड़कर साँस लेने की कोशिश में हाँफते हुए हवा सुड़क रहा था। उसकी बीवी पानी का एक कटोर लेकर आई।

इंजेक्शन लगते वक्त वह बोला, "हाँ तो डॉक्टर, वे अब बड़ी तादाद में निकलकर बाहर आने लगे हैं, क्या आपने भी देखा है ?"

"इसका मतलब चूहों से है," उसकी बीवी ने बताया, "पड़ोसी को अपनी दहलीज़ पर तीन चूहे मिले।"

"अरे, वे अब निकलकर बाहर आ रहे हैं, आप कूड़े के टिनों में उनको दरजनों की तादाद में पड़े हुए देख सकते हैं। यह भूख है, बस भूख, जिसने उन्हें बाहर निकलने के लिए मजबूर कर दिया है।"

रियो को जल्द ही पता चल गया कि शहर के उस हिस्से में चूहे बातचीत का सबसे बड़ा विषय बन गए थे। मरीज़ों के घरों का राउण्ड करने के बाद डॉक्टर मोटर में बैठकर घर आ गया।

"सर, आपका एक तार आया है, जो ऊपर रखा है," माइकेल ने उसे खबर दी।

डॉक्टर ने उससे पूछा कि उसे और चूहे तो नहीं दिखाई पड़े।

"नहीं, और नहीं दिखाई दिए। मैं बड़ी मुस्तैदी से निगरानी कर रहा हूँ। मेरे यहाँ रहते उन छोकरों को शरारत करने की जुर्रत नहीं होगी।" पोर्टर ने जवाब दिया।

तार में रियो की माँ ने खबर दी थी कि वह कल आ रही है। वह उसकी पत्नी की ग़ैर-मौजूदगी में उसका घर सँभालेगी। अपने फ्लैट में पहुँचकर डॉक्टर ने देखा कि नर्स पहले से ही आ चुकी है। उसने अपनी पत्नी की ओर देखा। वह दरजी का सिला हुआ सूट पहने थी और उसने अपने चेहरे पर मेकअप भी किया था। डॉक्टर उसकी ओर देखकर मुस्कराया।

"बहुत खूब, तुम बड़ी अच्छी लग रही हो !" उसने कहा।

कुछ देर बाद ही वह अपनी पत्नी को ट्रेन की 'स्लीपिंग कार' में बिठा रहा था। पत्नी ने डिब्बे में चारों ओर नज़र दौड़ाकर देखा।

"यह सचमुच हमारे लिए बहुत महँगा है, है न ?"

"इसकी फ़िक्र मत करो," रियो ने उत्तर दिया, "यह तो करना ही था।"

"सुनो, यह चहों का क्या क़िस्सा है, जिसकी हर जगह चर्चा है ?"

"मैं इसकी वजह नहीं बता सकता। बड़ी अजीब-सी बात है। इसमें शक नहीं···लेकिन यह किस्सा जल्द ही ख़त्म हो जाएगा।"

फिर उसने बड़ी जल्दी में अपनी पत्नी से माफ़ी माँगी। उसने कहा कि उसे उसकी और अच्छी तरह देखभाल करनी चाहिए थी। वह इस बारे में बहुत लापरवाह रहा था। लेकिन जब उसकी पत्नी ने अपना सिर हिलाकर उसे ऐसा न कहने से रोकना चाहा तो वह बोला, "ख़ैर, अब तुम जब लौटकर आओगी तो सब-कुछ ठीक हो जाएगा। हम नये सिरे से ज़िन्दगी शुरू करेंगे, तुम और मैं, डियर!"

"बिलकुल ठीक!" पत्नी की आँखें चमक रही थीं। "आओ, हम लोग नये सिरे से ज़िन्दगी शुरू करें।"

फिर उसने अपना मुँह दूसरी ओर फेर लिया और ऐसा लगा जैसे डिब्बे की खिड़की बाहर प्लेटफार्म पर जल्दी और घबराहट में एक-दूसरे से टकराते हुए लोगों को देख रही हो। इंजन की आवाज़ उनके कानों तक पहुँची। उसने प्यार से अपनी पत्नी को पहला नाम लेकर पुकारा। जब उसने डॉक्टर की ओर मुँह फेरा तो उसने देखा कि उसकी पत्नी का चेहरा आँसुओं से तर था।

"नहीं, रोओ नहीं," वह बुदबुदाया। आँसुओं के पीछे मुस्कान लौट आई, किंचित् कसी हुई-सी। फिर उसने एक गहरी साँस ली।

"अच्छा अब तुम जाओ! सब-कुछ ठीक हो जाएगा।"

रियो ने उसे अपनी बाँहों में भर लिया, फिर वह उतरकर प्लेटफार्म पर आ गया। अब वह उसकी मुस्कान को खिड़की में से ही देख सकता था।

"प्लीज़ डियर, अपनी ख़ूब देख-भाल करना," वह बोला।

लेकिन वह उसकी बात न सुन सकी।

प्लेटफार्म से बाहर निकलते वक्त फाटक के पास पुलिस मजिस्ट्रेट मोशिए ओथों से उसकी मुलाक़ात हो गई, जो इस वक्त अपने छोटे बच्चे का हाथ पकड़े खड़ा था। डॉक्टर ने पूछा कि क्या वह भी वापस जा रहा है?

लम्बे, क़द्दावर और साँवले मोशिए ओथों के व्यक्तित्व में एक दुनियादार और किराये के मातमी की-सी झलक मिलती थी।

"नहीं," मजिस्ट्रेट ने उत्तर दिया, "मैं मदाम ओथों का लेने आया हूं, जो मेरे परिवार से भेंट करने के लिए गई थीं।"

इंजन ने सीटी दी।

"ये चूहे, अब…" मजिस्ट्रेट ने कहना शुरू किया।

रियो एकाएक ट्रेन की तरफ़ लपका, लेकिन फिर मुड़कर फाटक की ओर चल पड़ा।

"क्या चूहे ?" वह बोला, "यह मामूली-सी बात है।"

बाद में उसे इस क्षण के बारे में इतना ही याद रहा कि रेलवे का एक कर्मचारी मरे हुए चूहों से भरा एक सन्दूक बग़ल में दबाए वहाँ से गुज़र रहा था।

उस दिन तीसरे पहर ही जब मरीज़ों का आना शुरू हुआ तो एक नौजवान रियो से मिलने आया। डॉक्टर को पता चला कि वह नौजवान पेशे से एक पत्रकार था और सुबह भी एक बार वहाँ आ चुका था। उसका नाम रेमंद रेम्बर्त था। उसका क़द नाटा था और चौकोर कंधे थे। उसके चेहरे से दृढ़ता का आभास मिलता था और उसकी पैनी आँखों से अक़्लमन्दी ज़ाहिर होती थी। उसके समूचे व्यक्तित्व से ऐसा लगता था कि वह बुरी-से-बुरी परिस्थितियों में अपना संतुलन क़ायम रख सकता था। उसने खिलाड़ियों-जैसी पोशाक पहनने का उपक्रम कर रखा था। आते ही उसने काम की बात शुरू कर दी। उसके अख़बार ने, जो पैरिस के अग्रणी दैनिक अख़बारों में से था, उसे फ्रांस में रहने वाले अरब लोगों के रहन-सहन की परिस्थितियों, विशेषकर सफ़ाई, के विषय पर एक रिपोर्ट लिखने के लिए तैनात किया था।

रियो ने जवाब दिया कि जिन परिस्थितियों में अरब लोग रह रहे हैं वे अच्छी नहीं हैं, लेकिन रियो कुछ और कहने से पहले यह जानना चाहता था कि उस पत्रकार को सच्ची बात कहने की इजाज़त भी मिलेगी या नहीं।

"ज़रूर मिलेगी," रेम्बर्त ने जवाब दिया।

"मेरा मतलब है कि क्या तुम्हें मौजूदा परिस्थितियों की सरासर भर्त्सना करने की इजाजत मिल सकेगी ?" डॉक्टर ने समझाया।

"सरासर ! सच पूछिए तो इस हद तक मैं नहीं जा पाऊँगा। लेकिन क्या परिस्थितियाँ इतनी बुरी हैं ?"

"नहीं," रियो ने शान्तिपूर्वक कहा। परिस्थितियाँ इतनी बुरी नहीं थीं, लेकिन उसने सिर्फ़ यह जानने के लिए रेम्बर्त से सवाल पूछा था कि क्या रेम्बर्त सचाई से विश्वासघात किये बग़ैर तथ्यों को पेश कर सकेगा या नहीं।

"मुझे ऐसे बयानों में क़तई दिलचस्पी नहीं है, जिनमें किसी पहलू को छिपाकर रखा जाता है। इसलिए मैं तुम्हारी रिपोर्ट के लिए कोई सूचना नहीं दूँगा।" रियो ने कहा।

पत्रकार मुस्कराया। "आप तो बिलकुल न्याय-मूर्ति की भाषा बोल रहे हैं।"

रियो ने बिना उत्तेजित हुए बताया कि वह न्याय-मूर्ति है, यह तो वह नहीं जानता। यह एक ऐसे व्यक्ति की भाषा है जो दुनिया से तंग आ चुका है, हालाँकि उसे मानव-जाति से बहुत लगाव है। उसने फ़ैसला कर रखा है कि जहाँ तक उसका सवाल है वह बेइन्साफ़ी से कोई ताल्लुक नहीं रखेगा और सचाई में किसी तरह की मिलावट नहीं बरदाश्त करेगा।

रेम्बर्त ने कन्धे सिकोड़ लिए और कुछ क्षण तक ख़ामोशी से डॉक्टर की तरफ़ देखता रहा। फिर वह कुरसी से उठ खड़ा हुआ और बोला, "मैं आपकी बात समझ गया।"

डॉक्टर उसे दरवाज़े तक छोड़ने आया, "मुझे ख़ुशी है कि तुमने मेरी बात को अन्यथा नहीं समझा," डॉक्टर ने कहा।

"हाँ-हाँ, मैं समझ गया," रेम्बर्त ने दुहराया, लेकिन उसकी आवाज़ में बेसब्री की झलक थी। "मुझे अफ़सोस है कि मैंने आपको परेशान किया।"

हाथ मिलाते वक्त रियो ने सुझाया कि वह अगर अपने अख़बार के लिए कुछ 'अजीबोग़रीब' कहानियों की तलाश में हो तो उसे चाहिए कि वह मरे हुए चूहों की उस असाधारण संख्या के बारे में लिखे जो इन दिनों शहर में हर जगह मिल रहे थे।

"आह !" रेम्बर्त ने उत्साहपूर्वक कहा, "मैं इस बात में ज़रूर

दिलचस्पी ले सकता हूँ ।"

अपने मरीज़ों को देखने के लिए वह पाँच बजे शाम को जब दुबारा घर से निकला तो ज़ीने पर डॉक्टर को भारी-भरकम शरीर, झुर्रियों से भरे विशाल चेहरे और घनी भौंहों वाला एक नौजवान मिला। वह उसे पहले दो-एक बार सबसे ऊपर वाली मंज़िल में मिला था, जहाँ कुछ स्पेनिश नृत्यकार रहते थे। एक सिगरेट के कश खींचते हुए जीन तारो अपने सामने की सीढ़ी पर एक दम तोड़ते हुए चूहे की छटपटाहट का निरीक्षण कर रहा था। उसने सिर उठाकर ऊपर की ओर देखा और कुछ देर तक उसकी नज़र डॉक्टर के ऊपर टिकी रही। फिर उसने डॉक्टर का अभिवादन करके कहा कि यह कुछ अजीब-सी बात है कि ये सब चूहे मरने के लिए अपने बिलों से निकलकर बाहर आ रहे हैं।

"बड़ी अजीब बात है," रियो ने सहमति प्रकट की, "और इन्हें देखकर हरेक को कोफ़्त होती है।"

"एक मायने में ही डॉक्टर, एक मायने में ही। हमने पहले कभी ऐसी बात नहीं होते देखी, बस इसीलिए। खुद मुझे तो यह बात काफ़ी दिल-चस्प लगती है, सचमुच बहुत दिलचस्प।"

तारो ने अपने माथे पर से लट हटाने के लिए बालों में उँगलियाँ फेरीं और फिर एक बार चूहे की ओर देखा जिसकी हरकत बन्द हो रही थी। फिर वह रियो की ओर देखकर मुस्कराया।

"लेकिन डॉक्टर, दरअसल तो यह पोर्टर की ज़िम्मेवारी है न? क्यों?"

और संयोग से रियो को फ़ौरन पोर्टर नज़र आ गया। वह सड़क के दरवाज़े के पास दीवार से पीठ सटाकर बैठा था। वह थका दिखाई दे रहा था और उसका चेहरा, जो आमतौर पर लाल रहता था, इस वक्त पीला पड़ गया था।

"हाँ, मैं जानता हूँ।" बूढ़े ने कहा। रियो ने उसे एक और चूहे की मौत की खबर भी बता दी थी। "मुझे एक साथ दो-दो तीन-तीन मरे चूहे मिल जाते हैं। लेकिन हमारी सड़क के बाकी मकानों में भी यही कुछ

हो रहा है।"

पोर्टर उदास और परेशान दिखाई दे रहा था और खोया-खोया-सा अपनी गरदन खुजला रहा था। रियो ने पूछा कि उसकी तबीअत कैसी है। पोर्टर ने कहा कि वह बीमार तो नहीं है, फिर भी उसकी सेहत अच्छी नहीं है। उसके ख़याल में इसकी वजह परेशानी थी। इन कम्बख़्त चूहों ने उसे 'सदमा-सा पहुँचाया था। जब चूहे बिलों से निकलकर सारी इमारत में मरना बन्द कर देंगे तब जाकर कहीं उसे चैन आएगा।

अगले दिन, १८ अप्रैल की सुबह जब डॉक्टर स्टेशन से अपनी माँ को लेकर लौट रहा था तो उसने देखा कि माइकेल पहले से भी ज़्यादा परेशान है। तहखाने से लेकर बरसाती तक ज़ीने में एक दरजन के करीब मरे हुए चूहे पड़े थे। सड़क के सब मकानों के कूड़े के कनस्तर चूहों से भरे थे।

डॉक्टर की माँ को इस बात से ज़रा भी परेशानी नहीं हुई।

"कभी-कभी ऐसा ही होता है।" माँ ने संदिग्ध स्वर में कहा। उसका कद नाटा था, बाल चाँदी-जैसे सफेद थे और काली आँखों से कोमलता टपकती थी। उसने कहा, "मुझे फिर तुमसे मिलकर बेहद ख़ुशी हुई है बर्नार्द! खैर जो भी हो चहे इस खुशी को नहीं बदल सकते।"

डॉक्टर ने सर हिलाकर रज़ामन्दी ज़ाहिर की। दरअसल माँ की मौजूदगी में डॉक्टर की सारी परेशानियाँ दूर हो जाती थीं।

फिर भी उसने म्युनिस्पैलिटी के दफ़्तर में टेलीफ़ोन किया। वह चूहों को मारने वाले उस महकमे के इन्चार्ज से अच्छी तरह वाकिफ़ था। उसने पूछा, क्या म्युनिस्पलिटी को इस बात की खबर है कि चूहे बिलों से निकल-निकलकर मर रहे हैं? हाँ, मर्सियर ने जवाब दिया कि उसे मालूम है। म्युनिस्पैलिटी के दफ्तरों में, जो बन्दरगाह के नजदीक हैं, पचास मरे हुए चूहे पाये गए थे। दरअसल मर्सियर बहुत परेशान था। क्या डॉक्टर की राय में यह संजीदा बात थी? रियो ने कहा कि वह निश्चित रूप से तो कुछ नहीं कह सकता, लेकिन उसका ख़याल है कि सफाई के महकमे को ज़रूर कोई कदम उठाना चाहिए।

मर्सियर की भी यही राय थी। उसने कहा, "अगर तुम्हारा ख़याल

है कि कुछ करना चाहिए तो मैं एक ऑर्डर जारी करवा दूँगा।"

"ज़रूर कुछ करना चाहिए।" रियो ने जवाब दिया।

डॉक्टर के घर सफ़ाई करने वाली नौकरानी ने उसे अभी बताया था कि जिस फ़ैक्टरी में उसका पति काम करता है वहाँ सैकड़ों मरे हुए चूहे इकट्ठे किये गए हैं।

इस वक्त तक हमारे शहर के लोगों में घबराहट के लक्षण दिखाई देने लगे थे, क्योंकि १८ अप्रैल के बाद से फ़ैक्टरियों और गोदामों में ढेरों मरे हुए या मरणासन्न चूहे पाये गए थे। कई जगह तो चूहों को यन्त्रणा से बचाने के लिए उन्हें जान-बूझकर मार दिया गया था। शहर के बाहर की बस्तियों से लेकर शहर के केन्द्रीय हिस्से तक तमाम उन गलियों में, जहाँ डॉक्टर अपने मरीज़ों को देखने गया था, हर सड़क पर कूड़े के कनस्तर मरे हुए चूहों से भरे थे। नालियों में भी मरे हुए चूहों की क़तारें लगी थीं। उस दिन शाम को अखबारों ने यह समस्या उठाई और पूछा कि म्युनिस्पैलिटी के मेम्बर कोई क़दम उठाने जा रहे हैं या नहीं। जनता को इन घृणित चूहों से जो परेशानी हो रही है उस संकटकालीन स्थिति का सामना करने के लिए कौनसे क़दम सोचे जा रहे हैं? दरअसल म्युनिस्पैलिटी ने कुछ भी नहीं सोचा था। लेकिन अब स्थिति पर विचार करने के लिए एक मीटिंग बुलायी गई। सफ़ाई के महकमे को ऑर्डर भिजवाया गया कि हर रोज़ सुबह वे मरे हुए चूहों को जमा करा लिया करें और उन चूहों को म्युनिस्पैलिटी की दो गाड़ियों में भरकर शहर की भट्टी में जलाने के लिए भेज दिया जाए।

लेकिन कुछ दिनों में स्थिति और भी बिगड़ गई। सड़कों पर मरे हुए चूहों की तादाद बढ़ती गई और हर रोज़ सुबह भंगियों को पहले से भी ज्यादा गाड़ियाँ मरे हुए चूहों से भरनी पड़ती थीं। चौथे दिन चूहों ने फिर बिलों से निकलकर एक साथ मरना शुरू कर दिया। तहख़ानों, निचली मंज़िलों और नालियों में से वे लड़खड़ाती हुई पंक्तियों में निकलकर दिन की रोशनी में आते, बेबस छटपटाते और फिर पैरों की उँगलियाँ सिकोड़-कर सूत कातने-जैसी हरकत करके घबराये हुए दर्शकों के कदमों पर पछाड़

खाकर मर जाते। रात के वक्त गलियों और बरामदों में मरते समय की उनकी हलकी चीखें साफ़ सुनाई देती थीं। हर रोज़ सुबह मरे हुए चूहों की क़तारें पड़ी हुई मिलतीं। हर चूहे की थूथनी पर लाल फूल की तरह की ख़ून की एक गाँठ-सी जमी रहती। कुछ चूहों के फूले हुए शरीर सड़ने लग जाते थे। कुछ के शरीर अकड़े हुए होते और उनकी मूँछें सीधी खड़ी होतीं, यहाँ तक कि शहर के व्यस्त भागों में भी सीढ़ियों के आगे और पिछवाड़े के आँगनों में उनके छोटे-छोटे ढेर लगे रहते। कुछ चूहे अकेले में मरने के लिए दफ्तरों के कमरों, खेलने के मैदानों और जलपान-गृहों के बारजों के बीचों-बीच जा पहुँचते थे। हमारे नगरवासी यह देखकर हैरान रह जाते कि प्लेस द' आर्म्स, बूलेवार और स्ट्रैण्ड जैसी चहल-पहल वाली जगहों पर भी मरे चूहों की बीभत्स लाशें जगह-जगह छितरी पड़ी हुई हैं। सुबह सूरज निकलने के समय शहर में जो झाड़ू-सफ़ाई होती थी, उसके बाद कुछ देर तक तो शान्ति रहती, लेकिन फिर धीरे-धीरे चूहों का निकलना शुरू हो जाता और सारे दिन उनकी संख्या बढ़ती जाती। रात को अक्सर लोगों के पाँव के नीचे अभी ताज़े मरे हुए चूहों के गोल और गरम शरीर आ जाते। लगता था जैसे कि जिस ज़मीन पर हमारे मकान खड़े थे, उसके पेट में से बहुत दिन के जमा विषैले रस ख़ारिज हो रहे हों और उसकी आँतों में जो घाव और पीप के फोड़े बन गए थे वे बाहर निकल आए हों। अब आप अनुमान लगा सकते हैं कि इससे हमारे छोटे-से शहर में कैसा आतंक छा गया होगा, जहाँ की ज़िन्दगी अब तक इतनी शान्तिपूर्ण थी, लेकिन जिसे एकाएक इन घटनाओं ने इतने ज़ोर से झकझोर दिया था, जैसे एक तन्दुरुस्त आदमी को एकाएक तेज़ बुखार चढ़ जाए और उसे महसूस हो कि उसके ख़ून में आग लग गई है और दावानल की तरह उसकी लपटें उसकी रक्त-शिराओं में दौड़ रही हैं।

हालत यहाँ तक बिगड़ गई कि रैन्सडॉक सूचना-विभाग ने (जो हर विषय पर पूछे गए प्रश्नों का तुरन्त और सही-सही उत्तर देता था और जो प्रचार के रूप में रेडियो से मुफ्त इन्फॉर्मेशन सर्विस चलाता था) २५ अप्रैल को अपनी वार्ता इस घोषणा से शुरू की कि अकेले उस दिन ही ६२३१ मरे

चूहे जमा करके जलाये गए थे। हमारी आँखों के आगे कई दिन से जा हो रहा था, उसकी संपूर्ण और सही तस्वीर पेश करके इस संख्या ने जैसे हमारी जनता की हिम्मत को एक ज़बरदस्त धक्का दिया। अब तक लोग एक बीभत्स दृश्य से किंचित् परेशान ही थे और आपस में बड़बड़ाते रहते थे, लेकिन उन्होंने अब महसूस किया कि इस विचित्र घटना में, जिसका विस्तार नापना सम्भव नहीं था और जिसके मूल-स्रोत का पता नहीं लगाया जा सकता था, शायद भयानक और खतरनाक सम्भावनाएँ छिपी हुई हैं। सिर्फ़ वह बूढ़ा स्पैनिश ही, जिसके दमे का इलाज डॉक्टर रियो कर रहा था, अपने हाथ मल-मलकर इससे प्रसन्न था, "वे अब निकलकर बाहर आ रहे हैं! वे अब निकलकर बाहर आ रहे हैं!"

२८ अप्रैल को जब रैन्सडॉक ब्यूरो ने घोषणा की कि आज आठ हज़ार चूहे जमा किये गए हैं तो सारे शहर में डर और घबराहट की लहर-सी फैल गई। लोगों ने अधिक कारगर कदम उठाने की माँग की, अधिकारियों पर लापरवाही दिखाने का आरोप लगाया और जिन लोगों के घर समुद्र-तट पर थे, उन्होंने वहाँ चले जाने की धमकी दी, यद्यपि अभी साल शुरू ही हुआ था। लेकिन अगले दिन ब्यूरो ने सूचना दी कि यह घटना एकाएक ही बन्द हो गई है और सफाई-विभाग ने आज सिर्फ थोड़े-से ही मरे चूहे जमा किये हैं। इससे सब लोगों ने चैन की साँस ली।

लेकिन इसी दिन के दोपहर की बात है कि डॉक्टर रियो ने लौटकर जब अपने फ्लैट की इमारत के सामने कार खड़ी की तो चौकीदार माइकेल को गली के सिरे से अपनी ओर आते देखा। वह अपने को घीसटकर चल रहा था, उसका सिर झुका हुआ था और बाँहें और टाँगे अजब ढंग से फैली हुई थीं और वह इस तरह झटके दे-देकर चल रहा था जैसे यंत्र-चालित गुड़िया हो। बूढ़ा माइकेल एक पादरी की बाँह का सहारा लेकर चल रहा था, जिसे रियो पहचानता था। वह फ़ादर पैनेलो था, विद्वान और जोशीला जेसुइट पादरी, जिससे वह कई बार मिल चुका था और जिसके बारे में लोगों की बड़ी ऊँची धारणा थी—उन लोगों की भी जो धर्म के प्रति उदासीन थे। रियो कार में बैठा उनके पास आने की प्रतीक्षा करता रहा। उसने

देखा कि माइकेल की आँखें बुखार से चमक रही थीं और वह बड़ी मुश्किल से साँस ले रहा था। बूढ़े ने बताया कि कुछ 'बेचैनी-सी' महसूस करने पर वह खुली हवा में साँस लेने के लिए बाहर चला गया था। लेकिन वहाँ जाकर उसे अपने शरीर में हर जगह दर्द महसूस होने लगा—गरदन में, बगलों में और जाँघों के बीच में। इसलिए मजबूर होकर वह लौट आया और उसे फ़ादर से अपनी बाँह का सहारा देने के लिए कहना पड़ा।

"इन जगहों पर सिर्फ़ सूजन आ गई है, लेकिन उनमें दर्द बहुत तीखा है," उसने कहा। "ज़रूर मैंने अपने को थका लिया होगा।"

कार में से बाहर को झुककर डॉक्टर ने माइकेल की गरदन पर हाथ फेरा। एक सख्त लकड़ी की गाँठ-जैसी गिल्टी वहाँ उभर आई थी।

"फ़ौरन जाकर बिस्तर में लेट जाओ और अपना टैम्प्रेचर लो। मैं तीसरे पहर तुम्हें देखने आऊँगा।"

बूढ़े के जाने के बाद डॉक्टर रियो ने फ़ादर पैनेलो से पूछा कि चूहों की इस विचित्र घटना के बारे में उसका क्या खयाल है?

"ओह, मेरा ख़याल है कि उनमें कोई महामारी फैल गई है।" गोल और बड़े चश्मे के पीछे से पादरी की आँखें मुस्करा रही थीं।

रियो जिस वक्त अपनी पत्नी के भेजे हुए तार को दोबारा पढ़ रहा था, जिसमें उसने सैनेटोरियम में अपने पहुँचने की सूचना दी थी कि टेली-फ़ोन की घण्टी बज उठी। यह उसके एक पुराने मरीज़ का टेलीफ़ोन था, जो म्युनिस्पैलिटी के दफ़्तर में क्लर्क था। वह बहुत दिन से हृदय की रक्त-नली में सिकुड़न आ जाने के रोग से पीड़ित था और चूँकि वह ग़रीब था, इसलिए डॉक्टर रियो ने उससे फ़ीस नहीं ली थी।

"शुक्रिया डॉक्टर कि आप मुझको भूले नहीं हैं। लेकिन मैं इस वक्त किसी और के लिए आपको तकलीफ़ दे रहा हूँ। हमारे बग़ल के मकान में जो आदमी रहता है, वह एक दुर्घटना का शिकार हो गया है। मेहरबानी करके फ़ौरन आइए; सख़्त ज़रूरत है।" उसकी आवाज़ से लगता था जैसे उसकी साँस फूल रही हो।

रियो ने तेज़ी से सोचा। ठीक है, वह चौकीदार को बाद में देख लेगा।

कुछ मिनट के बाद ही उसने शहर के किनारे के मोहल्ले रू फ़ेदर्ब के एक छोटे-से मकान में प्रवेश किया। टूटे-फूटे और बदबूदार ज़ीने के बीच में ही म्युनिसिपल क्लर्क जोज़फ़ ग्रान्द से उसकी मुलाक़ात हो गई। वह क़रीब पचास की उम्र का आदमी था; लम्बा और झुकी कमर, दुर्बल कंधों, पतले अंगों और पीली-सी मूँछों वाला आदमी।

"अब उसकी हालत पहले से बेहतर है," उसने डॉक्टर को बताया, "लेकिन तब मुझे लगा था कि सचमुच उसका वक्त क़रीब आ गया है।" फिर उसने ज़ोर से अपनी नाक साफ़ की।

दूसरी मंज़िल में एक दरवाज़े पर बाईं ओर डॉक्टर ने लाल रंग की खड़िया मिट्टी से कुछ लिखा हुआ देखा—**अन्दर आ जाओ। मैंने अपने-आपको फाँसी दे ली है।**

दोनों कमरे में दाख़िल हुए। एक लैम्प के कुंडे से बँधी रस्सी नीचे लटक रही थी। पास में एक कुरसी पड़ी थी। खाने की मेज़ को सरकाकर कोने में कर दिया गया था। लेकिन रस्सी खाली लटक रही थी।

"मैं ऐन वक्त पर पहुँचा था।" लगता था जैसे ग्रान्द को बोलने से पहले शब्द तलाश करने पड़ते हों, हालाँकि वह अपनी बात हमेशा सीधे-सादे शब्दों में ही कहता था। "मैं घर से बाहर जा रहा था कि मुझे कुछ आवाज़ सुनाई दी। मैंने जब दरवाज़े पर लिखी वह इबारत पढ़ी तो मुझे लगा जैसे यह मज़ाक़ हो। तभी मुझे एक अजीब क़िस्म की कराह सुनाई दी। मेरा ख़ून एकदम ठण्डा पड़ गया।" उसने अपना सिर खुजलाया और फिर बोला, "मेरे ख़याल में ख़ुदकशी करने का यह बहुत तकलीफ़देह तरीक़ा है। सो मैं अन्दर घुस गया।"

ग्रान्द ने एक दरवाज़ा खोला और वे लोग एक साफ़-सुथरे, लेकिन मामूली तौर पर सजे हुए कमरे में दाखिल हुए। दीवार के सहारे एक पीतल के फ़्रेम का पलंग रखा था, जिस पर एक छोटे क़द का गोलमटोल आदमी लेटा ज़ोर-ज़ोर से साँस ले रहा था। उसने आगन्तुकों की ओर लाल आँखों से घूरकर देखा। एकाएक रियो जहाँ-का-तहाँ खड़ा रह गया। उस आदमी की साँसों के बीच उसे चूहों की हल्की-सी चीख़ें सुनाई दीं।

लेकिन उसे कमरे के कोनों में कोई चीज़ रेंगती हुई नहीं दिखाई दी। फिर वह पलंग के पास गया। साफ़ ज़ाहिर था कि वह आदमी ज्यादा ऊँचाई से या तेज़ी से नीचे नहीं गिरा था, क्योंकि उसके कंधे की हड्डियाँ टूटी नहीं थीं। दम घुटना तो ख़ैर स्वाभाविक ही था। एक्स-रे फोटोग्राफ़ की ज़रूरत पड़ेगी। तब तक के लिए डॉक्टर ने उसे कपूर का एक इन्जेक्शन दिया और उसे इत्मीनान दिलाया कि वह कुछ ही दिनों में बिलकुल ठीक हो जाएगा।

"शुक्रिया, डॉक्टर!" वह आदमी बड़बड़ाया।

रियो ने जब ग्रान्द से पूछा कि क्या उसने पुलिस को सूचना दे दी है, तो उसने अपना सिर झुका लिया।

"जी, सच तो यह है कि मैंने पुलिस को इत्तिला नहीं की। मैंने सोचा कि सबसे पहले मुझे चाहिए कि…"

लेकिन वह बीमार आदमी घबराकर बिस्तर में बैठ गया और बोला कि अब वह बिलकुल ठीक है। दरअसल इसमें परेशान होने की तो कोई बात ही नहीं है।

"डरो नहीं," रियो ने कहा, "यह सिर्फ़ एक ज़ाब्ते की कार्यवाही है। इससे अधिक नहीं। तो भी, मेरे सामने और कोई चारा नहीं। मुझे तो पुलिस को सूचना देनी ही पड़ेगी।"

"ओह!" वह आदमी फिर बिस्तर में लुढ़क गया और धीरे-धीरे सुबकने लगा।

ग्रान्द, जो दोनों की बातचीत के बीच अपनी मूँछें ऐंठता रहा था, पलंग के पास गया।

"बस, बस, मोशिए कोतार्द! ज़रा मामले को समझने की कोशिश करो। तुम्हारे दिमाग़ में ऐसा करने का फिर फितूर सवार हुआ तो लोग डॉक्टर को दोषी ठहराएँगे कि उन्होंने पुलिस को इत्तिला क्यों नहीं दी।"

कोतार्द ने आँसू-भरी आँखों से उसको आश्वासन दिलाया कि अब ऐसा करने की रत्ती-भर आशंका नहीं है। उसे पागलपन का दौरा-सा आया था, लेकिन वह दौरा अब ख़त्म हो गया है और अब उसकी इच्छा है कि उसे तंग न किया जाए। रियो दवाई का नुस्ख़ा लिख रहा था।

"बहुत अच्छा," वह बोला, "हम फ़िलहाल इस बारे में ख़ामोश रहेंगे। एक या दो दिन बाद मैं फिर आकर तुम्हें देख जाऊँगा। लेकिन याद रखना कि कहीं फिर ऐसी पागलपन की हरकत न कर बैठो।"

ज़ीने से उतरते वक्त उसने ग्रान्द को बताया कि वह पुलिस को इस मामले की सूचना देने के लिए मजबूर है, लेकिन वह पुलिस-इन्स्पेक्टर से कहेगा कि वह अभी दो-तीन दिन तक इसकी जाँच-पड़ताल न करे।

"लेकिन किसी को रात के वक्त कोतार्द पर नज़र रखनी चाहिए," वह बोला, "क्या उसका कोई रिश्तेदार यहाँ है ?"

"मेरी जान में कोई नहीं है। लेकिन मैं ख़ुद उसके पास रात को रह सकता हूँ। मैं यह तो नहीं कह सकता कि मैं उसको बख़ूबी जानता हूँ, लेकिन पड़ोसी की मदद तो करनी ही चाहिए, है न ?"

ज़ीने से उतरते वक्त रियो की नज़र बरबस अँधेरे कोनों में जा पड़ती थी। उसने ग्रान्द से पूछा कि क्या शहर के इस हिस्से से चूहे एकदम नदारद हो गए हैं ?

ग्रान्द को इसका कुछ भी अन्दाज़ नहीं था। यह सच है कि उसने चूहों के बारे में कुछ चर्चा सुनी थी, लेकिन वह ऐसी अफ़वाहों पर ध्यान देने का आदी नहीं था। "मुझे और बातों पर सोचने से ही छुट्टी नहीं मिलती," वह बोला।

रियो जाने की जल्दी में था, इसलिए उसने फ़ौरन हाथ मिलाया और चल पड़ा। उसे अपनी पत्नी को पत्र लिखना था और सबसे पहले वह चौकीदार को देखना चाहता था।

अख़बार बेचने वाले सबसे ताज़ी ख़बर चिल्ला-चिल्लाकर सुना रहे थे—चूहे एकदम ग़ायब हो गए हैं। लेकिन रियो ने अपने मरीज़ को पलंग की पट्टी पर झुका हुआ पाया। वह एक हाथ से अपने पेट को और दूसरे हाथ से गरदन को दबा रहा था, और चिलमची में गुलाबी रंग के पित्त की क़ै कर रहा था। कुछ देर तक क़ै करने के बाद माइकेल बिस्तर पर लेट गया। उसका दम घुट रहा था। उसे १०३ डिग्री बुख़ार था, गले, बग़ल और जाँघों की गिल्टियाँ सूज रही थीं और उसकी जाँघों में दो काले

धब्बे उभरने लगे थे। अब वह अन्दरूनी दर्दों की शिकायत करने लगा था।

"लगता है मेरे भीतर आग जल रही है," वह पिनपिनाया, "यह हराम-ज़ादी मुझे भीतर से जला रही है।"

बुखार से पपड़ियों पड़े होंठों के बीच से बोलने में उसको कठिनाई हो रही थी और वह सिर-दर्द और आँसुओं से बाहर को निकल आई। आँखों से डॉक्टर को टकटकी बाँधकर देखने लगा। उसकी बीवी ने चिन्तापूर्वक डॉक्टर रियो की ओर देखा, जो अभी तक चुप था।

"प्लीज़ डॉक्टर, इसे क्या हुआ है?"

"यह—कुछ भी हो सकता है। अभी निश्चित रूप से इस बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता। इसे हल्का खाना देना और खूब पानी पिलाना।"

मरीज़ न बुझने वाली प्यास की शिकायत करता रहा था।

अपने फ़्लट में लौटकर रियो ने अपने सहयोगी रिचर्ड को टेलीफ़ोन किया, जो शहर का प्रमुख डॉक्टर था।

"नहीं, मैंने अभी तक कोई असाधारण बात नहीं देखी है," रिचर्ड ने कहा।

"क्या कोई बुख़ार का केस नहीं देखा, साथ में गिल्टियाँ भी हों?"

"ज़रा ठहरो! हाँ, मेरे पास सूजी हुई गिल्टियों वाले दो केस हैं।"

"गिल्टियाँ क्या असाधारण रूप से सूजी हुई हैं?"

"ख़ैर, इसका फ़ैसला तो इस बात पर निर्भर करता है कि तुम 'साधारण' का क्या मतलब लगाते हो," रिचर्ड ने उत्तर दिया।

जो भी हो, उस रात को चौकीदार का बुख़ार १०४ डिग्री तक चढ़ गया और वह सरसाम में लगातार 'ये चूहे,' 'ये चूहे' की ही रट लगाए रहा। रियो ने गिल्टी का मुँह बंद करने की कोशिश की। माइकेल को जब तारपीन की चुभन महसूस हुई तो वह चिल्लाया, "हरामज़ादे!"

गिल्टियाँ और भी सूज गई थीं और लगता था जैसे गोश्त में ठोस गाँठें-सी गड़ी हुई हों। माइकेल की बीवी एकदम थकान से चूर हो गई थी।

"उसके साथ बैठो, और अगर ज़रूरत पड़े तो मुझे बुला लेना," डॉक्टर ने कहा।

अगले दिन ३० अप्रैल को आसमान नीला था और उस पर कोहरे की झीनी-सी चादर बिछी थी। गरम और कोमल बयार बह रही थी और शहर से बाहर की बस्तियों से फूलों की भीनी सुगन्ध ला रही थी। सड़कों पर प्रातःकालीन कलरव और दिनों की अपेक्षा अधिक उल्लासपूर्ण और ऊँचा सुनाई दे रहा था, क्योंकि आज का दिन हमारे शहर के हर निवासी के लिए ज़िन्दगी का एक नया पैग़ाम लेकर आया था। एक हफ्ते से डर और आतंक का जो बादल छाया हुआ था, वह छितरा गया था। रियो भी जब चौकीदार को देखने गया, तब ऐसे ही आशावादी मूड में था। पहली डाक से उसे अपनी पत्नी का जो पत्र मिला था, उसने भी उसके हृदय में प्रसन्नता भर दी थी।

बूढ़े माइकेल का टैम्प्रेचर उतरकर ९९ डिग्री पर आ गया था और यद्यपि वह बहुत कमज़ोर दिखाई दे रहा था, फिर भी वह मुस्करा रहा था।

"इसकी हालत पहले से बेहतर है, है न डॉक्टर?" उसकी पत्नी ने पूछा।

"हाँ, लेकिन अभी कुछ नहीं कहा जा सकता।"

दोपहर के समय बीमार माइकेल का टैम्प्रेचर एकाएक फिर १०४ डिग्री तक चढ़ गया। अब वह लगातार सरसाम की अवस्था में था और फिर उल्टियाँ करने लगा था। गरदन की गिल्टियाँ छूने से भी दर्द करने लगीं और लगता था जैसे वह दोनों हाथों से सिर पकड़कर उसे अपने शरीर से दूर रखने के लिए दमतोड़ कोशिश कर रहा हो। उसकी बीवी पाँयते मुलायम हाथों से उसके पाँव पकड़े बैठी थी। उसने याचनापूर्ण नेत्रों से रियो की ओर देखा।

"सुनो," रियो ने कहा, "हमें इसको अस्पताल ले जाना होगा। वहाँ हम इसे एक नयी दवा देकर देखेंगे। मैं एम्बुलेंस गाड़ी के लिए टेलीफ़ोन किये देता हूँ।"

दो घंटे बाद रियो और मदाम माइकेल एम्बुलेंस गाड़ी में बैठे चिन्तापूर्वक रोगी की ओर देख रहे थे। माइकेल के खुले गन्दगी से भरे हुए

मुँह से रह-रहकर कुछ शब्द निकल रहे थे। वह बार-बार दुहरा रहा था, "ये चूहे! ये हरामज़ादे चूहे!" उसका चेहरा बेजान और सलेटी हरे रंग का हो गया था। उसके रक्तहीन होंठ सफ़ेद पड़ गए थे और हठात् झटकों के साथ उसकी साँस चल रही थी। रक्त की शिराओं में गाँठें पड़ जाने से उसके हाथ-पैर फैले हुए थे। वह एम्बुलेंस की बर्थ में इस तरह घुसकर पड़ा था जैसे वह उसमें ही अपने-आपको दफ़न कर रहा हो या जैसे ज़मीन की गहराइयों में कोई आवाज़ उसे नीचे की ओर बुला रही हो। लगता था जैसे बेचारे का किसी अनदेखे दबाव से दम घुट रहा था। उसकी बीवी सुबक-सुबककर रो रही थी…

"डॉक्टर, क्या कोई उम्मीद बाक़ी नहीं रही?"

"वह मर चुका है।"

३

माइकेल की मौत के साथ, कह सकते हैं कि पहला, हैरतअंगेज़ अपशकुनों का दौर खत्म हुआ और दूसरा दौर शुरू हुआ, जो पहले के मुक़ाबले कहीं ज़्यादा मुश्किल था, क्योंकि उसमें शुरुआत के दिनों की परेशानी धीरे-धीरे भयानक डर के रूप में बदल गई। बाद की घटनाओं की रोशनी में पहले दौर का जायज़ा लेते समय हमारे नगरवासियों ने महसूस किया कि उन्होंने स्वप्न में भी कभी इस बात की कल्पना नहीं की थी कि दिन-दहाड़े सारे-के-सारे चूहों की मौत या अजब किस्म की बीमारियों से चौकीदार की मौत-जैसी बीभत्स घटनाओं के लिए हमारा शहर ही चुना जाएगा। इस बारे में उनका विचार ग़लत था और ज़ाहिर है कि उसको बदलने की ज़रूरत थी। फिर भी, अगर मामला यहीं पर ख़त्म हो जाता और आगे न बढ़ता तो आदतन सोचने का यह ढंग ही बना रहता। लेकिन हमारे समाज के और सदस्यों को भी, जो सिर्फ़ नौकर-चाकर वर्ग के या ग़रीब ही नहीं थे, उस रास्ते से ही जाना पड़ गया, जिस रास्ते से माइकेल मौत के मुँह में गया था। जब

ऐसा हुआ तब भय और भय के साथ गम्भीर चिन्ता का दौर शुरू हुआ।

खैर, अगले दौर की घटनाओं का विस्तारपूर्वक वर्णन करने से पहले कथाकार गुज़रे हुए दौर के बारे में एक और गवाह की राय पेश करना चाहता है। ज़ीन तारो, जिससे इस कथा के आरम्भ में ही हम परिचित हो चुके हैं, कुछ सप्ताह पहले ओरान आया था और शहर के बीच में स्थित एक बड़े होटल में ठहरा हुआ था। ज़ाहिर है कि उसके पास अपनी दौलत थी और वह किसी व्यापार में नहीं लगा था। हालाँकि वह धीरे-धीरे हमारे बीच एक परिचित व्यक्ति बन गया था, फिर भी किसी को यह नहीं मालूम था कि वह कहाँ से और क्यों ओरान आया है। वह अक्सर सार्व-जनिक स्थानों पर दिखाई दे जाता था और जब से बहार का मौसम आया था, वह अक्सर किसी-न-किसी समुद्र-तट पर मौजूद रहता था। निश्चय ही उसे तैरने का शौक़ था। खुश-मिज़ाज, हमेशा मुस्कराता हुआ चेहरा—लगता था जैसे वह ज़िन्दगी के सभी सामान्य आनन्दों का भोग करने का आदी था, लेकिन उनका गुलाम नहीं था। दरअसल लोग उसकी सिर्फ़ एक ही आदत के बारे में जानते थे। वह यह था कि वह उन स्पैनिश नाचने वालों की सोसाइटी से ताल्लुक पैदा करने में लगा रहता था जिनकी तादाद हमारे शहर में बेशुमार थी।

उसकी डायरियाँ शुरू के उन अजीबोग़रीब दिनों का एक तरह से आँखोंदेखा विवरण हैं, जिनके बीच से हम सब गुज़रे थे। लेकिन यह विवरण सामान्य किस्म का नहीं है, क्योंकि उसको पढ़ने से लगता है जैसे लेखक जान-बूझकर बड़ी बात को भी छोटा करके देखता है, जिससे हमें पहले तो यह अनुमान होता है कि तारो में घटनाओं और लोगों को जैसे दूरबीन के उलटे छोर से देखने की आदत थी। उन अराजकतापूर्ण दिनों में उसने उन घटनाओं का इतिहास अंकित करने का काम उठाया, जिन्हें साधारण इतिहासकार नज़र-अन्दाज़ कर जाता है। स्पष्ट है कि इसलिए उसके स्वभाव के इस विचित्र असंतुलन पर हमें अफ़सोस हो सकता है और हम शक कर सकते हैं कि शायद उसमें सही भावनाओं की कमी थी। फिर भी इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि यह व्याख्यात्मक-

सी डायरी उस दौर का विवरण प्रस्तुत करती है जिसमें ऐसे अनेक तुच्छ लगने वाले ब्यौरे दिये गए हैं जिनका आज भी महत्त्व है और जिसकी विचित्रता से ही पाठक को यह एहसास हो जाएगा कि उस विलक्षण आदमी के बारे में जल्दी से कोई राय क़ायम कर लेना उचित नहीं हैं।

जीन तारो ने अपनी डायरी तभी लिखनी शुरू की थी जब वह ओरान में आया था। शुरू से ही डायरी के पत्रों में ओरान-जैसे बदसूरत शहर पर संतोष प्रकट किया गया है जिसमें विरोधाभास की झलक मिलती है। इसमें टाउन हॉल के ऊपर बनी हुई शेरों की दो कांस्य-मूर्तियों का बारीक़ी से बयान किया गया है। वृक्षों की कमी पर, मकानों की बदसूरती और शहर के बेढंगे डिज़ाइन पर भी टीका-टिप्पणी की गई है। ट्रामों और सड़कों पर उसने जो बातचीत सुनी थी, बीच-बीच में उसके भी कुछ अंश हैं। उन पर लेखक ने अपनी तरफ़ से कोई टिप्पणी नहीं जोड़ी। यह प्रसंग डायरी के आखिरी हिस्से में आता है। कैम्प्स नामक एक व्यक्ति की बातचीत दी गई है। दो ट्राम कंडक्टर आपस में बातें कर रहे थे।

"तुम तो कैम्प्स को जानते थे न ?" एक ने पूछा।

"कैम्प्स ? वही लम्बा आदमी जिसकी काली मूँछें थीं ?"

"हाँ, वही ! वह रेल का काँटा बदलता था।"

"अरे हाँ, मुझे अब याद आया।"

"तो सुनो ! वह मर गया है।"

"ओह ! कब मरा ?"

"चूहों के उसी किस्से के बाद !"

"क्या कह रहे हो ? उसे क्या बीमारी थी ?"

"यह तो मैं ठीक से नहीं बता सकता। कोई बुख़ार-वुख़ार था। वैसे तो उसमें सेहत नाम की चीज़ नहीं थी। उसकी बग़लों के नीचे फोड़े निकल आए थे, मालूम होता है उसीसे वह ख़त्म हो गया।"

"लेकिन देखने में तो वह बाक़ी सब लोगों की तरह ही मालूम होता था ?"

"मेरे ख़याल में तो ऐसा नहीं था। उसके फेफड़े कमज़ोर थे और वह

शहर के बैण्ड में तुरही बजाया करता था। तुरही बजाने का फेफड़ों पर बुरा असर पड़ता है।"

"हाँ, अगर आदमी के फेफड़े कमज़ोर हों तो ऐसे बाजे बजाना ठीक नहीं।"

इस बातचीत को नोट करने के बाद तारो ने यह अनुमान लगाने की कोशिश की है कि जब तुरही बजाना कैम्प्स के लिए इतना ख़तरनाक था, तब भी वह क्यों बैंड का सदस्य बना! किस अज्ञान प्रेरणा से उसने इतवार की मीटिंगों में सड़कों पर क़वायद करने के लिए अपनी जान को ख़तरे में डाला!

डायरी से पता चलता है कि तारो की खिड़की के सामने के घर की बालकनी पर हर रोज़ जो दृश्य दिखाई देता था, उससे तारो बहुत प्रभावित हुआ था। होटल में उसके कमरे का रुख़ एक छोटी-सी गली की तरफ़ था जहाँ दीवारों के साये में हर वक्त बहुत सी बिल्लियाँ सोई रहती थीं। हर रोज़ लंच के बाद, जब अधिकांश लोग अपने कमरों में थोड़ी देर सोते थे, एक नाटे क़द का फुरतीला बूढ़ा, सामने की बालकनी पर आ जाता था। उसकी चाल-ढाल फ़ौजियों-जैसी थी। वह तनकर खड़ा होता था और फ़ौजी ढंग की पोशाक भी पहनता था। उसके बरफ़-जैसे सफ़ेद बाल हमेशा क़ायदे से सँवरे रहते थे। बालकनी से झुककर वह आवाज़ देता था, "पूसी! पूसी!" यह आवाज़ रौबीली होने के साथ-साथ स्नेहपूर्ण भी थी। बिल्लियाँ उसकी ओर उनींदी पीली आँखें झपकाकर देखतीं, लेकिन कोई हरकत न करतीं। वह इसके बाद कागज़ के कुछ टुकड़े फाड़ता और नीचे सड़क पर गिरा देता। सफ़ेद तितलियों की फड़फड़ाती बारिश होते देखकर बिल्लियों की दिलचस्पी एकदम जाग उठती और वे आगे बढ़कर काग़ज़ के आख़िरी टुकड़ों को पकड़ने के लिए अपने पंजे आगे बढ़ातीं। इस पर वह बूढ़ा ध्यान से निशाना साधकर उन बिल्लियों पर ज़ोर से थूकना शुरू करता और जसे ही उसकी तरल गोलियाँ ठीक निशाने पर बैठतीं, उसकी आँखें खुशी से चमक उठतीं।

अन्त में, मालूम होता है कि तारो को हमारे शहर का व्यवसायीपन

भी बहुत आकर्षक लगा था, जिसकी शक्ल-सूरत, काम-धन्धे, यहाँ तक कि जिसके आमोद-प्रमोद भी व्यवसाय की दृष्टि से निर्धारित होते थे। यह विलक्षणता—डायरी में उसने इस शब्द का ही प्रयोग किया था—तारो को बेहद पसन्द थी। दरअसल हमारे नगर की इस विलक्षणता की प्रशंसा में लिखे गए वाक्य को उसने विस्मयबोधक चिह्न के साथ इस प्रकार समाप्त किया था, "आखिरकार !"

ये कुछ वाक्य ही ऐसे हैं जिनमें हमारे यात्री ने उस दौर में अपनी व्यक्तिगत भावनाओं को व्यक्त किया है। इन भावनाओं का महत्त्व और उनके पीछे छिपी ईमानदारी शायद पाठकों को तत्काल स्पष्ट न हो। मिसाल के लिए, इस बात का वर्णन करने के बाद कि एक मरे चूहे का पता चलने के फलस्वरूप कैशियर ने उसका बिल किस तरह गलत बना दिया, उसने लिखा, "**प्रश्न** : अपना वक्त बरबाद न करने की क्या तरकीब है ? **उत्तर** : हर समय इसके बारे में सचेत रहना। यह कैसे किया जा सकता है, इसके तरीके—दाँतों के डॉक्टर के वेटिंग-रूम में एक तकलीफ़देह कुरसी पर बैठकर अपने दिन गुज़ार कर; इतवार की पूरी शाम अपनी बालकनी में खड़े रहकर; ऐसी भाषा में व्याख्यान सुनकर जो आती न हो; ट्रेन में सबसे लम्बे और सबसे कम आरामदेह रास्तों से सफ़र करके, जिनमें रास्ते-भर खड़ा रहना पड़े; थियेटरों के टिकटघरों के आगे लगी कतार में खड़े रहें और फिर टिकट न लें, वगैरह-वगैरह।"

विचारों और शैली की इस विलक्षणता के बाद हम उस प्रसंग पर पहुँचते हैं जिसमें शहर की ट्राम-सर्विस का, ट्रामकारों के ढाँचों का, उनके संदिग्ध रंगों का और सब ट्रामों में पाई जाने वाली गन्दगी का ज़िक्र था। अन्त में उसने लिखा था, "कैसी विलक्षण बात है !" इस टिप्पणी से कुछ समझ में नहीं आता।

'चूहों की घटना' पर तारो की टिप्पणियों की यह भूमिका है।

सामने की बालकनी का बूढ़ा आज बहुत दुखी है। आज गली में कोई बिल्ली दिखाई नहीं देती। सड़क पर बिखरी हुई चूहों की लाशों को देखकर हो सकता है उनकी शिकार करने की प्रवृत्ति जाग उठी है। खैर जो भी हो

सारी बिल्लियाँ गायब हो गई हैं। मेरे ख़याल में उनके लिए मरे हुए चूहे खाने का तो सवाल ही नहीं उठता। मुझे याद है कि मेरी बिल्ली मरी हुई चीज़ों को देखकर नाक-भौं सिकोड़ लेती थी। हो सकता है वे तहख़ानों में शिकार कर रही हों। इसीलिए बूढ़ा इतना परेशान था। आज उसके बाल भी पहले की तरह सँवरे हुए नहीं हैं और उसकी सतर्कता और फ़ौजीपन भी कम हो गया है। साफ़ ज़ाहिर है कि वह परेशान है। कुछ देर के बाद वह कमरे में वापस चला गया, लेकिन जाने से पहले उसने एक बार थूका—खालीपन पर।

'आज शहर में एक ट्राम रुक गई, क्योंकि उसमें एक मरा हुआ चूहा पाया गया था। (सवाल : चूहा वहाँ कैसे पहुँचा ?) दो या तीन औरतें फ़ौरन ट्राम से नीचे उतर गईं। चूहे को बाहर फेंक दिया गया और ट्राम चल पड़ी।

'होटल में रात की ड्यूटी के पोर्टर ने, जो ठंडे समझदार दिमाग का आदमी है, मुझे बताया कि ये चूहे किसी भावी विपदा के सूचक थे। "आपको एक कहावत मालूम है जनाब ? कहते हैं कि जब किसी जहाज़ को छोड़कर चूहे भाग जाएँ......" मैंने जवाब दिया कि यह कहावत जहाज़ों के बारे में है, लेकिन यह शहरों पर भी लागू होती है इसका सबूत अभी तक नहीं मिला। वह अपनी बात पर अड़ा रहा। मैंने उससे पूछा कि आखिर शहर पर कौनसी 'विपदा' आ सकती है ? उसने कहा, वह तो वह नहीं बता सकता। मुसीबतें हमेशा अचानक आती हैं। हो सकता है ज़मीन के भीतर भूचाल की तैयारियाँ हो रही हों। मैंने कहा, हो सकता है। उसने पूछा, क्या मुझे डर नहीं लगता ?

'मैंने उसे बताया, "मुझे सिर्फ़ एक ही चीज में दिलचस्पी है। वह है मानसिक शान्ति।" वह मेरे मन की बात समझ गया।

'इस होटल में एक परिवार खाना खाने आता है जो मुझे बहुत दिलचस्प मालूम हुआ। पिता एक लम्बा-दुबला आदमी है जो हमेशा काले रंग की पोशाक पहनता है, जिसकी कमीज़ के कॉलर हमेशा कलफ़दार होते हैं। उसकी खोपड़ी बीच से गंजी है, आसपास सफ़ेद बालों के दो

गुच्छे हैं। उसकी छोटी चमकदार आँखों, तने हुए सख्त चेहरे से मालूम होता है कि वह एक सुसंस्कृत उल्लू है। वह सबसे पहले रेस्तराँ में आता है और एक तरफ खड़ा हो जाता है ताकि उसकी बीवी, जो काले चूहे की तरह है, भीतर जा सके। फिर वह एक छोटे लड़के और लड़की को साथ लेकर आता है जो सरकस के झबरे कुत्तों-जैसी पोशाकें पहनते हैं। जब वे खाने के लिए बैठते हैं तो वह तब तक खड़ा रहता है, जब तक कि उसकी बीवी और 'झबरे' कुरसियों पर नहीं बैठ जाते। वह अपने परिवार के सदस्यों से स्नेहपूर्ण शब्दों में बातें नहीं करता। बीवी पर नम्र और द्वेषपूर्ण टिप्पणियाँ करता है और बच्चों के बारे में अपनी राय को मुँहफट ढंग से व्यक्त करता है।

' "निकोल, तुम बड़ा शर्मनाक व्यवहार कर रहे हो।"

'नन्हीं लड़की रुआँसी हो उठी है, जैसा कि होना चाहिए।

'आज सुबह नन्हा लड़का चूहों की खबर से बहुत उत्तेजित दीख रहा था और उसने इस बारे में कुछ कहना चाहा।

' "फ़िलिप, खाने की मेज़ पर बैठकर चूहों की बातें नहीं करनी चाहिएँ। खबरदार जो कभी मैंने तुम्हारे मुँह से यह लफ्ज़ सुना। समझ गए!"

' "तुम्हारे पिता ठीक कहते हैं।" चुहिया बोली।

'दोनों झबरों ने प्लेटों में मुँह डाल दिए और उल्लू ने गुस्ताखी से सिर को झटका देकर कृतज्ञता प्रकट की।

'इस शानदार मिसाल के बावजूद, शहर में हर शख्स चूहों की चर्चा कर रहा है, और अब यहाँ के अखबारों ने भी यह चर्चा शुरू कर दी है। 'नगर-चर्चा' के कॉलम में पहले हर तरह के विषयों की चर्चा रहती थी, लेकिन अब उसमें सिर्फ़ स्थानीय अधिकारियों के खिलाफ़ ज़हर उगला जाता है। "क्या हमारे नगर-पिताओं को पता है कि इन चूहों की सड़ी लाशों से शहर के निवासियों की ज़िन्दगी को ज़बरदस्त खतरा पैदा हो गया है?" होटल का मैनेजर भी अब सिर्फ़ इस विषय की ही रट लगाए रहता है। लेकिन उसकी शिकायत का व्यक्तिगत पहलू भी है; उसके तीन सितारों वाले होटल की लिफ्ट में मुर्दा चूहों की लाशों का मिलना उसके

लिए जैसे क़यामत का दिन आ जाने के बराबर है। उसका मन रखने के लिए मैंने कहा, "लेकिन, आप तो जानते ही हैं कि इस वक्त सब लोग एक ही नाव पर सवार हैं।"

' "यही तो बात है," उसने जवाब दिया, "अब हम भी हर किसी की तरह के हो गए।"

'उसने ही सबसे पहले मुझे इस किस्म के बुखार के फैलने की खबर दी थी, जिसने शहर में आतंक फैला रखा है। उसकी एक चेम्बर मेड को यह बुखार चढ़ा है।

' "लेकिन मुझे विश्वास है कि यह छूत का बुखार नहीं है," उसने जल्दी से मुझे आश्वस्त करना चाहा।

'मैंने उससे कहा कि मेरे लिए सब बराबर हैं।

' "आह, मैं जनाब को समझ गया! आप भी मेरे-जैसे ही हैं, आप भाग्यवादी हैं।"

'मैंने उससे ऐसी कोई बात नहीं कही थी, और फिर मैं भाग्यवादी कतई नहीं हूँ। मैंने उसे यह बात साफ़ कह दी...'

इसके बाद तारो की डायरी में विस्तार से उस विचित्र बुखार का ज़िक्र किया गया है जिसने आम जनता में इतनी परेशानी फैला रखी थी। यह सूचना देने के बाद कि अब चूँकि चूहों ने निकलना बन्द कर दिया था, जिससे उस छोटे कद के आदमी ने फिर अपनी चाँदमारी के लिए बिल्लियाँ जमा कर ली थीं और वह अपनी निशानेबाज़ी को और भी अचूक बनाने में जुट गया था, तारो ने लिखा कि जहाँ तक मालूम है, इस बुखार के एक दरजन से ऊपर केस हो चुके हैं और उनमें से ज़्यादातर मरीज़ मौत के घाट उतर गए हैं।

आगे की कहानी पर रोशनी डालने के लिए यह ज़रूरी है कि इस स्थान पर डायरी का वह अंश यहीं पर जोड़ दिया जाए, जिसमें तारो ने डॉक्टर रियो का वर्णन किया है। कथाकार की दृष्टि में यह वर्णन काफ़ी दुरुस्त और वाजिब है।

'देखने से पैंतीस बरस की उम्र का आदमी लगता है। क़द मामूली

है। कंधे चौड़े हैं। चेहरा बिलकुल समकोण है। आँखें काली और संधी हुई हैं, लेकिन जबड़ा उभरा हुआ है। नाक कुछ बड़ी, लेकिन खूबसूरत है। काले बाल महीन कटे हुए हैं। खमदार मुँह। मोटे होंठ अक्सर भींचकर बन्द किए रहने की आदत। धूप में टैन हुआ रंग। हाथ और बाँहें साँवली। उसे हमेशा गहरे नीले और काले रंग के, लेकिन खूब फबने वाले सूट में देखकर सिसली के किसानों का स्मरण हो आता है।

'उसकी चाल तेज़ है। सड़क पार करते वक्त वह अपनी रफ्तार बदले बगैर ही फुटपाथ से नीचे उतर पड़ता है। लेकिन दूसरे पार के फुटपाथ पर चढ़ने के लिए एक बार हल्के से उचकता है। लगता है कि वह बड़ा भुलक्कड़ है क्योंकि मोड़ से गुज़र जाने के बाद भी वह अपनी कार के साइड-सिगनलों को नीचे नहीं गिराता। हमेशा नंगे सिर रहता है। मालूम देता है कि समझदार और ज्ञानी है।'

४

तारो के आँकड़े सही थे। स्थिति ने कितना गंभीर मोड़ ले लिया था, इसका डॉक्टर रियो को पूरा एहसास था। चौकीदार की लाश को अलग रखवाने के बाद उसने रिचर्ड को टेलीफ़ोन करके पूछा कि गिल्टियों वाले बुखार के इन केसों के बारे में उसकी क्या राय थी।

"मैं उनके बारे में कोई राय नहीं क़ायम कर सका," रिचर्ड ने स्वीकारा। "मेरे दो मरीज़ों की मौत हो चुकी है—एक अड़तालीस घंटों में मरा और दूसरा तीन दिन के भीतर। और दूसरे मरीज़ में तो जब मैं उसे अगले दिन देखने गया था तब बुखार से अच्छा होने के चिह्न दिखाई दे रहे थे।"

"अच्छा तो अगर तुम्हारे पास और केस आएँ तो मेहरबानी करके मुझे इत्तिला देना," रियो ने कहा।

उसने अपने कुछ और साथी डॉक्टरों को टेलीफ़ोन किया। इस पूछ-ताछ के फलस्वरूप उसे पता चला कि पिछले कुछ दिनों में इसी किस्म के

करीब बीस केस हो चुके थे। और ये सभी सांघातिक साबित हुए थे। इस पर उसने रिचर्ड को, जो स्थानीय मेडिकल असोसियेशन का चेयरमैन था, यह सलाह दी कि अब जो नये केस आएँ उन्हें छूत वाले वार्ड में रखा जाए।

"अफ़सोस है कि मैं इस बारे में कुछ नहीं कर सकता," रिचर्ड ने उत्तर दिया, "इस तरह का आदेश तो प्रीफेक्ट ही जारी कर सकता है। खैर जो भी हो, तुम किस आधार पर अनुमान कर रहे हो कि इससे छूत का खतरा है?"

"आधार तो कोई खास नहीं है। लेकिन रोग के लक्षण ज़रूर डरावने हैं।"

रिचर्ड ने फिर भी यह बात दुहराई कि "इस तरह की कार्यवाही उसकी अधिकार-सीमा में नहीं आती।" वह अधिक-से-अधिक इतना ही कर सकता था कि प्रीफ़ेक्ट के आगे यह मामला पेश कर दे।

लेकिन अभी ये बातें चल ही रही थीं कि मौसम ख़राब हो गया। माइकेल की मृत्यु के अगले दिन आसमान में बादल छा गए और रह-रहकर मूसलाधार बारिश होने लगी। इन बारिशों के बीच के घंटों में बेहद उमस से भरी गरमी हो जाती है। समुद्र का रंग भी बदल गया था। बादलों से भरे आसमान ने उसकी गहरी नीली पारदर्शिता मिटा दी थी और अब उसके रंग में इस्पाती या रुपहली चमक आ गई थी जो आँखों को चुभती थी। वसन्त की उमस-भरी गरमी से तंग आकर सब लोग ग्रीष्म की आने वाली खुश्क गरमी की कामना करने लगे थे। शहर में, जो पठार पर केंचुओं की तरह फैला हुआ था और हर तरफ़ से समुद्र से ओझल था, गम्भीर बेचैनी का मूड छा गया। सफ़ेदी की हुई दीवारों की क़तारों के बीच घिरकर या धूल-भरी दुकानों के बीच से गुज़रते हुए, या गन्दी पीली ट्रामों में सफ़र करते हुए आपको महसूस होता था, जैसे वहाँ की आबोहवा ने आपको अपने शिकंजे में जकड़ लिया हो। लेकिन रियो के बूढ़े स्पैनिश मरीज़ के मन की अवस्था ऐसी नहीं थी। उसने इस मौसम का बड़े उत्साह से स्वागत किया।

"यह मौसम आपको भून देता है," वह बोला, "दमा के मरीज़ को तो यही चाहिए।"

इसमें शक नहीं कि यह मौसम 'आपको भून देता' था, लेकिन बिलकुल बुख़ार की तरह। दरअसल, पूरे शहर को बुख़ार चढ़ गया था; कम-से-कम डॉक्टर रियो की तो यह मानसिक प्रतिक्रिया थी, जब वह कोतार्द की ख़ुदकशी की कोशिश की जाँच-पड़ताल के बारे में रू फ़ेदर्ब की ओर मोटर में जा रहा था। वह जानता था कि उसके मन की यह प्रतिक्रिया सही नहीं है, और उसने सोचा कि थकान और परेशानी के कारण ही उसे ऐसा महसूस हो रहा है। सचमुच इस वक्त उसके पल्ले में चिन्ताओं का काफ़ी बड़ा भाग था। दरअसल, समय आ गया था। जब उसे चाहिए कि वह अपनी परेशानियों को और न बढ़ाकर अपने मन को सुस्थिर करने की कोशिश करे।

कोतार्द के घर पहुँचकर उसे मालूम हुआ कि पुलिस इन्स्पेक्टर अभी तक वहाँ नहीं आया। ग्रान्द ने, जो उससे सीढ़ियों पर मिला था, सुझाया कि दरवाज़ा खुला छोड़कर उसके घर में बैठा जाए और इन्स्पेक्टर का इन्तज़ार किया जाए। म्युनिस्पैलिटी के क्लर्क के पास दो कमरे थे, जिनमें बहुत थोड़ा फ़रनीचर और सामान था। ध्यान आकर्षित करने वाली सिर्फ़ दो ही चीज़ें थीं—एक किताबों की रैक, जिस पर दो-तीन डिक्शनरियाँ पड़ी थीं; और एक छोटा-सा ब्लैक-बोर्ड जिस पर अध-मिटाए दो शब्द अभी भी पढ़े जा सकते थे। ये शब्द थे—'कुसुमित सड़कें'।

ग्रान्द ने बताया कि कोतार्द ने अच्छी तरह रात बिताई थी। लेकिन सुबह उठने पर उसके सर में दर्द हो रहा था और तबीअत बहुत भारी-सी थी। ग्रान्द स्वयं काफ़ी थका और उत्तेजित दीख रहा था। वह लगातार कमरे में इधर-से-उधर टहलता रहा और मेज़ पर रखे ठूँस-ठूँसकर पाण्डुलिपियों के पन्नों से भरे पोर्टफोलियो को बार-बार खोलता और बन्द करता रहा।

फिर भी, इस बीच उसने डॉक्टर को यह सूचना दे दी कि वह कोतार्द के बारे में सचमुच बहुत कम जानता है, लेकिन उसका खयाल है कि उसके पास अपनी छोटी-सी पूँजी ज़रूर है। कोतार्द 'रम पियक्कड़' था। काफ़ी अरसे तक उन दोनों की जान-पहचान सिर्फ़ इतने तक ही सीमित थी कि

ज़ीने पर भेंट हो जाने पर दोनों एक-दूसरे को दुआ-सलाम कर लेते थे।

"अब तक उससे मेरी सिर्फ़ दो बार ही बातचीत हुई है। कुछ दिन पहले मैं रंगीन चॉक का एक डिब्बा लेकर घर लौट रहा था। वह डिब्बा मेरे हाथ से छूटकर गिर पड़ा। उसमें नीले और लाल रंग की चॉकें थीं। उसी वक्त कोतार्द अपने कमरे से निकला और उसने मुझे चॉकों को बीनने में मदद दी। उसने मुझसे पूछा कि मुझे रंगीन चॉकों की क्या ज़रूरत थी?"

इस पर ग्रान्द ने उसे बताया था कि वह अपनी लैटिन भाषा की जानकारी को ताज़ा करने की कोशिश कर रहा था। उसने स्कूल में लैटिन सीखी थी, लेकिन अब उसकी स्मरण-शक्ति धुँधली पड़ गई थी।

"देखिए न डॉक्टर, मुझे बताया गया है कि लैटिन का ज्ञान फ्रेंच शब्दों का अर्थ समझने में सहायता देता है।"

इसलिए वह अपने ब्लैक-बोर्ड पर लैटिन के शब्द लिखता था और हर शब्द के उस हिस्से को, जो संयुक्त करने से या कारक बदलने से बदल जाता था, नीली चॉक से लिखता था और जो हिस्सा कभी नहीं बदलता था उसे लाल चॉक से लिखता था।

"मुझे विश्वास नहीं कि कोतार्द को मेरी यह बात साफ़ समझ में आ गई हो, लेकिन मुझे लगा कि इसमें वह दिलचस्पी ले रहा था। उसने मुझसे एक लाल चॉक माँगी। इससे मुझे ताज्जुब हुआ, लेकिन आखिरकार—भला मैं उस वक्त अनुमान कर भी कैसे सकता था कि वह उस चॉक का क्या इस्तेमाल करेगा!"

रियो ने पूछा कि उनकी दूसरी बातचीत का क्या विषय था? लेकिन इसी वक्त इन्स्पेक्टर आ गया। उसके साथ एक क्लर्क था। उसने कहा कि वह सबसे पहले ग्रान्द का बयान सुनना चाहता है। डॉक्टर ने देखा कि कोतार्द के बारे में बात करते समय ग्रान्द हमेशा उसे 'अभागा आदमी' कहकर पुकारता है और एक बार तो उसने 'उसके कठोर निश्चय' का भी ज़िक्र किया।

कोतार्द ने किस मुमकिन इरादे से ख़ुदकशी करने की कोशिश की,

इसकी बहस के वक्त ग्रान्द ने अपने शब्दों के चुनाव में बड़ी सावधानी बरती। अन्त में उसने अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए जिन शब्दों को चुना, वे थे 'कोई पोशीदा ग़म'। इन्स्पेक्टर ने पूछा कि क्या उसने कोतार्द के व्यवहार में कोई ऐसी बात देखी थी जिससे ज़ाहिर होता हो कि उसका इरादा खुदकशी करने का है ?

"कल उसने मेरे दरवाजे पर दस्तक दी," ग्रान्द ने बताया, "और मुझसे माचिस माँगी। मैंने उसे एक डिब्बी पकड़ा दी। उसने कहा कि मेरे काम में हर्ज़ करने के लिए उसे अफ़सोस है, लेकिन चूँकि हम पड़ोसी हैं, इसलिए उसे उम्मीद है कि मैं बुरा नहीं मानूँगा। उसने मुझे इत्मीनान दिलाया कि वह मेरी डिब्बी वापस कर देगा, लेकिन मैंने कहा कि अपने पास ही रखे।"

इन्स्पेक्टर ने ग्रान्द से पूछा कि क्या उसने कोतार्द के व्यवहार में कोई अजीब बात देखी थी ?

"मुझे उसके व्यवहार में सिर्फ़ यह बात ही अजीब लगती थी कि वह हमेशा मुझसे बातचीत का सिलसिला शुरू करने के लिए उत्सुक दिखाई देता था। लेकिन उसे कम-से-कम इतना तो दिखाई देना ही चाहिए था कि मैं अपने काम में व्यस्त रहता था।" फिर ग्रान्द ने रियो की ओर मुँह करके शरमीले अन्दाज़ में कहा, "अपने एक निजी काम में मैं व्यस्त रहता हूँ।"

इस पर इन्स्पेक्टर ने रोगी को देखने और उसकी बात सुनने की इच्छा प्रकट की। रियो ने सोचा कि कोतार्द को पहले से इस भेंट के बारे में तैयार कर देना उचित होगा। वह जब बेड-रूम में दाखिल हुआ तो उसने देखा कि कोतार्द ग्रे फलालेन की नाइट-शर्ट पहने अपने बिस्तर में आतंकित भाव से दरवाज़े की ओर टकटकी बाँधे बैठा है।

"पुलिस आई है, है न ?"

"हाँ, लेकिन घबराओ नहीं," रियो ने दिलासा दी, "कुछ ज़ाब्ते की कार्यवाही पूरी करने के बाद पुलिस चली जाएगी और तुम्हें शान्तिपूर्वक अकेला छोड़ दिया जाएगा।"

कोतार्द ने उत्तर दिया कि उसकी नज़र में यह सारी कार्यवाही बेकार थी और जो भी हो वह पुलिस को पसन्द नहीं करता।

रियो चिढ़ गया।

"मैं भी पुलिस से प्यार नहीं करता। सिर्फ़ कुछ सवालों का संक्षिप्त और सही जवाब देने-भर की बात है, उसके बाद तुम्हें पुलिस से छुट्टी मिल जाएगी।"

कोतार्द ने इस पर कुछ नहीं कहा और रियो दरवाज़े की ओर जाने को हुआ। अभी उसने एक क़दम ही उठाया होगा कि उस छोटे कद के आदमी ने उसे वापस बुला लिया। रियो जब पलंग के पास पहुँचा तो कोतार्द ने ज़ोर से उसके हाथ थाम लिए।

"ये लोग एक बीमार के साथ सख्ती तो नहीं करेंगे—ऐसे आदमी के साथ जिसने अपने को फाँसी दे ली थी, क्यों डॉक्टर ?"

रियो ने एक क्षण तक उसकी ओर देखकर आश्वासन दिया कि ऐसी बात का कोई सवाल ही नहीं उठता और अगर कुछ हो भी तो अपने मरीज़ की रक्षा करने के लिए वह जो मौजूद रहेगा। कोतार्द को इससे कुछ सान्त्वना मिली और रियो इन्स्पेक्टर को लाने के लिए बाहर चला गया।

ग्रान्द का बयान पढ़कर सुनाने के बाद इन्स्पेक्टर ने कोतार्द से खुद-कशी करने का सही-सही कारण पूछा। उसने पुलिस अफ़सर को बिना देखे सिर्फ़ यही जवाब दिया कि 'कोई पोशीदा ग़म' उस कारण को सही-सही बयान कर देता है। तब इन्स्पेक्टर ने कठोर स्वर में पूछा कि क्या उसका इरादा 'फिर एक बार आज़माइश करके' देखने का है ? इस बार आवेश-पूर्वक उसने जवाब दिया, "हरगिज़ नहीं।" उसकी सिर्फ़ एक ही ख्वाहिश थी कि उसे शान्तिपूर्वक अकेला छोड़ दिया जाए।

"भले आदमी, यह मुझे कहना चाहिए कि इस वक्त तो तुम्हीं ने दूसरों की शान्ति में खलल डाल रखा है," इन्स्पेक्टर ने किंचित् चिढ़कर जवाब दिया। रियो ने उसको इशारे से और कुछ न कहने के लिए मना किया और इन्स्पेक्टर चुप हो गया।

"एक अच्छा-खासा घंटा बेकार बरबाद हो गया," दरवाज़े से बाहर

निकलते ही इन्स्पेक्टर ने आह भरकर कहा। "आप तो अन्दाज़ कर ही सकते हैं कि हमारे पास सोचने के लिए इस वक्त और कई मसले हैं, जैसे यह बुख़ार, जिसकी हर शख़्स चर्चा कर रहा है।"

फिर उसने डॉक्टर से पूछा कि क्या शहर को इससे गम्भीर ख़तरा पैदा हो गया है? रियो ने जवाब दिया कि वह अभी तक कुछ नहीं कह सकता।

"यह सब मौसम की वजह से है," पुलिस अफ़सर ने फ़ैसला सुनाया, "बस यही बात है।"

इसमें शक नहीं कि मौसम ख़राब था। दिन चढ़ने के साथ-साथ हर चीज़ चिपचिपी होती गई और हर विज़िट के बाद डॉक्टर रियो की चिन्ता बढ़ती गई। उस रात को किनारे की बस्ती में रहने वाले उसके एक मरीज़ के पड़ोसी ने अपने पेट के निचले हिस्से को हाथों से दबाते हुए उल्टियाँ करनी शुरू कर दीं। साथ में तेज़ बुख़ार और सरसाम भी था। उसकी गिल्टियाँ माइकेल की गिल्टियों से कहीं ज़्यादा बड़ी थीं। उनमें एक गिल्टी फूटने वाली थी और कुछ देर में ही अत्यधिक पके फल की तरह उसका मुँह फट गया। अपने फ्लैट में लौटकर रियो ने ज़िले के मेडिकल स्टोर डिपो को टेलीफ़ोन किया। अपनी मेडिकल डायरी में उसने आज के दिन सिर्फ़ एक बात ही दर्ज की थी, 'नकारात्मक उत्तर'। उसे शहर के विभिन्न भागों से ऐसे ही केसों के लिए बुलावे आने लगे। ज़ाहिर है कि घाव को तो हर सरत में चीरना ही पड़ता था। एक चीरा इधर से और दूसरा उधर से और गिल्टी एक अंजुली भरकर ख़ून और मवाद उगल देती। मरीज़ों के हाथ-पाँव, जितनी दूर तक सम्भव था, अकड़कर फैल जाते और ख़ून का बहना जारी रहता। उनकी टाँगों और पेटों पर काले धब्बे उछल आते। कभी-कभी कोई गिल्टी बैठ जाती, लेकिन फिर एकाएक फूलने लगती। अक्सर मरीज़ बदबूदार सड़ाँध के बीच दम तोड़ देते।

स्थानीय अख़बार, जो चूहों के बारे में तो इतनी बड़ी-बड़ी सुर्खियाँ देकर ख़बरें छापते थे, अब बिलकुल ख़ामोश हो गए थे, क्योंकि चूहे सड़कों पर मरते हैं और आदमी अपने घरों में। और अखबार सिर्फ़ सड़कों में ही

दिलचस्पी रखते हैं। सरकारी और म्युनिस्पैलिटी के अफ़सर आपस में मशविरा कर रहे थे। जब तक कि एक-एक डॉक्टर के पास दो या तीन केस ही पहुँचे थे, तब तक किसी ने इस बारे में कोई क़दम उठाने की बात ही नहीं सोची। यह सिर्फ़ संख्याओं को जोड़ने का सवाल था, लेकिन जब ऐसा किया गया तो कुल संख्या हैरत-अंगेज़ निकली। कुछ ही दिनों में मरीज़ों की संख्या दिन दूनी रात चौगुनी की रफ़्तार से बढ़ गई थी और इस विचित्र बीमारी के दर्शकों को इसमें ज़रा भी सन्देह न रहा कि ज़रूर कोई महामारी फैल गई है। स्थिति इस हद तक पहुँच चुकी थी, जब रियो का एक सहयोगी डॉक्टर कास्तेल, जो उससे उम्र में काफ़ी बड़ा था, एक दिन उससे मिलने आया।

"ज़ाहिर है कि तुम तो जानते ही होगे कि यह कौनसी बीमारी है," उसने रियो से कहा।

"मैं अभी तक पोस्टमार्टम के नतीजे का इन्तज़ार कर रहा हूँ।"

"ख़ैर, मैं जानता हूँ। और मुझे पोस्टमार्टम के नतीजों की कोई ज़रूरत नहीं है। मैंने अपनी काफ़ी ज़िन्दगी चीन में गुज़ारी है, और बीस साल पहले पेरिस में भी मैंने इस तरह के कुछ केस देखे थे। हुआ यह कि उस वक्त किसी को इस बीमारी का सही नाम लेने की जुर्रत नहीं हुई। हमने एक प्रतिबन्ध लगा रखा है कि लोगों को सही नाम बताकर दहशत न पैदा कर दें। लेकिन इस तरह काम नहीं चलेगा। इसके अलावा हमारे बीच एक अन्धविश्वास भी फैला हुआ है, जैसा कि मेरे एक साथी डॉक्टर के इस कथन से ज़ाहिर है। उसने कहा, 'यह अकल्पनीय है। हर शख़्स जानता है कि यह महामारी अब पश्चिमी यूरोप के देशों से ग़ायब हो चुकी है।' हाँ, यह ठीक है कि हर शख़्स इस बात को जानता है—सिवाय उन अभागों के जो इसकी वजह से मौत के घाट उतर चुके हैं। रियो, बहानेबाज़ी छोड़ो। तुम भी उतना ही अच्छी तरह जानते हो जितना मैं कि यह बीमारी क्या है।"

रियो सोचने लगा। वह अपनी सर्जरी की खिड़की से पहाड़ी की उस चोटी की ओर देख रहा था जो क्षितिज पर स्थित खाड़ी के आधे वृत्त को ढक लेती थी। नीले आसमान में एक धुँधली-सी आभा थी, जो दिन

ढलने के साथ उसकी नीलिमा को और मुलायम बनाती जा रही थी।

"हाँ कास्तेल ! इस बात पर यक़ीन करना मुश्किल है। लेकिन बीमारी के सारे लक्षण इसी ओर इशारा करते हैं कि यह प्लेग है," रियो ने उत्तर दिया।

कास्तेल उठकर दरवाज़े की ओर चल पड़ा।

"तो फिर तुम यह भी जानते हो," बूढ़े डॉक्टर ने रुककर कहा "कि वे हमसे क्या कहेंगे ? यही कि यह बीमारी बीच की जलवायु वाले मुल्कों से कभी की ग़ायब हो चुकी है।"

"गायब हो चुकी है ? आख़िर इन लफ़्ज़ों का ठीक मतलब क्या है ?" रियो ने अपने कंधे हिलाए।

"हाँ। और यह भी मत भूलना कि ठीक बीस साल पहले पेरिस में भी…"

"अच्छा। ख़ैर हमें उम्मीद करनी चाहिए कि इस बार उतनी तबाही नहीं फैलेगी। फिर भी इस बात पर यक़ीन नहीं होता।"

५

'प्लेग' का नाम अभी-अभी पहली बार लिया गया था। कहानी के इस बिन्दु पर पहुँचकर जब डॉक्टर बर्नार्द रियो अपनी खिड़की के सामने खड़ा बाहर का दृश्य देख रहा है, शायद आप हमें डॉक्टर की इस अनिश्चितता और आश्चर्य-भरी हैरानी को उचित बताने की इजाज़त देंगे—क्योंकि मामूली फ़र्क के बावजूद उसके अन्दर भी वैसी ही प्रतिक्रिया हुई थी, जैसी हमारे शहर के अधिकांश निवासियों के अन्दर। सभी जानते हैं कि दुनिया में बार-बार महामारियाँ फैलती रहती हैं, लेकिन जब नीले आसमान को फाड़कर कोई महामारी हमारे ही सिर पर आ टूटती है तब, न जाने क्यों, हमें उस पर विश्वास करने में कठिनाई होती है। इतिहास में जितने बार युद्ध लड़े गए हैं उतनी ही बार प्लेग भी फैली है। फिर भी प्लेग हो या

युद्ध, दोनों ही जैसे लोगों को बिना चेतावनी दिये आ पकड़ते हैं।

दरअसल बात यह है कि हमारे नगरवासियों की तरह, रियो को भी यह आशंका नहीं थी। इसलिए इस तथ्य को स्वीकार करने में उसे जो हिचकिचाहट हुई, उसे हम समझ सकते हैं। इसी तरह हम यह भी समझ सकते हैं कि परस्पर-विरोधी भयों और विश्वासों के बीच फँसकर उसके मन में कैसा द्वन्द्व मचा होगा। जब युद्ध छिड़ जाता है तो लोग कहते हैं, "यह निहायत बेवकूफ़ी की बात है; यह लड़ाई ज़्यादा दिन नहीं चल सकती।" फिर भी युद्ध चाहे 'निहायत बेवकूफ़ी की बात' ही क्यों न हो, लेकिन उसका ज़्यादा दिन तक चलना नहीं रुक जाता। बेवकूफ़ी की बात आगे बढ़ने के लिए अपना रास्ता तलाश कर लेती है, जिस तरह हमें यह देखने की कोशिश करनी चाहिए कि हम कहीं हमेशा तो अपने-आप में इतने बन्द नहीं रहे।

इस मामले में हमारे नगरवासी औरों की तरह ही थे—अपने-आप अपने में बन्द। दूसरे शब्दों में वे मानववादी थे; वे महामारियों पर विश्वास नहीं करते थे। महामारियाँ मनुष्य के नाम से नहीं बनतीं। इसलिए हम अपने-आप से कहने लगते हैं कि महामारियाँ सिर्फ़ दिमाग़ी आतंक हैं, कि वे एक बुरे सपने की तरह गुज़र जाएँगी। लेकिन वे हमेशा आसानी से नहीं गुज़र जातीं और एक बुरे सपने के बाद दूसरे बुरे सपने का सिलसिला शुरू होने की तरह, मनुष्य गुज़रते जाते हैं; उनमें से भी सबसे पहले मानववादी महामारी का शिकार होते हैं, क्योंकि वे अपने बचने के लिए सावधानी नहीं बरतते। हमारे नगरवासियों का दोष औरों से ज़्यादा नहीं था। वे सिर्फ़ मर्यादा भूलकर यह सोचने लगे थे कि अभी भी उनके लिए सबकुछ संभव हो सकेगा, जिसका मतलब था कि महामारियाँ असंभव हैं। वे अपने काम-धंधों में पूर्ववत् लगे रहे, अपनी यात्राओं की तैयारियाँ करते रहे और दुनिया में होने वाली घटनाओं पर अपनी राय क़ायम करते रहे। भला प्लेग-जैसी चीज़ के बारे में वे क्योंकर सोचते, जो भविष्य को मिटा देती है, यात्राओं को स्थगित कर देती है और विचार-विनिमय को ख़ामोश कर देती है! वे सोचते थे कि वे आज़ाद हैं, लेकिन जब तक महामारियाँ हैं, तब तक कोई कभी आज़ाद नहीं हो सकेगा।

दरअसल, इसके बाद भी जब डॉक्टर रियो ने अपने मित्र के सामने यह स्वीकार कर लिया था कि शहर के विभिन्न हिस्सों में कुछ लोग, किसी पूर्व सूचना के बिना ही प्लेग से मर गए थे, उसके दिमाग़ में यह ख़तरा अवास्तविक-सा ही बना रहा। इसका कारण बहुत साधारण था, वह यह कि जब कोई व्यक्ति डॉक्टर बन जाता है तब मानव-पीड़ा के बारे में उसके अपने विचार बन जाते हैं और साधारण लोगों की अपेक्षा उसकी कल्पना का अधिक विस्तार हो जाता है। खिड़की में से शहर को देखते हुए, बाहर से जिसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ था, उसे भविष्य के बारे में एक हल्की-सी परेशानी, एक अस्पष्ट-सी घबराहट ही महसूस हुई।

उसने याद करने की कोशिश की कि उसने इस बीमारी के बारे में क्या-क्या पढ़ा था। उसकी स्मृति में आँकड़े तैर गए, और उसे याद आया कि प्लेग की जिन तीस महामारियों का इतिहास को पता है, उन्होंने करीब दस करोड़ लोगों की जान ली है। लेकिन दस करोड़ मौतें क्या होती हैं? जो युद्ध में लड़ आता है, वह कुछ दिन बाद यह भूल जाता है कि मुर्दा आदमी क्या होता है। और चूँकि मुर्दा व्यक्ति वास्तविक नहीं होता, जब तक कि उसको प्रत्यक्ष मरते हुए न देखा गया हो, इसलिए इतिहास में दस करोड़ व्यक्तियों के शवों की घोषणा मनुष्य की कल्पना में धुएँ के एक कश से ज़्यादा वास्तविकता नहीं रखती। डॉक्टर को कुस्तुन्तुनिया की प्लेग की याद आई, जिसके बारे में प्रोकोपियस ने लिखा था कि एक ही दिन में उससे दस हज़ार मौतें हुई थीं। मरे हुए दस हज़ार की संख्या किसी बड़े सिनेमाघर के दर्शकों से पाँच गुनी हुई। हाँ, ठीक है, इसी तरह इसको समझना चाहिए। आपको चाहिए कि पाँच बड़े सिनेमाघरों के दरवाज़ों पर ही उनके दर्शकों को जमा कर लें, फिर उन्हें शहर के चौक में ले जाएँ और फिर उन्हें ढेर के ढेरों में मर जाने दें, अगर आप दस हज़ार मौतों का साफ़-साफ़ मतलब समझना चाहते हैं। फिर मुर्दों की इस अज्ञात भीड़ में कुछ परिचितों के चेहरे भी जोड़ दें। लेकिन ज़ाहिर है कि ऐसा करना एकदम असंभव है। इसके अलावा ऐसा कौन आदमी है जो दस हज़ार चेहरों को पहचानता हो? जो भी हो, प्रोकोपियस की तरह उन पुराने

इतिहासकारों के दिये हुए आँकड़ों पर भरोसा नहीं किया जा सकता, यह आम धारणा थी। सत्तर साल पहले कैंटन शहर में प्लेग से जब चालीस हज़ार चूहे मर चुके तब जाकर बीमारी नगरवासियों में फैली थी। लेकिन कैंटन की महामारी में भी चूहों की गिनती करने का कोई प्रामाणिक तरीक़ा नहीं था। केवल मोटे तौर पर अन्दाज़ ही तो लगाया गया था, जिसमें ग़लती की काफ़ी गुंजाइश थी। "आओ, ज़रा हिसाब लगाकर देखें," डॉक्टर ने अपने-आप से ही कहा, "मान लो कि एक चूहे की लम्बाई दस इंच होती है, तो चालीस हज़ार चूहों को अगर एक-दूसरे के आगे बिछा दें तो वह कतार कितनी लम्बी होगी···"

उसने झटका देकर अपना होश सँभाला। वह अपनी कल्पना को खिलवाड़ करने का मौक़ा दे रहा था, जिसकी इस वक्त क़तई ज़रूरत नहीं थी। उसने अपने-आपको आश्वासन दिया कि कुछ केसों के आधार पर ही इसे महामारी नहीं कहा जा सकता। ज़रूरत सिर्फ़ गम्भीरतापूर्वक सावधानी बरतने की है। सबसे पहले तो उसे उन लक्षणों पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए, जो उसने अपने मरीज़ों में देखे हैं—बेहोशी और बेहद थकान, काँख और जाँघ में गिल्टियाँ, भयंकर प्यास, डिलीरियम, शरीर में काले धब्बे, अन्दर-ही-अन्दर घुलना और आख़िर में···आख़िर में, डॉक्टर के दिमाग़ में कुछ शब्द आए, जो संयोग से उसकी मेडीकल हैंडबुक में दिये गए वर्णन के आख़िरी वाक्य में भी थे। "नाड़ी फड़फड़ाने लगती है, तेज़ रफ़्तार से और रह-रहकर, और ज़रा-सी भी हरकत से मौत हो जाती है।" हाँ, आख़िर में मरीज़ की ज़िन्दगी एक धागे से लटक जाती है, और चार में से तीन मरीज़ (उसे ठीक-ठीक संख्या याद आ गई) इतने बेसब्र होते हैं कि कोई-न-कोई हल्की-सी हरकत कर बैठते हैं, जो इस धागे को तोड़ देती है।

डॉक्टर अभी भी खिड़की से बाहर देख रहा था। उसके बाहर वसन्त के शीतल आकाश की शान्त आभा फैली थी। कमरे के अन्दर एक शब्द की प्रतिध्वनि अभी तक गूँज रही थी—वह शब्द था 'प्लेग'। वह ऐसा शब्द था जिसने डॉक्टर के दिमाग़ में कुछ ऐसी तस्वीरें जगा दीं, जो सिर्फ़

उन तस्वीरों से ही मेल नहीं खाती थीं जिनका वर्णन विज्ञान ने किया है, बल्कि जिनमें कुछ ऐसी हैरतअंगेज़ सम्भावनाओं का पूरा सिलसिला निहित था जो उसकी आँखों के आगे बिछे इस भूरे और पीले रंग के शहर से बिलकुल भिन्न थीं, जिसकी सड़कों से लोगों के कार्य-कलाप की हल्की-हल्की आवाज़ें उस तक पहुँच रही थीं; संक्षेप में, एक उदास कलरव-सा उठ रहा था न कि शोर-गुल—एक सुखी नगर की आवाज़ें, अगर एक साथ ही उदास और सुखी होना सम्भव हो तो। शहर में ऐसी आकस्मिक और विचारहीन शान्ति छाई थी जो मानो अनायास ही प्लेग की पुरानी तस्वीरों का खंडन कर रही हो। एथेन्स, एक विशाल श्मशान जिससे आसमान तक सड़ाँध उठ रही थी और जिसे चिड़ियाँ भी वीरान करके उड़ गई थीं; चीन के शहर प्लेग के शिकार मरीज़ों से पटे हुए, जो खामोशी से अपनी यातना झेल रहे हैं; मर्साई, जहाँ पर क़ैदी खन्दकों में सड़ी हुई लाशों के ढेर जमा कर रहे हैं; प्रोवेन्स के इलाक़े में प्लेग की क्रुद्ध हवाओं को रोकने के लिए एक महान् दीवार का निर्माण; कुस्तुन्तुनिया के कोढ़ी-गृह, बदबूदार सड़ी चटाइयाँ मिट्टी के फ़र्श में धँसी हुई जहाँ रोगियों को कुदालों से ठेलकर अपने बिस्तरों से नीचे गिराया गया था; काली मौत को शान्त करने के लिए नक़ाबपोश डॉक्टरों का मेला; मिलान शहर के कब्रिस्तानों में स्त्रियों और पुरुषों की खुली रतिक्रियाएँ; लन्दन की पिशाचों के भय से आक्रान्त अँधेरी सड़कों पर से लाशों से भरी गाड़ियों का चरमराते-लड़खड़ाते हुए गुज़रना—हमेशा और हर जगह मनुष्य के दर्द-भरे चिर-क्रन्दन से आक्रान्त रातें और दिन। नहीं, ये दहशतें अभी तक इतनी नज़दीक नहीं पहुँची थीं कि वसन्त के उस तीसरे पहर की शान्ति को भंग कर देतीं। और खाड़ी की दिशा में टकटकी बाँधकर देखते हुए डॉक्टर रियो ने प्लेग की उन आगों की याद की जिनका लूक्रिशियस ने ज़िक्र किया है—उन आगों की जो एथेन्स के लोगों ने समुद्र के किनारे पर जलाई थीं। रात होने पर वे मुर्दों को वहाँ ले गए लेकिन वहाँ उनके लिए काफ़ी जगह नहीं थी, और ज़िन्दा लोग अपने-अपने प्रियजनों की लाशों को रखने की जगह के लिए आपस में मशालों से लड़े थे, क्योंकि वे खूनी ढंग में

कूदने को तैयार थे, लेकिन अपने मुर्दों को समुद्र की लहरों में नहीं छोड़ना चाहते थे। रियो की आँखों के आगे शराब-जैसे काले शान्त समुद्र में प्रतिबिम्बित चिताओं से उठने वाली एक लाल रोशनी, आपस में जूझती हुई मशालों से चारों दिशाओं में छिटकती हुई चिनगारियों और ऊपर से झाँकते हुए आसमान की ओर उठने वाले घने और सड़ाँध-भरे धुएँ की एक तस्वीर कौंध गई···

लेकिन ये अतिरंजित आशंकाएँ तर्क की रोशनी में अपने-आप मिट गईं। माना कि 'प्लेग' का नाम ले लिया गया था, हो सकता है कि इस वक्त भी एक या दो को इस बीमारी ने पकड़कर पछाड़ दिया हो। फिर भी, यह रुक सकता था या रोका जा सकता था। ज़रूरत सिर्फ़ इस बात की थी कि जिस तथ्य को स्वीकार लेना चाहिए था, उसे संजीदा दिल से स्वीकार लिया जाए; ऐतिहासिक स्मृतियों की काली छायाओं को दिल से निकालकर क़दम उठाये जाएँ जो उठाने चाहिएँ। तब प्लेग का फैलना बन्द हो जाएगा, क्योंकि यह एक अकल्पनीय बात थी या फिर लोग इसके बारे में ग़लत ढंग से सोचने के आदी थे। अगर, जैसा कि सम्भव था, प्लेग ख़त्म हो गई तो सब-कुछ फिर ठीक हो जाएगा। अगर ख़त्म नहीं हुई, तो कम-से-कम लोगों को पता तो चल जाएगा प्लेग क्या होती है और उसका मुक़ाबला करने और आख़िर में उस पर क़ाबू पाने के लिए क्या क़दम उठाने चाहिएँ।

डॉक्टर ने खिड़की खोली और फ़ौरन शहर की आवाजें तेज़ हो गईं। पास की किसी मशीनी आरी के चलने की खरखराहट लगातार सुनाई देने लगी। रियो ने अपने-आपको सँभाला। इन आवाज़ों में निश्चिन्तता थी, उधर, उन दैनंदिक क्रियाओं में। बाक़ी सब बातें धागों और क्षुद्र तात्कालिक ज़रूरतों से बँधी थीं; आप उनके लिए वक्त बरबाद नहीं कर सकते। असल बात यह थी कि अपना काम इस तरह किया जिस तरह किया जाना चाहिए।

६

डॉक्टर का विचार-प्रवाह इस बिन्दु पर पहुँचा ही था कि उसे जोज़ेफ़ ग्रान्द के आगमन की सूचना मिली। म्यूनिस्पैलिटी के क्लर्क की हैसियत से ग्रान्द को कई तरह के काम करने पड़ते थे और अकसर उसे आँकड़े तैयार करने वाले विभाग की ओर से जन्म, विवाह और मृत्यु के आँकड़े जमा करने के काम पर तैनात कर दिया जाता था। इस तरह इस बार उसे पिछले दिनों में होने वाली मौतों की संख्या जमा करने का काम सौंपा गया था और वह चूँकि मेहरबान दिल का आदमी था, इसलिए उसने खुद ही डॉक्टर से वादा किया था कि वह मौतों की ताज़ी सूची लेकर उसके पास आएगा।

ग्रान्द के हाथ में काग़ज़ का एक पन्ना था और साथ में उसका पड़ौसी कोतार्द था।

"तादाद बढ़ती जा रही है, डॉक्टर! पिछले अड़तालीस घंटों में ग्यारह मौतें हुई हैं।"

रियो ने कोतार्द से हाथ मिलाकर उसकी तबीअत का हाल पूछा। ग्रान्द ने उसकी ओर से सफ़ाई देते हुए कहा कि कोतार्द ने सोचा कि डॉक्टर का शुक्रिया अदा करना और उनको उसकी वजह से जो तकलीफ़ करनी पड़ी, उसके लिए माफ़ी माँगना उसका फ़र्ज़ है। लेकिन रियो काग़ज़ के पन्ने में लिखी संख्या की ओर त्यौरियाँ डालकर देख रहा था।

"खैर," वह बोला, "शायद अब हमें इस बीमारी को इसके सही नाम से पुकारने का निश्चय कर लेना चाहिए। अब तक हम लोग सिर्फ़ इधर-उधर की बातें ही करते रहे हैं। सुनो, मैं लैबोरेटरी तक जा रहा हूँ, मेरे साथ आना चाहते हो?"

"ज़रूर, ज़रूर," डॉक्टर के पीछे-पीछे ज़ीने से उतरते हुए ग्रान्द ने उत्तर दिया।

"मैं भी चीज़ों को उनके सही नाम से पुकारने में ही विश्वास करता हूँ···बहरहाल, इस बीमारी का सही नाम क्या है?"

"वह मैं नहीं बताऊँगा, और फिर उसका नाम जानने से तुम्हें कोई फ़ायदा नहीं होगा।"

"देखा आपने," ग्रान्द मुस्कराया, "आख़िरकार यह मामला इतना आसान नहीं है!"

वे तीनों प्लेस द' आर्मे की तरफ़ चल पड़े। कोतार्द इस वक्त भी ख़ामोश रहा। सड़कों पर भीड़ होने लगी थी। हमारे शहर की संक्षिप्त गोधूलि की वेला रात में तबदील हो चुकी थी और क्षितिज-रेखा से ऊपर कुछ तारे नज़र आने लगे थे। कुछ देर में ही सड़क की सारी बत्तियाँ जल गईं और सड़क की आवाज़ें जैसे एक स्वर-लहरी में ऊपर उठने लगीं।

"माफ़ कीजिए, लेकिन मुझे अब अपनी ट्राम पकड़नी चाहिए," प्लेस द' आर्मे के कोने पर पहुँचकर ग्रान्द ने कहा। मेरी शामें···पवित्र हैं। जैसी कि हमारे इलाक़े की एक कहावत है, 'कल के लिए काम कभी न छोड़ो।'

रियो ने पहले ही लक्ष्य किया था कि ग्रान्द में 'अपने इलाक़े' की किसी उक्ति का हवाला देने की आदत है (वह मॉन्तेलिमर का निवासी था) और इसके बाद वह अक्सर ऐसी टकसाली अभिव्यक्तियों का प्रयोग करता था जैसे 'सपनों में खो गया' या 'तस्वीर-जैसी खूबसूरत'।

"यह सच है," कोतार्द ने कहा, "डिनर के बाद आप इसको अपने दरबे में से हिला भी नहीं सकते।"

रियो के पूछने पर कि क्या वह म्यूनिस्पैलिटी के लिए अतिरिक्त-काम कर रहा है, ग्रान्द ने उत्तर दिया कि नहीं, वह तो सिर्फ़ अपनी ओर से यह काम कर रहा है।

"क्या सच ?" रियो ने वार्तालाप जारी रखने के लिए कहा, "और क्या तुम्हारा काम ठीक चल रहा है ?"

"इस बात को ध्यान में रखते हुए कि मैं बरसों से ऐसा काम करता आया हूँ, यह ताज्जुब की ही बात होगी अगर मैं ठीक से काम न चला सकूँ। हालाँकि, एक अर्थ में, इस दिशा में काफ़ी प्रगति नहीं हुई।"

"क्या मैं जान सकता हूँ," डॉक्टर ने ठहरकर पूछा, "कि तुम किस काम में लगे हो ?"

852-H 199408 412

ग्रान्द ने हाथ से पकड़कर हैट को अपने विशाल, बाहर को निकले हुए कानों तक खींचते हुए अस्फुट स्वर में कुछ बड़बड़ाकर कहा, जिससे रियो ने यह नतीजा निकाला कि ग्रान्द के काम का 'व्यक्तित्व के विकास' से संबंध था। फिर वह तपाक से मुड़कर तेज़ी से छोटे-छोटे क़दम रखता हुआ बुलेवार द' ला' मार्ने के किनारे पर लगी अंजीरों की पाँत के नीचे-नीचे आगे बढ़ गया।

वे लोग जब लैबोरेटरी के दरवाज़े पर पहुँचे तो कोतार्द ने डॉक्टर से कहा कि वह उससे मिलकर एक ज़रूरी मामले के बारे में उसकी सलाह लेना चाहता है। रियो ने, जो अपनी जेब में आँकड़ों वाले कागज़ को टटोल रहा था, कहा कि वह कन्सल्टेशन के घंटों के बीच कभी भी आ जाए। लेकिन फिर अपना इरादा बदलकर बोला कि वह कल के दिन जब उसकी बस्ती की तरफ़ आएगा, तब तीसरे पहर के बाद खुद ही उसके यहाँ आ जाएगा।

कोतार्द के जाने पर डॉक्टर ने देखा कि वह ग्रान्द के बारे में सोच रहा था, प्लेग फैलने के बीच ग्रान्द की मौजूदगी की कल्पना कर रहा था—ऐसी मामूली प्लेग के बीच नहीं जैसी इस वक्त फैली हुई थी, बल्कि प्राचीन युगों की महान् आप्लावनकारी प्लेगों के बीच। 'वह उस क़िस्म का आदमी है जो ऐसे मौक़ों पर ज़िन्दा बचे रहते हैं।' रियो को याद आया कि उसने कहीं पढ़ा था कि प्लेग कमज़ोर और दुर्बल शरीर के लोगों को छोड़कर मज़बूत और तन्दुरुस्त व्यक्तियों को ही आम तौर पर अपना शिकार बनाती है। ग्रान्द के बारे में सोचते हुए वह इस नतीजे पर पहुँचा कि वह अपने तुच्छ ढंग का एक 'रहस्यपूर्ण आदमी' है।

यह सच है कि अपने साधारण व्यवहार और बाहरी पहनावे से, पहली नज़र में यही लगता था कि वह स्थानीय म्युनिस्पैलिटी का एक मामूली कर्मचारी ही है। लम्बे क़द और दुर्बल शरीर का यह आदमी हमेशा ढीले-ढाले कपड़ा पहनता था, शायद इस ग़लत ख़याल से कि ढीले कपड़े ज्यादा दिन चलते हैं। हालाँकि उसके निचले जबड़े के अधिकतर दाँत अभी तक सुरक्षित थे, लेकिन ऊपर के सारे दाँत गिर चुके थे। नतीजा यह था कि ऊपर

के होंठ को उठाकर—नीचे का होंठ अक्सर हिलता भी नहीं था—जब वह मुस्कराता तो उसका मुँह उसके चेहरे में बनाये गए एक काले छेद की तरह दिखाई देता। उसकी चाल एक नौजवान शरमीले पादरी-जैसी थी,जो दीवारों से सटकर चलता है और दरवाज़ों में चूहों की तरह सरककर घुस जाता है। और उसके बदन में धुएँ और तहखानों की सीलन-जैसी गंध आती थी। संक्षेप में, तुच्छता और नगण्यता के सभी लक्षण उसमें थे। दरअसल, शहर के स्नान-गृहों की चुंगी की दर के कागज़ों को लेकर ध्यानपूर्वक डेस्क पर झुके रहने या किसी जूनियर सेक्रेटरी के लिए सफ़ाई के नये टैक्स की सामग्री जमा करते रहने के अलावा और किसी रूप में उसकी कल्पना करना मुश्किल काम था। वह क्या काम करता था,यह बताए जाने से पहले ही आपको यह महसूस होने लगता था कि उसको सिर्फ़ इस मकसद से ही इस दुनिया में पैदा किया गया है कि वह ६२ फ्रांक और ३० सेंट माहवार पर म्युनिस्पैलिटी के एक अरज़ी असिस्टेंट क्लर्क की ज़रूरी ड्यूटी अंजाम देता रहे।

दरअसल, टॉउन हॉल के स्टॉफ़ रजिस्टर में 'जगह जिस पर तैनात है' के कालम में वह हर महीने यही बात दर्ज किया करता था। बाईस साल पहले मैट्रिकुलेशन का सर्टिफ़िकेट पाने के बाद, पैसों की तंगी की वजह से वह इससे आगे तरक्की नहीं कर सका। उसे जब इस अस्थायी नौकरी पर नियुक्त किया गया, तब उसे उम्मीद हो गई थी कि उसे जल्द ही पक्का कर दिया जाएगा। शहर के प्रशासन की नाज़ुक समस्याओं को समझकर उनके मुताबिक काम करने की योग्यता दिखाने-भर की ज़रूरत थी। उसे यह भी आश्वासन दिया गया था कि एक बार 'पक्का' होते ही उसको ऐसे ग्रेड में तरक्की पाने में दिक्क़त नहीं होगी, जिससे वह आराम की ज़िन्दगी बसर कर सकेगा। निश्चय ही महत्त्वाकांक्षा ने जोज़ेफ़ ग्रान्द को मेहनत से काम करने की ऐड़ नहीं लगाई थी, सूखी मुस्कान बिखेरकर वह यह कसम खाकर कह सकता था। वह सिर्फ़ इतना ही चाहता था कि अपनी मेहनत के बल पर भौतिक दृष्टि से उसकी ज़िन्दगी सुरक्षित हो जाए ताकि वह अपनी फ़ुरसत का वक्त अपने मनपसन्द कामों में लगा सके। उसने अगर यह नौकरी मंज़र की तो सिर्फ़ दयानतदारी की ख़ातिर, या अगर इजाज़त दी

जाए तो वह कहेगा कि एक आदर्श के प्रति अपनी वफ़ादारी की ख़ातिर।

लेकिन यह 'अस्थायी' स्थिति चलती ही चली गई, महँगाई दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती गई, मगर ग्रान्द का वेतन मामूली सालाना तरक्क़ी के बावजूद आज भी नगण्य था। उसने रियो को यह बात बताई थी, लेकिन और कोई उसकी स्थिति के प्रति सचेत नहीं दिखाई देता था। आर इसी में ग्रान्द की मौलिकता या कम-से-कम उसका संकेत छिपा है। वह ऊपर के अधिकारियों के नोटिस में अगर अपने अधिकारों को नहीं, जिनके बारे में वह स्वयं आश्वस्त नहीं था, तो उन वायदों को तो ला ही सकता था जो नौकरी देते वक्त उससे किये गए थे। लेकिन डिपार्टमेण्ट के जिस अध्यक्ष ने ये वायदे किये थे, एक तो वह मर चुका था और दूसरे उसे ख़ुद याद नहीं था कि इन वायदों की ठीक शर्तें क्या थीं। और आख़िर में सबसे बड़ी मुसीबत तो यह थी, जोजेफ़ ग्रान्द किन शब्दों में फ़रियाद करे, यह नहीं जानता था।

रियो ने देखा कि यह विशेषता ही हमारे इस नेक नगरवासी के व्यक्तित्व की सच्ची कुंजी थी। उसमें यही कमी थी जो उसे हमेशा हल्के प्रतिवाद का वह पत्र लिखने से, जो उसके दिमाग़ में छाया रहता था या इस स्थिति का मुक़ाबला करने के लिए कोई दूसरा क़दम उठाने से रोक देती थी। उसके अनुसार उसे अपने 'अधिकारों' के बारे में बात करने से ख़ास नफ़रत थी। यह ऐसा शब्द था जिस पर पहुँचकर वह अटक जाता था। इसी तरह वह 'वायदों' का उल्लेख करना भी पसन्द नहीं करता था, क्योंकि इसका मतलब यह लगाया जाएगा कि वह अपना जायज़ हक़ पाने का दावा कर रहा हो जो कि एक ऐसी गुस्ताख़ी होती जिसका मामूली क्लर्क की हैसियत से मेल नहीं खाता। दूसरी ओर वह अपनी दरख़ास्त में 'आपकी कृपा', 'कृतज्ञ' या 'प्रार्थना'-जैसे शब्दों का प्रयोग करने के खिलाफ़ था, क्योंकि उसका ख़याल था कि ये शब्द उसके आत्म-सम्मान से मेल नहीं खाते। इस तरह उपयुक्त शब्द खोजने की क्षमता के अभाव में वह बुढ़ापे की उम्र तक अल्प वेतन वाली इस नौकरी पर काम करता आया था। इसके अलावा डॉक्टर रियो को उसने यही बताया था, एक लम्बे तजरबे के बाद वह इस नतीजे पर

पहुंचा था कि वह अपनी आमदनी के भीतर गुज़ारे की हमेशा उम्मीद कर सकता था। उसके लिए सिर्फ़ इतना करना ही ज़रूरी था कि अपनी आमदनी के मुताबिक़ अपनी ज़रूरतों में कटौती करता जाए। इस तरह वह हमारे मेयर की, जो नगर का बड़ा पूंजीपति था, राय की पुष्टि करता था। मेयर अक्सर ज़ोर देकर कहा करता था कि अगर जाँच करके देखा जाए तो (वह अपनी इस चुनी हुई अभिव्यक्ति पर विशेष ज़ोर देता, क्योंकि वह सचमुच उसके तर्क को सिद्ध कर देती थी) यह विश्वास करने का कोई कारण ही नहीं है कि हमारे शहर में कभी कोई व्यक्ति भूख की वजह से मरा हो। जो भी हो, अगर जाँचकर देखा जाए तो ग्रान्द की कठोर और अभावग्रस्त ज़िन्दगी इस बात की गारण्टी थी कि इस बारे में चिन्ता करना व्यर्थ है… वह उपयुक्त शब्दों की तलाश में जीये चला जा रहा था।

एक विशेष अर्थ में यह भी कहा जा सकता है कि उसकी ज़िन्दगी एक शानदार मिसाल थी। वह उन असाधारण लोगों में से था, हमारे शहर में ही नहीं बल्कि कहीं भी, जिनमें अपनी नेक भावनाओं के मुताबिक चलने का साहस होता है। उसने अपनी व्यक्तिगत ज़िन्दगी के बारे में थोड़ा-बहुत जो बताया था वह उसके दयालु कारनामों और उसके अन्दर प्यार और स्नेह की उस क्षमता का सबूत था जिसे हमारे ज़माने में कोई अपनाने तक की ज़ुर्रत नहीं करता। बिना किसी शरम और हिचक के उसने क़बूल किया कि वह अपने भतीजों और बहन को हृदय से प्यार करता है। उसके नज़दीकी रिश्तेदारों में सिर्फ़ वे ही बचे हैं और वह उनसे मिलने के लिए हर दूसरे साल फ्रान्स जाता है। उसने क़बूल किया कि उसे अपने माँ-बाप की याद करके, जिनका उसकी बाल्यावस्था में ही देहान्त हो गया था, बहुत पीड़ा होती है। उसने यह बात भी नहीं छिपाई कि उसे अपने पड़ोस के गिरजाघर की घंटी विशेष रूप से प्यारी लगती है जो रोज़ पाँच बजे शाम के करीब मधुर स्वर में बजना शुरू करती है। लेकिन इन सीधी-सादी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए भी उसे बहुत कठिन प्रयत्न करना पड़ता था। और अपनी अभिव्यक्ति के लिए उपयुक्त शब्दों को तलाश करने की दुर्निवार कठिनाई ही उसके जीवन का अभिशाप बन गई थी। "ओह डॉक्टर,

काश मैं अपने को व्यक्त करना सीख पाता !" वह कहता। रियो से वह जब कभी मिलता, इस विषय की चर्चा ज़रूर करता।

उस शाम को ग्रान्द की दूर जाती हुई आकृति की ओर देखते हुए डॉक्टर ने एकाएक सोचा कि आख़िर वह क्या चीज़ है जिसे ग्रान्द व्यक्त करना चाहता है ? ज़रूर वह कोई किताब या ऐसी ही कोई चीज़ लिख रहा होगा। और विचित्र बात यह है कि लैबोरेटरी में घुसते समय इस विचार ने रियो को फिर से आश्वस्त कर दिया। उसने महसूस किया कि यह एक ऊटपटाँग विचार है, लेकिन वह विश्वास नहीं कर पा रहा था कि एक ऐसे शहर में भी, जहाँ ग्रान्द-जैसे अज्ञात कर्मचारी अपनी विचित्र रुचियों के अनुसार काम करने में लगे हों, कोई महामारी बड़े पैमाने पर फैल सकती है। कहने का मतलब यह है कि वह इसकी कल्पना ही नहीं कर सकता था कि प्लेग से पीड़ित समाज के लोगों में कभी इस तरह की विचित्र रुचियाँ भी पाई जा सकती हैं, और वह इस नतीजे पर पहुँचा कि हमारे नगरवासियों में प्लेग को बरबादी फैलाने का ज़्यादा मौक़ा नहीं मिलेगा।

७

अगले दिन बहुत कह-सुनकर, जो कई लोगों को उचित नहीं लगा, रियो ने प्रीफ़ेक्ट के दफ़्तर में एक 'स्वास्थ्य कमेटी' की मीटिंग बुलाने के लिए अधिकारियों को राज़ी कर लिया।

"शहर के लोग घबराने लगे हैं, यह हक़ीक़त है," डॉक्टर रिचर्ड ने स्वीकार किया, "और इसमें शक नहीं कि तरह-तरह की अफ़वाहें फैल रही हैं। प्रीफ़ेक्ट ने मुझसे कहा कि 'अगर तुम ज़रूरी समझो तो सख़्त कार्रवाई कर सकते हो, लेकिन लोगों का ध्यान मत आकर्षित करो।' खुद उसका विश्वास यह है कि यह सब झूठा आतंक है।"

रियो अपनी कार में बिठाकर कास्तेल को प्रीफ़ेक्ट के दफ़्तर ले गया।

"क्या तुम जानते हो कि सारे ज़िले में हमारे पास प्लेग के टीके की

एक बूँद भी नहीं है ?" कार में कास्तेल ने रियो से कहा।

"मुझे मालूम है, मैंने डिपो को टेलीफ़ोन किया था। डायरेक्टर जैसे सुनकर भौंचक्का रह गया। टीके पेरिस से मँगाने पड़ेंगे।"

"हमें आशा करनी चाहिए कि वे इसमें जल्दी करेंगे।"

"मैंने कल एक तार भेज दिया है," रियो बोला।

प्रीफ़ेक्ट ने स्नेहपूर्वक उनका अभिवादन किया, लेकिन उसके ढंग से मालूम पड़ता था कि वह बहुत घबराया हुआ है।

"मीटिंग फ़ौरन शुरू कर दें, साहिबान ! क्या आप ज़रूरी समझते हैं कि मैं पहले पूरी स्थिति पर रोशनी डालूँ ?" वह बोला।

रिचर्ड की राय में इसकी ज़रूरत नहीं थी। वह और उसके साथी डॉक्टर तथ्यों से परिचित थे। प्रश्न सिर्फ़ एक ही था कि स्थिति का मुक़ा-बला करने के लिए कौनसे क़दम उठाये जाएँ ?

बूढ़े कास्तेल ने बीच में बात काटकर दो-टूक कहा, "प्रश्न यह है कि हम जानना चाहते हैं कि यह प्लेग है या नहीं।"

दो-तीन उपस्थित डॉक्टरों ने इसका प्रतिवाद किया। बाक़ी डॉक्टर हिचकिचा रहे थे। प्रीफ़ेक्ट एकदम चौंक पड़ा था और उसने जल्दी से दरवाज़े की ओर देखकर अपने को आश्वस्त करना चाहा कि यह भयानक शब्द कहीं बरामदे में किसी को सुनाई तो नहीं दे गया। उसकी राय में अभी तक तो सिर्फ़ इतना ही कहा जा सकता था कि हमें एक विशेष प्रकार के बुख़ार का सामना करना पड़ रहा है, जिसमें पेट-सम्बन्धी पेचीदगियाँ पैदा हो जाती हैं। जैसे ज़िन्दगी में, उसी तरह मेडिकल साइंस में भी जल्दी से किसी नतीजे पर कूदकर पहुँच जाना अक्लमन्दी की बात नहीं है। बूढ़े कास्तेल ने, जो शान्त मुद्रा में अपनी गन्दी, पीली मूँछों को चबा रहा था, अपनी पीली, चमकती हुई आँखें उठाकर रियो की ओर ग़ौर से देखा। फिर कमेटी के अन्य सदस्यों पर एक मैत्रीपूर्ण दृष्टि डालकर उसने कहा कि वह खूब अच्छी तरह जानता था कि यह प्लेग है और कहने की ज़रूरत नहीं कि वह यह भी जानता था कि अगर इस बात को सरकारी तौर पर मान लिया गया तो नगर के अधिकारियों को बहुत सख़्त क़दम उठाने के

लिए मजबूर होना पड़ेगा। यही वजह थी जिससे उसके साथी इस तथ्य का सामना करने से हिचकिचा रहे थे, लेकिन अगर उसके कहने-भर से उनके मन को चैन मिल सकता था तो वह यह कहने को तैयार था कि यह प्लेग नहीं है। प्रीफ़ेक्ट इस बात से परेशान हो गया और बोला कि उसकी राय में बहस का यह ढंग ही ग़लत है।

"लेकिन अहम बात यह नहीं है कि बहस का तरीका ग़लत है या ठीक, बल्कि यह कि वह आपको यह सोचने के लिए मजबूर कर देती है।"

रियो से, जो अब तक चुप रहा था, अपनी राय प्रकट करने के लिए कहा गया।

"हम टाइफ़ॉयड क़िस्म के एक ऐसे बुखार का सामना कर रहे हैं, जिसमें क़ै भी आती हैं और गिल्टियाँ भी सूज जाती हैं," रियो ने उत्तर दिया। "मैंने ये गिल्टियाँ चीरकर देखी हैं और उनके मवाद की जाँच भी कराई है। हमारी लैबोरेटरी के परीक्षक का पक्का ख़याल है कि उसे मवाद में प्लेग के कीटाणु मिले हैं। लेकिन मैं यह भी साफ़ कर देना चाहता हूँ कि ये कीटाणु पुस्तकों में बताये गए प्लेग के कीटाणु से कुछ भिन्न हैं।"

रिचर्ड ने राय दी कि इससे 'ठहरो और इन्तज़ार करो' की नीति ही सही साबित होती थी। और फिर यह अक्लमन्दी की ही बात होगी अगर एक हफ्ते से जो अलग-अलग जाँच-पड़ताल की जा रही थी, उसकी संख्या-बद्ध रिपोर्ट का इन्तज़ार कर लिया जाए।

"मगर जब एक कीटाणु," रियो ने कहा, "शरीर में घुसकर तीन दिन के अन्दर ही तिल्ली को बढ़ाकर चौगुना कर देता हो, अन्न-पेशी की गिल्टियों को सुजाकर नारंगी के बराबर बना देता हो और उन्हें उबलते हुए गरम मवाद से भर देता हो, तब 'ठहरो और इन्तज़ार करो' की नीति को बेअक्ली की नीति ही कहा जा सकता है। रोग का संक्रमण बढ़ता जा रहा है। बीमारी जिस रफ्तार से फैल रही है, उसे देखते हुए अगर फ़ौरन रोकथाम न की गई, तो वह अगले दो महीनों में शहर की आधी जनसंख्या को मौत के हवाले कर देगी। ऐसा होते हुए, इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि आप इसे प्लेग के नाम से पुकारते हैं या किसी विशेष प्रकार के बुखार

के नाम से। अहम बात यह है कि इस शहर की आधी जनसंख्या को मौत के हवाले करने से रोका जाए।"

रिचर्ड ने कहा कि इतनी भयंकर तस्वीर खींचना ग़लत होगा और फिर, इसका कोई सबूत नहीं मिलता कि यह छूत की बीमारी है। सच तो यह है कि मरीज़ों के रिश्तेदार, एक ही छत के नीचे साथ रहकर भी, इसके शिकार नहीं हुए।

"लेकिन और तो मरे हैं," रियो ने कहा, "और ज़ाहिर है कि छूत कभी सर्वग्राही नहीं होती, नहीं तो बीमारों की संख्या में क्रम-गति से इतनी तेज़ी से बढ़ती होने लगे कि मरने वालों की तादाद आसमान को छूने लगेगी। यह भयंकर तस्वीर खींचने का सवाल नहीं है, सवाल तो बचाव के लिए क़दम उठाने का है।"

लेकिन रिचर्ड ने अन्त में स्थिति का जायज़ा पेश करते हुए बताया कि यह बीमारी अपने-आप बन्द नहीं हुई तो कोड में लिखे हुए छूत से बचाव के कठोर नियमों को लागू करना ज़रूरी हो जाएगा। और यह करने के लिए, सरकारी तौर पर यह स्वीकार कर लेना पड़ेगा कि प्लेग फैल गई है। लेकिन अभी तक इस बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। इसलिए जल्दी में कोई क़दम उठाना अनुचित होगा।

रियो अपनी बात पर अड़ा रहा, "बहस की बात यह नहीं है कि कोड में दिये गए बचाव के नियम कितने कठोर हैं, बल्कि यह कि क्या वे शहर की आधी जनसंख्या को मरने से बचाने के लिए ज़रूरी हैं। बाक़ी सब बातें प्रशासनीय कार्यवाही से सम्बन्ध रखती हैं और मुझे यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि हमारे विधान में खतरे के मौक़ों पर प्रीफ़ेक्ट को ज़रूरी आदेश जारी करने का अधिकार दिया गया है।"

"बिलकुल ठीक," प्रीफ़ेक्ट ने सहमति प्रकट की, "लेकिन आप डॉक्टरों को बाक़ायदा लिखकर घोषित करना पड़ेगा कि यह बीमारी प्लेग ही है।"

"हम लोग अगर लिखकर यह बयान नहीं देंगे तो खतरा इस बात का है कि शहर की आधी आबादी तबाह हो जाएगी," रियो ने कहा।

रिचर्ड ने किंचित् बेसब्री से बीच में दखल देते हुए कहा, "सच यह है कि हमारे दोस्त को विश्वास हो गया है कि यह प्लेग है। उन्होंने जिन 'लक्षणों' का वर्णन किया है, उससे तो यही साबित होता है।"

रियो ने उत्तर दिया कि उसने 'लक्षणों' का वर्णन नहीं किया था, बल्कि जो अपनी आँखों से देखा था वही कहा था। और उसने जो देखा वे थीं सूजी हुई गिल्टियाँ, तेज़ बुखार और साथ में सरसाम और अड़तालीस घण्टों के भीतर मौत। क्या डॉक्टर रिचर्ड यह घोषणा करने की ज़िम्मेदारी लेंगे कि छूत से बचाव के लिए सख्त कार्यवाही करने के बगैर ही बीमारी अपने-आप खत्म हो जाएगी?

रिचर्ड पहले तो हिचकिचाया, फिर रियो को घूरते हुए बोला, "मेहर-बानी करके मुझे साफ़-साफ़ लफ्ज़ों में बताओ। क्या तुमको पक्का विश्वास है कि यह प्लेग है?"

"तुम समस्या को गलत ढंग से पेश कर रहे हो। यह बीमारी के नाम का सवाल नहीं है; सवाल वक्त का है।"

"तो तुम्हारी राय यह है," प्रीफ़ेक्ट ने कहा, "अगर्चे यह प्लेग न भी हो तो भी प्लेग की छूत से बचाव करने के लिए क़ानून के मुताबिक जो भी कार्यवाही ज़रूरी है, वह फ़ौरन की जानी चाहिए?"

"अगर आप मेरी 'राय' पर ही ज़ोर देना चाहते हैं तो मैं कहूँगा कि आपने उसे काफ़ी सही शब्दों में पेश किया है।"

डॉक्टरों में विचार-विनिमय होने लगा। रिचर्ड उनकी ओर से बोल रहा था।

"तो इसका यह मतलब निकला कि हमें इस तरह अमल करने की ज़िम्मेदारी उठा लेनी चाहिए मानो यह बीमारी सचमुच प्लेग ही हो। है न?"

आम तौर पर सभी लोग सवाल को इस ढंग से पेश किए जाने से सहमत थे।

"मेरे लिए इसकी कोई अहमियत नहीं," रियो ने कहा, "कि आप लोग

किन शब्दों में इस स्थिति का बयान करते हैं। मेरा कहना तो सिर्फ़ यह है कि हमें इस तरह अमल नहीं करना चाहिए मानो शहर की आधी आबादी के खत्म हो जाने का कोई खतरा ही न हो; क्योंकि तब वह ज़रूर खत्म हो जाएगी।

रियो लोगों की चढ़ी त्यौरियों और प्रतिवादों के बीच कमेटी-रूम से निकलकर बाहर आया। कुछ देर बाद जब वह कार ड्राइव करता हुआ पिछवाड़े की एक गली से जा रहा था, जो भुनी हुई मछलियों के टुकड़ों और पेशाब से पटी हुई थी, पीड़ा से चीखती हुई एक औरत ने, जिसकी जाँघों की गिल्टियों से खून चू रहा था, उसकी ओर अपनी बाँहें फैला दीं।

८

कमेटी-मीटिंग के तीसरे दिन बुखार ने एक और छोटी-सी कामयाबी हासिल की। अखबारों में भी इसने जगह पा ली, लेकिन अत्यन्त संयत शब्दों में ही। उसके बारे में कुछ संक्षिप्त हवाले ही दिये गए थे। उसके अगले दिन रियो ने देखा कि शहर में सरकारी नोटिस चिपके हुए थे, यद्यपि ऐसी जगहों पर जहाँ उनकी ओर लोगों का ध्यान आकर्षित न हो। इन नोटिसों से इस बात का आभास नहीं मिलता था कि अधिकारी परिस्थिति का पूरी तरह सामना कर रहे थे। जो कार्यवाहियाँ करने का ऐलान किया गया था वे कठोर तो थीं ही नहीं, साथ ही यह भी लगता था जैसे लोगों में आतंक न फैल जाए, इस इच्छा से अनेक रिआयतें भी दी गई थीं। नोटिस में दी गई हिदायतें एक बेहूदे बयान से शुरू होती थीं कि ओरान में एक बुरे क़िस्म के बुख़ार के कुछ केसों की इत्तिला मिली है; अभी तक यह बताना सम्भव नहीं है कि यह छूत का बुख़ार है। इसके लक्षण इतने स्पष्ट नहीं हैं कि सचमुच घबराने की बात हो और अधिकारियों को विश्वास है कि नगर-वासी धैर्यपूर्वक स्थिति का सामना करेंगे। फिर भी विवेक की भावना से प्रेरित होकर, जिसे लोग अन्यथा नहीं समझेंगे, प्रीफेक्ट ने सावधानी

बरतने की खातिर कुछ नियम और प्रतिबन्ध लागू किये हैं। अगर इन नियमों को ध्यान से समझकर उन पर अच्छी तरह अमल किया गया तो उनसे किसी महामारी के फैलने का खतरा मिट जाएगा। ऐसा होने की वजह से प्रीफेक्ट को पूरा भरोसा है कि हर व्यक्ति अपनी-अपनी जगह पर अपनी निजी कोशिशों में हार्दिक सहयोग देगा।

अधिकारियों ने जो सामान्य प्रोग्राम बनाया था, नोटिस में उसकी रूपरेखा दी गई थी। इस प्रोग्राम में शहर के चूहों की कुल आबादी को नालियों में ज़हरीली गैस भरकर नेस्तनाबूद कर देना और पानी की सप्लाई पर सख्त निगरानी रखना शामिल था। नगरवासियों को सलाह दी गई थी कि वे कठोरतापूर्वक सफ़ाई रखने की कोशिश करें और अगर किसी को अपने बदन में पिस्सू मिलें तो उसे फ़ौरन म्यूनिस्पैलिटी की डिस्पेन्सरी में जाकर अपने को दिखाना चाहिए। हर परिवार को हिदायत दी गई थी कि अगर डॉक्टर उसके यहाँ किसी को बुख़ार से पीड़ित बताए तो वह अपने परिवार के उस बीमार सदस्य को अस्पताल के स्पेशल वार्ड में रखने की इजाज़त दें। आगे यह बताया गया था कि इन स्पेशल वार्डों में मरीज़ों के तत्काल इलाज का पूरा इन्तज़ाम किया गया था ताकि अच्छा होने में उन्हें अधिक-से-अधिक आसानी हो सके। कुछ अतिरिक्त नियमों के द्वारा यह ज़रूरी कर दिया गया था कि बीमार के कमरे और उस गाड़ी को, जिसमें वह सफ़र करे, फौरन कीटाणु-नाशक दवाइयाँ छिड़ककर शुद्ध किया जाए। नोटिस के बाक़ी हिस्से में प्रीफेक्ट ने आम तौर पर एक बीमार के सम्पर्क में आने वाले हर व्यक्ति को सलाह दी थी कि वह सफ़ाई के इन्स्पेक्टर से जाकर मिले और उसकी दी हुई सलाह पर पूरी तरह अमल करे।

डॉक्टर रियो तेज़ी से इस पोस्टर के आगे से हटकर अपनी सर्जरी की ओर लौट पड़ा। ग्रान्द ने, जो उसका इन्तज़ार कर रहा था, डॉक्टर को आते देखकर नाटकीय ढंग से अपनी बाँहें उठाईं।

"हाँ, मुझे मालूम है, संख्या बढ़ती जा रही है।" रियो ने कहा।

ग्रान्द ने बताया कि पिछले दिन दस मौतों की इत्तिला मिली थी। डॉक्टर ने उससे कहा कि वह उससे शाम को मिलेगा, क्योंकि वह कोतार्द

को देखने के लिए जाने का वायदा कर चुका है।

."बहुत बढ़िया ख़याल है," ग्रान्द्र बोला, "आपके जाने से उसको बहुत फ़ायदा होगा। दरअसल, मुझे तो उसमें काफ़ी तबदीली नज़र आती है।"

"किस तरह की?"

"वह काफ़ी मिलनसार हो गया है।"

"क्या पहले वह मिलनसार नहीं था?"

ग्रान्द उलझन में पड़ गया। वह यह नहीं कह सकता था कि कोतार्द पहले बे-मिलनसार था; यह कहना सही नहीं होगा। लेकिन कोतार्द एक ख़ामोश रहस्यमय व्यक्ति था और उसके आचरण में कुछ ऐसी बात थी, जिससे ग्रान्द को एक जंगली सूअर का ख़याल हो आता था। अपने बेड-रूम में बन्द रहना, सस्ते रेस्तराँ में दोनों वक्त का खाना खाना, रहस्यमय ढंग से कभी बाहर जाना और कभी लौटकर आना—कोतार्द का दैनंदिक कार्य-क्रम सिर्फ़ इतना ही था। वह अपने-आपको शराब और मदिरा का यात्री कहकर पुकारता था। कभी-कभी उसके पास दो या तीन आदमी आते थे, जो शायद ग्राहक होते थे। किसी-किसी दिन शाम को सड़क के उस पार सिनेमा देखने चला जाता था। इस बारे में ग्रान्द ने एक विशेषता का ज़िक्र किया जो उसे नज़र आई थी। उसे ऐसा लगा था कि कोतार्द को शायद चोर और डाकुओं के फ़िल्म ज़्यादा पसन्द थे। लेकिन उसे कोतार्द में जो बात सबसे अनोखी लगी थी, वह उसकी लोगों के प्रति उदासीनता थी, और उससे अगर कोई मिलता था तो वह उसे अविश्वास की दृष्टि से तो ख़ैर देखता ही था।

लेकिन, ग्रान्द का कहना था कि अब वह बिलकुल बदल गया है।

"मैं नहीं जानता कि इस बात को किन शब्दों में व्यक्त करना चाहिए, लेकिन मैं इतना ज़रूर कह सकता हूँ कि मुझे लगता है वह अब हरेक को खुश करना चाहता है, हरेक की नज़रों में अच्छा बनना चाहता है। आज-कल वह मुझसे अक्सर बातें करता है और एक साथ बाहर जाने का आग्रह करता है, जिससे मैं इन्कार नहीं कर पाता। बड़ी बात यह है कि मुझे वह दिलचस्प आदमी लगता है, और इसमें शक नहीं कि मैंने ही उसकी ज़िन्दगी

बचाई थी।"

कोतार्द ने जब से खुदकशी करने की कोशिश की थी, तब से उसके यहाँ कोई आदमी नहीं गया था। सड़कों पर, दुकानों में, वह हर जगह दोस्त बनाने की कोशिश करता रहता था। पंसारी पर वह अपनी मुस्कानें बिखेरता था और तमाकू-फ़रोश की गपबाज़ी में अब वह सबसे ज़्यादा गहरी दिलचस्पी दिखाता था।

"इस तमाकू-फ़रोश से—जो औरत है—सभी डरते हैं," ग्रान्द ने बताया। मैंने जब कोतार्द से यह बात कही तो उसने जवाब दिया कि मेरे मन में उसके प्रति कोई द्वेष है, नहीं तो उसमें ऐसी कई खूबियाँ हैं, जिन्हें अगर कोई चाहे तो देख सकता है।"

दो या तीन बार कोतार्द ने ग्रान्द को शहर के बड़े और शानदार रेस्तराँ और कॉफ़ी-हाउसों में दावत खिलाई थी, जहाँ वह आजकल जाने लगा था।

"वहाँ का वातावरण खुशगवार होता है," उसने कहा था, "और फिर वहाँ आदमी ऊँचे लोगों की सोहबत में बैठता है।"

ग्रान्द ने देखा कि इन जगहों के वेटर और बैरे कोतार्द के इशारे पर नाचते थे। उसे इसका कारण भी मालूम हो गया जब उसने देखा कि उसका साथी उनको दिल खोलकर बख़्शीश देता है। इस बख़्शीश के बदले में उसके प्रति जो सम्मान और आदर दिखाया जाता था, उससे लगता था, कोतार्द बहुत प्रसन्न होता था। एक दिन जब हेड वेटर उसे दरवाज़े तक छोड़ने के लिए साथ आया और उसने उसे ओवरकोट पहनने में मदद की तो कोतार्द ने ग्रान्द से कहा, "यह बहुत भला आदमी है और एक अच्छे गवाह का काम देगा।"

"एक गंवाह का ? मैं नहीं समझा।"

उत्तर देने से पहले कोतार्द हिचकिचाया।

"हाँ, वह कह सकता है कि मैं सचमुच बुरे किस्म का आदमी नहीं हूँ।"

लेकिन उसके स्वभाव में ऊँचे और नीचे स्थल भी थे। एक दिन जब पंसारी उसके प्रति अधिक खुशी से पेश नहीं आया था, वह गुस्से से लाल-

पीला होता हुआ घर लौटा था।

"वह दूसरों की हिमायत कर रहा है, सूअर कहीं का।"

"किन दूसरों की?"

"उन सभी बदज़ात लोगों की।"

तमाकू-फ़रोश की दुकान पर ग्रान्द ने स्वयं एक विचित्र दृश्य देखा था। बड़े जोशो-खरोश से बहस चल रही थी और काउण्टर के पीछे खड़ी औरत ने क़त्ल के एक केस के बारे में, जिसने अल्जीयर्स में काफ़ी सनसनी फैला दी थी, अपनी राय सुनानी शुरू कर दी थी।

"मैं तो हमेशा से कहती आ रही हूँ," औरत बोली, "कि वे अगर उन सब बदमाशों को जेल में बन्द कर दें तो नेक और भले लोग आज़ादी से साँस ले सकेंगे।"

लेकिन कोतार्द की प्रतिक्रिया से स्तम्भित रहकर वह अपनी बात जारी नहीं रख सकी। कोतार्द बिना कहे ही तपाक से उठकर दनदनाता हुआ दुकान से बाहर चला गया। तमाकू-फ़रोश और ग्रान्द भौंचक्के होकर उसकी ओर देखते रह गए।

कुछ दिनों बाद ग्रान्द ने कोतार्द के स्वभाव की और तबदीलियों के बारे में भी डॉक्टर को इत्तिला दी। आर्थिक प्रश्नों पर 'बड़ी मछली छोटी मछली को खाती है' की नीति के खिलाफ़ कोतार्द हमेशा उदार विचारों का समर्थन किया करता था। लेकिन अब वह ओरान के जिस एकमात्र अखबार को खरीदता था वह अनुदार (कन्ज़र्वेटिव) दृष्टिकोण का मुख्य-पत्र था और इसमें शक नहीं कि वह उसको जान-बूझकर सार्वजनिक स्थानों में पढ़ने का उपक्रम करता होगा। रोग-शय्या से निकलने के बाद उसने कुछ ऐसा ही आग्रह ग्रान्द से भी किया था। ग्रान्द ने उसे बताया था कि वह पोस्ट ऑफ़िस तक जा रहा है। इस पर कोतार्द ने उससे कहा था कि वह मेहरबानी करके उसकी एक दूर रहने वाली बहन के नाम उसकी ओर से सौ फ्रैन्क का मनीआर्डर करता आए। उसने यह भी बताया कि वह हर महीने अपनी बहन को मनीआर्डर भेजता है। फिर जब ग्रान्द कमरे से बाहर जाने लगा तो कोतार्द ने उसे वापस बुलाकर कहा—

"नहीं, उसे दो सौ फ्रान्क भेज दो। उसे 'प्लेज़ेंट सरप्राइज़' होगा। उसका ख़याल है कि मैं उसके बारे में कभी सोचता भी नहीं। लेकिन सच यह है कि मैं उसे बहुत चाहता हूँ।"

कुछ दिनों बाद उसने बातचीत के दौरान ग्रान्द से कुछ विचित्र बातें कहीं। उसने खोद-खोदकर ग्रान्द को यह बताने के लिए मजबूर कर दिया था कि वह अपनी सारी शाम किस रहस्यमय 'निजी काम' में लगाया करता है।

"मुझे मालूम है!" कोतार्द ने विस्मयबोधक स्वर में कहा, "तुम कोई किताब लिख रहे हो, बोलो नहीं लिख रहे?"

"हाँ, कुछ ऐसी ही चीज़ है, लेकिन बात इतनी आसान नहीं है।"

"आह!" कोतार्द ने ठंडी साँस भरकर कहा, "काश, मुझे भी लिखने का अभ्यास होता!"

ग्रान्द ने जब इस पर आश्चर्य प्रकट किया तो कोतार्द ने कुछ हिचकिचाते हुए कहा कि साहित्यिक व्यक्ति होने से 'कई बातों में' बड़ी सहूलियत हो जाती होगी।"

"सो क्यों?" ग्रान्द ने पूछा।

"सो क्यों? क्योंकि एक लेखक को साधारण लोगों से कहीं ज़्यादा अधिकार प्राप्त होते हैं, यह सभी जानते हैं। लोग उसकी बहुत सी बातों को बरदाशत कर लेते हैं।"

जिस दिन सरकारी इश्तहार चिपकाये गए थे, उस दिन सुबह के वक्त रियो ने ग्रान्द से कहा, "लगता है कि चूहों के इस क़िस्से ने उसके दिमाग़ को झकझोर दिया है, जैसा कि और बहुत से लोगों के साथ हुआ है। या शायद 'बुख़ार' का आतंक उस पर छा गया है।"

"इसमें मुझे शक है, डॉक्टर! अगर आप मेरी राय जानना चाहते हैं तो वह..."

ग्रान्द अचानक रुक गया। इसी वक्त नज़दीक से 'चूहों का नाश' करने वाली गाड़ी खड़खड़ाती हुई गुज़री जिसकी भाप की नली से मशीनगन-जैसी तड़-तड़ की आवाज़ आ रही थी। रियो ख़ामोश रहा। जब यह शोर कम हुआ तो उसने उत्सुकता दिखाए बग़ैर ग्रान्द से उसकी राय पूछी।

"वह ऐसा आदमी है जिसकी अन्तरात्मा पर किसी गम्भीर गुनाह का बोझ है।" ग्रान्द ने गम्भीरता से जवाब दिया।

डॉक्टर ने अपने कंधे सिकोड़ लिए। इन्स्पेक्टर ने कहा था कि उसे और भी कई काम हैं।

उस दिन तीसरे पहर रियो ने कास्तेल से फिर बात की। प्लेग के टीके अभी तक नहीं आए थे।

"टीके अगर आ भी जाएँ तो उनसे शायद ही कोई फ़ायदा निकले," रियो ने कहा, "यह कीटाणु अजब क़िस्म का है..."

"इस बारे में मैं तुमसे सहमत नहीं हूँ," कास्तेल बोला, "ये नन्हें ज़ालिम अपने व्यवहार में हमेशा मौलिकता दिखाते हैं। लेकिन बुनियादी तौर पर, कीटाणु वही पुराना होता है।"

"खैर यह तुम्हारी थ्योरी है। लेकिन सच बात यह है कि हम लोग इस बारे में क़तई कुछ नहीं जानते।"

"माना कि यह मेरी थ्योरी है, फिर भी यह सब पर लागू होती है।"

सारे दिन डॉक्टर को यह एहसास बना रहा कि प्लेग का ख़याल आते ही उसके मन में कुछ हैरानी की जो भावना उठती है वह लगातार गहरी होती जा रही है। आख़िरकार उसे महसूस हुआ कि इसका क्या मतलब है, सिर्फ़ यह कि वह डर गया है। दो बार वह भीड़ों से भरे कॉफ़ी-हाउसों के भीतर घुसा। कोतार्द की तरह उसे भी दोस्ताना सम्पर्क, मानवीय गरमाई की ज़रूरत महसूस हुई। यह एक मूर्खतापूर्ण मनोवृत्ति है, रियो ने अपने-आप से कहा। फिर भी इसने उसे याद दिला दी कि उसने कोतार्द से मिलने का वायदा किया था।

डॉक्टर उस दिन शाम को जब उसके कमरे में दाख़िल हुआ, तब कोतार्द खाने की मेज़ के पास खड़ा था। मेज़पोश पर एक जासूसी कहानी खुली पड़ी थी। चूँकि रात हो रही थी, इसलिए बढ़ते हुए अँधेरे में पढ़ सकना मुश्किल रहा होगा। सम्भव है कि कोतार्द बैठा, गोधूलि की बेला में, कुछ सोच रहा होगा, जब उसने दरवाज़े की घंटी बजाई थी। रियो ने उसकी तबीअत का हाल पूछा। कोतार्द ने बैठते हुए चिड़चिड़े स्वर में कहा कि

उसकी तबीअत काफ़ी अच्छी है, लेकिन अगर उसे विश्वास हो जाए कि उसे अकेला शान्तिपूर्वक रहने दिया जाएगा तो उसकी तबीअत और भी अच्छी हो जाएगी। रियो ने कहा कि आदमी हमेशा अकेला नहीं रह सकता।

"मेरे कहने का यह मतलब नहीं है। मैं उन लोगों के बारे में सोच रहा था जो आपके लिए मुसीबतों के बीज बोने के लिए ही आपमें दिलचस्पी दिखाते हैं।"

जब रियो ने इस पर कुछ न कहा तो उसने अपनी बात जारी रखी, "याद रखिए, मैं अपनी बात नहीं कर रहा। बात यह है कि मैं उस जासूसी कहानी को पढ़ रहा था। यह एक अभागे आदमी की कहानी है, जिसे अचानक एक दिन सुबह गिरफ़्तार कर लिया जाता है। कुछ लोग उसमें दिलचस्पी लेने लगे थे और उसे इसका पता भी नहीं था। वे दफ़्तरों में उसकी चर्चा करते रहते थे और कार्डों पर उसका नाम लिखने लगे थे। आपके ख़याल में क्या यह ठीक है? आपके ख़याल में क्या लोगों को किसी आदमी के साथ ऐसा बरताव करना चाहिए?"

"ख़ैर यह तो बहुत सी बातों पर निर्भर करता है," रियो ने कहा, "एक माने में मैं तुमसे सहमत हूँ, किसी को ऐसा करने का अधिकार नहीं है। लेकिन ये सब फ़ालतू बातें हैं। तुम्हारे लिए सबसे ज़रूरी बात यह है कि तुम्हें टहलने के लिए बाहर जाना चाहिए। इतनी देर तक घर में बंद रहना ग़लत है।"

कोतार्द चिढ़-सा गया और बोला कि ज़रूरत पड़ने पर वह अक्सर बाहर जाता रहता है। सड़क के सभी लोग उसकी गवाही दे सकते हैं। इतना ही नहीं, वह शहर के और हिस्सों के बहुत सारे लोगों को भी जानता है।

"क्या तुम मोशिए रिगो को भी जानते हो? वह मेरा दोस्त है।"

कमरे में इस वक्त अँधेरा छाया था। बाहर, सड़क पर, शोरगुल बढ़ता जा रहा था और जब सड़क की सारी बत्तियाँ एक साथ ही जल उठीं, तब जैसे राहत की एक कलकल ध्वनि ने बत्तियों का स्वागत किया। रियो बालकनी पर आ गया। कोतार्द भी उसके पीछे-पीछे आया। किनारे के

मुहल्लों से, जैसा कि हमारे शहर में हर शाम को होता है, हल्की वायु के झोंके, कलरव की आवाज़ें, भुनते हुए गोश्त की खुशबू और दुकानों और दफ्तरों से छुट्टी पाकर सड़कों पर चलने वाले नौजवानों की खुश और महकती हुई भीड़ों का शोर बहाकर ले आते थे। रात के पहले घण्टे में अदृश्य जहाज़ों के भोंपुओं के गहरे दूरागत स्वर, समुद्र से आने वाले कलरव और हर्षोन्मत्त भीड़ों के शोरगुल में रियो को हमेशा एक खास सौन्दर्य नज़र आता था, लेकिन आज उसे लगा जैसे इस वातावरण में भयानक संकट की गूँज भरी हो, क्योंकि अब उसे बहुत सी बातों का ज्ञान हो चुका था।

"क्यों न हम भी बत्तियाँ जला लें !" जब वे कमरे में लौटे तो उसने कोतार्द से कहा।

बत्ती जलाने के बाद उस छोटे कद के आदमी ने चौंधियाती हुई आँखों से उसकी ओर टकटकी बाँधकर देखा।

"डॉक्टर, मुझे एक बात बताइए। अगर मैं बीमार पड़ जाऊँ तो क्या आप मुझे अस्पताल में अपने वार्ड में दाखिल कर लेंगे ?"

"क्यों नहीं ?"

कोतार्द ने तब पूछा कि क्या कभी ऐसा हुआ है कि नर्सिंग-होम में पड़े आदमी को भी गिरफ्तार कर लिया गया हो ? रियो ने उत्तर दिया कि ऐसा होना नामुमकिन नहीं है, लेकिन यह सब मरीज़ की हालत पर निर्भर करता है।

"आप जानते हैं, डॉक्टर," कोतार्द ने कहा, "कि मुझे आप पर पूरा विश्वास है।" फिर उसने डॉक्टर से पूछा कि क्या वह उसे अपनी कार में 'लिफ्ट' दे सकेगा, क्योंकि वह भी शहर तक जा रहा था।

इस वक्त तक शहर के केन्द्र में लोगों की भीड़ छँटने लगी थी और बत्तियाँ कम होने लगी थीं। घरों के दरवाजों के सामने बच्चे खेल रहे थे। कोतार्द के आग्रह पर डॉक्टर ने बच्चों के एक समूह के सामने कार रोक दी। वे कीड़ी-काड़ा खेल रहे थे और बेहद शोर मचा रहे थे। उनमें से एक मटमैले चेहरे वाले लड़के ने, जिसके बाल करीने से कढ़े और साफ़ थे, चमकती, साहसी आँखों से रियो की ओर कठोरतापूर्वक घूरकर देखा। डॉक्टर

ने अपनी नज़र फेर ली। फुटपाथ पर खड़े होकर कोतार्द ने उससे हाथ मिलाया। फिर उसने रूखी आवाज़ में, उसके कंधों पर घबराहट-भरी दृष्टि से देखते हुए कहा—

"हर आदमी किसी महामारी की जर्चा कर रहा है। क्या इस बात में कुछ सचाई है, डॉक्टर ?"

"लोग तो चर्चा करते ही रहते हैं। उनसे ऐसी ही उम्मीद की जाती है।" डॉक्टर ने उत्तर दिया।

"आप ठीक कहते हैं। अगर हमारे यहाँ दस मौतें हो जाएँ तो वे सोचेंगे कि क़यामत का दिन आ गया है। लेकिन यहाँ हमें उसकी ज़रूरत नहीं।"

कार का इंजन घरघरा रहा था। रियो का हाथ गीयर की मूँठ पर था। लेकिन वह दोबारा उस लड़के की ओर देख रहा था जो अभी तक उसकी ओर एक विचित्र गंभीरता से टकटकी बाँधे घूर रहा था। एकाएक, अप्रत्याशित रूप से, अपनी दन्तावलि खोलकर वह बालक मुस्करा दिया।

"क्या कहा ? तो हमें किस चीज़ की ज़रूरत है ?" रियो भी बच्चे की तरफ़ देखकर मुस्कराया।

एकाएक कोतार्द ने कार का दरवाज़ा ज़ोर से पकड़ लिया और फिर जाने से पहले, क्रुद्ध आवेशपूर्ण स्वर में चिल्लाया।

"भूचाल चाहिए, बहुत बड़ा भूचाल—जो हर चीज़ को तोड़-फोड़ डाले !"

भूचाल नहीं आया था, और अगला सारा दिन, जहाँ तक रियो का सम्बन्ध है, कार लेकर शहर के कोने-कोने में दौड़ने, बीमारों के परिवारों को मशविरा देने और ख़ुद बीमारों से बहस करने में गुज़र गया। अपने पेशे की ज़िम्मेदारियों का इतना भार रियो पर पहले कभी नहीं पड़ा था। अब तक उसके मरीज़ उसकी ज़िम्मेदारियों को हल्का करने में मदद देते आए थे। वे ख़ुशी से अपने-आपको उसके हाथों में सौंप देते थे। अब पहली बार डॉक्टर ने महसूस किया कि वे जैसे तटस्थ हों; एक हैरत में डालने वाली दुश्मनी की भावना से अपनी बीमारी के आवरण में जैसे अपने-आपको बन्द रखते हों। यह एक ऐसा संघर्ष था, जिसका वह अभी आदी नहीं हो सका

था। और जब, रात के दस बजे अपनी आखिरी विज़िट के लिए उसने अपने पुराने दमा के मरीज़ के घर के आगे कार खड़ी की, तब उसके लिए अपनी सीट से उठ पाना भी मुश्किल हो रहा था। कुछ क्षण तक वह बैठा अँधेरी सकड़ के ऊपर काले आकाश में तारों का टिमटिमाना देखता रहा।

रियो जब कमरे में दाखिल हुआ, तो बूढ़ा बिस्तर में बैठकर हमेशा की तरह एक पतीले में से सूखे मटर गिनकर दूसरे पतीले में डाल रहा था। आगन्तुक को देखकर बूढ़े ने प्रसन्न और पुलकित होकर कहा—

"कहो डॉक्टर, शहर में हैज़ा फैल गया है न ?"

"यह खयाल तुम्हारे दिमाग़ में कैसे आया ?"

"अखबार में यह खबर छपी है और रेडियो से भी यही मालूम हुआ।"

"नहीं, हैज़ा नहीं फैला।"

"खैर जो भी हो।" बूढ़ा उत्तेजित होकर अपने कंठ में हँसा। "मैंने सुना है मोटे-मोटे खटमलों ने आफ़त मचा दी है। वे पागल हो गए हैं न !"

"इन बातों पर बिलकुल यक़ीन मत करो।" डॉक्टर ने कहा।

बूढ़े की जाँच के बाद डॉक्टर गन्दे और छोटे डाइनिंग-रूम में बैठा था। हाँ, उसने जो भी कहा था उसके बावजूद वह आतंकित था। वह जानता था कि अकेली इस बस्ती में ही आठ-दस आदमी सूजी गिल्टियों की पीड़ा से चीखते हुए कल सबेरे उसकी विज़िट की प्रतीक्षा करते होंगे। दो-तीन केसों में ही गिल्टियों के चीरने से मामूली-सा फ़ायदा हुआ था। ज़्यादातर मरीज़ों को अस्पताल में भरती होना होगा और उसे मालूम था कि अस्पतालों के बारे में ग़रीब लोग कैसा महसूस करते हैं। "मैं नहीं चाहती कि वे लोग मेरे पति पर अपने प्रयोग करें," एक मरीज़ की बीवी ने उससे कहा था। लेकिन दरअसल उस पर प्रयोग नहीं किए जाएँगे; वह मर जाएगा, बस इतनी-सी बात है। जो हिदायतें लागू की गई थीं, वे पर्याप्त नहीं थीं, यह तो साफ़ ज़ाहिर था। जहाँ तक 'विशेष व्यवस्था वाले वार्डों' का ताल्लुक है, उनकी हक़ीक़त भी उससे छिपी नहीं थी—दो इमारतें थीं, जिनमें से मरीज़ों को जल्दी में हटा दिया गया था, जिनकी

खिड़कियाँ कसकर बन्द कर दी गई थीं और जिनके चारों ओर सिपाही तैनात करके लोगों को अन्दर आने की मनाही कर दी गई थी। उनको सिर्फ़ एक ही उम्मीद थी कि बीमारी अपने-आप खत्म हो जाएगी। कम-से-कम यह तो निश्चित ही था कि अधिकारियों ने बीमारी का मुक़ाबला करने के लिए जो क़दम उठाए थे, उनसे वह रोकी भी नहीं जा सकती थी।

फिर भी उस रात को सरकारी विज्ञप्ति और भी ज़्यादा आशापूर्ण थी। अगले दिन 'रैन्सडॉक' ने घाषणा की कि स्थानीय अधिकारियों ने जो नियम लागू किए थे, उनका सार्वजनिक स्वागत हुआ है और इस वक्त तक तीस केसों की इत्तिला पहुँच चुकी है। कास्तेल ने रियो को फ़ोन किया।

"स्पेशल वार्डों में कितने बेड हैं ?"

"अस्सी !"

"तब तो निश्चय ही शहर-भर के तीस केसों से तो कहीं ज्यादा हैं न ?"

"यह मत भूलो कि दो तरह के मरीज़ होते हैं—एक वे जो घबरा जाते हैं और दूसरे वे—जिनकी संख्या कहीं ज़्यादा होती है—जिन्हें घबराने का भी वक्त नसीब नहीं होता।"

"हूँ, यह बात है। क्या इसकी जाँच की गई है कि कितने लोग दफ़नाए जा रहे हैं ?"

"नहीं। मैंने फ़ोन पर रिचर्ड से कहा था कि शक्तिशाली क़दम उठाये जाने चाहिएँ, सिर्फ़ लफ्ज़ों से ही काम नहीं लेना चाहिए। हमें बीमारी के खिलाफ़ एक मज़बूत घेरा डालना चाहिए, नहीं तो हमारा सब करना-धरना बेकार है।"

"अच्छा ! और उसने क्या कहा ?"

"कुछ नहीं किया जा सकता। उसके पास इतने अधिकार नहीं हैं, वग़ैरह, वग़ैरह। मेरी राय में हालत बिगड़ती जाएगी।"

और यही हुआ भी। तीन दिन के भीतर दोनों स्पेशल वार्ड पूरे भर गए। रिचर्ड की बात से मालूम हुआ कि किसी स्कूल को अधिकार में लेकर वहाँ एक सहायक अस्पताल खोलने की बात चल रही है। इस बीच रियो

सूजी हुई गिल्टियों में नश्तर लगाता रहा और प्लेग के टीकों के आने की प्रतीक्षा करता रहा। कास्तेल अपनी पुरानी पुस्तकों के अध्ययन में जुट गया और पब्लिक-लाइब्रेरी में घंटों गुज़ारने लगा।

"ये चूहे प्लेग से ही मरे थे," अपने अध्ययन से वह इस नतीजे पर पहुँचा, "या फिर किसी बिलकुल प्लेग-जैसी ही चीज़ से। और उन्होंने शहर में लाखों पिस्सू पैदा करके छोड़ दिए हैं, जो इस रोग की छूत को तेज़ी से फैला देंगे, अगर ठीक वक्त पर रोकथाम न की गई।"

रियो चुप रहा।

इन्हीं दिनों मौसम फिर अच्छा हो गया था और सूरज की किरणों ने पिछली बारिश के गढ़ों को बिलकुल सुखा दिया था। हर सुबह नीला, प्रशान्त आकाश सूर्य की सुनहली किरणों से भर जाता था और कभी-कभी बढ़ती हुई गरमी के बीच हवाई जहाज़ों की आवाज़ें सुनाई देने लगी थीं। लगता था कि दुनिया में फिर खुशी छा गई है। लेकिन अगले चार दिनों में ही बुखार में चौंकाने वाली प्रगति हुई थीं—पहले दिन सोलह, फिर चौबीस, अट्ठाईस और बत्तीस मौतें हुई थीं। चौथे दिन शिशुओं के एक स्कूल के भीतर सहायक अस्पताल खोले जाने की घोषणा की गई। नगर-वासी अब तक नुक्ताचीनी करके अपनी घबराहट को छिपाते आए थे, लेकिन अब जैसे उनकी बोलती बन्द हो गई थी और वे उदास चेहरे लिये अपने कामों पर जा रहे थे।

रियो ने प्रीफ़ेक्ट को फ़ोन करने का निश्चय किया।

"स्थिति को देखते हुए ये नियम और पाबन्दियाँ कारगर साबित नहीं हो रहीं।"

"दुरुस्त," प्रीफ़ेक्ट ने उत्तर दिया। "मैंने आँकड़ों पर ग़ौर किया है, और जैसा कि तुम्हारा कहना है ये आँकड़े बहुत चिन्ताजनक हैं।"

"सिर्फ़ चिन्ताजनक ही नहीं, उनसे निश्चत निष्कर्ष निकाला जा सकता है।"

"मैं सरकार से आदेश जारी करने की माँग करूँगा।"

कास्तेल से जब रियो अगली बार मिला तब भी उसके कानों में

प्रीफ़ेक्ट के शब्द खटक रहे थे।

"आदेश!" उसने नफ़रत से कहा, "जब कि जरूरत आदेशों की नहीं कल्पना की है।"

"टीकों के आने की कोई खबर है?"

"इस हफ़्ते तक आ जाएँगे।"

प्रीफ़ेक्ट ने रिचर्ड की मार्फ़त रियो को हिदायत भेजी कि उपनिवेश के केन्द्रीय प्रशासन के पास भेजे जाने के लिए वह वक्तव्य तैयार करके दे जिसमें क्लिनिकल जाँच-पड़ताल और महामारी के आँकड़ों को भी शामिल करे। उस दिन चालीस मौतों की इत्तिला मिली थी। प्रीफ़ेक्ट ने कहा था कि वह नये और कड़े प्रतिबन्धों और नियमों के लागू करने की ज़िम्मेदारी खुद अपने ऊपर ले रहा है। इनके अनुसार बुखार के हर केस की रिपोर्ट करना और उनको सख़्ती से परिवार से अलग रखना एकदम ज़रूरी क़रार दे दिया गया। यह भी ज़रूरी कर दिया गया कि बीमारों के घरों को बन्द कर दिया जाए और दवाई छिड़ककर उनके कीटाणु मारे जाएँ। उन घरों में रहने वाले बाकी सभी लोगों को चालीस दिन के लिए अलग जा बसने के लिए कहा गया। मुर्दों को दफ़नाने की क्रिया स्थानीय अधिकारों की देख-रेख में ही होनी चाहिए, इसका आदेश जारी किया गया—किस ढंग से इसका वर्णन बाद में किया जाएगा। अगले दिन हवाई जहाज़ से प्लेग के टीके आ गए। ये टीके तत्काल की ज़रूरतें पूरी करने के लिए तो काफ़ी थे, लेकिन महामारी अगर फैली तो वे पर्याप्त नहीं थे। रियो के तार के जवाब में उसको सूचना दी गई कि आकस्मिक ज़रूरत के लिए टीकों का जो स्टॉक था वह सारा-का-सारा भेज दिया गया है, लेकिन और टीके तैयार किये जा रहे हैं।

इस बीच पड़ोस की बस्तियों से वसन्त का मौसम हमारे शहर में प्रवेश कर रहा था। बाज़ारों और सड़कों पर फेरी लगाने वाले पुष्प-विक्रेताओं की टोकरियों में गुलाब के हज़ारों फूल मुरझाए जा रहे थे और शहर की हवा उनकी भीनी गन्ध से भाराक्रान्त हो रही थी। ऊपर से देखने पर यह वसन्त भी और वर्षों के वसन्त-जैसा ही था। काम के घण्टों में ट्राम-गाड़ियाँ

हमेशा की ही तरह भरी रहती थीं और बाक़ी वक्त ख़ाली और गन्दी दिखाई देती थीं। तारो उस छोटे-से बुड्ढे को ग़ौर से देखता रहता था और वह छोटा-सा बुड्ढा बिल्लियों पर थूकता रहता था। ग्रान्द दफ़्तर का काम ख़त्म करके रोज़ की तरह शाम को अपने 'रहस्यपूर्ण कार्य' में जुटने के लिए लपकता हुआ घर की ओर बढ़ता था। कोतार्द अपने ढर्रे पर ही चलता जा रहा था और मैजिस्ट्रेट ओथों अपने कुत्ते को लेकर टहलता था। स्पैनिश बूढ़ा उसी तरह अपनी मटरों को एक पतीले में से दूसरे पतीले में उलटता रहता था और कभी-कभी वह पत्रकार रैम्बर्त भी दिखाई पड़ जाता था जो हमेशा की तरह जिस चीज़ को भी देखता था उसमें दिलचस्पी दिखाने लगता था। शाम के वक्त पुराने चेहरे सड़कों पर घूमते नज़र आते थे और सिनेमाघरों के सामने टिकट ख़रीदने वालों की क़तारें लम्बी होती जाती थीं। इसके अलावा ऐसा लगता था कि महामारी का ज़ोर अब घटने लगा है। किसी-किसी दिन तो दस-बारह से अधिक मौतों की सूचना प्रकाशित नहीं होती थी। लेकिन फिर एकाएक मौतों की संख्या एकदम बढ़ गई। जिस दिन यह संख्या तीस तक पहुँची, प्रीफ़ेक्ट ने डॉक्टर रियो को एक तार पढ़ने के लिए दिया और कहा, "तो अब लगता है वे लोग भी घबरा उठे हैं—आख़िरकार।" तार में लिखा था : **'प्लेग फैलने की घोषणा कर दो। शहर के फाटक बन्द कर दो।'**

दूसरा भाग

१

इसके बाद से, कहा जा सकता है कि प्लेग हम सबकी चिन्ता का विषय बन गई थी। अब तक अपने गिर्द होने वाली विचित्र घटनाओं से कोई कितना भी हैरान क्यों न रहा हो, लेकिन हर व्यक्ति जहाँ तक कि सम्भव था, बदस्तूर अपने काम-धन्धे में लगा हुआ था। और इसमें भी शक नहीं कि वह इसी तरह करता चलता। लेकिन एक बार जब बाहर के द्वार बन्द कर दिये गए, तो कथाकार-समेत हममें से हर व्यक्ति ने महसूस किया कि अब हम सब एक ही नाव पर सवार हैं और हममें से हरेक को जीवन की नयी परिस्थितियों के मुताबिक अपने को ढालना पड़ेगा। इस तरह, मिसाल के लिए अपने प्रियजनों से बिछुड़ने की पीड़ा-जैसी एकदम निजी अनुभूति एकाएक एक ऐसी सार्वजनिक अनुभूति बन गई थी, जिसमें सभी सहभागी थे और भय के साथ-साथ यह निर्वासन के आने वाले लम्बे काल-सी सबसे गहरी यन्त्रणा देने वाली अनुभूति बन गई थी।

फाटकों के बन्द होने का सबसे बड़ा नतीजा यह हुआ कि लोग अचानक-एक दूसरे से बिछुड़ गए। वे इस आकस्मिक घटना के लिए बिलकुल तैयार नहीं थे। माताएँ और बच्चे, प्रेमी, पति और पत्नियाँ, जिन्हें कुछ दिन पहले पक्का यही था कि वे कुछ ही दिनों के लिए एक-दूसरे से बिछुड़ रहे हैं, जिन्होंने प्लेटफार्म पर एक-दूसरे को चूमकर विदाई ली थी और इधर-उधर की मामूली बातें की थीं, उन्हें यक़ीन था कि कुछ दिनों या ज़्यादा-से-ज़्यादा कुछ हफ़्तों बाद वे फिर मिलेंगे, निकट भविष्य में अन्धी मानवीय आस्था से वे ठगे गए थे। विदाई के बाद भी उनकी जीवनचर्या

में कोई खास फ़र्क नहीं आया था, लेकिन बिना किसी चेतावनी के अब वे अपने को असहाय रूप से एक-दूसरे से दूर पा रहे थे। वे न एक-दूसरे से मिल सकते थे, यहाँ तक कि एक-दूसरे से पत्र-व्यवहार भी नहीं कर सकते थे। दरअसल जनता को सरकारी हुक्म की ख़बर होने में कुछ घंटे पहले ही फाटक बन्द हो चुके थे। ज़ाहिर था कि किसी भी व्यक्ति की तकलीफ़ पर कोई ध्यान नहीं दिया जा सकता था। यह ज़रूर कहा जा सकता है कि इस भयानक महामारी का सबसे पहला असर यह हुआ कि हमारे शहर के लोग इस तरह से आचरण करने को मजबूर हो गए जैसे उनमें व्यक्तिगत भावनाएँ थीं ही नहीं। उस दिन जब हुक्म जारी हुआ कि कोई भी शहरी शहर से बाहर न जाए, दोपहर से पहले ही प्रीफ़ेक्ट के दफ़्तर में प्रार्थियों की भीड़ लग गई। सबके पास शहर छोड़ने के अकाट्य तर्क मौजूद थे, लेकिन किसी की अरज़ी पर भी ग़ौर नहीं किया जा सकता था। हमें इस बात का पूरा एहसास कुछ दिनों के बाद हुआ कि हम एकदम संकट में घिर गए थे और 'विशेष प्रबन्ध', 'मेहरबानी' और 'तरजीह' शब्द बिलकुल बेमानी हो गए थे।

यहाँ तक कि हमें पत्र लिखने के संतोष से भी वंचित कर दिया गया था, यानी अब हालत यह हो गई थी। न सिर्फ़ हमारे शहर का बाहर की दुनिया से सम्बन्ध टूट गया था, बल्कि एक नये हुक्म के मुताबिक सारा पत्र-व्यवहार बन्द कर दिया गया था ताकि ख़तों के ज़रिये से प्लेग की छूत शहर से बाहर न चली जाए। शुरू के दिनों में कुछ लोगों ने, जिनकी पहुँच थी, संतरियों को राज़ी कर लिया था कि वे फाटक से बाहर की दुनिया को संदेश भेज सकें। लेकिन यह तो महामारी के शुरू के दिनों की बात है जब संतरी अपनी मानवीय भावनाओं के अनुसार चलना स्वाभाविक समझते थे। बाद में जब इन्हीं संतरियों को स्थिति की भयंकरता से अवगत कराया गया तो उन्होंने किसी भी ऐसे काम की ज़िम्मेदारी लेने से इन्कार कर दिया जिसका कोई भी भयंकर नतीजा निकल सकता था। शुरू में तो दूसरे शहरों में टेलीफ़ोन करने की इजाज़त थी, लेकिन सरकारी टेलीफ़ोनों के गिर्द लोगों की इतनी भीड़ जमा होने लगी और लाइन मिलने

में इतनी देरी होने लगी कि बाद में अधिकारियों ने इस पर भी रोक लगा दी और इसके बाद मृत्यु, शादी या बच्चा पैदा होने की सूचना देने तक ही, जिन्हें वे 'अर्जेन्ट केस' कहते थे, टेलीफ़ोन का उपयोग सीमित कर दिया गया। तब हम लोगों को टेलीग्राम का आश्रय लेना पड़ा। गहरी मित्रता, स्नेह या शारीरिक प्रेम से जो लोग जुड़े हुए थे, उन्हें तार के दस शब्दों की सीमा में ही अपने पुराने सम्बन्धों की निशानी खोजनी पड़ती थी। और चूँकि, व्यवहारत:, टेलीग्राम में कुछ इने-गिने शब्द ही भेजे जा सकते हैं, दीर्घ-कालीन जीवन सम्बन्ध या आवेगपूर्ण आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति कुछ हल्के और टकसाली शब्दों तक ही सिमटकर रह गई, जैसे "स्वस्थ हूँ। हमेशा तुम्हारे बारे में सोचता रहता हूँ। प्यार।"

फिर भी हममें से कुछ लोग ख़त लिखने में लगे रहे और बाहर की दुनिया से सम्पर्क स्थापित करने के लिए तरह-तरह की योजनाएँ बनाने में काफ़ी वक्त गुज़ारने लगे। लेकिन ये तरकीबें कभी कामयाब न हो पातीं, अगर किसी ख़ास मौक़े पर वे कामयाब हो जाती होंगी, तो भी हमें इसका पता नहीं चलता था, क्योंकि बाहर से कोई जवाब नहीं आता था। नौबत यहाँ तक पहुँची कि हम लोग हफ्तों तक अपने लिखे एक ही ख़त को बार-बार टकटकी बाँधकर देखने लगे, एक-सी ही ख़बरों या निजी आग्रहों को बार-बार नक़ल करके लिखने लगे। इसका नतीजा यह हुआ कि जिन सजीव शब्दों में हमने अपने हृदय का सारा रक्त उँडेल दिया था, वे एकदम निरर्थक हो गए। इसके बाद हम यंत्रवत् उनको बार-बार नक़ल करके उन निर्जीव शब्दों के ज़रिये अपनी मुसीबतों का हाल बयान करने की कोशिश करते रहे। आख़िरकार, इन बेमानी, बार-बार दुहराये गए एकान्त वक्तव्यों, कोरी दीवार से बातें करने की बेकार कोशिशों से तो टेलीग्राम के नपे-तुले क्षुद्र फ़ारमूले ही ज़्यादा अच्छे लगने लगे।

इसके अलावा कुछ दिनों बाद—जब यह साफ़ ज़ाहिर हो गया कि कोई भी हमारे शहर से बाहर निकलकर जाने की उम्मीद नहीं कर सकता—लोगों ने यह पूछताछ शुरू कर दी कि जो व्यक्ति महामारी फैलने से पहले बाहर चले गए थे, क्या उन्हें फिर वापस आने की इजाज़त दी जा सकेगी?

कुछ दिनों तक विचार करने के बाद अधिकारियों ने 'हाँ' में उत्तर दिया। लेकिन उन्होंने बताया कि लौटकर आने वाले लोगों को फिर किसी भी अवस्था में दोबारा शहर छोड़कर बाहर जाने की इजाज़त नहीं दी जाएगी; उन्हें हर हालत में फिर यहीं रहना पड़ेगा। कुछ परिवारों ने, जिनकी संख्या कम थी इस बात को महत्त्व नहीं दिया और अपने परिवार के ग़ैरहाज़िर सदस्यों से मिलने की जल्दी में, विवेक को ताक पर रखकर, तार भेज दिए कि वे वापस लौटने के इस मौक़े से फ़ौरन फायदा उठाएँ। लेकिन जल्द ही प्लेग के इन कैदियों ने महसूस किया कि ऐसा करने से उनके रिश्तेदारों की जान भी कितने ख़तरे में पड़ जाएगी और उन्होंने दुखी मन से उनकी ग़ैर-मौजूदगी को झेलना क़बूल कर लिया। जिन दिनों प्लेग अपने पूरे ज़ोर पर थी, उन दिनों हमने सिर्फ़ एक ही ऐसा केस देखा जिसमें प्राकृतिक भावनाओं ने एक दुखदायी रूप में मौत के डर से क़ाबू पाने की कोशिश की थी। जैसी आशा की जा सकती है, यह दो नौजवान प्रेमियों का केस नहीं था, जिनके भावुक और जोशीले प्रेम ने हर तरह की पीड़ा की क़ीमत चुकाकर भी एक-दूसरे की निकटता पाने की आकांक्षा को दुर्दमनीय बना दिया हो। ये दोनों डॉक्टर कास्तेल और उनकी पत्नी थीं और उनकी शादी को बहुत साल हो चुके थे। प्लेग फैलने से कुछ ही दिन पहले मदाम कास्तेल नज़दीक के एक शहर में किसी से मिलने के लिए गई थीं। उनका दार्बी और जोन-जैसा आदर्श विवाहित जोड़ा भी नहीं था; बल्कि, कथाकार के पास यह कहने का आधार है कि सम्भवतः डॉक्टर कास्तेल और उनकी पत्नी, इन दोनों को यह विश्वास नहीं था कि अपनी शादी से उन्हें वह सब प्राप्त हुआ है जिसकी कामना की जा सकती है। लेकिन इस निरंकुश, लम्बे वियोग ने उन्हें यह महसूस करने का मौक़ा दिया कि वे एक-दूसरे से अलग नहीं रह सकते, और इस चेतना की आकस्मिक दीप्ति में उन्हें प्लेग का ख़तरा नगण्य दिखाई दिया।

यह एक अपवाद था। अधिकांश लोगों के आगे यह साफ़ था कि महामारी के ख़त्म होने तक उनका वियोग ज़रूरी है। और हममें से हरेक को लगा कि उसके जीवन की सबसे बड़ी भावना ने—जिसके बारे में उसका

ख़याल था कि वह बख़ूबी जानता है (हम पहले ही कह चुके हैं कि ओरान के लोगों की भावनाएँ बड़ा सरल हैं)—एक नया ही रूप धारण कर लिया। ऐसे पति, जिनको अपनी पत्नियों पर पूरा विश्वास था, यह देखकर हैरान रह गए कि वे खुद भी उतने ही वफ़ादार बन गए थे और प्रेमियों को भी ऐसा ही अनुभव हुआ। जो पुरुष डॉन जुआन बनने की कल्पना किया करते थे, वफ़ादारी की मिसाल बन गए थे। साथ रहते हुए जिन बेटों ने कभी अपनी माताओं के चेहरों की ओर आँख उठाकर देखना भी पसन्द नही किया था, अब स्मृति-पटल पर उनके अनुपस्थित चेहरों की हर झुर्री को हार्दिक वेदना से याद करते थे। इस कठोर और बेरहम जुदाई ने और भविष्य में हमारे लिए क्या वदा है, इसकी अज्ञानता ने हमें अचानक ही पकड़कर हक्का-बक्का कर दिया था और हम उन लोगों की खामोश आरज़ू-मिन्नतों के प्रति, जो अभी तक इतने नज़दीक थे, लेकिन भौतिक रूप से इतने दूर थे और जिनकी याद हमें दिन-रात सताया करती थी, किस तरह व्यवहार करें, यह नहीं समझ पा रहे थे। दरअसल, हमारी यंत्रणा दोहरी थी; एक तो अपनी और दूसरी उन ग़ैर-मौजूद बेटों, माताओं, बीवियों या प्रेमिकाओं की कल्पित यंत्रणा।

और परिस्थितियों में हमारे नगरवासी शायद अपनी क्रियाशीलता बढ़ाकर, सामाजिक जीवन में अधिक सक्रिय भाग लेकर अपनी घुटन दूर कर लेते। लेकिन प्लेग ने उनको निष्क्रिय बनने के लिए मजबूर कर दिया था, उनका घूमना-फिरना सिर्फ़ उस शहर की सीमा के भीतर ही बाँध दिया था और इस तरह उन्हें अपनी स्मृतियों के सहारे सन्तोष और राहत पाने के लिए विवश कर दिया। निरुद्देश्य सैर करते हुए वे बार-बार उन्हीं सड़कों पर पहुँच जाते थे जहाँ से कुछ देर पहले गुज़रे थे, और चूँकि शहर छोटा है, इसलिए ये अक्सर वे ही सड़कें होती थीं, जिन पर खुशी के दिनों वे उनके साथ घूमे थे जिनसे आजकल जुदा हो गए थे।

इस तहर प्लेग ने पहले हमें निर्वासन का दण्ड दिया। कथाकार को विश्वास है कि वह यह दावा कर सकता है कि सब लोगों को ऐसा ही एहसास हुआ था। खुद उसने तो यह महसूस किया ही था, उसके सारे

दोस्तों ने भी यह बात क़बूल की थी। इसमें शक नहीं कि यह निर्वासन की अनुभूति थी—अपने दिलों में शून्यता का वह संवेदन जिसने कभी हमारा साथ नहीं छोड़ा, गुज़रे ज़माने की याद करके उसमें खो जाने या फिर वक्त की रफ्तार को तेज़ कर देने की वह आकांक्षा और स्मृति के वे झोंके जो आग की चिनगारियों की तरह बदन में चुभते थे। हम लोग कभी-कभी अपनी कल्पना से खिलवाड़ भी करते रहते थे, इन्तज़ार में बैठ जाते थे कि शायद किसी के लौटकर आने की सूचना देने के लिए घण्टी अब बजने ही वाली है, या किसी की परिचित पग-ध्वनि ज़ीने पर अब सुनाई देने वाली है; लेकिन चाहे हम जान-बूझकर उस समय घर पर ही रह जाते हों, जिस वक्त शाम की गाड़ी से लौटने वाले यात्री आम तौर पर घर पहुँचते थे और चाहे हम एक क्षण के लिए यह भुला देते हों कि ट्रेनें अब चलती ही नहीं, फिर भी, ज़ाहिर है कि झूठमूठ विश्वास करने का यह खेल अधिक दिन तक नहीं चल सकता था। हमेशा कोई-न-कोई ऐसा मौक़ा आ जाता था जब हमें इस तथ्य का सामना करना पड़ जाता था कि आजकल सभी ट्रेनों का आना-जाना बन्द हो गया था। और फिर हमें एहसास हुआ कि यह वियोग अभी और जारी रहेगा, इसलिए भविष्य के साथ समझौता करने के अलावा हमारे पास कोई चारा न रहा। अर्थात् हम फिर अपने क़ैदखाने में लौट आए और अतीत के सिवा हमारे पास कुछ न रहा। अगर कुछ लोगों को भविष्य में रहने का प्रलोभन होता भी था तो उन्हें फ़ौरन यह ख़याल छोड़ देना पड़ता था—छोड़ने के लिए जैसे-तैसे मजबूर होना पड़ता था। जो अपने को कल्पना के हवाले कर देते हैं, वे ज़ख्मी हो जाते हैं।

सबसे बड़ी बात तो यह है कि हमारे शहर के लोग जल्द ही एक बात को भूल गए। यहाँ तक कि सार्वजनिक रूप से भी उन्होंने इसे व्यक्त नहीं किया। उनसे उम्मीद की जा सकती थी कि शायद वे अपने निर्वासन-काल का अनुमान लगाने की कोशिश करेंगे और इस आदत को जारी रखेंगे। उसकी वजह यह थी। जब घोर निराशावादियों ने कहा कि प्लेग छः महीने तक रहेगी, जब उन्होंने शोकपूर्ण छः महीने की कटुता का पहले से ही कल्पना में स्वाद चख लिया और बड़े कष्ट से अपने साहस को बरदाश्त की सीमा

तक पहुँचा दिया, आने वाले हफ़्तों और दिनों की लम्बी यातना में से गुज़-रने के लिए अपनी बची-खुची शक्तियों को भी एकत्रित कर लिया, जब ऐसा करने के बाद किसी दोस्त की बातचीत से या किसी अख़बार के लेख को पढ़कर उनके मन में एक असत आशंका या दूरदर्शिता कौंध जाती थी और उन्हें लगता था कि आखिर क्या कारण है कि महामारी छः महीने से ज़्यादा क्यों नहीं चलेगी ? एक साल या उससे भी ज़्यादा अरसे तक क्यों नहीं चल सकती ?

ऐसे क्षणों में उनके साहस, सहन-शक्ति और इच्छा-शक्ति इतनी जल्दी शिथिल पड़ जाती थी कि उन्हें लगता था कि वे ज़िन्दग़ी में कभी अपने को निराशा और अवसाद की दलदल में से नहीं निकाल पाएँगे जिसमें वे गिर गए थे। इसलिए वे कभी अपने को मुक्ति के दिन की कल्पना के लिए मज-बूर नहीं करते थे जिसके रास्ते में बहुत सी कठिनाइयाँ थीं। उन्होंने भविष्य में देखना भी छोड़ दिया था और अब हमेशा उनकी नज़रें अपने पैरों के नीचे की धरती पर रहती थीं। लेकिन इस बुद्धिमत्ता और अपनी दुर्दशा के साथ इस झूठे खेल की आदत से भी कोई नतीजा न निकला जैसा कि स्वाभा-विक ही था। क्योंकि स्मृतियों के खिंचाव से, जिसे वे बरदाश्त नहीं कर सकते थे, उन्होंने बचने की कोशिश की, इसलिए वे उन सुखद क्षणों की कल्पना से भी वंचित रह गए जिनके द्वारा वे मन-ही-मन भावी मिलन की तस्वीरें बनाकर प्लेग के विचारों से मुक्ति पा सकते थे। इस तरह इन ऊँची और नीची सतहों में वे ज़िन्दग़ी की धारा में बहते रहे। इसे जीना नहीं कहा जा सकता था। वे निष्प्रयोजन दिनों और ऊसर स्मृतियों के शिकार हो गए थे। वे उन भटकती हुई छायाओं की तरह थे जो सिर्फ़ अपने अवसाद की ठोस धरती पर जड़ पकड़कर ही मूर्त रूप धारण कर सकती थीं।

इसी तरह उन्हें सब क़ैदियों और निर्वासितों के असाध्य शोक का भी एहसास हुआ जिन्हें सदा ऐसी स्मृतियों के साथ रहना पड़ता है जो बेमानी होती हैं, यहाँ तक कि अतीत में भी जिनके बारे में वे लगातार सोचते रहते थे, सिर्फ़ पश्चात्ताप की अनुभूति थी। उनके अतीत में जो भी अपूर्णता रह ई थी वे कल्पना में उसकी कमी को उन मर्दों या औरतों के साथ मिलकर

पूरा कर देना चाहते थे जिनके लौटने की राह वे देख रहे थे। अपने सभी कामों में, यहाँ तक कि अपेक्षाकृत सुखद कामों में भी, वे क़ैदियों की-सी ज़िन्दगी बसर करते हुए भी अपने अनुपस्थित साथियों को शामिल करने का व्यर्थ प्रयास कर रहे थे। इस तरह उनकी ज़िन्दगी में हमेशा किसी-न-किसी बात की कमा रहती थी। अतीत के प्रति मन में वैर था, वर्तमान के प्रति अधीरता थी और लगता था जैसे किसी ने धोखे से हमारा भविष्य छीन लिया था। हमारी हालत उन क़ैदियों-जैसी थी जिन्हें इन्सान का इन्साफ़ या नफ़रत जेलों के सीख़चों में रहने के लिए मजबूर करती है। ऐसी स्थिति में उस असहनीय अवकाश से मुक्ति पाने का सिर्फ़ एक ही रास्ता था। वह यह कि कल्पना में ट्रेनों को दौड़ाया जाए और ख़ामोशी की रिक्तता को भरने के लिए दरवाज़े की घण्टी के बजने की कल्पना की जाए जो आजकल हठपूर्वक ख़ामोश रहती थी।

फिर भी अगर यह निर्वासन था, तो हम अधिकांश लोग अपने घर के भीतर ही निर्वासित थे। हालाँकि कथाकार को भी सबकी तरह ही निर्वासन झेलना पड़ रहा था, फिर भी उसे पत्रकार रेम्बर्त और उसके-जैसे अन्य लोगों की दुर्दशा नहीं भूली थी जिन्हें जीवन की सुख-सुविधाओं से और भी अधिक वंचित रहना पड गया था। वे मुसाफ़िर थे और प्लेग की वजह से वे जहाँ थे उन्हें वहीं रुकने के लिए मजबूर होना पड़ा था। वे अपने घरों और प्रियतमाओं से दूर थे। निर्वासितों में भी वे सबसे अधिक निर्वासित थे। सब लोगों की तरह वे भी समय के चक्र से त्रस्त थे और प्रतिक्षण इस विशाल आर विदेशी क़ैदख़ाने की दीवारों पर अपने सिर पटकते थे जिसने कोढ़ियों की बस्ती की तरह उन्हें उनके खोये हुए घरों से अलग कर दिया था। यही वे लोग थे जिन्हें हम अक्सर सारा वक्त धूल-भरे शहर में अकेले भटकते हुए देखते थे। वे ख़ामोशी से अपने सुखी देश की उन शामों और सुखद प्रभातों की कामना किया करते थे जिनका सौन्दर्य केवल वे ही जानते थे। वे अपनी निराशा को क्षणिक सूचनाओं और संदेशों पर पालते थे जो चिड़ियों की उड़ान की तरह, सूर्यास्त की ओस की तरह या सूरज की उन किरणों की तरह, जो कभी-कभी खाली सड़कों को चितकबरा बनाती हैं,

निरर्थक और विछिन्न थे। उन्होंने बाहर की दुनिया से आँखें मूंद ली थीं, जबकि यह दुनिया हमेशा हर तरह के विचारों से मुक्ति दिला सकती है। वे तो अपनी कल्पना के सच्चे प्रेतों को पालने पर तुले हुए थे और अपनी समस्त शक्ति लगाकर एक ऐसे देश की तस्वीरों की कल्पना में डूबे थे जिसमें प्रकाश की किरणें एक ख़ास ढंग से छिटकी थीं, दो या तीन पहाड़ियाँ थीं, उसकी पसंद का एक वृक्ष था, एक स्त्री की मुस्कान थी, इस दुनिया की कमी को कोई दुनिया पूरा नहीं कर सकती थी।

आख़िर में हम उन विरही प्रेमियों का ख़ासतौर पर ज़िक्र करेंगे जिनकी कहानी बेहद दिलचस्प है और जिनके बारे में कहने का शायद कथाकार को अधिकार भी है। उनके मन में तरह-तरह की भवानाएँ उठ रही थीं, जिनमें पश्चात्ताप की भावना अधिक थी। उनकी मौजूदा स्थिति ऐसी थी कि वे पूरे जोश से अपनी भावनाओं का यथार्थ विवेचन कर सकते थे। ऐसी हालत में उनके लिए अपनी ख़ामियों को न देख सकना असम्भव था। सबसे पहले ये भावनाएँ उनके मन में तब उठीं जब उन्हें इस बात का सही अनुमान लगाने में कठिनाई हुई कि उनका दूसरा साथी क्या कर रहा है ? अब उन्हें अपने इस अज्ञान पर अफ़सोस होने लगा कि वे यह भी भूल गए हैं कि उनका प्रेमी या प्रेमिका किस तरह अपना वक्त गुज़ारते थे। उन्हें यह सोचकर आत्मग्लानि हुई कि उन्होंने अतीत में इस बात की तरफ़ ध्यान क्यों नहीं दिया। वे क्यों सोचते रहे कि एक प्रेमी के लिए जब वह अपनी प्रेयसी के साथ नहीं रहता तो प्रेयसी के कार्यकलाप के प्रति उसके मन में हर्ष की बजाय उदासीनता क्यों पैदा होती है। इस बात का एहसास होते ही वे अपने प्रेम के इतिहास को नये सिरे से देख सकते थे और जान सकते थे कि किस स्थान पर उनके प्रेम में कसर रह गई थी। साधारण परिस्थितियों में हम सब चेतन या अचेतन रूप से जानते हैं कि कोई प्रेम ऐसा नहीं जिसमें बेहतरी की गुंजायश न हो। फिर भी हम कुछ हद तक इस सत्य से समझौता कर लेते हैं कि हमारा प्रेम कभी औसत स्तर से ऊपर नहीं उठ सका। लेकिन हमारी स्मृति समझौते के लिए तैयार नहीं होती। निश्चित रूप से इस मुसीबत ने जो बाहर से आकर सारे शहर पर

छा गई थी जिसकी वजह से हमें बहुत सी तक़लीफें सहनी पड़ी थीं जो इतनी नाजायज़ थीं कि उन पर क्षुब्ध होना स्वाभाविक ही था। इसने हमें स्वयं अपने लिए यंत्रणा पैदा करने के लिए प्रेरित किया जिससे हम कुंठा को ही स्वाभाविक स्थिति समझने लगे। यह भी महामारी की एक चाल थी, जो उसने हमारा ध्यान असली समस्याओं से हटाने और हमारे दिमाग़ में उलझन पैदा करने के लिए चली थी।

इस तरह से हम सबको विशाल आकाश की उदासीनता तले एकान्त में दिन गुज़ारने के लिए मजबूर होना पड़ा था। भुलाए जाने की यह अनुभूति जो शायद उचित मौक़े पर लोगों के चरित्र में परिष्कृति पैदा कर सकती थी, उनका जीवन-रस सोखकर उन्हें निकम्मा बनाने लगी। मिसाल के लिए हमारे कुछ साथी नागरिक एक विचित्र क़िस्म की ग़ुलामी के शिकार हो गए, जिसने उन्हें सूरज और बारिश के रहम पर छोड़ दिया था। उन्हें देखकर ऐसा लगता था जैसे ज़िन्दग़ी में पहली बार उन्हें मौसम की अच्छाई-बुराई का एहसास हो रहा था। सूरज की कुछ किरणों का फूटना ही उनके मन में संसार के लिए उल्लास भर देने के लिए काफ़ी था, जबकि बारिश के दिनों में उनके चेहरों और मूड पर भी एक काली छाया आ जाती थी। कुछ हफ़्ते पहले वे मौसम की इस हास्यास्पद ग़ुलामी से आज़ाद थे, क्योंकि उन्हें ज़िन्दगी से अकेले नहीं जूझना पड़ता था। वे जिस व्यक्ति के साथ रहते थे वह कुछ सीमा तक उनके छोटे-से संसार की तस्वीर के अग्रभाग पर छाया रहता था, लेकिन अब स्थिति बदल गई थी। उन्हें लगता था कि वे आकाश में होने वाले परिवर्तनों पर आधारित हैं। दूसरे शब्दों में, हम कह सकते हैं कि वे उनकी पीड़ा और आशाएँ तर्कहीन थीं।

इसके अलावा एकान्त की इस पराकाष्ठा में कोई भी अपने पड़ोसी से मदद पाने की आशा पर निर्भर नहीं कर सकता था। सभी को अपनी मुसीबतों का बोझ खुद उठाना पड़ रहा था। अगर संयोगवश हममें से कोई दूसरों के सामने अपनी भावनाओं की बात करता या मन हा बोझ हल्का करने की कोशिश करता तो उसे हमेशा ऐसा जवाब मिलता था जिसे सुन-

कर आम तौर पर उसे सदमा पहुँचता था चाहे वह जवाब कैसा.ही हो। फिर उसे अचानक एहसास होता था कि वह जिस आदमी से बात कर रहा है उसके मन में कोई और ही बात है। अपने व्यक्तिगत अवसाद पर लगातार कई दिन तक सोचने-करने के बाद अगर कोई अपने मन का उस तस्वीर को, जिसे उसने पश्चात्ताप और तीव्र भावना की आग में डालकर आकार प्रदान किया था, किसी दूसरे को दिखाना चाहता था तो दूसरा आदमी उसकी बिलकुल कद्र नहीं करता था, बल्कि उसको इस तस्वीर में रूढ़िगत और साधारण भावना दिखाई देती थी—ऐसा दुख जिसे बड़े पमाने पर तैयार करके हाट-बाज़ार में बेचा जा रहा हो। जवाब चाहे मित्रतापूर्ण हो या विरोधपूर्ण, उसमें गरमाई नहीं होती थी, और अपने दिल की बात बताने की कोशिश छोड़ देनी पड़ती थी। यह बात कम-से-कम उन पर तो लागू होती ही थी जो खामोश रहना बरदाश्त नहीं कर सकते थे। और बाकी लोग चूँकि उपयुक्त, भाव-व्यंजक शब्द तलाश ही नहीं कर सकते थे, इसलिए वे आम टकसाली भाषा का इस्तेमाल करके ही सन्तुष्ट हो गए—वर्णन और चुटकलों की उस सीधी-सादी चलताऊ भाषा का या अपने दैनिक अखबार की भाषा का। इसलिए ये लोग भी अपने सच्चे और गहरे दुख को मामूली बोलचाल की भाषा के ज़रिये ही व्यक्त करते थे। इन नपे-तुले शब्दों का इस्तेमाल करके ही प्लेग के ये सब क़ैदी अपने चौकीदारों या सुनने वालों की हमदर्दी पाने की उम्मीद कर सकते थे।

फिर भी—और यह बात महत्त्वपूर्ण है कि—उनकी यन्त्रणा चाहे जितनी कटु और उनके हृदय चाहे जितने भारी रहे हों, अपने हृदय की रिक्तता के बावजूद प्लेग के आरम्भिक दिनों में तो कम-से-कम ये निर्वासित नागरिक एक तरह से अपने को खुशकिस्मत समझ सकते थे। ऐसे क्षणों में जब शहर के लोगों में घबराहट फैली थी, इन लोगों के विचार पूरी तरह से उस व्यक्ति पर केन्द्रित थे जिससे मिलने के लिए वे बेचैन थे। प्यार के अहंवाद के कारण जनसाधारण के दुख-दर्द ने उन पर कुछ असर नहीं किया था, प्लेग के बारे में वे सिर्फ़ यही सोचते थे कि कहीं उसकी

वजह से उनका विरह अनन्त न हो जाए। महामारी के ऐन बीचोंबीच भी उन्होंने एक उदासीनता अख्तियार कर ली थी जिसे देखकर आत्म-विश्वास होने का भ्रम होता था। उनके अवसाद ने उन्हें घबराहट से बचा लिया था। इस तरह उनकी मुसीबत का भी एक अच्छा पहलू था। मिसाल के लिए अगर उनमें से कोई महामारी का शिकार हो जाता तो उसे इस दुर्भाग्य का एहसास तक न होता। किसी स्मृति के प्रेत के साथ लम्बे और मौन सम्पर्क के बाद अचानक वह गहनतम मौन में विसर्जित हो गया। उसके पास किसी बात के लिए वक्त नहीं रहा था।

२

जब हमारे शहर के लोग संसार से इस अप्रत्याशित विच्छेद से समझौता करने की कोशिश कर रहे थे तो प्लेग की वजह से शहर के फाटकों पर संतरी बिठा दिये गए थे और ओरान आने वाले जहाज़ों को वापस भेजा जा रहा था। जब से फाटक बन्द हुए थे, बाहर की कोई गाड़ी शहर में दाखिल नहीं हुई थी। उस दिन के बाद से ऐसा लगता था जैसे सब कारें गोल दायरे में चक्कर काट रही हों। बुलेवारों के ऊपरी हिस्से से देखने पर बन्दरगाह का दृश्य भी विलक्षण-सा मालूम होता था। तमाम व्यापारिक हलचलें, जिनकी वजह से ओरान समुद्र-तट का प्रमुख बन्दरगाह बन गया था, अचानक रुक गई थीं। सिर्फ़ कुछ जहाज़, जिनके यात्रियों पर यात्रा का प्रतिबन्ध लगा दिया गया था, लंगर डाले खाड़ी में खड़े थे। लेकिन घाटों पर खड़ी क्षीणकाय निकम्मी क्रेनें, माल ढोने के उल्टे हुए वैगन, बोरों और पीपों के लापरवाही से बिखरे हुए ढेर—सब इस बात की साक्षी दे रहे थे कि व्यापार भी प्लेग से ग्रस्त होकर मर चुका है।

ऐसे असाधारण दृश्यों के बावजूद ऊपरी तौर पर देखने से लगता था कि हमारे शहर के लोगों को अपनी असली स्थिति का एहसास होने में दिक्क़त हो रही थी। भय और विरह तो ऐसी भावनाएँ थीं, जिनमें सब

लोग साझीदार हो सकते थे, लेकिन उनके विचारों में अभी भी व्यक्तिगत स्वार्थ ही प्रमुख थे। इस बीमारी का सचमुच क्या मतलब है, इस बात को कोई अपने-आपसे क़बूल नहीं करना चाहता था। अधिकतर लोग सिर्फ़ उन बातों के बारे में ही सचेत थे, जिन्होंने उनके जीवन के साधारण कार्य-क्रम को भंग कर दिया था या जो उनके स्वार्थों को आघात पहुँचा रहे थे। वे या तो परेशान होते थे या नाराज़—लेकिन इन भावनाओं से प्लेग का मुक़ाबला तो नहीं किया जा सकता था। मिसाल के लिए, उनकी पहली प्रतिक्रिया यह हुई कि उन्होंने अधिकारियों को गालियाँ बकनी शुरू कर दीं। अख़बार हर रोज़ प्रीफ़ेक्ट की नुक्ताचीनी करते हुए पूछते थे—क्या नियमों में संशोधन करके उनकी सख्ती कम नहीं की जा सकती? लेकिन यह प्रश्न अप्रत्याशित था। अभी तक न अख़बारों को न रेन्स्दाक सूचना ब्यूरो को सरकार की तरफ़ से महामारी के आँकड़े बताये गए थे। अब प्रीफ़ेक्ट हर रोज़ ब्यूरो को आँकड़े देकर प्रार्थना करता था कि उन्हें हफ़्ते में एक बार ज़रूर प्रसारित किया जाए।

इस मामले पर भी, आशा के विपरीत जनता की प्रतिक्रिया बहुत देर से हुई। इस बयान से कि प्लेग के तीसरे हफ़्ते में तीन सौ दो मौतें हो चुकी हैं, लोगों की कल्पना पर कोई आघात नहीं पहुँचा। एक कारण तो यह था कि हो सकता था ये सारी मौतें प्लेग की वजह से न हुई हों। इसके अलावा शहर में किसी को यह अंदाज़ नहीं था कि साधारण परिस्थितियों में औसतन एक हफ्ते में कितनी मौतें होती हैं। शहर की आबादी दो लाख थी। मौत के ये आँकड़े क्या सचमुच इतने ज्यादा थे यह कोई नहीं जानता था। दरअसल इस तरह के आँकड़ों की कभी भी ज़्यादा परवाह नहीं की जाती, हालाँकि इनका महत्व स्पष्ट है। सारांश में यह कहा जा सकता है जनता के पास आँकड़ों का मुक़ाबला करने के मापदंड की कमी थी। वक्त के साथ-साथ जब मरने वालों की संख्या इतनी बढ़ गई कि उसकी तरफ़ से लापरवाही दिखाना असम्भव हो गया, तब जाकर कहीं लोगों को इस सचाई का सही एहसास हुआ। पाँचवें हफ़्ते में तीन सौ इक्कीस मौतें हुईं और छठे हफ़्ते में यह संख्या तीन सौ पैंतालीस तक पहुँच गई। जो भी

हो इन आँकड़ों से स्थिति साफ़ ज़ाहिर होती थी। फिर भी ये आँकड़े इतने सनसनीखेज नहीं थे कि हमारे शहर के लोगों का यह भ्रम टूट जाता कि शहर में जो कुछ भी हो रहा था वह एक संयोग था, जो अप्रिय होते हुए भी स्थायी नहीं था, हालाँकि लोग काफ़ी परेशान थे।

सो लोग हमेशा की तरह शहर की सड़कों पर चहलक़दमी करते थे और रेस्तराओं की छतों पर बैठते थे। आम तौर पर उनमें बुज़दिली नहीं थी, वे बातचीत में रोने-धोने की बजाय, ज्यादा मज़ाक करते थे और उनके व्यवहार से ऐसा लगता था कि उन्होंने ख़ुशी-ख़ुशी उस अप्रिय स्थिति को क़बूल कर लिया था जिसे वे अस्थायी समझते थे, अर्थात् वे ऊपर से तो निश्चित होने का ही अभिनय करते थे। लेकिन महीने के अन्त में जब प्रार्थना-सप्ताह क़रीब आया, जिसकी चर्चा हम बाद में करेंगे, तो कई गम्भीर घटनाएँ हो गईं जिससे शहर की सारी शक्ल बदल गई। सबसे पहले तो प्रीफ़ेक्ट ने ट्रैफिक और खाने-पीने की चीज़ों पर कन्ट्रोल लगा दिया। पेट्रोल राशन पर मिलने लगा और खाने की चीज़ों की बिक्री पर पाबन्दियाँ लगा दी गईं। बिजली का खर्च कम करने का हुक्म जारी किया गया। सिर्फ ज़रूरत की चीजें ही लारियों या हवाई जहाज़ों के ज़रिये से ओरान में लाई जाती थीं। इस तरह ट्रैफिक लगातार कम होता गया। और यहाँ तक नौबत आ पहुँची कि सड़कों पर प्राईवेट कारें बहुत कम दिखाई देने लगीं। विलासिता की सामग्री की दुकानें रातों-रात बन्द हो गईं और दूसरी दुकानों ने 'सारा माल बिक चुका है' के नोटिस लगा दिए। ख़रीदारों की भीड़ दुकानों के दरवाज़ों के आगे जमा रहती थी।

ओरान की शक्ल एकदम बदल गई। सड़कों पर पैदल चलने वाले लोग ज्यादा नज़र आते थे। फ़ुरसत के वक्त सड़कों और रेस्तराओं में बहुत से लोग जमा हो जाते थे। इन दिनों वे निकम्मे हो गए थे, क्योंकि बहुत सी दुकानें और दफ्तर बन्द हो चुके थे। फिलहाल ये लोग बेकार नहीं थे, सिर्फ छुट्टी पर थे। जब मौसम अच्छा रहता था तो दोपहर को तीन बजे के क़रीब ओरान को देखने से ऐसा लगता था जैसे शहर में सब लोग जशन मना रहे हों, और जशन मनाने वालों के लिए सड़कें खाली करने के लिए

दुकानें बन्द कर दी गई हों और ट्रैफ़िक रोक दिया गया हो।

यह स्वाभाविक ही था कि इस स्थिति से सिनेमाघरों को बहुत फ़ायदा पहुँचा और उन्होंने ख़ूब पैसे कमाए। लेकिन उनके सामने एक दिक्क़त थी—नई फ़िल्में कैसे दिखाई जाएँ, क्योंकि शहर में नई फ़िल्मों का आना बन्द था। पन्द्रह दिन बाद सिनेमाघरों ने आपस में ही फ़िल्मों का तबादला कर लिया और कुछ दिन के बाद वे एक ही फ़िल्म दिखाने लगे। इसके बावजूद उनकी आमदनी में कोई फ़र्क़ नहीं आया।

रेस्तराँ भी अपने ग्राहकों की माँग पूरी करने में समर्थ थे। क्योंकि ओरान शराब के व्यापार का मुख्य केन्द्र था, इसलिए वहाँ शराब का बहुत सा स्टॉक जमा था। सच पूछिए तो लोग बहुत ज़्यादा शराब पीने लगे थे। एक रेस्तराँ वालों के दिमाग़ में एक शानदार विचार आया और उन्होंने रेस्तराँ के बाहर एक नारा लिखकर टाँग दिया, "बढ़िया शराब की बोतल प्लेग की छूत से बचने का सबसे अच्छा तरीक़ा है।" लोगों की यह धारणा और भी पुष्ट हो गई कि शराब छूत की बीमारी से आदमी को बचा सकती है। हर रात तड़के दो बजे के करीब बहुत से लोग नशे की हालत में लड़खड़ाते हुए क़दमों से रेस्तराओं से आशावादिता का कोलाहल करते हुए निकलते।

लेकिन एक माने में ये सारी तब्दीलियाँ इतनी विलक्षण थीं और इतनी जल्दी में हुई थीं और कि किसी को यक़ीन ही नहीं हो सकता था कि यह स्थिति कुछ दिनों से ज़्यादा चलेगी। इसके परिणामस्वरूप हम पहले की तरह अपना सारा ध्यान अपनी व्यक्तिगत भावनाओं पर ही केन्द्रित करने लगे।

शहर के फाटकों के बन्द होने के दो दिन बाद जब डॉक्टर रियो अस्पताल से निकला तो सड़क पर उसकी कोतार्द से मुलाक़ात हुई। कोतार्द का चेहरा ख़ुशी और संतोष से चमक रहा था। रियो ने कोतार्द को उसके ख़ुश नज़र आने पर बधाई दी।

कोतार्द ने कहा, "हाँ, मैं बिलकुल स्वस्थ हूँ। मैंने अपने को कभी इतना स्वस्थ नहीं महसूस किया जितना कि अब करता हूँ। लेकिन डॉक्टर, एक बात बताओ, इस कम्बख़्त प्लेग के बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है? मामला

कुछ गम्भीर होता जा रहा है न! जब डॉक्टर ने सिर हिलाकर हामी भरी तो कोतार्द ने प्रफुल्लित स्वर में कहा, "अब इसके थमने की कोई वजह नहीं आती। लगता है कि शहर में कोई भयंकर गड़बड़ होने वाली है।"

दोनों जने कुछ दूर तक साथ-साथ गये। कोतार्द ने अपनी गली के एक परचूनिए का क़िस्सा बताया जिसने मुनाफ़ा कमाने के लिए खाद्य-सामग्री के बन्द डिब्बे जमा रख छोड़े थे। जब एम्बुलेन्स गाड़ी वाले उसे उठाने आए तो उसके पलंग के नीचे गोश्त के दरजनों डिब्बे पाये गए। वह अस्पताल जाकर मर गया। प्लेग में किसी को मुनाफ़ा नहीं हो सकता यह पक्की बात है। कोतार्द को महामारी के बारे में सैकड़ों ऐसे सच्चे और झूठे किस्से मालूम थे। उसने एक ऐसे आदमी का क़िस्सा बताया जिसे तेज़ बुखार था और प्लेग के सारे लक्षण दिखाई दे रहे थे। वह भागता हुआ सड़क पर आया और उसे जो पहली औरत दिखाई दी, उसे बाँहों में भरकर वह ज़ोर से चिल्लाया कि उसे छूत 'लग गई' है।

"उसके लिए अच्छा ही हुआ!" कोतार्द ने टिप्पणी की, लेकिन उसकी अगली टिप्पणी ने पहले के उल्लासपूर्ण वाक्य को झुठला दिया, "ख़ैर जो भी हो, अगर मैं सोचने में ग़लती नहीं कर रहा तो जल्द ही हम सब-के-सब पागल हो ज़ाएँगे!"

उसी दिन शाम को ग्रान्द ने आख़िरकार रियो के सामने अपने दिल का बोझ हल्का कर दिया। डेस्क पर रखी श्रीमती रियो की फ़ोटो देखकर उसने प्रश्नसूचक दृष्टि से डॉक्टर की तरफ़ देखा। रियो ने बताया कि उसकी पत्नी शहर से कुछ दूर एक सेनेटोरियम में इलाज के लिए गई है। ग्रान्द ने कहा, "एक माने में यह ख़ुशक़िस्मती है।" डॉक्टर ने भी कहा कि एक माने में यह ख़ुशक़िस्मती की बात है, लेकिन सबसे बड़ी बात तो यह है कि उसकी पत्नी को स्वस्थ हो जाना चाहिए।

"हाँ, मैं समझ गया।" ग्रान्द ने कहा।

और फिर पहली बार, जब से रियो का ग्रान्द से परिचय हुआ था, ग्रान्द ने दिल खोलकर बातें कीं। उसे अपने भाव व्यक्त करने के लिए

उचित शब्द तलाश करने में दिक़्क़त हो रही थी, लेकिन हर बार उसे कोई-न-कोई शब्द मिल ही जाता था। ऐसा लगता था जैसे वह बरसों से इन बातों पर ग़ौर करता रहा हो।

किशोरावस्था में ही उसने एक ग़रीब पड़ोसी परिवार की लड़की से शादी कर ली थी जो उम्र में बहुत छोटी थी। दरअसल शादी करने की ख़ातिर ही उसने पढ़ाई छोड़कर मौजूदा नौकरी शुरू कर दी थी। न जीन, न वह कभी शहर के उस हिस्से से बाहर निकले थे जहाँ वे रहते थे। कोर्टशिप के दिनों में जब वह जीन से मिलने जाया करता था तो जीन के परिवार के लोग जीन के इस शरमीले और ख़ामोश प्रशंसक का मज़ाक उड़ाया करते थे। जीन का पिता रेलवे कर्मचारी था। ड्यूटी से छुट्टी पाकर अधिकांश वक्त खिड़की के पास कोने में बैठकर सड़क पर आने-जाने वाले लोगों को देखने में गुज़ारता था। उसके बड़े-बड़े हाथ उसकी जाँघों पर फैले रहते थे। उसकी पत्नी सारा वक्त घर के कामों में व्यस्त रहती थी जिनमें जीन भी हाथ बटाती थी। जीन इतनी छोटी थी कि उसे चौराहा पार करते हुए देखकर ग्रान्द का मन घबरा उठता था। उसके सामने से आती हुई गाड़ियाँ भीमकाय दिखाई देती थी। फिर क्रिसमस से पहले एक दिन वे एक साथ थोड़ी दूर तक सैर करने गये थे और किसी दुकान की सजी हुई खिड़की की तारीफ़ करने के लिए खड़े हो गए थे। कुछ क्षणों तक खिड़की की तरफ़ मुग्ध-भाव से देखने के बाद जीन ने उसकी तरफ़ मुड़कर कहा था, "ओह! यह कितनी ख़ूबसूरत है!" ग्रान्द ने उसकी कलाई दबाई थी। इस तरह दोनों की शादी हुई थी।

ग्रान्द के विचार में बाक़ी कहानी बहुत सीधी-सादी थी। सब विवाहित जोड़ों की तरह, आपकी शादी होती है। आप कुछ ज़्यादा दिन तक मुहब्बत करते हैं, काम करते हैं। आप इतना ज़्यादा काम करते हैं कि आप मुहब्बत को भूल जाते हैं। चूँकि ग्रान्द के दफ्तर के बड़े अफ़सर ने अपना वादा पूरा नहीं किया था इसलिए जीन को भी बाहर काम करना पड़ता था। इस बात पर आकर, ग्रान्द के मनोभावों को समझने के लिए कल्पना की ज़रूरत थी। थकान की वजह से धीरे-धीरे वह अपने पर से काबू खो बैठा,

उसके पास कहने के लिए बहुत कम बातें बचीं। वह अपनी पत्नी में यह भावना जीवित रखने में असमर्थ हो गया कि वह उससे मुहब्बत करता है। काम से थका हुआ पति, ग़रीबी, बेहतर भविष्य की आशा का लोप हो जाना, घर में बिताई गई खामोश शामें—ऐसी परिस्थितियों में भला प्रेम का उन्माद कैसे ज़िन्दा रह सकता था ? शायद जीन ने दुख झेले थे। फिर भी वह ग्रान्द के साथ रह रही थी। निश्चय ही इन्सान बहुत दिन तक बिना दुख के एहसास के, दुख झेल सकता है। इसी तरह कई साल गुज़र गए। फिर एक दिन जीन उसे छोड़कर चली गई। यह स्वाभाविक ही है कि वह अकेली नहीं गई थी। 'मैं तुम्हें बहुत चाहती थी। लेकिन अब मैं बहुत ज़्यादा थक गई हूँ। मैं खुशी-खुशी नहीं जा रही, लेकिन नये सिरे से ज़िन्दगी शुरू करने के लिए खुशी की ज़रूरत नहीं है।' जीन के ख़त का यही भावार्थ था।

ग्रान्द ने भी दुःख झेला था। शायद वह भी नये सिरे से ज़िन्दगी शुरू कर सकता था जैसा कि रियो ने कहा। लेकिन नहीं वह अपनी आस्था गँवा बैठा था···वह जीन की याद को नहीं भुला पाया था। वह चाहता था कि वह जीन को ख़त लिखकर अपनी सफ़ाई दे।

उसने रियो को बताया, "लेकिन यह आसान नहीं है। मैं बरसों तक इस बारे में सोचता रहा हूँ। जब हम एक-दूसरे को चाहते थे तो हमें एक-दूसरे के मन की बात समझने के लिए शब्दों की ज़रूरत नहीं पड़ती थी। लेकिन कोई भी हमेशा के लिए प्यार नहीं करता। एक ऐसा वक्त आयाजब मुझे जीन को अपने साथ रखने के लिए कुछ शब्द कहने चाहिए थे—लेकिन मैं उन शब्दों को न ढूँढ़ सका।" ग्रान्द ने अपनी जेब से एक कपड़ा निकाला, जो देखने में चारखाना, झाड़न मालूम होता था, और ज़ोर से अपनी नाक साफ़ की। फिर उसने अपनी मूँछें पोंछीं। रियो खामोशी से उसकी तरफ़ देखता रहा। ग्रान्द ने फ़ौरन कहा, "माफ़ करना डॉक्टर, लेकिन, मैं किन शब्दों में बताऊँ कि मैं क्या कहना चाहता हूँ ?—मुझे लगता है कि तुम पर भरोसा किया जा सकता है, इसीलिए मैं ऐसे मामलों के बारे में भी तुमसे बात कर सकता हूँ। और फिर आप देख रहे हैं कि भावुकता में बह

जाता हूँ।"

साफ़ ज़ाहिर था कि इस वक्त ग्रान्द के विचार प्लेग से कोसों दूर थे।

उसी शाम को रियो ने अपनी बीवी को तार दिया जिसमें लिखा था कि शहर के फ़ाटक बंद हो चुके हैं, वह हर वक्त उसकी याद करता है, उसे अपनी सेहत की देखभाल जारी रखनी चाहिए।

एक रोज़ शाम को जब रियो अस्पताल से निकला तो उसने देखा कि सड़क पर एक नौजवान उसकी इन्तज़ार में खड़ा है। यह फाटक बन्द होने के तीन हफ़्ते बाद की घटना है।

"आपको याद है, मैं कौन हूँ?"

रियो का ख़याल था कि वह नौजवान को जानता है लेकिन वह ठीक से उसे 'पहचान' न सका।

"इस मुसीबत के शुरू होने से पहले मैं आपके पास आया था, अरबों की बस्ती में रहन-सहन की परिस्थितियों के बारे में पूछताछ करने। मेरा नाम रेमंद रेम्बर्त है।"

"अरे हाँ, मुझे अच्छी तरह याद है। अब तो तुम्हें अपने अख़बार के लिए बहुत शानदार कहानी मिल सकती है।" रेम्बर्त में पहली मुलाक़ात की अपेक्षा इस बार कम आत्मविश्वास दिखाई दे रहा था। उसने कहा कि वह अख़बार के काम से नहीं आया, वह डॉक्टर से सहायता की प्रार्थना करने आया था।

उसने कहा, "मैं इस तक़लीफ़ के लिए माफ़ी चाहता हूँ, लेकिन सचमुच मैं यहाँ किसी को नहीं जानता और मेरे अख़बार का स्थानीय प्रतिनिधि तो एकदम बुद्धू है।

रियो ने कहा कि वह शहर के केन्द्र में, एक डिस्पेन्सरी की तरफ़ जा रहा है। उसने रेम्बर्त से प्रस्ताव किया कि दोनों एक साथ पैदल चलें। उन्हें नीग्रो बस्ती की तंग गलियों में से गुज़रना था। शाम हो गई थी, लेकिन शहर में जहाँ कभी इस वक्त कोलाहल रहता था, अजब ख़ामोशी छाई थी। हवा में, जो संध्या की किरणों से सुनहरी हो गई थी सिर्फ़ कुछ बिगुलों के स्वर गूँज रहे थे। फ़ौज यह दिखाने की कोशिश कर रही थी

कि उनके सब काम पूर्ववत् जारी हैं। जब दोनों जने नीली, जामुनी और केसरिया रंग की दीवारों से घिरी तंग गली में से गुज़र रहे थे तो रेम्बर्त लगातार बोलता जा रहा था। मालूम होता था कि उसके स्नायु काबू से बाहर हो गए हैं।

उसने कहा कि वह अपनी बीवी को पैरिस में छोड़ आया था। वह दरअसल उसकी बीवी नहीं थी, लेकिन उससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। जब शहर के फाटक बंद हो गए तो उसने अपनी बीवी को एक तार भेजा था। उसका ख़याल था कि यह स्थिति सिर्फ कुछ दिनों तक ही चलेगी, इसलिए उसने अपनी बीवी को एक ख़त भेजने की कोशिश की थी, लेकिन पोस्ट ऑफ़िस के अफ़सरों ने ख़त भेजने की इजाज़त नहीं दी थी, उसके साथियों ने कहा कि वे उसकी कोई सहायता नहीं कर सकते। प्रीफ़ेक्ट के दफ़्तर के एक क्लर्क ने उसके मुँह पर उसकी हँसी उड़ाई थी। दो घंटे तक एक कतार में खड़े रहने के बाद वह एक तार मंजूर करवा सका, 'मैं ख़ैरियत से हूँ। जल्द ही तुमसे मिलूँगा।'

लेकिन अगले दिन सुबह जब वह सोकर उठा तो उसे एहसास हुआ कि यह स्थिति कितने दिन तक चलेगी यह कोई नहीं कह सकता। इसलिए उसने फ़ौरन शहर छोड़ने का फैसला किया। अपने पेशेवर पत्रकार होने की हैसियत से उसने प्रीफ़ेक्ट के दफ़्तर के एक बड़े अफ़सर से मिलने की तिकड़म तो भिड़ा ली। उसने बताया कि वह संयोगवश ओरान में आया था। उसका ओरान से कोई ताल्लुक नहीं और उसका यहाँ रुकने का भी कोई कारण नहीं था, इसलिए निश्चय ही उसे शहर छोड़ने का अधिकार मिलना चाहिए, भले ही उसे शहर से निकालकर कुछ दिन के लिए क्वारनटीन में रखा जाए। अफ़सर ने कहा कि उसे रेम्बर्त से पूरी हमदर्दी है, लेकिन वह इस मामले में किसी का भी लिहाज़ नहीं कर सकता, क्योंकि कायदे सब लोगों पर बराबर लागू होते हैं। लेकिन वह इस बात का ख़याल रखेगा, हालाँकि फ़ौरन किसी फ़ैसले की बहुत कम उम्मीद है क्योंकि अधिकारियों की दृष्टि में स्थिति बहुत गम्भीर हो गई है।

"भाड़ में जाएँ क़ायदे-कानून! मैं इस शहर का रहने वाला तो नहीं

हूँ !"

"यह तो सही है···लेकिन हमें यही उम्मीद करनी चाहिए कि महा-मारी जल्द ही ख़त्म हो जाएगी।" अन्त में उसने यह कहकर रेम्बर्त को तसल्ली देने की कोशिश की कि पत्रकार होने के नाते रेम्बर्त को ओरान की स्थिति पर लिखने के लिए बहुत अच्छी सामग्री मिल सकती है। अगर आदमी ध्यान से सोचे तो हर घटना का, चाहे वह कितनी ही अप्रिय क्यों न हो, आशापूर्ण पहलू भी होता है। यह सुनकर रेम्बर्त ने गुस्ताख़ी से अपने कंधे सिकोड़े और बाहर निकल आया।

दोनों शहर के केन्द्र में पहुँच गए थे।

"यह निहायत अहमकाना बात है न डॉक्टर ! दरअसल मैंने अख़बारों के लिए लेख लिखने के लिए दुनिया में जन्म नहीं लिया था। मेरा ख़याल है किसी औरत के साथ ज़िन्दगी बसर करने के लिए मैं पैदा हुआ हूँ। यह तर्कसंगत बात है न ?" रियो ने सतर्कता से उत्तर दिया कि सम्भव है रेम्बर्त की बात में सचाई हो।

केन्द्र के बुलेवारों पर पहले-जैसी रौनक़ और भीड़ नहीं थी। थोड़े-से लोग थे जो दूर कहीं अपने मकानों की तरफ़ तेज़ क़दमों से बढ़ से रहे थे। किसी के चेहरे पर मुस्कराहट नहीं दिखाई दे रही थी। रियो ने अनुमान लगाया कि शायद हाल ही की रेन्स्दॉक ब्यूरो के घोषणा के परिणामस्वरूप सड़कें सूनी हो गई हों। चाबीस घंटों के बाद शहर के लोग फिर आशावादी बन जाएँगे। लेकिन जिन दिनों आँकड़ों की घोषणा होती थी, उन दिनों आँकड़े सबकी स्मृति में ताज़े रहते थे।

अचानक रेम्बर्त ने कहा, "सच बात यह है कि वह औरत और मैं बहुत थोड़े दिनों तक एक साथ रहे हैं और एक-दूसरे के बिलकुल माफ़िक़ हैं।" जब रियो ने कोई जवाब न दिया तो रेम्बर्त ने कहाँ, "देखता हूँ कि आप मेरी बातों से बोर हो रहे हैं। माफ़ कीजिए, मैं सिर्फ़ यह जानने के लिए आया था कि क्या आप मुझे यह सर्टिफ़िकेट दे सकेंगे कि मुझे यह मनहूस बीमारी नहीं है। मेरा ख़याल है कि इससे मामला आसन हो जाएगा।"

रियो ने सर हिलाया। एक छोटा-सा लड़का उसकी टाँगों से टकरा-

कर सड़क पर गिर पड़ा था। रियो ने लड़के को उठाकर खड़ा कर दिया। चलते-चलते वे प्लेस द' आर्मे के नज़दीक पहुँचे। रिपब्लिक की एक मूर्ति के आस-पास धूल से सफ़ेद पॉम और अंजीर के पेड़ निराश भाव से झुके थे। मूर्ति पर भी धूल और मैल की परतें जमी थीं। दोनों जने मूर्ति के पास जाकर रुक गए। रियो ने सफ़ेद धूल की परतों को हटाने के लिए पत्थर के चबूतरे पर पैर पटका। पत्रकार का हैट पीछे की तरफ़ सरका हुआ था, टाई की ढीली गाँठ के नीचे से अस्त-व्यस्त कॉलर दीख रहा था। उसने ठीक से शेव भी नहीं की थी। उसके चिड़चिड़े, ज़िद्दी चेहरे से लगता था कि वह एक ऐसा नौजवान है जिसे किसी ने गहरी चोट पहुँचाई है।

"मेहरबानी करके यह न सोचना कि मैं तुम्हारी बात समझता नहीं," रियो ने कहा, "लेकिन तुम्हें यह समझना चाहिए कि तुम्हारी दलील एकदम ग़लत है। मैं तुम्हें सर्टिफ़िकेट नहीं दे सकता, क्योंकि मुझे यह नहीं मालूम कि तुम्हारे अन्दर इस बीमारी के कीटाणु नहीं हैं। और अगर मुझे मालूम होता तो भी मैं इस बात की गारंटी कैसे दे सकता हूँ कि मेरे यहाँ से निकलकर प्रीफ़ेक्ट के दफ्तर तक पहुँचने के बीच तुम्हें इस बीमारी की छूत नहीं लग जाएगी। और अगर मैं ऐसा कर भी सकता…"

"अगर आप ऐसा कर सकते…?"

"अगर मैं तुम्हें सर्टिफ़िकेट दे दूँ, तो भी उससे तुम्हें कोई मदद नहीं मिलेगी।"

"आखिर क्यों?"

"क्योंकि इस शहर में हज़ारों लोग तुम्हारी-जैसी स्थिति में पड़े हुए हैं, और उन्हें शहर छोड़कर जाने की इजाज़त देने का सवाल ही नहीं उठ सकता।"

"मान लीजिए अगर उनको प्लेग न हो तो क्या तब भी?"

"यह वजह काफ़ी नहीं है। ओह, मैं जानता हूँ कि यह एक बेहूदा हालत है, लेकिन हम सब इसके जाल में फँस रहे हैं और हमें चाहिए कि इस हालत को, जैसी भी है, मंजूर कर लें।"

"लेकिन मैं तो यहाँ का रहने वाला नहीं हूँ।"

"बदक़िस्मती से अब से तुम यहीं के होकर रहोगे, और सब लोगों की तरह।"

रेम्बर्त ने आवाज़ ऊँची करके कहा :

"डैम इट, लेकिन डॉक्टर क्या आप इतना भी नहीं देखते कि यह एक मानवीय भावना का सवाल है ? या आप यह महसूस ही नहीं करते कि उन लोगों के लिए जुदाई का क्या मतलब होता है जो···एक-दूसरे से प्यार करते हैं ?"

रियो ने कुछ देर ख़ामोश रहकर उत्तर दिया कि वह इस बात को पूरी तरह समझता है। वह भी चाहता है कि रेम्बर्त को अपनी बीवी के पास लौटने की इजाज़त दी जाए और वे सब लोग भी, जो एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, फिर आपस में मिलें। लेकिन क़ानून तो क़ानून है। प्लेग फैल गई है और वह सिर्फ़ उतना ही कर सकता है जो किया जाना चाहिए।

"नहीं," रेम्बर्त ने कटु स्वर में कहा, "आप नहीं समझ सकते। आप तर्क की भाषा इस्तेमाल कर रहे हैं, दिल की नहीं; आप सिद्धान्तों की अमूर्त दुनिया में रहते हैं।"

डॉक्टर ने रिपब्लिक की मूर्ति की तरफ़ नज़रें उठाईं और कहा कि वह तर्क की भाषा इस्तेमाल कर रहा है यह तो वह नहीं जानता, लेकिन वह यह जानता है कि वह तथ्यों की भाषा बोल रहा है, जिनसे सब लोग परिचित हैं, ज़रूरी नहीं कि दोनों बातें एक हों।

पत्रकार ने टाई सीधी करते हुए कहा, "तो इसका मतलब यह है कि मैं आपसे किसी क़िस्म की सहायता की आशा नहीं कर सकता। अच्छी बात है, लेकिन···" उसके लहज़े में चुनौती का भाव था, "हर हालत में मैं शहर छोड़ दूंगा।"

डॉक्टर ने फिर कहा कि वह नौजवान के दिल की बात अच्छी तरह समझता है लेकिन इससे उसे सरोकार नहीं।

"माफ़ कीजिए, इससे आपको सरोकार है।" रेम्बर्त फिर ऊँची आवाज़ में बोला, "मैं आपके पास इसलिए आया था क्योंकि मुझे पता चला है कि नये क़ायदों के बनाने में आपका बहुत भारी हाथ है। इसलिए मैंने सोचा

कि शायद एक मामले में तो आप अपने फ़ैसले को रद्द कर सकते हैं। लेकिन आप इस मामले में एकदम उदासीन हैं, आपको किसी के दुःख की परवाह नहीं, क़ानून बनाते वक्त आपने उन लोगों का बिलकुल खयाल नहीं रखा जो एक-दूसरे को चाहते हैं और जिन्हें बिछुड़ना पड़ा है।"

रियो ने क़बूल किया कि कुछ हद तक यह बात ठीक है। उसने ऐसे केसों के बारे में न सोचना ही बेहतर समझा था।

"ओह! मैं अब समझा! आप अभी साधारण जनता की भलाई की बात करेंगे। लेकिन हममें से हरेक व्यक्ति की भलाई में ही जनता की भलाई है।"

अचानक डॉक्टर जैसे सपने से जाग पड़ा। उसने कहा, "जाने भी दो, तुम्हारी बात सही है, लेकिन इसके कई और पहलू भी हैं। एकदम नतीजा निकालने से कोई फ़ायदा नहीं। तुम जानते हो···लेकिन मुझे तुम्हारी नाराज़गी की कोई वजह समझ में नहीं आती। मैं तुम्हें यक़ीन दिलाता हूँ कि अगर तुम अपनी मुसीबत से निकलने का कोई रास्ता निकाल सको तो मुझे बहुत खुशी होगी। लेकिन कुछ ऐसी बातें हैं जिन्हें मैं अपनी सरकारी पोज़ीशन की वजह से नहीं कर सकता।"

रेम्बर्त ने गुस्ताख़ी से सर झटकते हुए कहा, "हाँ, मुझे अपनी खीज ज़ाहिर नहीं करनी चाहिए थी। मैं आपका बहुत सा वक्त बरबाद कर चुका हूँ।"

रियो ने उससे कहा कि वह आकर रियो को सूचित करे कि उसे अपनी स्कीम में कितनी सफलता मिली है, और वह रियो से नाराज़ न हो कि वह इससे ज़्यादा दोस्ती का सलूक नहीं कर सका। उसने विश्वास प्रकट किया कि भविष्य में वे ज़रूर किसी-न-किसी बात पर सहमत होंगे। रेम्बर्त घब-राया-सा नज़र आया।

फिर उसने थोड़ी देर ख़ामोश रहने के बाद कहा, "हाँ, अपने स्वभाव और आपने अभी जो बातें कहीं हैं उनके बावजूद भी मेरा ख़याल है कि हम ज़रूर मिलेंगे।" फिर कुछ रुककर उसने कहा, "फिर भी मैं आपकी राय से सहमत नहीं हूँ।"

हैट आँखों तक सरकाकर वह तेज़ी से वहाँ से चल दिया। रियो ने उसे उस होटल में घुसते देखा जहाँ तारो रहता था।

अगले ही क्षण डॉक्टर ने धीरे से सर हिलाया जैसे वह उस विचार का समर्थन कर रहा हो जो उसके दिमाग़ में आया था। हाँ, पत्रकार ने ठीक ही किया था, वह अपनी ख़ुशी को छिनने नहीं देना चाहता था। लेकिन क्या उसने रियो पर यह इल्ज़ाम लगाकर कि रियो सिद्धान्तों की दुनिया में रहता है, ठीक किया था? क्या उन दिनों 'अमूर्त' शब्द लागू हो सकता है जब प्लेग शहर पर पलकर मोटी हो रही है और मरने वालों के साप्ताहिक आँकड़े पाँच सौ तक जा पहुँचे हैं, जबकि रियो सारा वक्त अस्पताल में रहता है? हाँ, ऐसी मुसीबतों में अमूर्त सैद्धान्तिकता का कुछ अंश ज़रूर आ जाता है जिसका यथार्थ से सम्बन्ध-विच्छेद हो जाता है। लेकिन जब ऐसी 'अमूर्तता' इन्सान की तबाही करने लगती है तब उसकी तरफ़ ध्यान देना ही पड़ता है। और रियो यह जानता था कि यह सबसे ज़्यादा आसान रास्ता नहीं था; मिसाल के लिए इस सहायक अस्पताल को चलाना जिसका रियो इन्चार्ज था। अब ऐसे तीन अस्पताल बन गए थे—यह आसान काम नहीं था।

रियो के ऑपरेशन-रूम की बग़ल में डॉक्टरी सामान से लैस एक कमरा था, जहाँ मरीज़ को सबसे पहले लाया जाता था। इसके फ़र्श को खोदकर एक उथली-सी पानी और क्रेसीलिक एसिड की झील बना दी गई थी, जिसके बीच में ईंटों का एक छोटा द्वीप-सा बनाया गया था। मरीज़ को इस द्वीप पर ले जाया जाता था, तेज़ी से उसके कपड़े उतारकर कीटाणु-नाशक पानी में डाल दिए जाते थे। नहलाने, सुखाने और अस्पताल की मोटी-खुरदरी नाइट-शर्ट पहनाने के बाद उसको जाँच के लिए रियो के पास ले जाया जाता था; फिर उसके बाद किसी वार्ड में। इस अस्पताल में, जो स्कूल की इमारत को क़ब्ज़े में लेकर खोला गया था, पांच सौ बेड थे। लगभग सभी बेड भरे हुए थे। मरीज़ों को रियो स्वयं अपनी देखरेख में दाख़िल करने के बाद उन्हें टीके लगाता था, गिल्टियों में नश्तर लगाता था और आँकड़ों की दोबारा जाँच करने के बाद फिर दोपहर के वक्त अपने मरीज़ों

को देखने के लिए लौट आता था। अँधेरा होने पर वह मरीज़ों का हालचाल पूछने के लिए निकलता था और रात को बहुत देर से लौटता था। कल रात उसकी माँ ने उसे उसकी पत्नी का तार देते वक्त कहा था कि उसके हाथ काँप रहे हैं।

"हाँ," रियो ने जवाब दिया, "लेकिन अब सवाल सिर्फ़ डटे रहने का है। देख लेना मेरे स्नायु अपने-आप शान्त हो जाएँगे।"

डॉक्टर हट्टे-कट्टे बदन का आदमी था और अभी तक वह थकान से चूर नहीं हुआ था। फिर भी बार-बार मरीज़ों को देखने जाने की वजह से उसकी सहन-शक्ति पर बोझ पड़ने लगा था। एक बार यह पता चलने पर कि किसी को प्लेग हो गई है, उसे फ़ौरन ही घर से हटाकर अस्पताल पहुँचा दिया जाता था। उसके बाद 'सैद्धान्तिकता' और परिवार के साथ संघर्ष शुरू होता था, जिन्हें अच्छी तरह मालूम था कि अब वे मरीज़ को उसके मरने या स्वस्थ होने से पहले नहीं देख सकेंगे। "डॉक्टर, रहम करो!" तारो के होटल की नौकरानी माँ मदाम लोरेतव ने डॉक्टर से प्रार्थना की थी। इस प्रार्थना का कोई फ़ायदा नहीं हुआ था। निस्संदेह डॉक्टर रहमदिल था। लेकिन इस हालत में रहम का क्या फ़ायदा हो सकता था! डॉक्टर को टेलीफ़ोन करना ही पड़ा और जल्द ही सड़क पर एम्बुलेन्स की आवाज़ सुनाई दी थी। (शुरू में तो पड़ोसी खिड़कियाँ खोलकर सारा दृश्य देखते थे, बाद में वे फ़ौरन खिड़कियाँ बन्द कर देते थे।) फिर संघर्ष का दूसरा दौर शुरू हुआ, आँसू और मिन्नतें, जिसे संक्षेप में 'अव्यावहारिकता' कहा जा सकता है। मरीज़ों के कमरों में, जहाँ बुख़ार की गरमी और स्नायविक विक्षिप्ति छाई थी, पागलपन के दृश्य होते थे। हर बार एक ही मामले पर संघर्ष होता था। मरीज़ को हटा लिया जाता था, इसके बाद रियो भी वहाँ से चला आता था।

शुरू के दिनों में तो रियो सिर्फ़ अस्पताल में फ़ोन कर देता था और एम्बुलेन्स के आने की इन्तज़ार किये बग़ैर दूसरे मरीज़ों को देखने चला जाता था। लेकिन उसके जाते ही परिवार के लोग घर में ताला लगा देते थे। वे मरीज़ से बिछुड़ने की बजाय प्लेग की छूत के सम्पर्क में आना ज़्यादा

पसंद करते थे, क्योंकि उन्हें अच्छी तरह मालूम था कि बिछुड़ने का नतीजा क्या होगा। इसके बाद गाली-गलौज, चीखों, दरवाज़े तोड़ने और पुलिस और फ़ौज की कार्यवाही का सिलसिला शुरू होता था। मरीज़ पर धावा बोल दिया जाता था। शुरू के कुछ हफ्तों में रियो को एम्बुलेन्स के आने से पहले मरीज़ के पास रुकने के लिए मजबूर होना पड़ता था। बाद में जब हर डॉक्टर के साथ एक वॉलेण्टियर पुलिस-अफ़सर जाने लगा तो रियो निश्चिन्त होकर जल्दी से दूसरे मरीज़ों को देखने के लिए जाने लगा।

लेकिन महामारी के प्रारंभिक दिनों में हर शाम यही क़िस्सा होता था जो उस दिन हुआ था जब रियो मदाम लोरेन की बेटी को देखने गया था। उसे एक छोटे-से फ्लैट में ले जाया गया था जिसमें पंखे और कागज़ के फूल सजे हुए थे। मदाम लोरेने ने काँपती हुई मुस्कराहट से रियो का स्वागत किया था।

"ओह, मेरा ख़याल है यह उस क़िस्म का बुखार नहीं है जिसकी आज-कल लोगों में चर्चा है!"

रज़ाई और कमीज़ उठाकर डॉक्टर ने ख़ामोशी से लड़की की जाँघों और पेट पर पड़े लाल दाग़ों और सूजी हुई गिल्टियों को देखा। उन पर नज़र डालते ही माँ शोक से फूट-फूटकर रोने लगी। हर शाम को माताएँ इसी तरह विलाप करती थीं, अपने बच्चों के पेट और जिस्म पर सांघातिक चिह्न देखते ही वे घबराहट और अव्यावहारिकता का प्रदर्शन करने लगती थीं, हर शाम को अनेक हाथ रियो की बाँहों को जकड़ लेते थे, निरर्थक शब्दों, वादों और आँसुओं की झड़ी लग जाती थी। हर शाम को एम्बुलेन्स की घंटी सुनकर ऐसे दृश्य होते थे जो हर प्रकार के शोक की तरह निरर्थक थे। रियो जानता था कि भविष्य में उसे लगातार ऐसे अनगिनत दृश्यों का सामना करना पड़ेगा। हाँ, अमूर्त सिद्धान्त की तरह प्लेग नीरस थी। शायद सिर्फ़ एक ही चीज़ में परिवर्तन आया था। वह रियो ख़ुद था। उस रोज़ शाम को रिपब्लिक के बुत के पास खड़े होकर रियो को अपने इस परि-वर्तन का एहसास हुआ था। वह होटल के दरवाजे की तरफ़ टकटकी लगा कर देखता रहा जहाँ रेम्बर्त अभी दाख़िल हुआ था। उसे लगा एक शीतल उदासीनता धीरे-धीरे उसके मन में व्याप रही है।

इन थका देने वाले हफ़्तों के बाद, उन तमाम शामों से गुज़रने के बाद जब लोग निष्प्रयोजन घूमने के लिए सड़कों पर जमा होते थे, रियो ने सीखा था कि अब उसे अपना दिल सख्त करने की कोई ज़रूरत नहीं रह गई है। जब करुणा निरर्थक होती है तो इन्सान का दिल खुद-ब-खुद करुणा से ऊपर उठ जाता है। और इसी चेतना में, जो डॉक्टर के मन में धीरे-धीरे व्याप रही थी, उसे अपने असह्य बोझ को हल्का करने का एकमात्र साधन और सान्त्वना दिखाई दी। वह जानता था कि यही चेतना उसके काम को आसान बना देगी, इसीलिए वह खुश था। जब रियो तड़के दो बजे लौटकर घर आया, तो उसकी माँ बेहद घबरा उठी। रियो ने भावशून्य दृष्टि से माँ की ओर देखा। माँ रियो के एकमात्र मुक्ति-मार्ग की भर्त्सना कर रही थी। अमूर्त सैद्धान्तिकता से लड़ने के लिए ज़रूरी है कि व्यक्ति के चरित्र में भी इस गुण का समावेश हो। लेकिन भला रेम्बर्त से इस बात को समझने की उम्मीद कैसे की जा सकती थी! उसे तो लगता था कि उसकी खुशी के रास्ते में यही खामखयाली एकमात्र रुकावट है। सचमुच रियो को महसूस हुआ कि एक माने में पत्रकार की बात सही थी। लेकिन वह यह भी जानता था कि कभी-कभी खामखयाली अपने को इन्सान की खुशी से ज़्यादा बड़ा साबित करती है, और तभी उसकी सत्ता को स्वीकार करना पड़ता है। रेम्बर्त का भी यही हाल होना था जैसा कि डॉक्टर को बाद में जाकर पता चला जब रेम्बर्त ने अपने बारे में और ज़्यादा बातें बताईं। इस तरह से एक अलग स्तर पर रियो को हर व्यक्ति की खुशी और प्लेग की अमूर्तताओं के बीच चलने वाले नीरस संघर्ष का पता चला जो बहुत लम्बे अरसे तक हमारे शहर की समूची जिन्दगी बन गया था।

३

लेकिन जहाँ कुछ लोगों को खामखयाली नज़र आती थी, वहाँ दूसरे लोग सचाई देखते थे। प्लेग के पहले महीने का अन्त निराशापूर्ण हुआ।

महामारी खूब ज़ोर से फैली, और जेज़ुएट पादरी फ़ादर पैनेलो ने एक नाटकीय प्रवचन दिया। जब बूढ़े माइकेल में प्लेग के लक्षण दिखाई दिए थे और वह खड़खड़ाता हुआ घर लौट रहा था तब फ़ादर पैनेलो ने उसे अपनी बाँह का सहारा दिया था। फ़ादर ओरान की भूगोल-समिति की सभाओं में अक्सर हिस्सा लिया करता था, जिसकी वजह से उसे काफ़ी शोहरत मिल चुकी थी। इन लेखों का विषय प्राचीन शिलालेख था। वह इस विषय का विद्वान माना जाता था। लेकिन फ़ादर पैनेलो ने वर्तमान व्यक्तिवाद पर बहुत से भाषण दिये थे, जिससे साधारण जनता तक भी उसकी पहुँच हो गई थी, जिसकी संख्या बहुत ज्यादा थी। इन भाषणों में फ़ादर ने अपने को ईसाई सिद्धान्तों का शुद्ध और सही स्वरूप का साहसी समर्थक साबित किया था। उसके विचारों में न आधुनिकता की उछृङ्खलता थी, न अतीत का पुरोहितवाद था। ऐसे मौक़ों पर वह तीखे अकाट्य सत्यों से अपने श्रोताओं को परास्त करने से कभी बाज़ नहीं आया था। इसीलिए शहर में उसकी इतनी शोहरत थी।

महीने के अन्तिम दिनों में हमारे शहर के पादरी-वर्ग ने अपने विशिष्ट हथियारों से प्लेग का मुक़ाबला करने का फ़ैसला करके एक 'प्रार्थना-सप्ताह' मनाने का आयोजन किया। सार्वजनिक धर्म-भीरुता के इन प्रदर्शनों का समापन रविवार के दिन प्लेग से पीड़ित होकर शहीद होने वाले संत रॉच के तत्त्वावधान में होने वाली विराट् प्रार्थना-सभा से होने वाला था, और फ़ादर पैनेलो से उस सभा में प्रवचन देने के लिए कहा गया था। एक पखवारे तक उसने संत ऑगस्ताइन और अफ्रीकी चर्च के बारे में अपना अनुसन्धान-कार्य स्थगित रखा, जिसके कारण उसे अपने पादरी-वर्ग में ऊँचा स्थान प्राप्त हुआ था। जोशीले और उग्र स्वभाव का व्यक्ति होने के कारण, वह पूरे दिल से इस काम की तैयारी में जुट गया। काफ़ी पहले से ही उसके प्रवचन की चर्चा होने लगी थी और एक तरह से इस काल के इतिहास में इस प्रवचन की तारीख काफ़ी महत्व रखती है।

'प्रार्थना-सप्ताह' की सभाओं में प्रतिदिन खासी भीड़ जमा हो जाती थी। फिर भी, हमें यह मानना पड़ेगा कि अच्छे दिनों में भी ओरान के

निवासियों की धर्म-निष्ठा में कमी नहीं होती थी। मिसाल के लिए रविवार के दिन समुद्र-स्नान को गिरजाघर की हाज़िरी से गम्भीर प्रतियोगिता करनी पड़ती है। न यह समझना चाहिए कि उन्हें एक दिव्य रोशनी दिखाई दे गई थी, जिसने एकाएक उनका हृदय-परिवर्तन कर दिया था। लेकिन एक तो शहर को बन्द कर दिया गया था और बन्दरगाह में दाखिल होने की मनाही थी, और दूसरे, चूँकि वे एक विशिष्ट मनःस्थिति में थे और हालाँकि अपने दिलों की गहराई में वे अब भी अपने ऊपर आई मुसीबत की भयंकरता को स्वीकार करने में असमर्थ थे, वे यह अनुभव किये बिना न रह सके थे कि कोई चीज़ निश्चित रूप से बदल गई है। फिर भी, अधिकांश लोग अभी भी यह उम्मीद लगाए बैठे थे कि यह महामारी जल्द ही गुज़र जाएगी और वे और उनके परिवार सुरक्षित बच जाएँगे। इसलिए वे अभी तक अपनी आदतों में कोई परिवर्तन करने की ज़रूरत नहीं महसूस करते थे। उनके लिए प्लेग एक अनयाचित आगन्तुक की तरह थी जो उसी तरह अचानक चली जाएगी जिस तरह आयी थी। वे घबराए तो थे, लेकिन अभी तक इतने हताश नहीं हुए थे कि प्लेग उन्हें अपने अस्तित्व के दुर्निवार तन्तु के रूप में दिखाई देती और अब तक उन्होंने जिस ज़िन्दगी का उपयोग किया था, उसको ही भूल जाते। संक्षेप में, वे परिस्थिति में परिवर्तन होने की प्रतीक्षा कर रहे थे। रही धर्म की बात—तो और बातों की तरह उसके बारे में भी प्लेग ने उनकी मनःस्थिति कुछ ऐसी विचित्र बना दी थी, जो उदासीनता से उतनी ही दूर थी जितनी उत्साह से, जिसे 'वस्तून्मुखता' कहकर पुकारना ही शायद सबसे ठीक है। प्रार्थना-सप्ताह में भाग लेने वालों में से अधिकांश लोग उस उक्ति को दुहराते जो डॉक्टर रियो ने चर्च जाने वाले किसी व्यक्ति के मुख से सुनी थी। "जो भी हो, इससे कोई नुक़सान नहीं हो सकता।" यहाँ तक कि तारो ने भी अपनी नोट-बुक में यह दर्ज करने के बाद कि ऐसे मौकों पर चीन के लोग प्लेग के देवता के आगे डफली बजाने लगते हैं, यह मत प्रकट किया कि यह बताना मुमकिन नहीं है कि क्या सचमुच व्यवहारतः छूत रोकने की एहतियाती कार्यवाहियों के मुक़ाबले डफली ज़्यादा कारगर साबित होती थी? इसके आगे

उसने यह विचार दर्ज किया कि इसका फ़ैसला करने के पहले हमें यह निश्चय करना पड़ेगा कि प्लेग का देवता वास्तव में होता भी है या नहीं और इस बारे में अज्ञान हमारी उन सब धारणाओं को व्यर्थ सिद्ध कर देता है, जो हम बना लेते हैं।

ख़ैर, जो भी हो, प्रार्थना-सप्ताह के दिनों में कैथीड्रल हर समय उपासकों से खचाखच भरा रहता था। शुरू के दो-तीन दिन तक बहुत से लोग पोर्च के सामने के बाग़ में पाम और अनार के वृक्षों के नीचे खड़े होकर दूर से ही प्रार्थनाओं और आह्वानों के चढ़ते हुए ज्वार को सुनते रहे, जिनकी प्रतिध्वनियों से आस-पड़ोस की सड़कें तक गूँज उठती थीं। लेकिन एक मिसाल क़ायम होते ही वे लोग गिरजे में घुसने लगे और हिचकिचाते हुए उन प्रतिक्रियाओं में भाग लेने लगे जो प्रार्थियों के हाव-भावों से प्रकट हो रही थीं। और रविवार के दिन उपासकों की एक विशाल भीड़ ने गिरजे में तिल रखने की जगह न छोड़ी, यहाँ तक कि सीढ़ियों और अहाते में भी लोग भरे हुए थे। एक दिन पहले से आसमान में बादल छा गए थे और आज ज़ोर की बारिश हो रही थी। जो लोग खुले में खड़े थे उन्होंने अपनी छतरियाँ तान लीं। फ़ादर पैनेलो ने जिस समय मंच पर अपना प्रवचन सुनाने के लिए कदम रखा, उस समय गिरजे के भीतर की हवा गीले कपड़ों की गन्ध और अगरबत्तियों के धुएँ से बोझिल हो रही थी।

वह औसत क़द और चौड़ी काठी का आदमी था। जब वह मंच के किनारे लकड़ी के काम के बने जंगले को अपने चौड़े हाथों से पकड़कर चढ़ने के लिए झुका तो लोगों को सिर्फ़ उसकी विशाल, काली पीठ और उसके ऊपर दो गुलाबी गाल ही दिखाई दिए जिन पर लोहे के फ्रेम में जड़ा चश्मा टँगा था। उसकी भाषण-शैली शक्तिशाली और आवेशपूर्ण होती थी जो श्रोता को दूर तक बहा ले जाती थी, और जब उसने स्पष्ट और ज़ोरदार स्वर में उपासकों की भीड़ पर पहले ही वाक्य में प्रहार किया कि—"तुम पर एक संकट आया है, मेरे भाइयो! और मेरे भाइयों, तुम इसी के क़ाबिल भी थे"—तो लोग हैरानी से हक्के-बक्के रह गए और यह हैरानी बाहर बारिश में खड़े लोगों तक फैल गई।

तर्क की दृष्टि से इसके बाद उसने जो कुछ कहा उसका इस नाटकीय आरम्भ से कार्य-कारण सम्बन्ध नहीं था। प्रवचन जब आगे बढ़ने लगा तो उपस्थित श्रोताओं के आगे स्पष्ट होता गया कि भाषण-कला की एक चाल से फ़ादर पैनेलो ने जैसे एक घूँसे की तरह अपने पूरे प्रवचन का सार उसके मुँह पर दे मारा था। यह प्रहार करने के बाद उसने फ़ौरन मिस्र की प्लेग के बारे में एक्ज़ोडस की किताब में से उद्धरण देते हुए कहा, "इतिहास में यह क़हर जब पहली बार आया, तब इसका इस्तेमाल ख़ुदा के दुश्मनों को बरबाद करने के लिए किया गया था। फेरो ने ख़ुदा की मंशा के ख़िलाफ़ लड़ने की कोशिश की, लेकिन प्लेग ने उसको घुटनों के बल झुकने पर मजबूर कर दिया। इस तरह इतिहास के शुरू से ही ख़ुदा का यह क़हर अहंकारियों के गर्व को चूर करता आया है और उन्हें धूल में मिलाता आया है जिन्होंने उसके ख़िलाफ़ अपने दिलों को सख्त कर लिया है। इस बात पर अच्छी तरह ग़ौर करो, मेरे दोस्तो! और अपने घुटने टेककर बैठ जाओ।"

बारिश की तेज़ी बढ़ गई थी और गिरजे के पूर्वी भाग की खिड़कियों से टकराती हुई बारिश की बूँदों से वातावरण की ख़ामोशी और भी बढ़ गई थी। इस निस्तब्धता में गूँजते हुए फ़ादर के स्वरों में इतनी आस्था थी कि क्षणिक आनाकानी के बाद कुछ लोग अपनी सीटों से सरककर घुटनों के बल बैठ गए, दूसरों ने भी उनका अनुकरण करना उचित समझा। धीरे-धीरे उनकी देखा-देखी गिरजे के एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक सब लोग घुटनों के बल बैठे नज़र आने लगे। कुरसियों की चूँ-चूँ के सिवा और कोई आवाज़ नहीं आ रही थी। फिर फ़ादर पैनेलो तनकर खड़ा हो गया और एक गहरी साँस लेकर उसने अपना प्रवचन जारी रखा जो पहले से अधिक शक्तिशाली हो गया।

"आज आपके बीच प्लेग इसलिए आयी है, क्योंकि आपके सोचने की घड़ी आ पहुँची है। नेक लोगों को डरने की कोई ज़रूरत नहीं लेकिन गुनहगार काँपेंगे। क्योंकि प्लेग ख़ुदा का मूसल है और दुनिया फ़र्श है। ख़ुदा बेरहमी से अनाज को तब तक पीटेगा जब तक दाने छिलकों से अलग नहीं हो जाते। छिलकों की तादाद ज़्यादा होगी। बेशुमार लोग

बुलाये जाएँगे लेकिन चंद लोग ही चुने जाएँगे। ख़ुदा ने यह आफ़त नहीं बुलाई। बहुत दिन से हमारी दुनिया बुराई का साथ देती रही है और ख़ुदा के रहम और माफ़ी पर भरोसा करती रही है। इन्सानों ने सोचा कि गुनाहों पर अफ़सोस ज़ाहिर करना ही काफ़ी है। गुनाह करने में कोई कसर नहीं छोड़ी गई। सब इतमीनान से गुनाह करते थे और उनका ख़याल था कि जब क़यामत का दिन आयेगा तो वे गुनाह छोड़कर माफ़ी माँग लेंगे। उन्होंने सोचा जब तक वह दिन नहीं आता तब तक सबसे आसान रास्ता यह है कि गुनाह के आगे हथियार डाल दो, बाक़ी काम ख़ुदा के रहम से हो जाएगा। बहुत दिन तक ख़ुदा रहम की निगाहों से इस शहर को देखता रहा, लेकिन इन्तज़ार करते-करते ख़ुदा थक गया। हम उसकी शाश्वत उम्मीद को बहुत देर तक टालते रहे और अब ख़ुदा ने हमसे मुँह मोड़ लिया है। ख़ुदा की रोशनी हमसे छिन गई है, हम अँधेरे में चल रहे हैं, इस प्लेग के अँधेरे में!"

श्रोताओं में से किसी ने अड़ियल घोड़े की तरह नाक से आवाज़ की। कुछ देर की ख़ामोशी के बाद पादरी ने तनिक धीमे स्वर में कहा :

"हम गोल्डन लीजेंड में पढ़ते हैं कि बादशाह अम्ब्रर्तो के ज़माने में प्लेग ने इटली को तहस-नहस कर दिया था और सबसे ज़्यादा तबाही रोम और पाविया में हुई थी। प्लेग इतनी भयंकर थी कि लाशों को दफ़नाने के लिए ज़िन्दा लोगों की तादाद भी काफ़ी नहीं थी। उस वक्त लोगों को एक नेक फ़रिश्ता दिखाई दिया था जो शैतान के दूत को, जिसके हाथ में शिकार करने का नेज़ा था, मकानों पर प्रहार करने का हुक्म दे रहा था। जिस घर पर नेज़े के जितने ही प्रहार होते थे, उतनी ही लाशें वहाँ से निकलती थीं।"

अब फ़ादर पैनेलो ने अपनी दोनों छोटी बाँहें खुले पोर्च की तरफ़ फैलाईं, मानो वह बारिश के हिलते हुए परदे के पीछे किसी चीज़ की ओर इशारा कर रहा हो।

"मेरे भाइयो!" पैनेलो ने ऊँचे स्वर में कहा, "वे दूत फिर शिकार पर निकले हैं और आज हमारी सड़कों पर तबाही मचा रहे हैं। वह देखो महामारी के दूत को जो लूसिफ़र की तरह ख़ूबसूरत है, जो शैतान की तरह

चमक रहा है, वह तुम्हारे मकानों की छतों पर मँडरा रहा है। उसके दाएँ हाथ में नेज़ा है जो प्रहार करने के लिए ऊपर उठा हुआ है। उसका बाँया हाथ आपके मकानों में से कुछ मकानों की ओर बढ़ा हुआ है। मुमकिन है, इसी क्षण उसकी उँगली आपके दरवाज़े की ओर इशारा कर रही हो, लाल नेज़ा आपकी चौखटों को खटखटा रहा हो। और क्या पता प्लेग आपके घर में दाखिल होकर आपके सोने के कमरे में जाकर बैठ गई हो और आपके लौटने का इन्तज़ार कर रही हो। धैर्य और सतर्कता से वह उचित अवसर की ताक में बैठी है, उससे बचना असम्भव है जैसे विधि के विधान से कोई नहीं बच सकता। दुनिया की कोई ताक़त, यहाँ तक कि—ग़ौर से मेरी बात सुनें—साइन्स की ताक़त भी, जिसकी इतनी शेख़ी बघारी जाती है, इस प्रहार से आपको नहीं बचा सकती अगर एक बार वह हाथ आपकी तरफ़ बढ़ गया। ख़ून से भरे, शोक के फ़र्श पर अनाज की तरह, तुम लोगों को फटकारा जाएगा और तुम चोकर के साथ दूर फेंक दिए जाओगे।"

फ़ादर ने फिर मूसल के प्रतीक पर प्रभावशाली और ओजस्वी वक्तृता दी। उसने श्रोताओं से कहा कि वे कल्पना करें कि उनके शहर के ऊपर लकड़ी की एक सलाख घूम रही है और अन्धाधुन्ध मकानों से टकरा रही है, और जब वह ऊपर उठती है तो ख़ून की बूँदें बरसती हैं, धरती पर शोक और रक्त-पात होता है, बीज बोने के लिए, जिसमें से सचाई की खेती तैयार होगी।"

इस लम्बे वाक्य के बाद फ़ादर पैनेलो ख़ामोश हो गया। उसके लम्बे बालों की लटें माथे पर छा गई थीं। वह ज़ोर से मुक्का मारकर जब अपने आवेश को व्यक्त कर रहा था तो उस आघात से उसका सारा शरीर काँप उठता था। जब वह दोबारा बोला तो उसका स्वर धीमा था, लेकिन उसमें अभियोग की थर्राहट थी। "हाँ, अब गम्भीरता से सोचने का समय आ गया है। आप मज़े में सोचते थे कि सिर्फ़ इतवार के दिन ख़ुदा से मिलना काफ़ी है और हफ़्ते के बाक़ी दिनों में आप मनमानी कर सकेंगे। आपका ख़याल था कि कुछ संक्षिप्त औपचारिकताओं से, और कुछ बार घुटने झुकाकर आप ख़ुदा को ख़ुश कर लेंगे और अपनी लापरवाही की क़सर पूरी कर लेंगे, जो कि बहुत बड़ा जुर्म है। लेकिन आप ख़ुदा से ऐसा मज़ाक नहीं कर

सकते। ये संक्षिप्त मुलाक़ातें ख़ुदा की मुहब्बत की तेज़ भूख को शान्त न कर सकीं। वह आपको अक्सर और ज़्यादा देर तक देखना चाहता था। उसकी मुहब्बत का यही तरीक़ा है। इसीलिए जब ख़ुदा आपका इन्तज़ार करते-करते थक गया तो वह ख़ुद-ब-ख़ुद आपसे मिलने चले आया; इतिहास के शुरू से ही ख़ुदा उन तमाम शहरों में जाता रहा है जिन्होंने उसके ख़िलाफ़ गुनाह किये हैं। अब आप भी वही सबक़ सीख रहे हैं जो केन[1] और उसकी औलाद ने, सोडोम और गोमोरा[2] के बाशिन्दों ने, जोब[3] और फ़रोआ[4] ने और उन तमाम लोगों ने सीखा था जिन्होंने ख़ुदा के लिए अपने दिल के दरवाज़े बंद कर लिए थे। उनकी तरह आप लोग भी, जब से शहर के फाटक बंद हो गए हैं और आप महामारी के साथ रह गए हैं, इन्सानों और सारी सृष्टि को नयी दृष्टि से देख रहे हैं। आख़िरकार अब आपको एहसास हुआ है कि आप उन बुनियादी बातों पर संजीदगी से सोचें जो ज़िंदगी की सबसे पहली और आख़िरी चीज़ें हैं।"

सीली हवा का एक झोंका गिरजे के बीच के हिस्से में, मोमबत्तियों की रोशनी को झुकाकर मद्धम कर रहा था। जलते हुए मोम, लोगों की खाँसी और किसी की दबी हुई छींक का तीखापन फ़ादर पैनेलो तक पहुँचा जो बड़ी सूक्ष्मता से अपने व्याख्यान के प्रारम्भिक भाग को दोहरा रहा था। यह सूक्ष्मता सबको बहुत पसंद आई। फ़ादर ने शान्त, सीधे-सादे स्वर में कहा, "मैं जानता हूँ कि आप सब सोच रहे हैं कि आख़िर मैं इन बातों से क्या नतीजा निकालना चाहता हूँ! मैं आपको सचाई की तरफ़ ले जाना चाहता हूँ और आपको ख़ुशी सिखाना चाहता हूँ—हाँ ख़ुशी। मैंने अभी आपको जो बातें बताई हैं उनके बावजूद मैं चाहता हूँ कि आप ख़ुशी

---

१. केन—केन ने अपने भाई की हत्या करके दुनिया में सबसे पहला गुनाह किया था।

२. सोडोम और गोमोरा—बाइबिल में वर्णित प्राचीन शहर जो दुराचार की पराकाष्ठा के कारण तबाह हो गए थे।

३. जोब—ख़ुदा ने मुसीबतें भेजकर जोब की परीक्षा ली थी।

४. फ़रोआ—मिस्र का निरंकुश बादशाह।

मनाएँ, क्योंकि वह वक्त बीत चुका है जब किसी की मदद या नेक सलाह के कुछ शब्द आपको सही रास्ते पर ला सकते थे। आज सचाई एक हुक्म बनकर आयी है। वह ख़ून से सने लाल नेज़े की शक्ल में आयी है जो मुक्ति के सँकरे रास्ते की तरफ़ कठोरतापूर्वक इशारा कर रहा है, मुक्ति का यही एक रास्ता है। इस तरह मेरे भाइयो, ख़ुदा की मेहरबानी आपके सामने आयी है, जिसने हर चीज़ में अच्छाई और बुराई, गुस्सा और रहम, प्लेग और आपकी मुक्ति पैदा की है। यही महामारी आपको तबाह करने के साथ-साथ, आपकी भलाई भी कर रही है और आपको सही रास्ता दिखा रही है।

"कई शताब्दियाँ पहले अबेसीनियाँ के ईसाइयों ने प्लेग में अमरत्व पाने का ख़ुदा का दिखाया हुआ, निश्चित तरीका देखा था। जिन्हें प्लेग की छूत नहीं लगी थी, उन्होंने प्लेग से मरे लोगों की चद्दरें ओढ़कर मौत को दावत दी थी। मैं कहता हूँ मुक्ति पाने का यह तरीका निरा पागलपन था, जिसकी तारीफ़ हम नहीं कर सकते। इस तरीक़े में एक जल्दबाज़ी और गुस्ताख़ी नज़र आती है जिसकी हमें निन्दा करनी पड़ेगी। किसी इन्सान को ज़बरदस्ती ख़ुदा का हाथ उठवाने की या मौत की घड़ी को निश्चित समय से पहले बुलाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। इसका अर्थ हुआ विधि के बनाए क्रम में दख़ल देकर जल्दी काम करवाना। ख़ुदा ने हमेशा के लिए पक्के क़ानून बना दिए हैं जो बदले नहीं जा सकते। इससे अगला क़दम नास्तिकता है। फिर भी हम उन अबीसीनियन ईसाइयों के जोश से सबक़ सीख सकते हैं जो हमारे लिए फ़ायदेमन्द साबित होगा। इसका अधिकांश भाग हमारे धर्म के उपदेशों और बुद्धिमत्ता के ख़िलाफ़ है, फिर भी इसमें उस ज्वलन्त शाश्वत प्रकाश की झलक मिल सकती है, जिसकी शांत दीपशिखा इन्सान के दुःख के अँधेरे में जलती है। यही प्रकाश उन अँधेरे रास्तों का भी आलोकित करता है जो हमें मुक्ति की ओर ले जाते हैं। इससे हमें ख़ुदा की मरज़ी की असली शक्ल पता चलती है, जो निश्चित रूप से बुराई को नेकी में बदलती रहती है। आज फिर यह रोशनी हमें डर और सिसकियों की अँधेरी घाटी में से पवित्र ख़ामोशी की तरफ़ ले जा रही है जो सारी ज़िन्दगी का स्रोत है।

मेरे दोस्तो, यही है वह सबसे बड़ी तसल्ली है जो मैं आप लोगों को देना चाहता हूँ ताकि जब आप इस ख़ुदा के घर से बाहर निकलें तो अपने दिलों में सिर्फ नाराज़गी के लफ़्ज़ नहीं बल्कि राहत का एक पैग़ाम भी लेकर जाएँ।"

सबका खयाल था कि इन शब्दों के साथ ही प्रवचन खत्म हो गया था। बाहर बारिश बंद हो गई थी और गिरजे का आँगन सीली धूप से पीला हो गया था।

सड़कों से ट्रैफ़िक की धीमी भनभनाहट और अस्पष्ट कोलाहल सुनाई दे रहा था; यह जागते हुए शहर की वाणी थी। बड़ी सावधानी और दबी हुई सरसराहट से गिरजाघर के श्रोताओं ने अपनी चीज़ें समेटनी शुरू कर दीं। लेकिन फ़ादर को अभी कुछ और कहना था। फ़ादर ने कहा कि यह स्पष्ट कर देने के बाद कि यह प्लेग उनके गुनाहों की सज़ा देने के लिए ख़ुदा की तरफ़ से भेजी गई है, अंत में कुछ और कहने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि ऐसे शोकपूर्ण मौके पर और कुछ कहना शोभा नहीं देगा। फ़ादर ने यह यक़ीन और उम्मीद ज़ाहिर की कि सब श्रोता अब अपनी असली हैसियत समझ गए होंगे। लेकिन मंच छोड़ने से पहले वह एक किस्सा बताना चाहेगा जो उसने मार्साई के प्राचीन इतिहास में प्लेग के बारे में पढ़ा था, जिसमें इतिहासकार मैथ्यू मैरे ने अपनी दुर्दशा का रोना रोया है। वह कहता है कि उसे नर्क में तड़प-तड़पकर मरने के लिए फेंक दिया है जहाँ न कोई मदद करने वाला है न कोई उम्मीद है। खैर! मैथ्यू मैरे अंधा था। सबके लिए ख़ुदा की मदद और ईसाइयों-जैसी धार्मिक आशा की इतनी तीव्र आवश्यकता फ़ादर पैनेलो को कभी महसूस नहीं हुई थी जितनी कि आज हुई थी। उन्हें आशा थी, हालाँकि यह दुराशा-मात्र थी कि इन दुर्दिनों की विभीषिका के बावजूद, पीड़ित नर-नारियों के चीत्कार के बावजूद ओरान के नागरिक सच्चे ईसाइयों की तरह ख़ुदा से दुआ करेंगे—मुहब्बत की दुआ। बाकी काम ख़ुदा खुद सँभाल लेगा।

४

इस प्रवचन का हमारे शहर के लोगों पर कुछ असर हुआ या नहीं यह कहना कठिन है। मैजिस्ट्रेट मोसिये ओथों ने डॉक्टर रियो को यक़ीन दिलाया कि उसे पादरी की दलीलें 'एकदम अकाट्य' मालूम हुई थीं। लेकिन सब लोग ऐसी अगाध श्रद्धा से प्रवचन के बारे में नहीं सोचते थे। कुछ की समझ में सिर्फ यही बात आई कि उन्हें किसी अनजाने गुनाह के लिए अनिश्चित काल की सज़ा मिली है। बहुत से लोगों ने अपने को इस कैद के अनुसार ढाल लिया और उनकी अति साधारण ज़िन्दगी का क्रम पूर्ववत् जारी रहा। कुछ ऐसे भी थे जिनका मन विद्रोह कर उठा था और जिनके मन में इस वक्त सिर्फ़ एक ही विचार उठ रहा था—वह इस कैद से कैसे छुटकारा पाएँ!

शुरू में तो बाहर की दुनिया से सम्पर्क टूट जाने की हकीकत को लोगों ने बिना शिकायत के मंजूर कर लिया, जैसे लोग किसी अस्थायी असुविधा को बरदाश्त कर लेते जो उनकी कुछ आदतों में ही दखल देती। लेकिन अचानक अब उन्हें यह एहसास हुआ कि वे आसमान के नीले गुम्बद तले, गरमी की लपटों में झुलसते हुए, कैद काट रहे हैं। उनके मन में एक अज्ञात संवेदन उठा कि मौजूदा घटनाओं से उनकी सारी ज़िदगी खतरे में पड़ गई है और शाम को जब ठंडी हवा के झोंकों से उन्हें कुछ होश आता था, तो कैदियों की तरह बन्द रहने की यह अनुभूति कभी-कभी उन्हें बड़ी मूर्खता-पूर्ण हरकतें करने के लिए मजबूर करती थी।

यह ग़ौर करने की बात है—हो सकता है यह निरा संयोग न हो, कि इस इतवार को प्रवचन के बाद शहर में बड़े पैमाने पर घबराहट फैल गई और लोगों के दिलों में इस तरह छा गई कि देखने वाले को शक हो सकता था कि हमारे शहर के लोगों को अब जाकर कहीं अपनी स्थिति का सही एहसास हुआ है। इस दृष्टि से देखने पर शहर का वातावरण कुछ बदला हुआ नज़र आता था। दरअसल समस्या यह थी कि वातावरण बदल गया था या, उनके दिल बदल गए थे।

प्रवचन के कुछ दिनों बाद जब रियो शहर के बाहर की एक बस्ती में जाते हुए ग्रान्द से इस तबदीली पर बहस कर रहा था तो अँधेरे में उसकी टक्कर एक आदमी से हो गई जो फुटपाथ के बीचों-बीच खड़ा बिना आगे चले कमर हिला रहा था। इसी वक्त अचानक सड़क की बत्तियाँ जल उठीं। इन दिनों सड़क की बत्तियाँ काफ़ी देर से जलाई जाती थीं। रियो और उसके साथी के पीछे वाले लैम्प की रोशनी उस आदमी के चेहरे पर पड़ी। उसकी आँखें बन्द थीं और वह बिना आवाज़ के ही हँसे जा रहा था। उसके चेहरे पर पसीने की बड़ी-बड़ी बूँदें टपक रही थीं। एक मौन आनन्द से उसका चेहरा ऐंठ गया था।

"कोई पागल है," ग्रान्द ने राय दी।

रियो उसकी बाँह थामकर, उसे आगे ले जाने लगा तो उसने देखा कि ग्रान्द बुरी तरह से काँप रहा था।

"अगर हालात ऐसे ही रहे तो सारा शहर पागलखाना बन जाएगा," रियो ने कहा। वह थक गया था, उसका गला सूख गया था। उसने कहा, "चलो चलकर शराब पिएँ!"

दोनों एक छोटे-से रेस्तराँ में पहुँचे। सिर्फ़ शराब के काउण्टर के ऊपर के लैम्प से रोशनी आ रही थी। भारी हवा में एक अजीब-सी लाली थी, और न जाने क्यों सब लोग दबी आवाज़ में बातें कर रहे थे।

ग्रान्द ने जब बिना सोडे की शराब का एक छोटा गिलास माँगा और उसे एक ही घूँट में पी गया तो डॉक्टर को बड़ा ताज्जुब हुआ। ग्रान्द ने कहा, "खूब तेज़ चीज़ है!" फिर उसने आगे चलने का सुझाव दिया।

बाहर सड़क पर आकर रियो को लगा जैसे रात फुसफुसाहटों से भरी है। सड़क के लैम्पों के ऊपर अँधेरी गहराइयों में हलकी सनसनाहट सुनकर रियो को उस अदृश्य मूसल का ध्यान आया जिसका फ़ादर पैनेलो ने ज़िक्र किया था, जो लगातार क्लान्त हवा में अनाज को फटकार रहा था।

"खुशी की, खुशी की···" ग्रान्द बुदबुदाया और फिर खामोश हो गया।

रियो ने उससे पूछा कि वह क्या कहना चाहता था?

"ख़ुशी की बात है कि मेरे पास अपना काम है।"

"हाँ, कम-से-कम इस बात की तसल्ली तो है ही।" फिर जैसे हवा में बजने वाली पैशाचिक सीटी की आवाज़ से बचने के लिए उसने ग्रान्द से पूछा, क्या उसके काम का कोई नतीजा निकला है?

"हाँ, मेरा ख़याल है कि मैं आगे बढ़ रहा हूँ।"

"क्या बहुत ज़्यादा काम बाकी है?"

ग्रान्द ने अपने स्वभाव के विपरीत अत्यधिक उत्तेजना दिखाई, और शराब पीने की वजह से उसके स्वर में गरमी आ गई थी।

"मैं नहीं जानता। लेकिन असली सवाल यह नहीं है डॉक्टर! मैं तुम्हें यक़ीन दिलाता हूँ कि यह असली सवाल नहीं है।"

अँधेरे की वजह से साफ़ नहीं दिखाई दे रहा था, लेकिन रियो को लगा कि ग्रान्द अपनी बाँहें हिला रहा था। वह कुछ कहने के लिए अपने को तैयार कर रहा था, और जब वह बोला तो शब्द एक साथ उसके मुँह से फूट पड़े।

"डॉक्टर, दरअसल मैं ये बातें चाहता हूँ। जिस दिन मेरी रचना की पांडुलिपि प्रकाशक के पास पहुँचे तो वह उठकर खड़ा हो जाए—यानी पांडुलिपि पढ़ने के बाद खड़ा हो और अपने दफ़्तर के कर्मचारियों से कहे, "हैट्स ऑफ़! जेन्टलमैन!"[1]

रियो स्तब्ध रह गया और उसकी हैरत और भी बढ़ गई जब उसने देखा, या उसे भ्रम हुआ कि ग्रान्द झटके से अपना हैट उतारकर आगे की तरफ़ बाँह बढ़ा रहा है। ऊपर हवा में सीटी की विलक्षण आवाज़ और भी तेज़ हो गई।

ग्रान्द ने कहा, "देखा! मैं चाहता हूँ कि मेरे काम में...एक भी नुक्स न रहे।"

रियो साहित्य की दुनिया के बारे में ज़्यादा नहीं जानता था, लेकिन उसे शक हुआ कि कभी इतने शानदार और नाटकीय ढंग से घटनाएँ नहीं

---

१. यूरोप में आदर प्रदर्शित करने के लिए सर पर से हैट या टोपी उतार ली जाती

होतीं, जैसा कि ग्रान्द बयान कर रहा था। मिसाल के लिए प्रकाशक दफ़्तरों में हैट पहनकर नहीं बैठते। लेकिन क्या पता ऐसा होता भी हो, इसलिए रियो ने खामोश रहना ही बेहतर समझा। अभी भी ऊपर हवा में गूँजती हुई प्लेग की पैशाचिक फुसफुसाहट उसके कानों में पड़ रही थी, हालाँकि वह उसे न सुनने की पूरी कोशिश कर रहा था। वे शहर के उस हिस्से में पहुँचे जहाँ ग्रान्द रहता था। कुछ ऊँची सतह पर होने के कारण, रात की ठंडी हवा के झोंके दोनों के गालों का स्पर्श कर रहे थे और शहर के कोलाहल को उनसे दूर ले जा रहे थे।

ग्रान्द बोलता जा रहा था, लेकिन रियो को उस शरीफ़ आदमी की सारी बातें समझ में नहीं आ रही थीं। वह इतना ही जान सका कि ग्रान्द आजकल जिस रचना को पूरा करने में लगा है, उसमें बहुत से पृष्ठ होंगे और वह अपनी रचना को सम्पूर्ण बनाने के लिए अनेक मानसिक यंत्रणाएँ झेल रहा है। "ज़रा सोचो तो सही, एक शब्द को सही करने में कई पूरे हफ़्ते गुज़र जाते हैं! कई बार तो वाक्यों को जोड़ने वाले एक शब्द पर इतना वक्त लग जाता है।"

अचानक ग्रान्द रुक गया और उसने डॉक्टर के कोट का एक बटन पकड़ लिया। उसके दंतविहीन पोपले मुँह में से शब्द लुढ़क रहे थे।

"मैं तुम्हें समझाना चाहता हूँ डॉक्टर! मैं मानता हूँ कि 'लेकिन' और 'तथा' में से चुनाव करना आसान है। 'तथा' और 'तब' में कौनसा सही रहेगा इसका चुनाव ज़्यादा मुश्किल है। लेकिन सबसे मुश्किल चीज़ है यह जानना कि 'तथा' को वाक्य में लगाया जाए या काट दिया जाए।

"हाँ, मैं तुम्हारी बात समझ गया।" रियो ने कहा।

रियो ने फिर आगे चलना शुरू कर दिया। ग्रान्द सकपका गया, फिर आगे बढ़कर रियो के साथ आ गया।

"माफ़ करना, न जाने आज शाम से मुझे क्या हो गया है!" ग्रान्द ने शरमिन्दा आवाज़ में कहा।

रियो ने ग्रान्द का उत्साह बढ़ाने के लिए उसकी पीठ थपथपाई और कहा कि उसे ग्रान्द की बातें बेहद दिलचस्प मालूम हुई हैं और वह ग्रान्द

की मदद करना चाहता है। इससे ग्रान्द को कुछ तसल्ली हुई और जब वे ग्रान्द के घर पहुँचे तो ग्रान्द ने कुछ हिचकिचाहट के बाद डॉक्टर से कहा कि वह कुछ देर के लिए भीतर चले। रियो राज़ी हो गया।

वे डाइनिंग रूम में दाखिल हुए और ग्रान्द ने मेज़ के नज़दीक एक कुरसी पर रियो को बिठाया। मेज़ पर काग़ज़ों का ढेर लगा था, जिन पर बहुत ही महीन अक्षर लिखे हुए थे और जगह-जगह पर अशुद्धियाँ ठीक की गई थीं।

डॉक्टर की प्रश्नसूचक दृष्टि के जवाब में ग्रान्द ने कहा, "हाँ, यही मेरी पांडुलिपि है। लेकिन क्या तुम कुछ पाओगे नहीं? मेरे पास थोड़ी-सी शराब रखी है।"

रियो ने इन्कार कर दिया। वह झुककर पांडुलिपि को देख रहा था।

"नहीं, इसे मत देखो। यहीं से मेरा वाक्य शुरू होता है जो मुझे बेहद परेशान कर रहा है।"

वह भी मेज़ पर रखे काग़ज़ों को देख रहा था और उसका हाथ किसी प्रबल आकर्षण से प्रेरित होकर एक काग़ज़ की तरफ़ बढ़ा। फिर वह काग़ज़ को उठाकर बिना शेड के बल्ब के पास ले गया। रोशनी में काग़ज़ का आरपार दीख रहा था। उसके हाथों में काग़ज़ काँप रहा था। रियो ने देखा कि ग्रान्द का माथा पसीने से गीला था।

"बैठ जाओ और यह काग़ज़ पढ़कर सुनाओ।" रियो ने कहा।

"हाँ, मैं भी चाहता हूँ कि तुम्हें पढ़कर सुनाऊँ।" ग्रान्द की आँखों में एक संकोचपूर्ण कृतज्ञता थी।

वह कुछ देर खड़ा रहकर काग़ज़ की तरफ़ देखता रहा, फिर बैठ गया। उधर रियो सड़कों से उठती हुई भिनभिनाहट को सुन रहा था जो प्लेग की सिसकियों का जवाब मालूम होती थी। उसी क्षण रियो की आँखों के सामने नीचे फैले शहर की साफ़ तस्वीर उभर आई, जो बाक़ी दुनिया से अलग और कटा हुआ था, जिसके अँधेरे में पीड़ा की दबी सिसकियाँ फैली थीं। फिर ग्रान्द का अत्यन्त धीमा लेकिन साफ़ स्वर उसके कानों में पड़ा।

'मई की एक सुहानी सुबह में एक शानदार घुड़सवार लड़की बोये द'. बोलोन के फूलों से आच्छादित सड़कों पर देखी जा सकती थी। वह एक खूबसूरत भूरे रंग की घोड़ी पर सवार थी।'

फिर खामोशी छा गई, जिसमें पराजित शहर की अस्पष्ट शिकायत-भरी ध्वनि थी। ग्रान्द ने काग़ज़ मेज़ पर रख दिया था और उसकी तरफ़ ताके जा रहा था। कुछ देर बाद उसने आँखें ऊपर उठाईं।

"इस बारे में तुम्हारी क्या राय है?"

रियो ने कहा कि शुरू के वाक्य को सुनकर उसकी जिज्ञासा बढ़ गई है और वह इसके बाद की कहानी भी सुनना चाहता है। इस पर ग्रान्द ने कहा कि रियो ने ग़लत हिस्सा सुना है। ग्रान्द उत्तेजित दीख रहा था। उसने ज़ोर से अपनी हथेली मेज़ पर रखे काग़ज़ों पर दे मारी।

"यह तो अभी कच्चा मसौदा है। जब मैं मन की तस्वीर को बिलकुल सही ढंग से बयान कर सकूँगा, जब उस घुड़सवार की चाल की सही 'लय' को शब्दों में व्यक्त कर लूँगा—घोड़ा सरपट चाल से भाग रहा है, एक-दो-तीन, एक-दो-तीन—समझ गए मैं क्या कहना चाहता हूँ! बाक़ी की कहानी लिखने में ज़्यादा आसानी हो जाएगी और उससे भी बड़ी एक चीज़ मुमकिन हो जाएगी। कला का भ्रम इतना सम्पूर्ण हो जाएगा कि पहले शब्दों को पढ़कर ही आदमी कह उठेगा, हैट्स ऑफ़!"

लेकिन उसने क़बूल किया कि इस सम्पूर्णता तक पहुँचने के लिए बड़ी सख्त मेहनत करनी पड़ेगी। इस वाक्य को वह इस रूप में हरगिज़ छपने के लिए नहीं दे सकता। कभी-कभी उसे इस वाक्य से संतोष भी हो जाता है—लेकिन उसे पूरा एहसास है कि यह वाक्य कला की दृष्टि से अभी दोषरहित नहीं है और कुछ हद तक शायद इसकी लय अति साधारण मालूम होती है। अति साधारणता से चाहे यह सम्बन्ध कितने ही दूर का हो, फिर भी दिखाई ज़रूर देता है। ग्रान्द ऐसी ही कोई बात कह रहा था जब उन्हें खिड़की से नीचे सड़क पर लोगों के भागने की आवाज़ें सुनाई दीं। रियो खड़ा हो गया।

"कुछ दिन बाद देखना मैं इसे कितनी शानदार चीज़ बनाऊँगा!"

ग्रान्द ने कहा। फिर उसने खिड़की की तरफ़ देखा, "जब यह सारा हंगामा सत्य हो जाएगा।"

लेकिन इसी वक्त भागते हुए लोगों के क़दमों की आवाज़ फिर सुनाई दी। रियो आधा ज़ीना पार कर चुका था और जब वह बाहर सड़क पर पहुँचा तो दो आदमी उसे छूते हुए पीछे निकल गए। मालूम होता था कि वे शहर के फाटकों में से एक फाटक की तरफ़ जा रहे थे। दरअसल प्लेग और गरमी से हमारे शहर के कुछ लोग अपना मानसिक संतुलन खो रहे थे। मारपीट की बहुत सी घटनाएँ हो चुकी थीं और हर रात संतरियों को चकमा देकर बाहर की दुनिया में भागने की कोशिशें की जाती थीं।

५

अनेक लोग, मिसाल के लिए रेम्बर्त, इस बढ़ती हुई परेशानी के वातावरण से मुक्ति पाने की कोशिशें कर रहे थे, लेकिन ज़्यादा चतुराई और धैर्य के साथ। हालाँकि उन्हें भी अपनी कोशिशों में ज़्यादा कामयाबी नहीं मिली थी। कुछ दिन तक रेम्बर्त लगातार अफ़सरों से संघर्ष करता रहा। हमेशा से उसका ख़याल था कि धैर्य और सहनशीलता से ही कामयाबी हासिल हो सकती है और एक माने में संकट के मौके पर रसूख और पहुँच ही काम आती है। इसलिए वह लगातार सभी तरह के अफ़सरों और ऐसे लोगों से मिलता रहा जिनके रसूख़ से साधारण परिस्थितियों में बहुत से काम हो सकते थे। लेकिन संकट के इन दिनों में ऐसे रसूख़ का कोई फ़ायदा नहीं था। अफ़सरों में से अधिकांश लोग ऐसे थे जिनके विचार सिर्फ़ निर्यात, बैंकिंग, फलों और शराब के व्यापार के बारे में बुद्धिमत्तापूर्ण और सुनिश्चित थे। जहाँ तक बीमों, ग़लत ढंग से लिखे गए समझौतों की व्याख्या और ऐसे कई मामलों का सवाल था उनकी योग्यता साबित हो चुकी थी; उनके पास ऊँची योग्यताएँ थीं और उनके इरादे भी नेक मालूम होते थे। दरअसल उनकी यही चीज़ मिलने वालों को सबसे ज़्यादा प्रभावित करती

थी—उनकी नेकनीयती। लेकिन जहाँ तक प्लेग का सम्बन्ध था उनकी योग्यता और कार्य-कुशलता न होने के बराबर थी।

ख़ैर, रेम्बर्त को जब भी मौका मिला वह इन सब लोगों से मिला और अपना मामला पेश किया। उसकी दलीलों का एक ही सारांश था; वह हमारे शहर में परदेसी था इसलिए उसकी प्रार्थना पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए था। आम तौर पर सब लोग फ़ौरन उसकी इस दलील का समर्थन करते थे, लेकिन वे साथ ही यह भी कहते थे कि रेम्बर्त-जैसे कई और लोग भी शहर में मौजूद हैं इसलिए उसकी स्थिति में कोई ऐसी विशेषता नहीं जैसा कि वह सोचता है। इसके जवाब में रेम्बर्त कह सकता था कि इससे उसकी दलील पर कोई असर नहीं पड़ता। इस पर रेम्बर्त को बताया जाता था कि इस बात का असर ज़रूर पड़ता है क्योंकि अधिकारियों की परिस्थिति पहले से ही कठिन है, और वे किसी के प्रति पक्षपात नहीं करना चाहते, वरना उन्हें डर है कि एक 'मिसाल' कायम हो जाएगी—इस शब्द को वे बड़ी नफरत से इस्तेमाल करते थे।

डॉक्टर रियो से बातचीत के दौरान में रेम्बर्त ने बताया कि वह किन-किन लोगों से मिल चुका है। रेम्बर्त ने उन्हें कई श्रेणियों में बाँटा था। जो लोग ऊपर लिखी हुई दलीलें देते थे उन्हें वह ज़िद्दी कहता था। इस श्रेणी के अलावा तसल्ली देने वालों की श्रेणी थी जो उसे यक़ीन दिलाते थे कि मौजूदा स्थिति ज़्यादा दिन तक नहीं चल सकती। जब रेम्बर्त ने उनसे ठोस सुझाव देने के लिए कहा तो उन्होंने यह कहकर उसे टरका दिया कि वह क्षणिक असुविधा के कारण व्यर्थ ही इतनी हाय-तौबा मचा रहा है। कुछ बहुत बड़े लोग थे जिन्होंने रेम्बर्त से कहा कि वह संक्षेप में अपना केस लिखकर छोड़ जाए, उचित समय पर उसकी प्रार्थना पर फ़ैसला किया जाएगा। कुछ अफ़सर उसके साथ खिलवाड़ करते थे और असली सवाल का जवाब देने की बजाय उसे खाली मकानों का पता बताते थे और कहते थे कि वे पुलिस की मदद से उसके लिए रहने की जगह दिला सकते हैं। कुछ अफ़सर तो जैसे लाल फीते के व्यापारी थे, जिन्होंने रेम्बर्त से फ़ॉर्म भरवाकर उसे फ़ौरन फ़ाइल में रख दिया; काम के बोझ से पीड़ित अफ़सर जो बार-बार

आसमान की तरफ़ बाँहें उठाते थे, और जनता से दुखी आये हुए अफ़सर जो बात सुनकर दूसरी तरफ़ मुँह फेर लेते थे। सबसे ज़्यादा तादाद परम्परा-वादियों की थी, जिन्होंने रेम्बर्त की अरज़ी किसी दूसरे दफ्तर में भेज दी थी या उसे काम निकलवाने का नया ढंग बताया था।

इन बेमानी मुलाक़ातों ने पत्रकार को थका दिया था। इन मुलाक़ातों का इतना फ़ायदा ज़रूर हुआ था कि उसे म्युनिसिपल कमेटी के दफ़्तर और प्रीफ़ेक्ट के हैडक्वार्टर के काम-काज के अन्दरूनी तरीक़ों का पता चल गया था, क्योंकि उसे घंटों तक नकली चमड़े के सोफ़ों पर बैठा रहना पड़ा था, सामने दीवारों पर लगे पोस्टर उसे इनकमटैक्स से मुक्त सेविंग्ज़ बौण्ड्ज़ खरीदने की अपील करते थे या फ्रांस की औपनिवेशिक फौज में भरती होने की ताक़ीद करते थे। उसे दफ्तरों का खासा अनुभव हो गया था जहाँ इन्सानों के चेहरे भी फ़ाइल रखने की अलमारियों और उनके पीछे रखे धूल-भरे रिकार्डों की तरह भाव-शून्य थे। इतनी ताक़त खर्च करने के बाद रेम्बर्त को सिर्फ एक ही फ़ायदा हुआ, जैसा कि उसने रियो को कटुता-भरे स्वर में बताया कि इससे उसका मन अपनी दुर्दशा से हटकर और बातों में उलझ गया था। दरअसल प्लेग के तेज़ विकास की तरफ उसका ध्यान ही नहीं गया था। उसके दिन जल्दी से गुज़रने लगे और जिन परिस्थितियों में से शहर गुज़र रहा था उन्हें देखते हुए यह कहा जा सकता था कि हर रोज़ कठिन परीक्षा में से चौबीस घंटे कम हो जाते थे, उन लोगों के लिए जो ज़िन्दा बच जाते थे। रियो इस दलील की सचाई को क़बूल तो करता था लेकिन उसके ख़याल में यह सचाई कुछ ज़रूरत से ज़्यादा व्यापक थी।

एक बार रेम्बर्त को क्षण-भर के लिए आशा की किरण दिखाई दी थी। प्रीफेक्ट के दफ्तर से उसे एक फ़ॉर्म भेजा गया था जिसमें उसे हिदायत की गई थी कि वह सावधानी से सारे खाली खानों की पूर्ति करे। फ़ॉर्म में उसके हुलिये, परिवार, मौजूदा और भूतपूर्व आमदनी के ज़रियों के बारे में पूछताछ की गई थी। दरअसल उससे ज़िन्दगी के तथ्यों की पूरी सूची माँगी गई थी। उसे लगा कि यह पूछताछ उन लोगों की सूची बनाने के लिए की जा रही है जिन्हें शहर छोड़कर अपने घरों में लौटने का आदेश

दिया जाएगा।

एक दफ्तर के कर्मचारी से कुछ अस्पष्ट-सी जानकारी मिली जिससे रेम्बर्त के विचार की पुष्टि हो गई। लेकिन जब उसने और गहरी छानबीन की तो उसे उस दफ्तर से जहाँ से फ़ॉर्म आया था, पता चला कि विशेष प्रयोजन से यह जानकारी इकट्ठी की जा रही है।

"कौनसा प्रयोजन?" उसने पूछा।

बाद में उसे पता चला कि हो सकता है वह बीमार होकर मर जाए। इस जानकारी से अधिकारियों को उसके परिवार के सदस्यों को सूचित करने में और यह फैसला करने में मदद मिलेगी कि अस्पताल का खर्च म्युनिसिपल कमेटी को उठाना चाहिए या उसके रिश्तेदारों से वसूल हो सकता है। ऊपर से देखने पर ऐसा लगता था कि रेम्बर्त का सम्पर्क उस औरत से पूरी तरह नहीं टूटा था जो उसके लौटने का इन्तज़ार कर रही थी, क्योंकि अधिकारी-वर्ग स्पष्ट रूप से उन दोनों की ओर ध्यान दे रहा था। लेकिन इस बात से उसे कोई तसल्ली नहीं मिल सकी। सबसे बड़ी बात, जिससे रेम्बर्त अत्यन्त प्रभावित हुआ था, यह थी कि किस तरह मुसीबत के बीच भी दफ्तरों का काम-काज बिना किसी बाधा के चल रहा था और वे ऐसे क़दम उठा रहे थे जिनका न बड़े-से-बड़े अधिकारियों को पता था, न ही उन क़दमों का कोई तात्कालिक महत्त्व था। ये क़दम सिर्फ इसलिए उठाये गए थे, क्योंकि उन दफ़्तरों को इसी मक़सद के लिए खोला गया था।

अगला दौर रेम्बर्त के लिए सबसे ज़्यादा आसान होते हुए भी सबसे अधिक कठिन था। यह अतीव आलस्य का दौर था। रेम्बर्त दफ़्तरों के चक्कर काट चुका था और भरसक सारे कदम उठा चुका था। अब उसे एहसास हुआ था कि इस किस्म के सारे रास्ते उसके लिए बन्द हो गए थे। इसलिए अब वह निष्प्रयोजन एक रेस्तराँ से दूसरे रेस्तराँ में भटकता रहता था। सुबह का वक्त वह रेस्तराँ की बालकनी पर गुज़ारता और इस उम्मीद से अखबार पढ़ता था कि शायद महामारी के प्रकोप के कुछ कम होने की ख़बर मिले। वह सड़क पर चलने वालों के चेहरों की तरफ़ देखता रहता

और अक्सर उन चेहरों के नीरस अवसाद को देखकर वह ग्लानि से मुँह फेर लेता था। फिर सड़क के सामने लगे दुकानों के बोर्डों को, लोकप्रिय शराबों के इश्तहारों को जो, अब अप्राप्य थीं, पढ़ने के बाद वह उठकर किसी कॉफ़ी-हाउस या रेस्तराँ की तरफ़ चल देता था। इन इश्तहारों को वह असंख्य बार पहले पढ़ चुका था। एक दिन शाम को रियो ने उसे एक कॉफ़ी-हाउस के दरवाज़े के गिर्द मँडराते देखा। वह भीतर जाए या न जाए, इसका निश्चय नहीं कर पा रहा था। आखिरकार उसने भीतर जाने का फ़ैसला किया और कमरे के पीछे वाली एक मेज़ के पास बैठ गया। इस दौर में कॉफ़ी-हाउसों के मालिकों को सरकारी हुक्म था कि वे ज़्यादा-से-ज़्यादा देर बाद रात को बत्ती जलाया करें। मटमैली साँझ कमरे में फैल रही थी। सूर्यास्त की गुलाबी आभा से दीवारों पर लगे शीशे आलोकित हो उठे थे। साँझ के झुटपुटे में सफेद संगमरमर की टॉप वाली मेज़ें चमक रही थीं। खाली कॉफ़ी-हाउस में बैठा रेम्बर्त अँधेरे की परछाइयों में एक भटकी हुई परछाईं की तरह नज़र आ रहा था जिसे देखकर मन में करुणा उपजती थी। रियो ने अनुमान लगा लिया कि रेम्बर्त इसी वक्त अपने को अकेला और परित्यक्त महसूस करता है। इसी वक्त शहर में क़ैद सब लोगों को अपने एकाकीपन का एहसास होता था और हर आदमी यही सोचता था कि चाहे कोई भी तरीका अपनाना पड़े, इस कैद से छूटने की कोशिश ज़रूर करनी चाहिए। रियो जल्द ही वहाँ से चला गया।

रेम्बर्त कुछ वक्त रेलवे स्टेशन पर भी गुज़ारता था। किसी को प्लेट-फ़ार्म पर जाने की इजाज़त नहीं थी। लेकिन वेटिंगरूम खुले थे और बाहर से उनमें लोग दाखिल हो सकते थे। जब बहुत गरमी पड़ती थी तो भिखारी इन ठण्डे और अँधेरे कमरों में आ जाते थे। रेम्बर्त टाइम-टेबल, थूकने पर लगाई पाबंदियाँ और यात्रियों के लिए छपे सरकारी नियमों को बहुत देर तक पढ़ता रहता था, फिर एक कोने में बैठ जाता था। कमरे के बीचों-बीच एक पुरानी लोहे की अँगीठी, जो कई महीनों से ठण्डी पड़ी थी, विशिष्ट चिह्न बनकर खड़ी थी। फ़र्श पर आठ की संख्या के आकार के बेलबूटे बने थे जो बहुत वर्ष पहले बनाये गए थे। दीवारों पर लगे पोस्टर सैलानियों

को केन्ज़ या बंदोल में निश्चिन्त छुट्टी मनाने का उल्लासपूर्ण निमन्त्रण दे रहे थे। इस कोने में बैठकर रेम्बर्त को आज़ादी का कड़वा स्वाद मिलता था जो आज़ादी के पूरी तरह छिन जाने से आता है। उसने रियो को बताया कि उसके मन में उस वक्त जो विचार उठते थे उनमें पेरिस के विचार प्रमुख थे। उसकी आँखों के आगे, बिना बुलाए ही पेरिस की तस्वीर उभरने लगती थी, पत्थरों की बनी प्राचीन सड़कें, नदी के किनारे, पेले रॉयल के कबूतर, गेरे दू नोर्द, पेन्थियोन के आसपास की प्राचीन ख़ामोश गलियाँ, और शहर के अनेक और ऐसे दृश्य। वह पेरिस को इतना ज़्यादा चाहता है, यह उसे पहले मालूम नहीं था। मन में उभरने वाली इन तस्वीरों ने क्रियाशीलता की तमाम इच्छाओं को ख़त्म कर दिया। रियो को यक़ीन था कि वह इन दृश्यों द्वारा अपने प्यार की स्मृतियों को ताज़ा कर रहा है। एक दिन जब रेम्बर्त ने रियो को बताया कि उसे सुबह चार बजे उठकर अपने प्रिय पेरिस को याद करना बहुत अच्छा लगता है, तो डॉक्टर आसानी से समझ गया कि अपने अनुभव के आधार पर रेम्बर्त ऐसा कर रहा है, क्योंकि इसी वक्त उसे मन में बिछुड़ी प्रेयसी की तस्वीरें बनाना अच्छा लगता है। दरअसल सारे दिन में सिर्फ़ यही ऐसा वक्त था जब वह सोच सकता था कि उसकी प्रेयसी पूरी तरह से उसकी है। तड़के चार बजे इन्सान कोई काम नहीं करता, चाहे रात बेवफ़ाई में भी गुज़री हो तब भी सुबह आदमी नींद में बेख़बर रहता है। हाँ, दुनिया के सभी लोग इस वक्त सोए रहते हैं। इस विचार से बड़ी सान्त्वना मिलती है, क्योंकि बेचैन दिल की सबसे बड़ी ख़्वाहिश यह होती है कि वह लगातार सचेत रूप से अपने प्रियजन को पाता रहे। अगर यह सम्भव न हो सके तो अपने प्रियतम या प्रेयसी को विरह के क्षणों में एक ऐसी गहरी नींद में सुला दे, जिसमें न सपने आएँ और जो तब तक न टूटे,जब तक फिर से उनका मिलन नहीं होता।

६

गरमी फ़ादर पैनेलो के प्रवचन के बाद से ही बेहद बढ़ गई थी। जिस इतवार को बेमौसमी बारिश हुई थी, उससे अगले दिन घरों के ऊपर झुलसती हुई गरमी छा गई। पहले तो दिन-भर तेज़, तपती हुई लू चली जिससे घरों की दीवारें सूख गईं। इसके बाद सूरज ने आसमान पर कब्ज़ा जमा लिया और दिन-भर गरमी और तेज़ रोशनी शहर पर छाई रही। सिर्फ़ मेहराबदार गलियाँ और घरों के कमरे ही इस गरमी से बचे थे, बाक़ी सारी जगहों पर तेज़ चौंधिया देने वाली रोशनी पड़ रही थी। सूरज हमारे शहर के लोगों का हर गली, हर कोने में पीछा कर रहा था और जब वे क्षण-भर के लिए धूप में रुकते थे तो उन्हें सरसाम हो जाता था।

चूँकि गरमी के हमले के साथ-ही-साथ प्लेग के मरीज़ों की तादाद भी बढ़ गई थी। अब हफ़्ते में करीब सात सौ मौतें होने लगी थीं। शहर में गहरी निराशा छा गई। शहर की बाहरी बस्तियों की लम्बी, चपटी सड़कों और घरों के छज्जों पर हमेशा रहने वाली रौनक़ ग़ायब हो गई। आम तौर पर इलाक़ों में रहने वाले लोग दिन का काफ़ी हिस्सा अपने दरवाज़ों की सीढ़ियों पर बैठकर गुज़ारते थे, लेकिन अब हर दरवाज़ा बन्द था, कोई आदमी दिखाई नहीं देता था, यहाँ तक कि खिड़कियाँ और परदे भी बन्द रहते थे। यह जानना मुश्किल हो गया था कि लोगों ने प्लेग के डर से खिड़कियाँ बन्द की थीं या गरमी की वजह से। कुछ घरों से कराहने की आवाज़ें आ रही थीं। शुरू में तो लोग जिज्ञासा या करुणा से प्रेरित होकर बाहर जमा हो जाते थे, लेकिन अब लगातार तनाव छाए रहने के कारण ऐसा लगता था कि लोगों के दिल भी सख़्त हो गए थे; लोग कराहटों के पड़ोस में इस तरह से रहते थे और उनके नज़दीक से इस तरह गुज़र जाते थे जैसे आहें और कराहटें ही लोगों की साधारण और स्वाभाविक भाषा बन गई हों।

फाटकों पर हुई मारपीट के फलस्वरूप, जिसमें पुलिस को रिवॉल्वर इस्तेमाल करने पड़े थे, अराजकता की भावना चारों ओर फैल गई थी। पुलिस के साथ हुई मुठभेड़ में कुछ लोग ज़ख्मी भी हो गए थे लेकिन शहर

में गरमी और आतंक के सम्मिलित प्रभाव के कारण हर बात बढ़ा-चढ़ाकर कही जाने लगी थी और लोगों का कहना था कि मुठभेड़ में कुछ लोग मर भी गए हैं। लेकिन जो भी हो, एक बात निश्चित थी कि असंतोष सचमुच बढ़ रहा था और इस डर से कि कहीं स्थिति बिगड़ न जाए, स्थानीय अफ़सर बहुत दिन तक बहस करते रहे कि अगर महामारी से तंग आकर लोग पागलपन पर उतारू हो गए और स्थिति क़ाबू से बाहर हो गई तो कौनसे क़दम उठाने उचित होंगे। अख़बार में नये सरकारी नियम प्रकाशित हुए जिनमें फिर कहा गया था कि कोई आदमी शहर छोड़ने की कोशिश न करे। नियम का उल्लंघन करने वालों को चेतावनी दी गई कि उन्हें लम्बी क़ैद की सज़ा मिलेगी।

शहर में पुलिस गश्त लगाने लगी और अक्सर खाली, पसीजी हुई गलियों के पत्थरों पर घोड़ों की टाप सुनाई देती और घुड़सवार पुलिस का एक दल सड़क के दोनों ओर कसकर बन्द की हुई खिड़कियों की क़तारों के बीच में से गुज़र जाता। कभी-कभी बन्दूक की आवाज़ भी सुनाई देती थी। हाल ही में चूहों और कुत्तों को नष्ट करने के लिए एक स्पेशल ब्रिगेड बनायी गई थी ताकि वे छूत न फैला सकें। ख़ामोशी को चौंका देने वाली इन कोड़ों-जैसी आवाज़ों ने शहर के स्नायविक तनाव को और भी ज़्यादा बढ़ा दिया था।

गरमी, ख़ामोशी और परेशानी ने हमारे शहर के लोगों को इतना संवेदनशील बना दिया था कि ज़रा-सी आवाज़ भी उन्हें बहुत महत्त्वपूर्ण मालूम होती थी। लोगों ने पहली बार आसमान के बदलते हुए रंगों, धरती में से उठती हुई गंधों पर, जो हर बार मौसम बदलने पर उठती हैं, ध्यान दिया। लोगों को यह क्षोभपूर्ण एहसास हुआ कि गरमी से महामारी और भी फैल जाएगी, और साफ़ ज़ाहिर था कि गरमी का मौसम शुरू हो गया था। शाम के वक्त घरों के ऊपर चहकने वाले पक्षियों की आवाज़ें पहले से अधिक तेज़ होती जा रही थीं। आसमान का वह विस्तार अब नहीं रहा था जैसा कि जून की शामों में होता है जब तारे टिमटिमाते हैं—ऐसे में हमारे क्षितिज अनन्त दूर तक फैले नज़र आते हैं। बाज़ारों में अब कलियों

की बजाय खिले हुए फूल बिकने आते थे और सुबह की ख़रीदारी के बाद, धूल से सने फुटपाथ पैरों तले रौंदी हुई पंखुड़ियों से भर जाते थे। साफ़ ज़ाहिर था कि बहार ख़त्म हो चुकी थी, उसने असंख्य फूलों पर अपना उत्साह लुटा दिया हर जगह खिले दिखाई देते थे और जो अब गरमी और प्लेग के दोहरे हमले से मुरझा रहे थे। हमारे शहर के लोगों के लिए वह गरमी का आकाश, धूल से सनी सड़कें, जो लोगों की मौजूदा ज़िन्दगी की तरह धूसरित और नीरस थीं, इन दिनों हर रोज़ होने वाली सौ मौतों की तरह अमंगलपूर्ण थीं। अब वे दिन बीत चुके थे जब धूप लोगों को दोपहर के सोने और छुट्टी मनाने के लिए आमंत्रित करती थी और लोग समुद्र-तट पर जाकर विनोद और प्रेम-क्रीड़ाएँ करते थे। अब बन्द शहर में धूप बेमानी और खोखली हो गई थी। उसमें गरमी के सुखद मौसम का सुनहरी जादू नहीं रहा था। प्लेग ने सब रंगों को तबाह कर दिया था, और अपने विशेषाधिकार से ख़ुशी पर पाबंदी लगा दी थी।

महामारी से यही सबसे बड़ा परिवर्तन हुआ था। इससे पहले हम ख़ुशी-ख़ुशी गरमी के मौसम का इन्तज़ार करते थे। शहर समुद्र-तट पर बसा था और नौजवान लोग समुद्र-तट पर आज़ादी से घूमते थे। लेकिन इस बार गरमी में नज़दीक होते हुए भी समुद्र तक पहुँचना मुश्किल था। नौजवानों को समुद्र की ख़ुशियाँ नसीब नहीं थी। ऐसी परिस्थितियों में हम क्या कर सकते थे? इन दिनों की ज़िन्दगी की सच्ची तस्वीर फिर तारो ने ही बयान की है। यह कहने की ज़रूरत नहीं कि उसने प्लेग की बढ़ती का खाका खींचा है, तारो ने यह भी नोट किया है कि जब से रेडियो ने हफ़्ते की मौतों के आँकड़े की बजाय बताना शुरू किया कि हर रोज़ बानवे, एक सौ सात या एक सौ तीस मौतें होने लगी हैं तब से महामारी के इतिहास में एक नया दौर शुरू हुआ है।" अख़बार और सरकारी अफ़सर प्लेग के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। उनका ख़याल है कि वे प्लेग पर जीत पा रहे हैं, क्योंकि नौ सौ दस के मुक़ाबले में एक सौ तीस छोटी संख्या है। उसने उन करुण और आश्चर्यजनक घटनाओं का भी बयान किया है जो उसके देखने में आई थीं। मिसाल के लिए जब वह एक सुनसान गली

में से गुज़र रहा था तो एक औरत तिमंज़ले के सोने के कमरे की खिड़की खोलकर दो बार ज़ोर से चिल्लाई और उसने फिर खिड़की बन्द कर ली तारो ने यह भी नोट किया है कि दवाई की दुकानों में पिपरमेंट की गोलियाँ खत्म हो गई थीं, क्योंकि लोगों का ख़याल था कि जब तक ये गोलियाँ मुँह में रहती हैं तब तक प्लेग की छूत नहीं लग सकती।

लगातार वह सामने की बालकनी पर अपने प्रिय अजूबे को देखा करता था। मालूम होता था कि बूढ़े शिकारी पर भी मुसीबत आ गई थी। एक दिन सुबह सड़क पर बंदूक की आवाज़ सुनाई दी थी, या तारो के शब्दों में, "सीसे की थूक ने अधिकांश बिल्लियों को मार डाला था और बाक़ियों को डराकर भगा दिया था। खैर, जो भी हो अब बिल्लियाँ आसपास कहीं नज़र आती नहीं थीं, उस दिन नाटा, बूढ़ा हमेशा की तरह निश्चित समय पर बालकनी पर आया, और उसने हैरानी ज़ाहिर की। फिर रेलिंग पर झुक-कर वह ग़ौर से सड़क के कोनों को देखने लगा और बैठकर दाएँ हाथ से बालकनी की सलाखों पर कुढ़ता हुआ उँगलियों से तबला बजाने लगा। कुछ देर रुकने के बाद उसने कुछ कागज़ फाड़े और अपने कमरे में चला गया। थोड़ी देर बाद वह फिर लौट आया। बहुत देर तक बालकनी पर इन्त-ज़ार करने के बाद वह फिर कमरे में चला गया और उसने ज़ोर से खिड़-कियाँ बन्द कर लीं। एक हफ़्ते तक वह लगातार यही हरकतें करता रहा। उसके बूढ़े चेहरे पर दिन-ब-दिन उदासी और हैरत बढ़ती जाती थी। आठवें दिन तारो बूढ़े का इन्तज़ार करता रहा, लेकिन बूढ़ा नहीं आया; खिड़-कियाँ मज़बूती से बंद रहीं। उनके भीतर एक गहरा अवसाद बन्द था जिसे तारो आसानी से समझ सकता था। यहाँ अन्त में तारो ने लिखा है, "प्लेग के दिनों में बिल्लियों पर थूकना मना है।"

एक और प्रसंग में तारो ने नोट किया है कि शाम को जब वह लौटता तो रात की ड्यूटी का चौकीदार संतरियों की तरह चहलक़दमी करता नज़र आता था। वह सब लोगों से यही कहता था कि उसने इन घटनाओं की कल्पना बहुत पहले से कर ली थी। तारो ने कहा कि उस आदमी ने किसी मुसीबत की भविष्यवाणी तो ज़रूर की थी, लेकिन उसका ख़याल

ा कि भूचाल आएगा। इस पर बूढ़े ने जवाब दिया, "काश भूचाल ही ाता। एक ज़ोर का धक्का लगता और क़िस्सा ख़त्म हो जाता। लाशों ौर ज़िन्दा लोगों की गिनती की जाती, बस! लेकिन यह कम्बख़्त ीमारी—जिन्हें इसकी छूत नहीं लगी वे भी हर वक्त इसके सिवा और ोई बात नहीं सोचते।

होटल का मैनेजर भी हताश था। शुरू के दिनों में बाहर से आये मुसा-फ़िर अपने कमरों में टिके रहे थे, क्योंकि वे शहर छोड़कर नहीं जा सकते े। लेकिन जब उन्हें महामारी के घटने के कोई लक्षण न दिखाई दिए तो े एक-एक करके अपने दोस्तों के घरों में चले गए। जिस कारण से कमरों ें लोग टिके हुए थे उसी कारण से अब कमरे ख़ाली हो गए थे, क्योंकि अब ाहर में और नये मुसाफ़िर नहीं आ रहे थे। तारो उन बहुत कम लोगों में े था जो होटल में अभी भी टिके हुए थे। हर मौक़े पर मैनेजर उन्हें यह ताए बग़ैर नहीं रहता था कि वह अपने मेहमानों को तकलीफ़ नहीं देना चाहता, वरना वह कभी का होटल बंद कर देता। वह अक्सर तारो से ूछता था कि उसकी राय में महामारी अभी और कितने दिन तक चलेगी। तारो ने उसे बताया, "सुना है कि सरदी के आते ही इस किस्म की बीमा-रियाँ खत्म हो जाती हैं।" मैनेजर हक्का-बक्का रह गया और बोला, "लेकिन जनाब इस इलाके में तो कभी सचमुच की सरदी नहीं पड़ती। ख़ैर जो भी हो, इसका मतलब है कि अभी यह बीमारी कुछ और महीनों तक चलेगी।" इसके अलावा मैनेजर को यकीन था कि भविष्य में भी बहुत दिन तक सैलानी इस शहर से दूर-दूर रहेंगे, और टूरिस्ट कारोबार तबाह हो जाएगा।

कुछ दिन तक गायब रहने के बाद मोसिये ओथों (उल्लू की शक्ल वाला गृहपति) फिर डाइनिंग रूम में दिखाई दिया, लेकिन इस बार उसके साथ सिर्फ़ सरकस के 'झबरे कुत्ते' यानी उसके बच्चे थे। पूछताछ से पता चला कि मदाम ओथों को छूत वाले वार्ड में बंद कर दिया गया था। वे अपनी माँ की देखभाल करती रही थीं, जिसकी प्लेग में मौत हो गई थी।

"मुझे यह बात क़तई पसन्द नहीं है," मैनेजर ने तारो से कहा।

"मदाम ओथों छूत के वार्ड में नज़रबंद है या नहीं, लेकिन डॉक्टरों को छूत का शक ज़रूर है। इसका मतलब है कि उनके सारे परिवार को छूत हो सकती है।"

तारो ने समझाया कि अगर इस दृष्टि से सोचा जाए तो सभी लोगों का छूत हो सकती है। लेकिन मैनेजर की अपनी राय थी जिसे छोड़ने के लिए वह राज़ी नहीं था।

"नहीं जनाब, आप और हम पर छूत का शक नहीं हो सकता, लेकिन इन लोगों पर ज़रूर है।"

खैर, मोसिये ओथों पर इन बातों का बिलकुल असर नहीं हुआ और न ही प्लेग की वजह से उसकी आदतों में रत्ती-भर फ़र्क आया था। वह हमेशा की तरह शालीनता से डाइनिंग रूम में आता, अपने बच्चों के सामने बैठकर बीच-बीच में शिष्ट, किन्तु अप्रिय टिप्पणियाँ करता। सिर्फ़ छोटा लड़का कुछ बदल गया था; वह भी अपनी बहन की तरह काले रंग की पोशाक पहनता था, लेकिन वह पहले से दुबला हो गया था और हू-बहू अपने बाप की संक्षिप्त अनुकृति मालूम होता था। रात के चौकीदार ने, जो मोसिये ओथों को नापसंद करता था, तारो से कहा, "देख लेना, यह छैला इसी तरह कपड़े पहने ही मर जाएगा। लगता है, इसने परलोक जाने की पूरी तैयारी कर ली है, इसलिए इसे दफ़नाने में ज़्यादा ख़र्च नहीं आएगा।"

तारो ने फ़ादर पैनेलो के प्रवचन पर भी कुछ टिप्पणियाँ की हैं। "मैं इस तरह के धार्मिक उत्साह को अच्छी तरह समझता हूँ और मुझे यह बुरा नहीं लगता। किसी भी महामारी के शुरू और अन्त में धुआँधार व्याख्यानों की काफ़ी गुंजाइश रहती है। शुरू में इसलिए क्योंकि लोगों की आदतें पूरी तरह से मिटती नहीं और अन्त में इसलिए क्योंकि पुरानी आदतें फिर से लौटने लगती हैं। जब इन्सान किसी मुसीबत में गले तक डूब जाता है तो उसका दिल सचाई के प्रति कठोर हो जाता है, यानी वह खामोश हो जाता है। अच्छा, देखें क्या होता है!"

उसने यह भी नोट किया है कि डॉक्टर रियो से उसकी लम्बी बात

चीत हुई। उसे सिर्फ़ इतना ही याद है कि उस बातचीत का 'अच्छा असर' पड़ा था, इस सिलसिले में उसने मदाम रियो, डॉक्टर की माँ की आँखों का पारदर्शी ब्राउन रंग भी नोट किया है। और एक विलक्षण टिप्पणी दी है कि ऐसी निगाहें, जिनमें हृदय की इतनी पवित्रता झलकती है, हमेशा प्लेग पर विजय पाती रहेंगी।

उसने रियो के दमे के मरीज़ के बारे में भी बहुत कुछ लिखा है। बातचीत के फ़ौरन बाद वह डॉक्टर के साथ उस मरीज़ को देखने के लिए गया था। बूढ़े ने विनोदपूर्ण हँसी से और खुशी से हथेलियाँ रगड़कर तारो का स्वागत किया। वह हमेशा की तरह बिस्तर में बैठा था और उसके आगे सूखे मटर से भरे दो पतीले रखे थे। तारो को देखते ही उसने कहा, "आह! एक और आ गया! यह उल्टी दुनिया है जिसमें मरीज़ों की बजाय डॉक्टर ज़्यादा हैं, क्योंकि दुनिया उन्हें दिन-ब-दिन घास की तरह काटे जा रही है। क्यों, ठीक है न? उस पादरी की बात सही है। हम लोगों ने खुद ही यह मुसीबत बुलाई है।" अगले दिन तारो बिना खबर किए उसे देखने चला आया।

तारो के नोट्स से पता चलता है कि उस बूढ़े ने, जो पेशे से बजाज था, पचास बरस की उम्र में तय किया कि वह जितनी मेहनत कर चुका है, वह ज़िन्दगी-भर के लिए काफ़ी है। वह बीमार पड़ गया और फिर बिस्तर से कभी नहीं उठा। इसका कारण दमा नहीं था, क्योंकि दमे की वजह से उसे चलने-फिरने में कोई दिक्कत नहीं हो सकती थी। उसकी थोड़ी-सी बँधी हुई आमदनी थी जिससे वह पचहत्तर बरस की उम्र तक गुज़ारा करता आया था। बुढ़ापे का उसकी खुशमिज़ाजी पर कोई असर नहीं हुआ था। वह घड़ी को देखना बरदाश्त नहीं कर सकता था और उसके घर में एक भी घड़ी नहीं थी। वह कहता था, "घड़ी बहुत बेहूदी चीज़ है और फिर क़ीमती भी है।" वह वक्त यानी खाने के वक्त का पता अपने दो पतीलों से लगा लेता था। जब वह सुबह सोकर उठता था तो एक पतीला सूखे मटरों से भरा रहता था। वह बड़ी सावधानी से लगातार नियमित ढंग से दूसरे पतीले में एक-एक मटर का दाना डालता जाता था। इस तरह

वह इन पतीलों की मदद से वक्त का अंदाज़ लगाया करता था और दिन में किसी वक्त भी बता सकता था कि कितने बजे हैं। वह कहता था, "जब पन्द्रह बार पतीला भर जाता है तो खाने का वक्त आ जाता है। वक्त जानने का इससे आसान तरीक़ा और क्या हो सकता है?"

उसकी बीवी का कहना था कि उसकी इस सनक के लक्षण बहुत पहले से दिखाई देने लगे थे। दरअसल उसे किसी चीज़ में दिलचस्पी नहीं थी। वह काम-काज, दोस्तों, कॉफ़ी-हाउसों, औरतों, पिकनिकों के प्रति हमेशा से उदासीन था। वह ज़िन्दगी में सिर्फ एक बार अपने शहर से बाहर गया था। जब उसे अपने किसी घरेलू काम से एल्जीयर्ज़ जाना पड़ा था, उस वक्त भी वह ओरान से अगले स्टेशन से ही लौट आया था, क्योंकि उसके लिए इस दुःसाहसपूर्ण काम को जारी रखना असम्भव था।

तारो ने बूढ़े की इस एकान्तपूर्ण ज़िन्दगी पर आश्चर्य प्रकट किया था। उसके जवाब में बूढ़े ने जो कहा था उसका सारांश इस प्रकार है—इन्सान की शुरू की आधी ज़िन्दगी पहाड़ की चढ़ाई की तरह होती है और दूसरा आधा हिस्सा ढलान की तरह होता है। इस काल में उसका ज़िन्दगी के ऊपर कोई दावा नहीं होता, उसके हक़ किसी भी वक्त उससे छीने जा सकते हैं। वह उनका कोई इस्तेमाल नहीं कर सकता और सबसे अच्छी बात यही है कि वह उनसे छेड़-छाड़ न करे। साफ ज़ाहिर था कि बूढ़े को अपनी बात काटने में कोई संकोच नहीं होता था, क्योंकि कुछ ही मिनट के बाद उसने तारो से कहा कि वह ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानता, अगर ईश्वर होता तो दुनिया में पादरियों की कोई ज़रूरत न रह जाती। इसके बाद भी घटनाओं पर ग़ौर करने के बाद तारो को एहसास हुआ कि उस इलाके में लगातार दीन-दुखियों की सहायता के लिए घर-घर घूमकर चन्दा इकट्ठा किया जा रहा था। बूढ़े को उससे सख्त चिढ़ होती थी। उसकी फिलॉसफी का इस चिढ़ से गहरा सम्बन्ध था। बूढ़े ने कई बार यह दिली ख्वाहिश ज़ाहिर की थी कि वह बहुत लम्बी उम्र भोगकर मरना चाहता है। बूढ़े के चरित्र की तस्वीर इस बात से पूरी हो जाती है।

'क्या वह सन्त है?' तारो ने अपने-आप से यह सवाल पूछा और

जवाब दिया, "हाँ, अगर आदतों का एकत्रीकरण ही संतों का गुण है तो सचमुच बूढ़ा एक संत था।"

उधर तारो प्लेग-पीड़ित शहर की एक दिन की ज़िन्दगी का एक लम्बा-सा विवरण तैयार कर रहा था, ताकि उस साल के गरमी के मौसम में हमारे नागरिकों की ज़िन्दगी की सही तस्वीर पेश की जा सके। तारो ने लिखा है, "शहर में शराबियों के सिवा कोई नहीं हँसता और शराबी ज़रूरत से ज़्यादा हँसते हैं।" इसके बाद वह प्लेग का वर्णन शुरू करता है।

"पौ फटने पर हवा के हल्के झोंके खाली सड़कों पर पंखा झलते हैं—रात की मौतों और आने वाले दिन की मृत्यु की यंत्रणा में तड़पने वालों के बीच के वक्त में ऐसा लगता है जैसे कुछ देर के लिए प्लेग ने अपना हाथ रोक लिया हो और वह साँस लेने के लिए रुक गई हो। सारी दुकानें बन्द रहती हैं, लेकिन कुछ दुकानों पर लगे नोटिसों—'दुकान प्लेग के कारण बन्द है'—से ज़ाहिर होता है कि जब और दुकानें खुलेंगी तब भी ये दुकानें बन्द रहेंगी। अख़बार बेचने वाले लड़के अभी नहीं चिल्ला रहे क्योंकि उनकी आँखें अभी अधमुँदी हैं, लेकिन वे नींद में चलने वाले लोगों की तरह सड़क के कोनों पर बने बिजली के खम्भों की तरफ़ अपने अखबार बढ़ा रहे थे। जल्द ही तड़के चलने वाली ट्रामों के शोर से ये लड़के जाग जाएँगे और शहर-भर में फैल जाएँगे। इनके बढ़े हुए हाथों में अख़बार होंगे जिन पर बड़े अक्षरों में 'प्लेग' लिखा होगा। क्या पतझड़ के मौसम में भी प्लेग ज़ारी रहेगी? प्रोफ़ेसर बी की राय है 'नहीं'। प्लेग के ६४वें दिन हुई मौतों की संख्या एक सौ चौबीस।

काग़ज़ की दिनों-दिन बढ़ती हुई कमी से मजबूर होकर कुछ दैनिक अखबारों ने अपने पृष्ठ कम कर दिए हैं। एक नया अखबार शुरू हुआ है, 'प्लेग समाचार'। इसका उद्देश्य है सचाई और ईमानदारी से शहर के लोगों को बीमारी के घटने या बढ़ने की सूचना देना; प्लेग के भविष्य के बारे में विशेषज्ञों की राय को छापना; हर किसी को, चाहे वह जीवन के किसी भी क्षेत्र से सम्बद्ध हो, और जो इस महामारी का मुक़ाबला करना चाहे, लिखने के लिए खुला निमंत्रण देना; जनता के साहस और विश्वास को

बनाए रखना; अधिकारियों के नवीनतम आदेशों को प्रकाशित करना; और उन तमाम शक्तियों का केन्द्रीकरण करना जो इस मुसीबत में लोगों की सक्रिय सहायता करना चाहती हैं।" दरअसल कुछ दिन बाद ही इस अख़बार के कॉलमों में प्लेग से बचने के नये और अचूक 'तरीकों' के विज्ञापन छपने लगे।

तड़के छ: बजे ये अखबार दुकानों के खुलने से एक घण्टा पहले से खड़े लोगों की क़तारों को बेचे जाते हैं; फिर बाहर की बस्तियों से आने वाली ट्रामों से उतरने वाले लोगों में ये अख़बार बेचे जाते हैं। ट्रामें खचाखच भरी रहती हैं। आजकल ट्रामें आने-जाने का एकमात्र साधन हैं। लोग फुटबोर्डों पर खड़े रहते हैं और डंडों को पकड़कर लटके रहते हैं, इसलिए ट्रामों की चाल भी धीमी हो गई है। एक और अजब बात देखने में आई है कि मुसाफ़िर अपने साथियों की तरफ़ पीठ करके खड़े होते हैं और अपने शरीर को हास्यास्पद रूप से टेढ़ा-मेढ़ा करते हैं। इन सबबातों के पीछे एक ही मतलब है—छूत से बचना। हर स्टॉप पर जलप्रपात की तरह नर-नारियों की एक भारी भीड़ ट्राम में से निकलती है। हर व्यक्ति अपने को दूसरे के स्पर्श से बचाने की कोशिश करता है।

जब तड़के की ट्रामें गुज़र जाती हैं तो धीरे-धीरे शहर जागता है। कुछ कॉफ़ी-हाउस सुबह जल्दी ही अपने दरवाज़े खोल देते हैं। काउन्टर पर ऐसे कार्डों की भरमार रहती है, "कॉफ़ी नहीं है, अपने साथ चीनी लाइये" इत्यादि। इसके बाद दुकानें खुलती हैं और सड़कें सजीव हो उठती हैं। इस बीच धूप तेज़ हो जाती है और सुबह के वक्त भी आसमान गरमी से तपते हुए शीशे-जैसा हो जाता है। यही वह वक्त है जब निकम्मे लोग बुलेवारों में टहलने निकलते हैं। उनमें से अधिकांश तो जैसे विलासिता के प्रदर्शन से ही प्लेग का सामना करने पर तुले नज़र आते हैं। रोज़ ग्यारह बजे के करीब नौजवान लड़के और लड़कियों की ड्रेस-परेड-सी नज़र आती है, जिसे देखकर एहसास होता है कि हर मुसीबत के बीच भी इन्सान के दिल में ज़िन्दगी की कितनी ज़बरदस्त ख्वाहिश पलती है। अगर महामारी और ज़्यादा फैल गई तो लोगों के चरित्र भी क़ाबू से बाहर हो जाएँगे और हमें मिलान के

सैटरनेलिया[1]—जैसे दृश्य फिर दिखाई देंगे और मर्द और औरतें क़ब्रों के गिर्द मस्ती में नाचेंगे।

'दोपहर को देखते-ही-देखते सारे रेस्तराँ भर जाते हैं। दरवाज़ों के बाहर फ़ौरन ऐसे लोगों की छोटी-छोटी टुकड़ियाँ इकट्ठी हो जाती हैं जिन्हें बैठने के लिए जगह नहीं मिलती। तेज़ तपिश की वजह से आसमान की चमक कम हो जाती है। बड़े-बड़े शामियानों के नीचे खाने के उम्मीदवार इन्तज़ार करते हैं। दोपहर की गरमी से झुलसती हुई सड़कों के किनारे लोगों की क़तारें लगी रहती हैं। रेस्तराँ में इतनी भीड़ इसलिए रहती है क्योंकि वे बहुत से लोगों की खाने की समस्या को हल कर देते हैं। लेकिन छूत का डर कम करने के लिए वे भी कोई क़दम नहीं उठाते। बहुत से खाने वाले कई मिनट तक क़ायदे से अपनी प्लेटें साफ़ करते हैं। कुछ दिन पहले रेस्तराँ ने ये नोटिस लगाए थे—"ग्राहकों को आश्वासन दिया जाता है कि हमारी प्लेटें, छुरियाँ और काँटे कीटाणुरहित हैं।" लेकिन धीरे-धीरे उन्होंने इस क़िस्म का प्रचार बंद कर दिया, क्योंकि ग्राहक हर सूरत में वहाँ आते थे। इसके अलावा आजकल लोग दिल खोलकर ख़र्च करते हैं। बढ़िया शराबें या उन शराबों पर, जिन्हें रेस्तराँ वाले बढ़िया बताते हैं, तथा क़ीमती फुटकर चीज़ों पर लोग खूब ख़र्च करते हैं। लोग बिना सोचे-समझे फ़िज़ूल-ख़र्ची करने के मूड में हैं। मालूम होता है कि एक रेस्तराँ में घबराहट का वातावरण छाया था, क्योंकि एक ग्राहक अचानक बीमार पड़ गया, उसका चेहरा सफ़ेद हो गया और वह फ़ौरन लड़खड़ाते हुए क़दमों से दरवाज़े की तरफ़ चल पड़ा।

दो बजे के क़रीब धीरे-धीरे शहर खाली होने लगता है। इस वक्त सड़कों पर खामोशी, धूप, मिट्टी और प्लेग को मनमानी छूट रहती है। ऊँचे भूरे रंग के मकानों के सामने वाले हिस्सों से इन लम्बी, क्लान्त घड़ियों में लगातार गरमी की तरंगें उठती रहती हैं। इस तरह से दोपहर थकी-माँदी चाल से धीरे-धीरे शाम में मिल जाती थी और शाम शहर के भीड़-युक्त कोलाहल पर कफ़न की लाल चादर बनाकर लिपट जाती थी। जब

१. आनंदोत्सव।

तेज़ गरमी शुरू हुई तो किसी अज्ञात कारण से सड़कें वीरान रहने लगीं। लेकिन अब ठंडी हवा का ज़रा-सा झोंका आते ही यदि लोगों के दिलों में उम्मीद के पंख नहीं फड़फ़ड़ाते तो कम-से-कम उनके दिल का बोझ तो ज़रूर हल्का हो जाता है। जन-समुद्र घरों से बाहर निकल आता है, बातों के नशे में अपने को बेसुध कर लेता है, बहसें और प्रेम-लीलाएँ शुरू हो जाती हैं, और सूर्यास्त की अंतिम लालिमा, जो प्रेमियों के जोड़ों से बोझिल हो जाती है और लोगों की आवाज़ों से मुखरित हो उठती हैं, बिना पतवार के जहाज़ की तरह, धड़कते हुए अँधेरे में भटकने लगती है। सर पर फ़ेल्ट हैट लगाए और फहराती हुई टाई बाँधे एक धर्म-प्रचारक व्यर्थ में ही लगातार यह चिल्लाता हुआ बढ़ता है, "ख़ुदा नेक और महान् है। उसी की शरण में आओ!" बल्कि सब लोग फ़ौरन ऐसे क्षुद्र उद्देश्यों की तरफ़ बढ़ते हैं जिनका तात्कालिक महत्त्व उनकी दृष्टि में ख़ुदा से कहीं ज़्यादा है।

'शुरू के दिनों में जब लोगों का ख़याल था कि यह महामारी भी दूसरी महामारियों की तरह है, धर्म का काफ़ी ज़ोर रहा, लेकिन ज्योंही लोगों को तत्काल ख़तरा नज़र आया तो वे ऐयाशी की तरफ़ ध्यान देने लगे। दिन के वक्त लोगों के चेहरों पर जिन घृणित आशंकाओं की मोहर लगी रहती है वे डर, धूल-भरी प्रचण्ड रातों में एक विक्षिप्त हर्षोन्माद में बदल जाते हैं और उनके ख़ून में एक रुक्ष स्वच्छन्दता दौड़ते लगती है।

'और मैं भी दूसरे लोगों से अलग नहीं हूँ। लेकिन उससे क्या फ़र्क़ पड़ता है? मुझ-जैसे लोगों को मौत की परवाह नहीं। घटनाएँ और नतीजे ही उन्हें सही साबित करते हैं।'

७

तारो ने अपनी डायरी में जिस मुलाक़ात का जिक्र किया है, रियो से यह मुलाक़ात तारो के आग्रह से ही हुई थी। उस रोज़ शाम को ऐसा संयोग

हुआ कि तारो के आने से पहले डॉक्टर कुछ क्षण तक अपनी माँ को देखता रहा था जो बीमार थी और निहायत खामोशी से डाइनिंग रूम के एक कोने में बैठी थी। घर के काम-काज से फुरसत पाकर वह अपना अधिकांश समय उसी कुरसी में बिताती थी। गोद में हाथ रखकर वह इन्तज़ार में बैठा करती थी। रियो को ठीक से मालूम नहीं था कि उसकी माँ उसी की इन्तजार करती है, लेकिन जब रियो घर में दाखिल होता था तो उसकी माँ के चेहरे का भाव हमेशा बदल जाता था। मेहनत की ज़िन्दगी की वजह से उसके चेहरे पर जो मूक असहायता का भाव आ गया था, फ़ौरन खुशी की दमक में बदल जाता था। इसके बाद उसके व्यक्तित्व में पहले की-सी शान्ति आ जाती थी। उस रोज़ शाम को वह खिड़की से बाहर सुनसान सड़क का तरफ़ देख रही थी। सड़कों पर अब सिर्फ़ दो-तिहाई रोशनी रह गई थी और शहर के गहन अँधेरे में बहुत देर बाद लैम्प की टिमटिमाती रोशनी दीखती थी।

"जब तक प्लेग रहेगी, क्या बत्तियों का भी यही हाल रहेगा?" मदाम रियो ने पूछा।

"मेरा ऐसा ख़याल है।"

"उम्मीद करनी चाहिए कि जाड़ों तक प्लेग ख़त्म हो जाएगी, वरना बड़ी उदासी फैल जाएगी।"

"हाँ," रियो ने कहा।

रियो ने देखा कि उसकी माँ की नज़रें रियो के माथे पर लगी थीं। वह जानता था कि पिछले कुछ दिन की सख्त मेहनत और परेशानी उसके माथे पर अपनी निशानी छोड़ गई है।

"आज क्या काम-काज ठीक से नहीं हुआ?" रियो की माँ ने पूछा।

"ओह, वैसा ही जैसा हमेशा चलता है।"

हमेशा! इसका मतलब था कि पैरिस से प्लेग की जो सीरम भेजी गई थी वह पहले वाली सीरम से कम कारगर थी। इसका मतलब था कि मरने वालों की तादाद बढ़ रही थी। अभी तक सिवाय उन परिवारों के, जहाँ प्लेग फैल चुकी थी, प्लेग से बचाव के लिए लोगों को टीका लगाना

नामुमकिन था। इस आन्दोलन का लोकप्रिय बनाने के लिए यह ज़रूरी था कि बहुत बड़ी तादाद में टीके मँगवाए जाएँ। अधिकांश मरीज़ों की गिल्टियाँ फटने में ही नहीं आती थीं। लगता था कि वे भी मौसम के साथ सख्त हो गई थीं।—प्लेग के मरीज़ों को बहुत तकलीफ़ सहनी पड़ती थी। पिछले चौबीस घंटों में महामारी की एक नयी क़िस्म के दो केस हुए थे। प्लेग न्यूमोनिक हो गई थी। उसी दिन एक मीटिंग में डॉक्टरों ने, जो बेहद थके और परेशान थे, प्रीफ़ेक्ट को नये हुक्म जारी करने के लिए मजबूर किया। बेचारे प्रीफ़ेक्ट के होश-हवास ग़ायब थे। साँस के ज़रिये छूत को रोकने के हुक्म जारी किये गए, क्योंकि न्यूमोनिक प्लेग की छूत साँस के ज़रिये से ही फैलती है। प्रीफ़ेक्ट ने वैसा ही किया जैसा कि डॉक्टर चाहते थे, लेकिन हमेशा की तरह डॉक्टर लोग अज्ञान के अँधेरे में भटक रहे थे।

माँ को देखते ही रियो के मन में बाल्यकाल की विस्मृत भावुकता जाग उठी। माँ की कोमल ब्राउन आँखें बेटे पर गड़ी थीं।

"माँ, तुम्हें कभी डर नहीं लगता ?"

"ओह इस उम्र में डरने के लिए बहुत कम बातें रह जाती हैं।"

"आजकल दिन बहुत लम्बे हो गए हैं और अब मैं बहुत कम घर पर रहता हूँ।"

"अगर मुझे मालूम हो कि तुम घर लौटकर आओगे तो मुझे इन्तज़ार करना बुरा नहीं लगता, और जब तुम घर नहीं रहते तो मैं सोचती रहती हूँ कि तुम क्या कर रहे होगे। कोई नयी खबर है ?"

"हाँ, अगर पिछले तार पर विश्वास किया जाए तो उससे तो यही ज़ाहिर होता है कि उसकी तबीअत बिलकुल ठीक है। लेकिन मैं जानता हूँ उसने मेरी परेशानी कम करने के लिए यह बात लिखी है।"

दरवाज़े की घंटी बजी, डॉक्टर माँ की ओर देखकर मुस्कराया और दरवाज़ा खोलने गया। ज़ीने की मद्धम रोशनी में तारो एक बड़े सफेद भालू-जैसा दिखाई दे रहा था। रियो ने आगन्तुक को अपने डेस्क के सामने की कुरसी पर बिठाया और खुद अपनी कुरसी के पीछे खड़ा रहा। दोनों के बीच डेस्क का लैम्प था। सारे कमरे में सिर्फ़ यही एक रोशनी थी। तारो

ने फ़ौरन काम की बात शुरू की—"मैं जानता हूँ कि तुमसे मैं बिना किसी संकोच के बातें कर सकता हूँ।"

रियो ने सर हिलाकर हामी भरी, "पंद्रह दिन में या ज़्यादा-से-ज़्यादा एक महीने बाद यहाँ तुम्हारा कोई काम नहीं रहेगा। स्थिति काबू से बाहर हो जाएगी।"

"मान लिया !"

"सफ़ाई का महक़मा ठीक से काम नहीं कर रहा—वहाँ बहुत कम कर्मचारी हैं—इसके अलावा आपने बहुत मेहनत की है।"

रियो ने इस बात को क़बूल किया, "ख़ैर मैंने सुना है कि अधिकारी जबरन भरती की बात सोच रहे हैं। तमाम स्वस्थ लोगों को प्लेग से लड़ने के लिए भरती किया जाएगा।"

"तुम्हारी ख़बर तो सही है लेकिन अधिकारी वैसे ही बदनाम हैं और प्रीफ़ैक्ट अभी कोई फ़ैसला नहीं कर पा रहा।"

"अगर वह लोगों को मजबूर करने की जोखिम नहीं उठाना चाहता तो लोगों से यह क्यों नहीं कहा जाता कि वे अपनी इच्छानुसार इस काम में मदद करें ?"

"उन्हें कहा जा चुका है। लेकिन बहुत कम लोगों ने सहयोग दिया था।"

यह काम सरकारी अफ़सरों की मार्फ़त हुआ था और पूरे उत्साह से किया गया था। अफ़सरों में कल्पना और दूरदर्शिता की कमी है। वे कभी किसी मुसीबत का मुक़ाबला नहीं कर सकते और वे जो तरीक़े सोचते हैं उनसे मामूली जुक़ाम को भी नहीं रोका जा सकता। अगर हमने अफ़सरों को इसी तरह काम करने दिया तो जल्द ही वे भी मर जाएँगे आर और हम भी मौत का शिकार हो जाएँगे।"

"इसकी सम्भावना बहुत ज़्यादा है, लेकिन मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ कि वे जेल के क़ैदियों को 'भारी काम' में लगाने की बात सोच रहे हैं।" रियो ने कहा।

"मैं चाहूँगा कि इस काम में आज़ाद आदमी लगाए जाएँ।"

"चाहूँगा तो मैं भी यही, लेकिन क्या मैं पूछ सकता हूँ कि तुम्हारे मन में यह बात क्यों उठी ?"

मैं नहीं चाहता कि किसी भी आदमी को मौत के मुँह में धकेला जाए। मुझे इससे सख्त नफ़रत है।"

रियो ने तारो की आँखों में आँखें डालीं।

"तो क्या हुआ ?" उसने पूछा।

"मैं यह कहना चाहता हूँ कि मैंने स्वयंसेवकों की टुकड़ियों की एक योजना तैयार की है। आप मुझे अफ़सरों के अधिकार दिलवाएँ ताकि इस योजना को चलाया जा सके, इससे हम अफ़सरशाही से छुट्टी पा लेंगे। जो भी हो अफ़सर आजकल बेहद व्यस्त हैं। हर पेशे में मेरे दोस्त हैं, उन्हें इकट्ठा करके हम इस आन्दोलन को शुरू कर सकेंगी। मैं खुद भी ज़रूर इसमें हिस्सा लूँगा।" तारो ने कहा।

रियो ने जवाब दिया, "यह बताने की ज़रूरत नहीं कि मैं तुम्हारे सुझाव को खुशी से कबूल करता हूँ। विशेषकर इन परिस्थितियों में और मेरे काम में तो जितने मदद करने वाले हों उतना ही अच्छा है। मैं अधिकारियों से तुम्हारी योजना पास कराने का ज़िम्मा लेता हूँ। लेकिन···" रियो गहरे सोच में डूब गया, "लेकिन मेरे खयाल में तुम जानते ही हो कि इस क़िस्म के काम से जान का खतरा है। मेरा फ़र्ज़ है कि मैं तुमसे एक सवाल पूछूँ। क्या तुमने सब खतरों पर ग़ौर किया है ?"

तारो की भूरी आँखों ने शान्त भाव से डॉक्टर की तरफ़ देखा।

"फ़ादर पैनेलो के प्रवचन के बारे में तुम्हारी क्या राय थी, डॉक्टर ?"

सवाल बड़े मामूली ढंग से पूछा गया था। रियो ने भी इसी ढंग से जवाब दिया, "मैंने ज़िन्दगी में इतने ज्यादा अस्पताल देखे हैं कि मुझे सामूहिक सज़ा का विचार पसन्द नहीं आ सकता। लेकिन जैसा कि तुम जानते हो, कई बार ईसाई लोग बिना सोचे ही ऐसी बातें कह जाते हैं। वे जैसे नज़र आते हैं, उससे वे कहीं बेहतर हैं।"

"खैर, तुम भी फ़ादर पैनेलो की तरह सोचते हो कि प्लेग का एक अच्छा पहलू भी है। इसने लोगों की आँखें खोल दी हैं और उन्हें सोचने

पर मजबूर कर दिया है।"

डॉक्टर ने बेचैनी से सर हिलाया।

"यह काम तो हर बीमारी करती है। जो बात दुनिया की और बुराइयों पर लागू होती है यह प्लेग पर भी लागू होती है। इससे इन्सान को अपने से ऊपर उठने में मदद मिलती है। इसके बावजूद भी जब आप इन मुसीबतों को देखते हैं, जो प्लेग से पैदा होती हैं, तो कोई पागल, डरपोक या बिलकुल अंधा आदमी ही प्लेग के आगे घुटने टेकने की सलाह देगा।"

रियो ने बिना अपना आवाज़ ऊँची किये यह बात कही थी, लेकिन तारो ने शायद रियो को शान्त करने के लिए हाथ से इशारा किया। वह मुस्करा रहा था।

रियो ने अपने कंधे सिकोड़कर कहा, "हाँ, लेकिन तुमने अभी तक मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया। क्या तुमने इसके नतीजों पर विचार किया है?"

तारो ने कुरसी की पीठ से अपने कंधों को सटाकर रोशनी में सर आगे बढ़ाया।

"तुम ख़ुदा में यक़ीन करते हो, डॉक्टर?" फिर यह सवाल मामूली लहज़े में पूछा गया था, लेकिन इस बार रियो को जवाब सोचने में ज़्यादा देर लगी।

"नहीं—लेकिन दरअसल इसका क्या मतलब है? मैं अँधेरे में भटक रहा हूँ कुछ पाने की कोशिश में, लेकिन मुद्दत से मुझे इसमें कोई मौलिकता नहीं दिखाई देती..."

"क्या यह—तुम्हारे और फ़ादर पैनेलो के बीच की यही खाई नहीं?"

"मुझे इसमें शक है। पैनेलो पढ़ा-लिखा विद्वान आदमी है। वह कभी मौत के सम्पर्क में नहीं आया। इसीलिए वह सचाई के विश्वास से यह बात कह सकता है, सचाई के 'स' पर ज़ोर देकर। लेकिन हर देहाती पादरी, जो अपने इलाक़े में आता-जाता है और जिसने किसी इन्सान को मृत्यु-शैया पर छटपटाते हुए देखा है, मेरी ही तरह सोचता है। वह इन्सान के दुख-दर्द की अच्छाई बताने की बजाय दुख को दूर करने की कोशिश

करेगा।" रियो उठ खड़ा हुआ। अब उसका चेहरा अँधेरे में था। उसने कहा, "तुम मेरे सवाल का जवाब नहीं दोगे, इसलिए इस विषय पर हम और अधिक बात नहीं करेंगे।"

तारो अपनी कुरसी पर बैठा रहा। वह फिर मुस्करा रहा था, "मान लो मैं भी जवाब में तुमसे एक सवाल पूछूँ ?"

"तुम्हें रहस्यमय होना अच्छा लगता है। क्यों, ठीक है न ?...अच्छा, फ़ौरन पूछो क्या पूछना चाहते हो ?"

"मेरा सवाल यह है कि तुम अपने कर्तव्य के प्रति इतनी निष्ठा क्यों दिखाते हो जबकि तुम खुदा में यक़ीन नहीं करते ? मेरा ख़याल है तुम्हारे जवाब से मुझे अपना जवाब देने में मदद मिलेगी।" तारो ने कहा।

रियो का चेहरा अभी भी अँधेरे में था, उसने कहा कि वह इस सवाल का जवाब पहले ही दे चुका है। अगर उसका किसी सर्वशक्तिमान खुदा में यक़ीन होता तो वह बीमारों का इलाज करना छोड़ देता और उन्हें खुदा के रहम पर छोड़ देता। लेकिन दुनिया में कोई भी आदमी इस किस्म के खुदा पर यक़ीन नहीं करता; यहाँ तक कि पैनेलो भी नहीं जिसका खयाल है कि वह ऐसे खुदा में यक़ीन रखता है। इसका सबूत यह है कि कभी किसी आदमी ने पूरी तरह अपने को भाग्य पर नहीं छोड़ा। खैर जो भी हो इस मामले में रियो समझता था कि वह सही रास्ते पर है। सृष्टि को जिस हालत में देखता है उससे संघर्ष करता है।

तारो ने कहा, "आह ! तो अपने पेशे के बारे में तुम्हारे ऐसे विचार हैं !"

"कुछ हद तक !" डॉक्टर रोशनी में वापस आ गया।

तारो ने होंठों से मद्धम आवाज़ में सीटी बजाई। डॉक्टर उसकी तरफ़ आँखें फाड़कर देखने लगा।

"हाँ, तुम्हारा ख़याल है कि मैं अहंकार की वजह से ऐसा सोचता हूँ। लेकिन मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूँ कि मुझमें अहंकार की सिर्फ़ उतनी ही मात्रा है जो ज़िन्दा रहने के लिए ज़रूरी है। मेरे भविष्य में क्या है और इस हालत के खत्म होने पर क्या होगा इसका अंदाज़ मैं नहीं लगा सकता।

फ़िलहाल तो मैं सिर्फ़ इतना ही जानता हूँ कि मेरे सामने बीमार लोग हैं, जिनका इलाज होना चाहिए। बाद में शायद वे सारी बातों पर ग़ौर करेंगे और मैं भी करूंगा, लेकिन अब ज़रूरत है उन्हें तन्दुरुस्त बनाने की। मैं उन्हें बचाने की भरसक कोशिश करता हूँ, बस!"

"किससे बचाने की?"

रियो खिड़की की तरफ़ मुड़ा। क्षितिज पर एक रेखा समुद्र के वहाँ होने की सूचना दे रही थी। उसे सिर्फ़ अपनी थकान का एहसास हो रहा था। साथ ही उसके मन में अपने साथी के सामने अपना दिल खोलकर रखने की अचानक एक अविवेकपूर्ण, तीव्र इच्छा उठ रही थी, जिसे दबाने की वह कोशिश कर रहा था। शायद उसका साथी एक विलक्षण व्यक्ति था, लेकिन डॉक्टर का ख़याल था कि वह तारो उसके ही वर्ग का था।

"मैं बिलकुल नहीं जानता, तारो! यक़ीन करो, मैं बिलकुल नहीं जानता। मैं इस पेशे में बिना किसी विशेष प्रयोजन के 'ऐसे ही' दाख़िल हुआ था, क्योंकि मेरी नज़रों में यह एक कामयाब पेशा था जिसकी आकांक्षा अक्सर बहुत से नौजवान करते हैं। शायद इसलिए भी क्योंकि मुझ-जैसे मज़दूर के बेटे के लिए इतनी तरक्क़ी करना भी बहुत बड़ी बात थी।...फिर मैंने लोगों को मरते हुए देखा। क्या तुम्हें मालूम है कि कुछ लोग आख़िरी दम तक मरने से 'इन्कार' करते हैं? क्या तुमने किसी औरत को आख़िरी साँस में 'हरगिज़ नहीं मरूँगी' कहते सुना है? मैंने सुना है। और मैंने देखा कि इन दृश्यों के प्रति मेरा दिल कभी कठोर नहीं हो सकता। उस वक्त मैं नौजवान था और संसार के विधान को देखकर मेरी अन्तरात्मा को चोट लगती थी। पश्चात् में मैं अधिक विनम्र हो गया। सिर्फ़ मैं लोगों को मरते हुए देखने का आदी नहीं हो सका। मैं सिर्फ़ इतना ही जानता हूँ। फिर भी चाहे जो हो..." रियो ख़ामोश होकर बैठ गया। उसका मुँह सूख रहा था।

"फिर भी...क्या?" तारो ने कोमल स्वर में पूछा।

"फिर भी," डॉक्टर ने अपनी बात दुहराई और फिर उसे हिचकिचाहट महसूस हुई। उसने तारो पर नज़रें गाड़कर कहा, "यह एक ऐसी

बात है जिसे तुम्हारी क़िस्म का आदमी ज़रूर समझ सकता है, लेकिन संसार का विधान मौत से निश्चित होता है, इसलिए क्या यह ख़ुदा के हक़ में बेहतर नहीं होगा अगर हम उसमें यक़ीन करना छोड़ दें और अपनी पूरी ताक़त से मौत के ख़िलाफ़ लड़ें, आसमान की तरफ़ नज़रें उठाए बग़ैर जहाँ ख़ुदा ख़ामोश बैठा है ?"

तारो ने सिर हिलाया।

"हाँ, लेकिन इस हालत में तुम्हारी जीत बहुत दिन तक नहीं टिक पाएगी; बस, मुझे इतना ही कहना है।"

रियो के चेहरे पर विषाद छा गया।

"हाँ, मुझे यह मालूम है। लेकिन इसी वजह से तो हम संघर्ष करना नहीं छोड़ सकते।"

"वजह तो नहीं हो सकती, यह मैं मानता हूँ···मैं सिर्फ़ अब यह कल्पना कर सकता हूँ कि इस प्लेग का तुम्हारे लिए क्या अर्थ है।"

"हाँ, कभी न ख़त्म होने वाली हार।"

तारो ने कुछ क्षण तक डॉक्टर की तरफ़ देखा और फिर भरकम क़दमों से दरवाज़े की ओर चल पड़ा। रियो उसके पीछे-पीछे आया और उसकी बग़ल में पहुँचा ही था कि तारो ने, जो फ़र्श की तरफ़ देख रहा था, अचानक कहा, "तुम्हें ये बातें किसने सिखाईं, डॉक्टर ?"

"पीड़ा ने।"

रियो ने सर्जरी का दरवाज़ा खोला और तारो से कहा कि वह भी बाहर जा रहा है। उसे शहर से बाहर एक बस्ती में किसी मरीज़ को देखने जाना है। तारो ने सुझाव दिया कि दोनों एक साथ चलें। डॉक्टर राज़ी हो गया। हॉल में उन्हें मदाम रियो मिली। रियो ने माँ से तारो का परिचय करवाया।

"यह मेरा दोस्त है।"

"सचमुच मुझे तुम्हारा परिचय पाकर बहुत ख़ुशी हुई।" मदाम रियो ने कहा।

जब मदाम रियो चली गई तो तारो मुड़कर उसकी तरफ़ देखता रहा।

ज़ीने पर पहुँचकर डॉक्टर ने बत्ती जलाने के लिए स्विच दबाया, लेकिन ज़ीने में अँधेरा छाया रहा। शायद बिजली की बचत करने के लिए कोई नया ऑर्डर पास किया गया था। लेकिन निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता था। पिछले कुछ दिनों से सड़कों और घरों में भी गड़बड़ हो रही थी। हो सकता है शहर के क़रीब-क़रीब सभी लोगों की तरह इस इमारत का पोर्टर भी अपने फ़र्ज़ को पूरा नहीं कर रहा हो। इससे आगे सोचने का डॉक्टर को वक्त ही नहीं मिला। पीछे से तारो की आवाज़ सुनाई दी।

"एक बात और है डॉक्टर, चाहे यह तुम्हें बेवकूफ़ी ही मालूम हो। तुम ठीक सोचते हो।"

डॉक्टर ने अपने कंधे सिकोड़ लिए। अँधेरे में तारो इस अदा को नहीं देख सका।

"सच पूछो तो, यह मेरे क्षेत्र से बाहर की चीज़ है। लेकिन तुम, ···तुम इस बारे में क्या जानते हो?"

"आह!" तारो ने शान्त स्वर में उत्तर दिया, "मेरे पास सीखने को बहुत कम बचा है।"

रियो रुक गया और उसके नज़दीक ही एक सीढ़ी पर तारो का पैर फिसल गया। तारो ने डॉक्टर के कंधे का सहारा लेकर अपना संतुलन ठीक किया।

"क्या तुम सचमुच सोचते हो कि तुम्हें जीवन के बारे में सारा ज्ञान प्राप्त हो गया है?"

अँधेरे में उसी शान्त, विश्वासपूर्ण स्वर में जवाब सुनाई दिया, "हाँ।"

बाहर सड़क पर पहुँचकर उन्हें एहसास हुआ कि बहुत देर हो गई है। शायद ग्यारह का वक्त हो गया था। शहर में सिवाय अज्ञात सरसराहटों की आवाज़ के, पूरी खामोशी छाई थी। दूर एम्बुलेन्स की मद्धम घण्टी सुनाई दी। दोनों जने कार में बैठ गए और रियो ने कार स्टार्ट की।

"तुम कल ज़रूर अस्पताल में इन्जैक्शन लेने आना," रियो ने कहा, "लेकिन इस तरह का···दु:साहसपूर्ण काम शुरू करने से पहले तुम्हें यह ज़रूर मालूम होना चाहिए कि तुम्हारे ज़िन्दा रहने की कितनी सम्भावना है। हर

तीन में से सिर्फ़ एक के बचने की उम्मीद है।"

"इस तरह के हिसाब से कोई फ़ायदा नहीं; तुम इस बात को मेरी तरह समझते हो डॉक्टर! सौ बरस पहले प्लेग ने ईरान के एक शहर की पूरी आबादी का सफ़ाया कर दिया था, सिर्फ़ एक आदमी बच गया था। वह आदमी लाशें ढोने का काम करता था और जब तक प्लेग फैली रही, उसने यह काम जारी रखा।"

"उसे तीन में से एक चान्स मिल गया था बस यही समझो," रियो ने अपनी आवाज़ धीमी कर ली थी। "लेकिन तुम ठीक कहते हो। इस बारे में हमारा ज्ञान न होने के बराबर है।"

वे बस्ती में दाखिल हो रहे थे। कार के सामने की बत्तियों से खाली सड़कें आलोकित हो रही थीं। कार खड़ी हो गई। रियो ने कार के सामने खड़े होकर तारो से भी भीतर आने के लिए कहा। तारो ने कहा, "हाँ।" आसमान की झिलमिलाती हुई रोशनी उनके चेहरों पर पड़ी। अचानक रियो हँस पड़ा। इस संक्षिप्त हँसी में बहुत मैत्री-भाव था।

"साफ़-साफ़ बताओ तारो! आखिर तुम्हें इस काम में हिस्सा लेने के लिए किसने प्रेरणा दी?"

"मैं नहीं जानता। शायद मेरे नैतिक···सिद्धान्तों ने।"

"नैतिक सिद्धान्तों ने? क्या मैं पूछ सकता हूँ कि वे सिद्धान्त क्या हैं?"

"बोध!"

तारो मरीज़ के घर की तरफ़ मुड़ गया। इसके बाद रियो ने उसका चेहरा तब देखा जब वे दमा के बूढ़े मरीज़ के कमरे में पहुँचे।

८

अगले दिन तारो ने अपना काम शुरू कर दिया और काम करने वालों की पहली टुकड़ी के नाम लिखे। इसके बाद और बहुत से लोगों ने अपने नाम लिखाए।

खैर, यहाँ कथाकार का मक़सद सफ़ाई करने वाली इन टुकड़ियों को ज़रूरत से ज्यादा महत्त्व देना नहीं है। इसमें शक़ नहीं कि आजकल हमारे अधिकांश नागरिक इस टुकड़ी की सेवाओं की अतिरंजित प्रशंसा करने के मोह को नहीं छोड़ सकते। लेकिन कथाकार का ख़याल है कि प्रशंसनीय कामों को ज़रूरत से ज़्यादा महत्त्व देने का अर्थ है इन्सान की प्रकृति के सबसे बुरे पहलू को प्रच्छन्न, और सशक्त रूप से श्रद्धांजलि अर्पण करना। इस दृष्टिकोण को अपनाने का अर्थ है कि ऐसे काम अनुपम और दुर्लभ हैं जबकि क्रूरता और उदासीनता अधिक सहज और स्वाभाविक हैं। कथाकार इस दृष्टिकोण को नहीं मानता। दुनिया में जो बुराई है वह हमेशा अज्ञान से पैदा होती है। और अगर नेकनीयती में विवेक नहीं है तो वह भी उतना ही नुकसान पहुँचा सकती है जितना कि मानव-द्रोह और दुर्भावना। अगर समूचे रूप से देखा जाए तो इन्सानों में बुराई की बजाय अच्छाई ज़्यादा होती है, लेकिन असली बात यह नहीं है। इन्सान कुछ हद तक अज्ञान के शिकार हैं, इसी को हम अच्छाई या बुराई कहते हैं। सबसे बड़ा पाप, जिसका प्रतिकार नहीं किया जा सकता, ऐसे किस्म का अज्ञान है जो सोचता है कि वह सब-कुछ जानता है इसलिए उसे हत्या का अधिकार है। हत्यारे की आत्मा अंधी होती है; सच्ची नेकी या सच्चा प्यार स्पष्टदर्शिता के बग़ैर सम्भव नहीं है। इसलिए सफ़ाई करने वाली इन टुकड़ियों को, जिन्हें बनाने का समूचा श्रेय तारो को था, समर्थन प्राप्त होना चाहिए और इन्हें वस्तु-परक दृष्टि से देखना चाहिए। इसीलिए कथाकार लच्छेदार भाषा में उनके साहस और सेवा-भाव को बयान नहीं करता, बल्कि अपेक्षाकृत उतना ही महत्त्व देता है जितना कि मिलना चाहिए। लेकिन वह प्लेग से पीड़ित हमारे नगरवासियों के विद्रोही और आहत दिलों का इतिहासकार बना रहेगा।

जिन लोगों ने 'सैनेटरी स्क्वैड' में नाम लिखाया था, वे किसी उदात्त आदर्श से प्रेरित नहीं हुए थे, क्योंकि उन्हें मालूम था कि उनके सामने सिर्फ़ यही रास्ता है, इसके विपरीत जाने की वे कल्पना तक नहीं कर सकते थे। इन टुकड़ियों ने हमारे नगरवासियों को महामारी से लड़ने में मदद की और उन्हें यक़ीन दिला दिया कि जब प्लेग उनके सर पर आ ही पड़ी है तो उससे लड़ने की ज़िम्मेवारी भी उन्हीं के ऊपर है। जब से प्लेग से लड़ना कुछ लोगों का फ़र्ज़ बन गया, तब से वह अपने असली रूप में प्रकट हुई—अर्थात् वह हम सब लोगों का सरोकार बन गई।

ख़ैर, जो हुआ अच्छा हुआ! लेकिन हम किसी स्कूल-टीचर को इसलिए बधाई नहीं देते कि वह बच्चों को 'दो और दो चार होते हैं' सिखाता है, हालाँकि हम शायद उसे इस बात की बधाई दे सकते हैं कि उसने एक प्रशंसनीय पेशा चुना है। तो फिर आइए हम कहें कि तारो और अनेक दूसरे लोगों ने 'दो और दो चार होते हैं' सिद्ध करने का ज़िम्मा लिया था इसलिए वे बधाई के पात्र हैं। उन्होंने इससे उल्टी बात सिद्ध करने की कोशिश नहीं की। लेकिन हम यह भी कहेंगे कि उनकी यह सद्‌भावना स्कूल-मास्टरों में और स्कूल-मास्टरों की तरह सोचने वाले अनेक लोगों में पाई जाती है। मानव-जाति के पक्ष में यह कहा जा सकता है कि ऐसे लोगों की संख्या हमारी उम्मीद से कहीं ज़्यादा है। कम-से-कम कथाकार का तो यही विश्वास है। कहना न होगा कि उसके ख़िलाफ़ जो इल्ज़ाम लगाया जा सकता है वह कथाकार को मालूम है, वह यह है कि तारो और उसके साथी अपनी जान को जोखिम में डाल रहे थे। लेकिन इतिहास में ऐसा मौक़ा बार-बार आता है जब 'दो और दो चार होते हैं' कहने का साहस करने वाले आदमी को मौत की सजा दी जाती है। स्कूल-टीचर इस बात को अच्छी तरह जानता है। सवाल यह नहीं है कि इस गिनती के फलस्वरूप क्या इनाम या सज़ा मिलती है। सवाल यह है कि दो और दो चार होते हैं यह बात किसी को मालूम है या नहीं। हमारे जो नगरवासी इस मुसीबत में अपनी जानें जोखिम में डाल रहे थे, उनके सामने सवाल यह था कि प्लेग उनके बीच में मौजूद थी या नहीं, और उससे लड़ना उन लोगों का

फ़र्ज़ था या नहीं।

उन दिनों बहुत से नये नैतिकतावादी पैदा हुए थे जो हमारे शहर में इस बात का प्रचार करते घूमते थे कि प्लेग पर कोई बस नहीं चल सकता और हमें विधाता की मरज़ी के आगे सर झुका देना चाहिए। तारो, रियो और उनके दोस्त चाहे जैसे जवाब देते, लेकिन वे सब एक ही नतीजे पर पहुँचे थे, उन्हें यक़ीन था कि किसी-न-किसी तरीक़े से प्लेग के ख़िलाफ़ संघर्ष ज़रूर करना चाहिए और हरगिज़ झुकना नहीं चाहिए। सबसे ज़रूरी बात यह थी कि ज़्यादा-से-ज़्यादा लोगों को मरने और कभी न ख़त्म होने वाले बिछोह से बचाया जाए। इसे करने का सिर्फ़ एक ही साधन था—प्लेग से जूझना। इस दृष्टिकोण में प्रशंसा की कोई विशेष बात नहीं थी, यह तो तर्क-संगत ही था।

इसलिए यह स्वाभाविक ही था कि बूढ़ा डॉक्टर कॉस्तेल अटल विश्वास से, लगातार मेहनत करके थोड़े सामान और वक्त में ही प्लेग की सीरम तैयार कर रहा था। रियो को भी यक़ीन था कि प्लेग के ताज़ कीटाणुओं से तत्काल बनी सीरम बाहर से मँगाई जाने वाली सीरम से ज़्यादा जल्दी असर करेगी, क्योंकि ट्रॉपिकल रोगों की पाठ्य-पुस्तकों में प्लेग के जिन जीवाणुओं का ज़िक्र पाया जाता है वे हमारी प्लेग के जीवाणुओं से कुछ अलग क़िस्म के थे, कॉस्तेल को उम्मीद थी कि वह बहुत कम वक्त में सीरम की शुरू की सप्लाई तैयार कर लेगा।

इसलिए यह भी स्वाभाविक था कि ग्रान्द, जो किसी मानें में भी 'हीरो' नहीं कहा जा सकता था, इस वक्त सफ़ाई की टुकड़ियों का जनरल सेक्रेटरी था। तारो द्वारा संगठित की गई टुकड़ियों के कुछ हिस्से शहर के अधिक आबादी वाले इलाकों में काम कर रहे थे ताकि वहाँ सफ़ाई की हालत सुधारी जा सके। उनका काम घरों की सफ़ाई देखना और उन तहख़ानों और बरसातियों की सूची बनाना था जिनकी सफ़ाई सरकार के सफ़ाई-विभाग ने अभी तक नहीं की थी। स्वयंसेवकों के जत्थे डॉक्टरों के साथ एक-एक घर में जाकर प्लेग की छूत वाले लोगों को घरों से निकालकर हस्पताल पहुँचाते थे। चूँकि ड्राइवरों की कमी थी इसलिए वे मरीज़ों

और मुर्दों की गाड़ियों को भी चलाते थे। इन सारे कामों में बाकायदा आँकड़े और रजिस्टर रखने पड़ते थे। यह काम ग्रान्द ने सँभाला।

इस लिहाज़ से कथाकार का ख़याल है कि रियो और तारो से भी ज़्यादा ग्रान्द सफ़ाई की टुकड़ियों के मौन साहस का सच्चा प्रतीक था। उसने अपने स्वभाव के अनुसार बिना किसी हिचकिचाहट के सहृदयतापूर्वक फौरन अपनी स्वीकृति दे दी थी। उसने सिर्फ यह माँग की थी कि उसे हल्का काम सौंपा जाए, क्योंकि बुढ़ापे में वह इससे ज़्यादा भारी काम नहीं कर सकता था। हर रोज़ शाम को वह छः से लेकर आठ बजे तक का वक्त देने के लिए राज़ी हो गया। जब रियो ने उत्साहपूर्वक उसे धन्यवाद दिया तो ग्रान्द ने आश्चर्य प्रकट किया "क्यों, यह भी कोई मुश्किल काम है? प्लेग हमारे बीच में मौजूद है और यह साफ़ है कि हमें कोई क़दम उठाना ही पड़ेगा। काश! हर चीज़ सीधी और आसान होती!" और उसने फिर अपना प्रिय मुहावरा इस्तेमाल किया। कई बार शाम को अपनी रिपोर्टें लिखने और आँकड़े तैयार करने के बाद ग्रान्द और रियो गपशप किया करते थे। कुछ दिन में तारो भी उनकी बातचीत में शामिल होने लगा और अपने दोनों साथियों के सामने अपने दिल का बोझ हल्का करने में ग्रान्द को बेहद खुशी होती। उसके साथी उसके कठिन साहित्यिक प्रयास में सच्ची दिलचस्पी लेने लगे, जिसमें वह प्लेग के बावजूद जुटा था। इस चर्चा से उनकी मानसिक थकान भी कम हो जाती थी।

"तुम्हारी घुड़सवार महिला का क़िस्सा कैसा चल रहा है?" तारो पूछता और ग्रान्द हमेशा वक्र मुस्कान के साथ कहता, "दुलकी चाल से चल रही है—चल रही है!" एक दिन शाम को ग्रान्द ने घोषित किया कि वह घुड़सवार महिला के लिए 'शानदार' शब्द इस्तेमाल नहीं करेगा, बल्कि उसे 'इकहरे बदन वाली' कहेगा। "यह शब्द अधिक ठोस और वास्तविक है।" उसने समझाया। इसके बाद उसने दोनों दोस्तों को वाक्य का नया रूप सुनाया।

"मई के महीने की एक सुहानी सुबह एक इकहरे बदन वाली घुड़सवार तरुणी बोये द' बोलोन के फूलों से सुसज्जित रास्तों में एक ख़ूबसूरत

ब्राउन रंग की घोड़ी पर देखी जा सकती थी।"

"इस तरह से बेहतर तस्वीर बनती है न! और मैंने 'मई के महीने' की जगह 'मई के महीने की एक सुहानी सुबह' लिखा है, क्योंकि पहले वाक्य से घोड़े की चाल वाला अंश कुछ लम्बा हो जाता था, आप मेरा मतलब समझ गए हैं न?"

इसके बाद ग्रान्द ने 'ख़ूबसूरत' विशेषण पर कुछ परेशानी ज़ाहिर की। उसकी राय में यह विशेषण उसकी भावनाओं को पूरी तरह से व्यक्त करने में असमर्थ था, इसलिए वह किसी ऐसे विशेषण की तलाश में था जो फ़ौरन और साफ़ ढंग से उस शानदार जानवर की 'तस्वीर खींच सके', जिसकी तस्वीर उसके मन में थी। 'गदराया हुआ' शब्द ठोस होते हुए भी ठीक नहीं था, बल्कि इसमें हिक़ारत और बेहूदगी की मात्रा थी। कुछ क्षण के लिए उसे 'खरहरा किया' शब्द मोहक लगा था, लेकिन यह भरकम और फूहड़ था, जिससे लय में शिथिलता आ गई थी। फिर एक दिन उसने विजेता-भाव से घोषित किया कि उसे सही शब्द मिल गया, 'काली, ब्राउन घोड़ी।' उसने कहा कि 'काली' से ऐश्वर्य और सुन्दरता का आभास मिलता है।

"इससे काम नहीं चलेगा?"

"क्यों नहीं?"

"क्योंकि 'ब्राउन' घोड़े की नस्ल नहीं बल्कि एक रंग है।"

"कौनसा रंग?"

"ख़ैर......जो भी हो, यह काला रंग नहीं।" ग्रान्द बेहद परेशान दीख रहा था।

"धन्यवाद," उसने उत्साह से कहा, "कितनी खुशक़िस्मती की बात है कि आप मेरी मदद कर रहे हैं! लेकिन आप लोगों ने देखा यह कितना मुश्किल काम है!"

" 'चमकदार' कैसा रहेगा?" तारो ने सुझाव दिया।

ग्रान्द ने सोच में डूबी नज़रों से उसकी तरफ़ देखा और कहा, "हाँ, यह अच्छा शब्द है।" और धीरे-धीरे उसके होंठों पर एक मुस्कान खिल उठी।

कुछ दिन बाद उसने बताया कि 'फूलों से सुशोभित' शब्द उसे काफ़ी परेशान कर रहा है। वह सिर्फ दो शहरों, ओरान और मोतेलीमार से परिचित है। कई बार वह अपने दोस्तों से कहता कि वे उसे बोय द बोलोन की वृक्षों से आच्छादित सड़कों के बारे में बताएँ—वहाँ फूल किस क़िस्म के होते हैं और किस तरतीब में लगाए जाते हैं? दरअसल रियो और तारो में से किसी को कभी यह अंदाज़ नहीं था कि वे सड़कें 'फूलों से सुशोभित' थीं। लेकिन ग्रान्द की अटल आस्था से उन्हें अपनी स्मृतियों पर अविश्वास करने के लिए मजबूर होना पड़ा। ग्रान्द को उन लोगों के अविश्वास पर ताज्जुब हुआ। वह इस नतीजे पर पहुँचा कि 'सिर्फ कलाकार ही अपनी आँखों का इस्तेमाल करना जानते हैं।' लेकिन एक दिन शाम को रियो ने उसे उत्तेजित हालत में पाया, क्योंकि 'फूलों से सुशोभित' की बजाय उसने 'बिखरे हुए फूल' लिख दिया था। वह बार-बार अपनी हथेलियाँ रगड़ रहा था। "अब मैं उन फूलों को देख सकता हूँ, सूँघ सकता हूँ। हैट्स ऑफ़, जेंटलमैन!" फिर उसने विजेता-भाव से वाक्य पढ़कर सुनाया।

"मई के महीने की एक सुहानी सुबह एक छरहरे वदन की नौजवान घुड़सवार लड़की बोय द' बोलोन के वृक्षों से आच्छादित मार्ग पर एक चमकदार ब्राउन घोड़ी पर सवार देखी जा सकती थी। रास्ते में फूल बिखरे हुए थे।"

लेकिन जब यह वाक्य ऊँचे स्वर में पढ़ा गया तो बहुवचन के 'ओं' अप्रिय मालूम हुए। ग्रान्द की आवाज़ बीच-बीच में अटक गई और मन्द हो गई। ग्रान्द हताश-भाव से बैठ गया और उसने डॉक्टर से जाने की इजाज़त माँगी। उसे अब कठिन चिन्तन करना था।

बाद में पता चला कि इन्हीं दिनों दफ़्तर में काम करते हुए ग्रान्द में लापरवाही और भुलक्कड़पन के लक्षण दिखाई देने लगे थे। अधिकारियों ने इस मामले को गम्भीर समझा था। म्युनिसिपल कमेटी के पास बहुत कम स्टाफ़ रह गया था और उन पर काम का बोझ बढ़ गया था। इसके अलावा लगातार उन्हें नयी ज़िम्मेदारियाँ सँभालनी पड़ रही थीं। ग्रान्द की लापरवाही का असर उसके विभाग की कार्यकुशलता पर पड़ा। उसके

अफ़सर ने उसकी खूब खबर ली और कहा कि उसे काम करने के लिए तनख्वाह मिलती है और वह अपने काम को ठीक से नहीं कर रहा। "मुझे पता चला है कि तुमने सफ़ाई करने वाले स्वयंसेवकों की टुकड़ी में भी अपना नाम लिखाया है। खैर, तुम दफ़्तर की ड्यूटी के बाद के समय में यह काम करते हो, इसलिए मुझे इससे कोई सरोकार नहीं। लेकिन ऐसे मुसीबत के वक्त समाज-सेवा का एक ही तरीका है। वह यह कि सब लोग अपना काम ठीक से करें। बाक़ी सब बेकार बातें हैं।"

"वह ठीक कहता है," ग्रान्द ने रियो से कहा।

"हाँ, वह ठीक कहता है।" डॉक्टर ने समर्थन किया।

"लेकिन मैं अपने विचारों को संतुलित नहीं कर पाता। वाक्य का अंतिम हिस्सा मुझे परेशान किये रहता है। मैं ठीक शब्दों का चुनाव नहीं कर पा रहा।"

बार-बार बहुवचन के 'स' की ध्वनि ग्रान्द को कर्णकटु मालूम होती थी, लेकिन उन्हें सुधारने के लिए उसके सामने सिवा घटिया पर्यायवाची शब्दों का इस्तेमाल करने के और कोई चारा नहीं था। 'बिखरे हुए फूल' का प्रयोग जब पहली बार उसके दिमाग़ में आया था तो उसे बेहद खुशी हुई थी, लेकिन अब इस शब्द से उसे सन्तोष नहीं होता था। यह कैसे कहा जा सकता था कि 'फूल बिखरे हुए हैं' जबकि वे रास्ते के दोनों ओर लगाये गए होंगे या अपने-आप ही उग आए होंगे। किसी-किसी शाम को तो वह रियो से भी ज़्यादा थका हुआ दिखाई देता था।

सचमुच लगातार इस व्यर्थ खोज ने उसके मन को थका दिया था, फिर भी वह रजिस्टर में पूर्ववत् आँकड़े जमा करता और लिखता था, जिनकी सफ़ाई की टुकड़ियों को ज़रूरत थी। धैर्यपूर्वक हर शाम को वह आँकड़ों का नये सिरे से योग करता था और उसे स्पष्ट करने के लिए ग्राफ़ भी तैयार करता था। वह अपने 'तथ्यों' को बिलकुल साफ़ और सही रूप में पेश करने की कोशिश में अपने दिमाग़ को झकझोर डालता था। अक्सर वह किसी अस्पताल में रियो से मिलने जाता था कि किसी दफ़्तर या डिस्पेन्सरी में उसके लिए मेज़-कुरसी का प्रबन्ध कर दिया जाए। फिर वह

एकाग्रतापूर्वक काम करने बैठ जाता था, ठीक उसी तरह जसे वह म्युनिसिपल कमेटी में अपनी मेज़ के आगे बैठकर काम करता था। हर बार काग़ज़ लिखकर वह स्याही सुखाने के लिए गरम हवा में हिलाता था जिसमें कीटाणुनाशक दवाइयों और बीमारी की गन्ध बसी थी। ऐसे मौकों पर ईमानदारी से कोशिश करता था कि वह 'घुड़सवार महिला' के बारे में न सोचे और अपना ध्यान काम में केन्द्रित करे।

हाँ, अगर यह सच है कि लोग चाहते हैं कि उनके सामने उन लोगों की मिसालें रखी जाएँ जिन्हें वे 'बहादुर' कहते हैं और अगर यह नितान्त आवश्यक है कि इस कहानी में 'हीरो' हो, तो कथाकार अपने पाठकों से उस अज्ञान और मामूली 'हीरो' का परिचय कराता है जिसके पास सिर्फ़ एक नेक दिल और एक ऐसा आदर्श है जो देखने में हास्यास्पद मालूम होता है। कथाकार का विचार है कि वह पाठकों के साथ पूरा इन्साफ़ कर रहा है। इससे सचाई के प्रति भी उसका फ़र्ज़ पूरा हो जाएगा। दो और दो मिलकर चार हो जाएँगे और बहादुरी को खुशी के मुक़ाबले दूसरे नम्बर की जगह मिलेगी जो कि हमेशा मिलनी चाहिए, क्योंकि पहली जगह पाने का खुशी को हक़ है। इससे इस इतिहास में भी व्यक्तित्व पैदा हो जाएगा, जिसका उद्देश्य कहानी में अच्छी भावनाओं का समावेश करना है, अर्थात् उन भावनाओं का जो न तो बुराई का प्रदर्शन करती हैं, न ही जिनमें स्टेज के नाटक की तरह सस्ती और कुरूप भावुकता है।

कम-से-कम डॉक्टर रियो की तो यही राय थी जब उसने अख़बारों में वे सन्देश और प्रोत्साहन के शब्द पढ़े और रेडियो पर सुने जो बाहर की दुनिया के लोगों ने प्लेग-ग्रस्त नगरवासियों को भेजे थे। हवाई जहाज़ या सड़कों के रास्ते उन्होंने सामान तो भेजा ही था, इसके अलावा दुनिया से कटे हुए उस शहर से अख़बारों के लेखों और रेडियो की वार्ताओं में भी स्नेह और प्रशंसा व्यक्त की जाती थी। हर बार उन लेखों और वार्ताओं की लच्छेदार भाषा सुनकर, जैसी कि इनाम पाने के लिए दिये गए भाषणों में लिखी जाती है, डॉक्टर को बहुत बुरा लगता था। यह कहने की ज़रूरत नहीं कि डॉक्टर को यह अच्छी तरह मालूम था कि यह हमदर्दी

सच्ची है। लेकिन इसे सिर्फ परम्परागत भाषा में ही व्यक्त किया जा सकता था, जिसमें लोग उस भावना को व्यक्त करने की कोशिश करते हैं जो उन्हें मानव-मात्र से बाँधती है; मिसाल के लिए यह शब्दावली ग्रान्द की रोज़मर्रा की छोटी-छोटी कोशिशों को व्यक्त करने में तो असमर्थ थी ही, प्लेग की परिस्थितियों में भी ग्रान्द के क्या आदर्श थे, यह बयान करने में भी वह असमर्थ थी।

कई बार आधी रात को नींद में सोए शहर के विशाल मौन में, सोने से पहले डॉक्टर रेडियो सुनता था। इन दिनों वह अपने को बहुत कम सोने देता था। धरती के सुदूर छोरों से, ज़मीन और समुद्र के हज़ारों मील पार सहृदय और दयावान वक्ता अपनी भ्रातृभाव की भावनाओं को व्यक्त करने की कोशिशें कर रहे थे, लेकिन उन्होंने यह भी साबित कर दिया कि कोई भी व्यक्ति ऐसी किसी अदृश्य पीड़ा का साझीदार नहीं बन सकता। 'ओरान! ओरान!' व्यर्थ में ही यह आवाज़ समुद्रों पार से गूँज रही थी और व्यर्थ में ही रियो दिल में उम्मीद लेकर रेडियो सुनता था। हर बार वक्तृता का ज्वार उठता था जिससे वक्ता और ग्रान्द के बीच कभी न पटने वाली खाई का एहसास और भी बढ़ जाता था। वे लोग भावुक स्वर में आवाज़ देते थे, "ओरानवासियो, हम तुम्हारे साथ हैं!" लेकिन डॉक्टर ने मन-ही-मन कहा—लेकिन प्यार और मौत में वे हमारे साथी नहीं। और साथ देने का यही एक तरीका है। वे लोग हमसे बहुत दूर हैं।

९

और उस ज़माने में जब प्लेग अपनी पूरी ताकतें इकट्ठी करके शहर पर धावा बोल रही थी और उसे बरबाद कर रही थी, उसका ज़िक्र करने से पहले प्रसंगवश हमें रेम्बर्त-जैसे हठीले लोगों के लम्बे और हृदय-विदारक, नीरस संघर्ष का ज़िक्र करना होगा। वे अपनी खोई खुशी के लिए लड़ रहे थे और प्लेग को अपने व्यक्तित्व के उस हिस्से से वंचित रखना चाहते थे

जिसे बचाने के लिए वे अन्तिम क्षण तक जूझने को तैयार थे। गुलामी की जंजीरों से लड़ने का उन्होंने यही तरीक़ा सोचा था। हालाँकि उनका संघर्ष सक्रिय नहीं था, फिर भी (कथाकार का दृष्टि में) उसमें अपनी एक महानता थी। इसके अलावा अपनी निरर्थकता और असंगतियों में भी यह संघर्ष एक कल्याणकारी अहंकार का साक्षी था।

रेम्बर्त प्लेग से इसलिए लड़ रहा था ताकि प्लेग उस पर क़ाबू न पा सके। जब उसे यकीन हो गया कि वह किसी जायज़ तरीके से शहर से बाहर नहीं निकल सकता तो उसने तय किया, जैसा कि उसने रियो को बताया कि वह दूसरे तरीके अपनाएगा। सबसे पहले उसने कॉफ़ी-हाउसों के वेटरों से साठ-गाँठ की। आमतौर पर वेटरों को अन्दरूनी बातों का पता रहता है। लेकिन पहले जिस वेटर से उसने बात की उससे तो यही पता चला कि शहर से भागने की कोशिश करने वालों को सख़्त जुरमाने होते हैं और सज़ाएँ दी जाती हैं। एक कॉफ़ी-हाउस में तो सचमुच उसे भेदिया समझकर खदेड़ दिया गया। जब रियो के यहाँ उसकी मुलाक़ात कोतार्द से हुई तब जाकर मामला कुछ आगे बढ़ा। उस रोज़ उसमें और रियो में फिर बातचीत हो रही थी कि किस तरह अफ़सरों ने उसकी प्रार्थना पर कोई ध्यान नहीं दिया। कोतार्द ने उनकी बातचीत का आख़िरी हिस्सा सुना।

कुछ दिन बाद रेम्बर्त की कोतार्द से सड़क पर मुलाक़ात हो गई। इन दिनों कोतार्द सबसे तपाक से मिलता था। उसने पूछा, "हेलो रेम्बर्त! अभी तक कामयाबी नहीं मिली?"

"बिलकुल नहीं।"

"इन लाल फीते के व्यापारियों पर भरोसा करने से कोई फ़ायदा नहीं। चाहने पर भी तुम्हारी बात नहीं समझ सकते।"

"मैं जानता हूँ और अब मैं कोई दूसरा तरीका तलाश कर रहा हूँ। लेकिन यह टेढ़ा मामला है।"

"हाँ, टेढ़ा तो है ही, लेकिन···" कोतार्द ने कहा कि उसे एक तरकीब मालूम है और उसने वह तरकीब रेम्बर्त को समझाई। रेम्बर्त को बहुत ताज्जुब हुआ। पिछले कुछ दिन से वह कॉफ़ी-हाउसों के चक्कर काटता

रहा था, उसका कई नये लोगों से परिचय हुआ था और उसे पता चला था कि ऐसे मामलों के लिए एक 'संस्था' थी। दरअसल कोतार्द, जो इन दिनों अपनी हैसियत से कहीं ज़्यादा खर्च करने लगा था, चोरी मे राशन की चीज़ों को बाहर से मँगवाता था। वह ऊँचे दामों पर चोरी से मँगवाए सिगरेट और घटिया शराबें बेचता था, जिससे उसने एक अच्छी-ख़ासा रक़म जमा कर ली थी।

"क्या तुम विश्वासपूर्वक कह सकते हो कि यह सम्भव है?" रेम्बर्त ने पूछा।

"बिलकुल। अभी कुछ दिन पहले किसी ने मुझसे यह प्रस्ताव किया था।"

"लेकिन तुमने इसे स्वीकार तो नहीं किया था?"

"छोड़ो भी, इसमें शक की कोई बात नहीं।" कोतार्द के लहज़े में मैत्री-भाव था। "मैंने इसलिए स्वीकार नहीं किया, क्योंकि मुझे यहाँ से जाने की कोई इच्छा नहीं। इसके कई कारण हैं।" थोड़ी देर ख़ामोश रहने के बाद उसने कहा, "देखता हूँ कि तुम्हें इन कारणों में कोई दिलचस्पी नहीं है।"

"मैं समझता हूँ कि उन कारणों से मुझे कोई सरोकार नहीं।" रेम्बर्त ने जवाब दिया।

"एक माने में यह सही है, लेकिन दूसरे लिहाज़ से...अच्छा तो स्थिति यूँ है कि जब से शहर में प्लेग फैली है, मैं ज़्यादा आराम से रहने लगा हूँ।"

रेम्बर्त ने कोई टिप्पणी नहीं की, फिर उसने पूछा, "अच्छा इस तथा-कथिक 'संस्था' से कैसे सम्पर्क किया जा सकता है?"

"आह! यह आसान बात नहीं है।...मेरे साथ आओ," कोतार्द ने कहा।

शाम के चार बजे थे। जलते हुए आसमान तले शहर जैसे उबल रहा था। आसपास कोई नज़र नहीं आता था। सब दुकानों के दरवाज़े बंद थे। कोतार्द और रेम्बर्त मेहराबों के नीचे से कुछ दूर तक चुपचाप चलते गए। इस वक्त प्लेग का प्रकोप कुछ कम रहता था। महामारी की तरह तेज़ रोशनी की वजह से भी सारे रंग मुरझा जाते थे और लोगों का आना-जाना

बंद हो जाता था। यह कहना मुश्किल था कि हवा में खतरे का भारीपन था या सिर्फ़ धूल और गरमी का। ध्यान से देख और सोचकर ही किसी को वहाँ प्लेग की मौजूदगी का एहसास हो सकता था। सिर्फ़ नकारात्मक इशारों से ही प्लेग अपनी मौजूदगी का पता देती थी। कोतार्द ने, जिसकी आजकल प्लेग से दोस्ती थी, रेम्बर्त का ध्यान कुत्तों की अनुपस्थिति की तरफ़ दिलाया जो आम तौर पर यहाँ दरवाज़ों की छाँह में लेटकर हाँफते हुए, ठंडी ज़मीन के टुकड़े को तलाश करने का निरर्थक प्रयास करते हुए देखे जा सकते थे।

वे बुलेवर द' पामीयर्ज़ से होते हुए प्लेस द' आर्मे से गुज़रे और फिर बंदरगाह की ओर मुड़े। बाईं तरफ़ एक कॉफ़ी-हाउस था जिस पर हरे रंग की सफ़ेदी की गई थी और पीले रंग की खुरदरी कैनवस की कनात फुट-पाथ तक फैली हुई थी। कॉफ़ी-हाउस में घुसते वक्त कोतार्द और रेम्बर्त ने अपने माथे पोंछे। भीतर लोहे की छोटी-छोटी मेज़ें थीं, जिन पर हरे रंग का रोग़न किया गया था। बंद होने वाली कुरसियाँ भी थीं। कमरा खाली था, हवा में मक्खियों की भिनभिनाहट सुनाई दे रही थी। शराब के काउण्टर पर एक पीले रंग के पिंजड़े में एक तोता अपने अड्डे पर बैठा था। उसके सारे पंख ढलके हुए थे। दीवारों पर कुछ सैनिक दृश्यों की तस्वीरें थीं जो मिट्टी और मकड़ी के जालों से ढकी हुई थीं। मेज़ों पर पक्षियों की बीटें सूख रही थीं—उस मेज़ पर भी, जिसके आगे रेम्बर्त बैठा था। उसे ताज्जुब हुआ कि ये बीटें कहाँ से आईं। इतने में किसी के पंख फड़फड़ाने की आवाज़ आई और एक खूबसूरत मुर्ग़ा अँधेरे कोने में से निकलकर फुद़कता हुआ आया, जहाँ वह छिपा बैठा था।

इसी वक्त गरमी कई दरजे ज़्यादा बढ़ गई। कोतार्द ने अपना कोट उतार दिया और मेज़ पर ज़ोर से मुट्ठी मारकर आवाज़ की। एक बेहद नाटा आदमी नीले रंग का लम्बा एप्रन पहनकर, जो उसकी गरदन तक उठा हुआ था, पीछे के दरवाज़े से आया। उसने कोतार्द को अभिवादन किया और ज़ोर से मुर्ग़े को अपने रास्ते से हटाता हुआ मेज़ के पास आया। मुर्ग़े की ग़ुस्से-भरी कें-कें को डुबोने के लिए उसने ऊँची आवाज़ में दोनों जनों

से पूछा कि वे क्या पसन्द करेंगे ? कोतार्द ने सफ़ेद शराब का ऑर्डर दिया और पूछा, "गार्सिया कहाँ है ?" बौने ने जवाब दिया कि गार्सिया बहुत दिन से कॉफ़ी-हाउस में नहीं दिखाई दिया।

"क्या ख़याल है, वह आज शाम को आयेगा ?"

"ख़ैर, वह मुझे अपने राज़ तो नहीं बताता। लेकिन आप तो जानते ही हैं कि अक्सर वह किस वक्त यहाँ आता है।"

"हाँ, कोई ख़ास ज़रूरी बात नहीं है। लेकिन मैं उसे अपने इस दोस्त से मिलाना चाहता हूँ।"

शराब वाले ने अपने गीले हाथ एप्रन के सामने के हिस्से से पोंछते हुए पूछा, "आह ! तो ये सज्जन भी बिज़नेस में शामिल हैं ?"

"हाँ।" कोतार्द ने कहा।

ठिगने आदमी ने नकियाते हुए कहा, "अच्छी बात है। शाम को आइएगा। मैं छोकरे को भेजकर उसे ख़बर करा दूँगा।"

जब वे बाहर आये तो रेम्बर्त ने पूछा कि किस बिज़नेस का ज़िक्र हो रहा था।

"अरे वाह, स्मगलिंग ! ये लोग फाटकों से संतरियों के देखते-देखते माल भीतर ले आते हैं। इस बिज़नेस में बहुत आमदनी है।"

"समझ गया।" रेम्बर्त एक क्षण की ख़ामोशी के बाद बोला, "मेरा ख़याल है कि कचहरी में भी उनके दोस्त होंगे।"

"तुमने सही बात भाँप ली है।"

शाम के वक्त कनात को लपेट दिया गया। तोता अपने पिंजरे में टें-टें करने लगा। छोटी मेज़ों के इर्द-गिर्द लोग जमा हो गए, जिन्होंने सिर्फ़ कमीज़ें और पतलूनें पहन रखी थीं। जब कोतार्द दाखिल हुआ तो एक आदमी, जिसकी सफ़ेद कमीज़ में से ईंट-जैसे लाल रंग का सीना चमक रहा था और जिसने स्ट्रॉ हैट पहन रखा था, उठकर खड़ा हो गया। उसका चेहरा धूप में तपा था, नाक-नक़्श चौकस थे, काले रंग की छोटी-छोटी आँखें थीं, दाँत बहुत सफ़ेद थे, उँगलियों में दो या तीन अँगूठियाँ थीं, उसकी उम्र तीस के क़रीब मालूम होती थी।

"ख़ुश रहो प्यारे !" उसने रेम्बर्त की तरफ़ ध्यान न देकर कोतार्द से कहा, "आओ बॉर में चलकर एक-एक पिएँ।"

उन्होंने ख़ामोशी से शराब के तीन दौर चलाए।

"चलो ज़रा टहलें," गार्सिया ने सुझाव दिया।

वे बन्दरगाह की तरफ़ चल पड़े। गार्सिया ने पूछा कि वह उनकी क्या ख़िदमत कर सकता है। कोतार्द ने बताया कि वह अपने दोस्त मोशिये रेम्बर्त का बिज़नेस के लिए नहीं, बल्कि 'भागने के लिए' परिचय कराना चाहता है। सिगरेट का कश खेंचते हुए गार्सिया आगे बढ़ता गया। उसने कुछ सवाल पूछे जिनमें वह 'यह आदमी' कहकर रेम्बर्त की उपस्थिति की तरफ़ ध्यान दिए बग़ैर रेम्बर्त के बारे में बात करने लगा।

"यह यहाँ से क्यों जाना चाहता है?"

"इसकी बीवी फ्रांस में है।"

"आह!" फिर थोड़ी देर ख़ामोश रहने के बाद गार्सिया ने पूछा "यह क्या काम करता है?"

"यह पत्रकार है।"

"क्या अभी भी? पत्रकारों की जीभ बहुत लम्बी होती है।"

"मैं तुम्हें बता चुका हूँ कि यह मेरा दोस्त है," कोतार्द ने जवाब दिया।

वे घाटों तक ख़ामोशी से चलते रहे। अब घाटों के गिर्द तारों की बाड़ लगा दी गई थी। वे एक छोटे-से रेस्तराँ की तरफ़ मुड़े जिसमें से तली हुई मछली की सुगन्ध आ रही थी।

गार्सिया ने निश्चयपूर्वक कहा, "जो भी हो, यह मेरे बस की बात नहीं सिर्फ़ राऊल ही ऐसा आदमी है जो यह काम कर सकता है। मुझे उससे सम्पर्क स्थापित करना पड़ेगा। यह आसान काम नहीं है।"

"सचमुच? वह दुबका बैठा है, क्यों?" कोतार्द ने दिलचस्पी ज़ाहिर की।

गार्सिया ने कोई जवाब न दिया। शराबख़ाने के दरवाज़े के पास जाकर वह रुक गया और पहली बार उसने रेम्बर्त से सीधी बात की।

"परसों ग्यारह बजे, अपर टाउन में कस्टम्ज़ की बारकों के पास मिलना।" फिर वह भीतर जाने लगा और अचानक जैसे उसे बाद में ख़याल आया। उसने लापरवाही से कहा, "इस काम में कुछ ख़र्च करना पड़ेगा।"

रेम्बर्त ने सर हिलाकर सम्मति प्रकट की, "सो तो होगा ही।"

लौटते वक्त रास्ते में पत्रकार ने कोतार्द को धन्यवाद दिया।

"इसमें धन्यवाद की कोई बात नहीं मेरे दोस्त ! तुम्हारी मदद करके मुझे खुशी ही होगी। और फिर तुम पत्रकार हो। कभी-न-कभी तुम मेरे बारे में भी एकाध शब्द लिख दोगे।"

दो दिन बाद रेम्बर्त और कोतार्द शहर के ऊपरी हिस्से में जाने वाली चौड़ी छायाहीन सड़क को पार कर रहे थे। कस्टम्ज़ के अफ़सरों की बारकों के एक हिस्से को अस्पताल में बदल दिया गया था और मुख्य फाटक के सामने बहुत से लोग खड़े थे। कुछ किसी मरीज़ से मिलने की आशा लेकर आये थे—यह आशा निरर्थक थी, क्योंकि मरीज़ों से मुलाक़ात करने की सख्त मनाही थी। कुछ लोग किसी बीमार की खबर पाने की उम्मीद से आये थे, हालाँकि घंटे-भर में इस ख़बर का महत्त्व ख़त्म हो जाता। इन कारणों से हमेशा अस्पताल के बाहर भीड़ जमा रहती थी और चहल-पहल नज़र आती थी; इसीलिए शायद गार्सिया ने रेम्बर्त से मिलने के लिए यह जगह चुनी थी।

कोतार्द ने कहा, "मेरी समझ में नहीं आता कि तुम यहाँ से जाने के लिए क्यों इतने उतावले हो रहे हो ? सचमुच शहर में जो घटनाएँ हो रही हैं मुझे तो वे बेहद दिलचस्प मालूम होती हैं।"

"मुझे नहीं," रेम्बर्त ने जवाब दिया।

"हाँ, यह तो मानता हूँ कि लोगों को बहुत जोखिम उठानी पड़ रही है, फिर भी अगर तुम ग़ौर से सोचो तो इस नतीजे पर पहुँचोगे कि प्लेग से पहले भी जिस सड़क पर बहुत ट्रैफ़िक रहता था उसे पार करने में भी तो इतनी ही जोखिम रहती थी।"

इसी वक्त रियो की कार आकर उनके बराबर खड़ी हो गई। तारो

ड्राइव कर रहा था और रियो की आँखें नींद से अधमुँदी थीं। रियो ने जग-कर दोनों का अभिवादन किया।

तारो ने कहा, "हम एक-दूसरे को जानते हैं। हम एक ही होटल में हैं।" फिर उसने रेम्बर्त से कहा कि वह उसे कार में बिठाकर शहर के केन्द्र तक ले जा सकता है।

"नहीं, धन्यवाद! हमने यहाँ किसी को मिलने को वक्त दिया है।"

रियो ने कठोर दृष्टि से रेम्बर्त की तरफ़ देखा। "हाँ," रेम्बर्त ने कहा।

कोतार्द को ताज्जुब हुआ, "क्या माजरा है? क्या डॉक्टर को यह बात मालूम है?"

"वह रहा मैजिस्ट्रेट," तारो ने आँख के इशारे से कोतार्द को चेतावनी दी।

कोतार्द के चेहरे का भाव बदल गया। मैजिस्ट्रेट ओथों सड़क पर उनकी तरफ़ बढ़ा आ रहा था। उसकी चाल में तेज़ी के साथ-साथ शालीनता भी थी। उन लोगों के पास पहुँचकर उसने अपना हैट उतार लिया।

"गुड मौर्निंग, मोशिये ओथों," तारो ने कहा।

मैजिस्ट्रेट ने कार में बैठे लोगों के अभिवादन का जवाब दिया और फिर रेम्बर्त और कोतार्द की तरफ़ देखकर खामोशी से सर हिलाया ज़ो पीछे की तरफ़ खड़े थे। तारो ने कोतार्द और पत्रकार का परिचय कराया। मैजिस्ट्रेट कुछ देर तक आँखें फाड़-फाड़कर आसमान की ओर देखता रहा, फिर उसने ठंडी साँस लेकर कहा कि सचमुच बड़ी मुसीबत का ज़माना आ गया है।

मैंने सुना है, मोशिये तारो, कि आप लोगों को प्लेग से बचने के तरीके सिखा रहे हैं। सचमुच यह कहने की ज़रूरत नहीं कि आप कितना प्रशंसनीय काम कर रहे हैं, कितनी शानदार मिसाल क़ायम कर रहे हैं···डॉक्टर रियो, क्या ख़याल है, क्या महामारी और भी ज़्यादा बढ़ जाएगी?"

रियो ने जवाब दिया कि आदमी सिर्फ़ यह उम्मीद ही कर सकता है कि हालत बिगड़ेगी नहीं। मैजिस्ट्रेट ने कहा कि इन्सान को कभी उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिए, किस्मत के खेल निराले हैं।

तारो ने पूछा, क्या मौजूदा परिस्थितियों के फलस्वरूप मैजिस्ट्रेट महोदय का काम बढ़ गया है ?"

"ठीक इससे उल्टी बात हुई है। जिन केसों को हम पहली बार के फ़ौजदारी केस कहते हैं वे दिन-ब-दिन दुर्लभ होते जा रहे हैं। दरअसल अब मेरा काम सिर्फ नयी धाराओं के गम्भीर उल्लंघन की जाँच करना रह गया है। हमारे साधारण क़ानूनों की कभी इतनी इज्ज़त नहीं की गई जितनी कि लोग आजकल कर रहे हैं।"

"क्योंकि आज के मुक़ाबले पहले क़ानून बहुत अच्छे मालूम होते हैं," तारो ने कहा।

मैजिस्ट्रेट ने, जो आसमान से नज़रें हटाने में असमर्थ दिखाई देता था, अचानक अपनी कोमल चिंतनशीलता छोड़कर तारो की तरफ़ घूरकर देखा।

"इससे क्या फ़र्क पड़ता है ? असली चीज क़ानून नहीं, बल्कि सज़ा है··· और यह एक ऐसी चीज़ है जिसे हम सबको कबूल करना चाहिए।"

जब मैजिस्ट्रेट कुछ दूर चला गया तो कोतार्द ने कहा, "यह आदमी पहले नम्बर का दुश्मन है।"

तारो ने स्टार्टर दबाया।

कुछ देर बाद रेम्बर्त और कोतार्द ने गार्सिया को आते देखा। यह दिखाए बग़ैर कि वह उन्हें जानता है, वह सीधा उनके पास आया और दुआ-सलाम करने की वजाय बोला, "तुम्हें कुछ इन्तज़ार करना पड़ेगा।"

उनके आसपास भीड़ में बिलकुल ख़ामोशी छाई थी। भीड़ में अधिकतर औरतें ही थीं। सबके हाथों में पुलिन्दे थे। वे इस निरर्थक उम्मीद से वहाँ आयी थीं कि किसी-न-किसी तरह वे यह सामान अपने बीमार रिश्तेदारों तक पहुँचा सकेंगी। सबसे ज्यादा ग़लतफ़हमी उन्हें इस बात की थी कि शायद उनके रिश्तेदार उनकी भेजी हुई चीज़ें खाएँगे। फाटक पर हथियारबन्द संतरियों का पहरा था और रह-रहकर फाटक और बारकों के बीच के सहन में पैशाचिक चीख़ों की आवाज़ सुनाई देती थी, जिसे सुनकर परेशान आँखें बीमारों के वार्डों की तरफ़ उठ जाती थीं।

तीनों जने खड़े इस दृश्य को देख रहे थे, कि पीछे से किसी ने तपाक से 'गुड मॉर्निंग' कहा। तीनों ने पीछे मुड़कर देखा। गरमी के बावजूद राम्रोल गहरे रंग का सूट पहने था, जिसकी काट बहुत शानदार थी। उसके सर पर फेल्ट हैट था, जिसका सिरा ऊपर की ओर मुड़ा था। वह लम्बा-तड़ंगा आदमी था। उसके चेहरे पर कुछ पीलापन था। अपने होंठ हिलाए बग़ैर ही उसने साफ़ आवाज़ में फ़ौरन कहा, "चलो, केन्द्र की तरफ़ पैदल चलें···और गार्सिया, तुम्हारे आने की कोई ज़रूरत नहीं।"

गार्सिया ने एक सिगरेट सुलगाया और वह वहीं रह गया। बाक़ी के लोग आगे चले गए। रेम्बर्त और कोतार्द के बीचों-बीच राम्रोल बहुत तेज़ चाल से चलने के लिए सबको प्रेरित कर रहा था।

"गार्सिया ने मुझे सारा मामला समझा दिया है। हम इसे तय कर सकते हैं। लेकिन मैं तुम्हें चेतावनी देना चाहता हूँ कि इसमें तुम्हारे पूरे दस हज़ार लग जाएँगे।"

रेम्बर्त ने कहा कि उसे ये शर्तें मंजूर हैं।

"कल घाटों के पास स्पेनिश रेस्तराँ में मेरे साथ लंच खाना।"

रेम्बर्त ने कहा, "ठीक है।" राम्रोल ने उसके साथ हाथ मिलाया। वह पहली बार मुस्करा रहा था। जब वह चला गया तो कोतार्द ने कहा कि वह कल लंच के वक्त नहीं आ सकेगा, क्योंकि उसे किसी से मिलना है। ख़ैर रेम्बर्त को अब उसकी मदद की ज़रूरत भी नहीं।

अगले दिन जब रेम्बर्त स्पेनिश रेस्तराँ में दाखिल हुआ तो सब लोग गरदन घुमाकर उसकी तरफ़ देखने लगे। ऐसा मालूम होता था कि उस अँधेरे तहखाने-जैसे कमरे में जो छोटी पीली सड़क से भी नीचा था, सिर्फ़ मर्द ही आते थे जिनमें अधिकांश स्पेनिश थे। उनकी शक्लों से तो यही ज़ाहिर होता था। राम्रोल कमरे के पीछे दीवार के पास की मेज़ के आगे बैठा था। जब राम्रोल ने पत्रकार को इशारे से बुलाया और रेम्बर्त उसकी तरफ़ जाने लगा तो सब लोगों के चेहरों पर से उत्सुकता ग़ायब हो गई और वे फिर अपनी तश्तरियों पर सर झुकाकर खाना खाने लगे। राम्रोल

की बग़ल में एक लम्बा, दुबला आदमी बैठा था जिसने हजामत ठीक से नहीं बनवाई थी। उसके कन्धे बेहद चौड़े थे, चेहरा घोड़े-जैसा था और सर के बाल झड़ने लगे थे। उसने कमीज़ की आस्तीनें ऊपर चढ़ा रखी थीं और उसकी लम्बी, काले बालों से भरी दुबली बाँहें नज़र आ रही थीं। जब रेम्बर्त का उससे परिचय कराया गया तो उसने तीन बार धीरे से सर हिलाया। राम्रोल ने उसका नाम नहीं बताया। वह 'हमारा दोस्त' कहकर उसके बारे में बात कर रहा था।

"हमारे दोस्त का ख़याल है कि वह तुम्हारी मदद कर सकता है। वह..." राम्रोल ने वाक्य अधूरा छोड़ दिया क्योंकि इसी वक्त वेट्रेस राम्रोल का ऑर्डर लेने आई थी। "वह तुम्हें हमारे दो दोस्तों से मिलाएगा, जो कुछ सन्तरियों तुम्हारा परिचय कराएँगे, जिन्हें हम लोगों ने राज़ी कर लिया है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि तुम फौरन जा सकोगे। इसका फ़ैसला सन्तरियों पर छोड़ना पड़ेगा। वे ही तय करेंगे कि कौनसा वक्त सबसे अच्छा रहेगा। सबसे आसान बात यह होगी कि तुम कुछ रातें उनमें से एक के घर बिताओ। उसका घर फाटक के बहुत नज़दीक है। सबसे पहले हमारा यह दोस्त तुम्हारा कुछ लोगों से परिचय कराएगा जिनकी हमें ज़रूरत है। फिर जब सब-कुछ ठीक हो जाएगा तो खर्च की बात तय कर लेना।

फिर 'दोस्त' ने, जो लगातार टमाटर और मसालेदार सलाद मुँह में डालता जा रहा था, धीरे से अपना घोड़े-जैसा मुँह ऊपर-नीचे हिलाया, उसके बाद उसने स्पेनिश लहजे में बोलना शुरू किया। उसने रेम्बर्त से कहा कि वह एक दिन छोड़कर अगले दिन कैथीड्रल के पोर्च में आठ बजे उसे मिले।

"दो दिन और इन्तज़ार करना पड़ेगा।" रेम्बर्त ने कहा।

"देखो, यह इतना आसान मामला नहीं है। वे छोकरे कुछ तहक़ीकात करेंगे।" राम्रोल ने कहा।

घोड़े के चेहरे वाले आदमी ने एक बार फिर समर्थन में सर हिलाया। बातचीत के लिए कोई विषय तलाश करने में कुछ देर लगी। यह समस्या बड़ी आसानी से हल हो गई, जब रेम्बर्त ने मालूम कर लिया कि घोड़े-जैसे

मुँह वाला फुटबॉल का जोशीला खिलाड़ी है। उसे भी फुटबाल एसोसिएशन में बड़ी दिलचस्पी थी। दोनों फ्रांसीसी चेम्पियनशिप, पेशेवर अंग्रेज खिलाड़ियों की टीमों के गुणों और बॉल फेंकने के तरीक़ों पर बातचीत करते रहे।

खाना खत्म होते-होते घोड़ा-मुँह खूब खुश नज़र आने लगा और उसने रेम्बर्त को 'अमाँ यार' कहना शुरू कर दिया। उसने रेम्बर्त को यह यकीन दिलाने की कोशिश की कि फुटबॉल के मैदान में खिलाड़ी के लिए सबसे अच्छी जगह सेंटर हॉफ़ की है। "अमाँ यार, देखो सेंटर हॉफ़ वाला ही दूसरे लोगों को दौड़ाता है। इस खेल का सारा आर्ट इसी में है, क्यों?" रेम्बर्त को यह बात माननी ही पड़ी हालाँकि वह ख़ुद हमेशा खेल में सेंटर फ़ॉर्वर्ड ही रहा था। बातचीत शान्तिपूर्वक चलती रही। फिर किसी ने रेडियो चला दिया। कुछ देर तक भावुक किस्म के गीत बजते रहे, फिर यह ख़बर सुनायी गई कि कल प्लेग से एक सौ सैंतीस मौतें हुई थीं। किसी के चेहरे पर लेश-मात्र भी भाव नहीं प्रकट हुआ। घोड़े-मुँह ने सिर्फ़ अपने कंधे सिकोड़े और वह उठ खड़ा हुआ राओल और रेम्बर्त भी उसकी देखा-देखी उठ खड़े हुए।

जब वे रेस्तराँ से बाहर निकल रहे थे तो सेंटर हॉफ़ ने ज़ोर से रेम्बर्त से हाथ मिलाकर कहा, "मेरा नाम गोन्ज़ेल्ज़ है।" रेम्बर्त को आगामी दो दिन अनन्तकाल के समान मालूम हुए। वह रियो से मिलने गया और उसने सभी ताज़ी ख़बरें उसे बताईं। वह डॉक्टर के साथ एक मरीज़ को भी देखने गया। उसने एक घर की दहलीज़ पर से ही डाक्टर से विदा ली जहाँ एक मरीज़, जिसके बारे में शक था कि उसे प्लेग हो गई है, खड़ा डॉक्टर का इन्तज़ार कर रहा था। हॉल में लोगों की आवाज़ें और क़दमों की आहटें सुनाई दे रही थीं, परिवार के लोगों को डॉक्टर के आने की चेतावनी दी जा रही थी।

"मेरा ख़याल है तारो वक्त पर आयेगा," रियो बुदबुदाया। वह थका-माँदा नज़र आ रहा था।

"क्या महामारी काबू से बाहर होती जा रही है?" रेम्बर्त ने पूछा।

रियो ने कहा कि ऐसी स्थिति नहीं थी, बल्कि मौतों की संख्या की रेखा की उठान पहले से कम गहरी होती जा रही है। सिर्फ उनके पास बीमारी से लड़ने के लिए पर्याप्त साधन नहीं हैं।

हमारे पास सामान की कमी है। दुनिया की सारी फ़ौजों में आम तौर पर सामान की कमी काम करने वालों की संख्या से पूरी हो जाती है, लेकिन हमारे पास लोगों की भी कमी है।

"क्या दूसरे शहरों से डॉक्टर और ट्रेन्ड असिस्टेन्ट नहीं भेजे गए ?"

"हाँ, दस डॉक्टर और सौ के करीब मददगार भेजे गए हैं। सुनने में यह संख्या बहुत बड़ी मालूम होती है, लेकिन मौजूदा हालत में मुश्किल से इन लोगों से काम चल रहा है और अगर हालत बिगड़ गई तो इतनी संख्या पर्याप्त नहीं होगी।" रियो ने कहा।

रेम्बर्त ने, जो घर के भीतर से आने वाली आवाज़ें सुन रहा था, एक दोस्ती-भरी मुस्कराहट के साथ डॉक्टर की तरफ़ देखा।

"हाँ तुम जल्द ही अपनी लड़ाई जीतने की कोशिश करो," फिर उसके चेहरे पर एक परछाईं आकर चली गई। उसने धीमे स्वर में कहा, "मैं यह बात इसलिए नहीं कह रहा क्योंकि मैं यहाँ से जा रहा हूँ।"

रियो ने जवाब दिया कि उसे यह अच्छी तरह मालूम है। लेकिन रेम्बर्त ने कहा। "मैं डरपोक हूँ, मैं ऐसा नहीं सोचता। कम-से-कम साधारण तौर पर तो डरपोक नहीं हूँ—मुझे इस बात को कसौटी पर कसने के कई मौक़े मिल चुके हैं। सिर्फ़ कुछ विचार ऐसे हैं जिन्हें मैं बरदाश्त नहीं कर सकता।

डॉक्टर ने उसकी आँखों में झाँककर कहा, "तुम इस लड़की से फिर मिलोगे ?"

"हो सकता है, लेकिन मैं यह सोचना बरदाश्त नहीं कर सकता कि यह स्थिति हमेशा इसी तरह ही जारी रहेगी और मेरी महबूबा की उम्र दिन-ब-दिन बढ़ती जाएगी। तीस बरस की उम्र में इन्सान का बुढ़ापा शुरू हो जाता है और उसे ज़िन्दगी में से भरसक खुशी पाने की कोशिश करनी पड़ती है···लेकिन मुझे यह शक है कि तुम्हारी समझ में शायद यह बात

नहीं आएगी।"

रियो जवाब में कह रहा था कि उसकी समझ में सब-कुछ आ रहा है। इतने में तारो वहाँ आ गया। वह बहुत उत्तेजित दिखाई दे रहा था।

"मैंने अभी पैनेलो को यहाँ आने के लिए कहा है।"

"फिर?"

"उसने थोड़ी देर सोचने के बाद 'हाँ' कर दी।"

"यह अच्छी बात है। मुझे यह जानकर ख़ुशी हुई कि वह अपने प्रवचन से बेहतर आदमी है।"

"अधिकांश लोग ऐसे ही होते हैं। सिर्फ़ उन्हें मौका देने का सवाल है।" तारो ने मुस्कराकर कहा और फिर रियो की तरफ़ देखकर आँख मारी, "यही तो ज़िन्दगी में मेरा काम है—लोगों को मौक़ा देना।"

"माफ़ कीजिए, मुझे जाना है," रेम्बर्त ने कहा।

गुरुवार को जब मुलाकात होनी तय हुई थी, आठ बजने से पाँच मिनट पहले रेम्बर्त केथीड्रल के पार्च में दाखिल हुआ। हवा अभी तक अपेक्षाकृत ठंडी थी। छोटे-छोटे रोएँदार बादल आसमान में इकट्ठे हो रहे थे, जिन्हें फ़ौरन ही सूरज एक ही बार में निगलने वाला था। हरी घास की लॉनों में से सीलन की भीनी गंध उठ रही थी, हालाँकि वे धूप से सूख गई थीं सूरज अभी पूर्व में बने मकानों से ढका हुआ था। इसलिए वह सिर्फ़ जोन ऑफ़ आर्क के बुत के कवच को ही गरम कर रहा था। केथीड्रल स्क्वेयर में धूप का एक ही टुकड़ा नज़र आ रहा था। जब घड़ी ने आठ बजाए तो रेम्बर्त खाली पोर्च में कुछ कदम आगे बढ़ा। भीतर से गाने की मद्धम आवाज़ें, सीली हवा और अगरबत्तियों की बासी गंध आ रही थी। फिर आवाज़ें रुक गईं। काले रंग की दस आकृतियाँ इमारत से बाहर निकलीं और तेज़ी से शहर के केन्द्र की तरफ़ बढ़ गईं। रेम्बर्त बेचैन हो उठा। कुछ और काली आकृतियाँ सीढ़ियों पर चढ़कर पोर्च में दाख़िल हुईं। रेम्बर्त एक सिगरेट सुलगाने ही वाला था कि सहसा उसके मन में यह ख़याल उठा कि शायद इस जगह सिगरेट पीना बुरा समझा जाता हो।

सवा आठ बजे केथीड्रल का ऑर्गन बहुत धीमी आवाज़ में बजने लगा।

पहले तो मद्धम रोशनी में उसे कुछ दिखाई न दिया, लेकिन अगले ही क्षण उसे उन लोगों की छोटी-छोटी काली आकृतियाँ नज़र आने लगीं जो उसके आगे-आगे गिरजे के बीच वाले हिस्से में जमा थे। वे सब एक अस्थायी रूप से बनाये गए चबूतरे के एक कोने में एक साथ बैठे थे। चबूतरे पर संत रोश की एक मूर्ति थी जिसे जल्दी में हमारे शहर के एक मूर्तिकार ने तैयार किया था। घुटनों के बल बैठे हुए वे लोग पहले से भी ज़्यादा छोटे नज़र आ रहे थे। वे जमे हुए अँधेरे के टुकड़े मालूम होते थे। लगता था कि वे भूरे धुएँ-भरे कुहासे में तैर रहे थे; उनकी आकृतियाँ भी उस कुहासे की तरह धुँधली थीं। उनके ऊपर ऑर्गन के अनगीनत भिन्न-भिन्न स्वर सुनाई दे रहे थे।

जब रेम्बर्त केथीड्रल से बाहर निकला तो उसने गोन्ज़ेल्ज़ को सीढ़ियों से उतरकर शहर की तरफ़ जाते देखा।

गोन्ज़ेल्ज़ ने कहा, "मेरा ख़याल था दोस्त, कि तुम यहाँ से चले गए हो, क्योंकि बहुत देर हो गई है।"

उसने बताया कि वह निश्चित स्थान पर अपने दोस्तों से मिलने गया था। वह स्थान बिलकुल पास ही था। आठ बजने में दस मिनट पर वह वहाँ पहुँचा था और बीस मिनट तक इन्तज़ार करने के बाद भी उसे कोई नहीं मिला।

"ज़रूर किसी वजह से वे रुक गए होंगे। हमारे बिज़नेस में बहुत क़िस्म की अड़चनें आती हैं यह तो तुम जानते ही हो।"

गोन्ज़ेल्ज़ ने कहा कि वह अगले दिन युद्ध-स्मारक के पास रेम्बर्त से मिलेगा। रेम्बर्त ने एक ठंडी साँस लेकर सर पर फिर से अपना हैट सरका लिया।

"अपने दिल को इतनी तक़लीफ़ मत दो," गोन्ज़ेल्ज़ ने हँसकर कहा, "ज़रा सोचो कि फ़ुटबॉल में एक गोल बनाने के लिए कितना दौड़ना पड़ता है और कितनी बार बॉल अपने साथियों की तरफ़ फेंकनी पड़ती है!"

"यह तो ठीक है, लेकिन फ़ुटबॉल का खेल तो डेढ़ ही घंटे में ख़त्म हो जाता है।"

ओरान में युद्ध-स्मारक ऐसी जगह पर बना है जहाँ से समुद्र दिखाई देता है। बन्दरगाह के सामने बनी चट्टानों तक एक सैर करने की सड़क बनी है। अगले दिन रेम्बर्त फिर वक्त से पहले ही निश्चित स्थान पर पहुँच गया और वक्त काटने के लिए उन लोगों के नामों की सूची पढ़ने लगा जिन्होंने देश की ख़ातिर अपने प्राणों का बलिदान दिया था। कुछ मिनट बाद दो आदमी वहाँ आये और रेम्बर्त पर सरसरी नज़र डालकर सैरगाह की मुँडेर पर कुहनियाँ टिकाकर सूने निर्जीव बन्दरगाह की तरफ़ ग़ौर से देखने लगे। दोनों ने नीले रंग की पतलूनों के ऊपर छोटी आस्तीनों वाले स्वेटर पहन रखे थे। दोनों का क़द भी करीब-करीब एक-जैसा था। पत्र-कार कुछ दूर हटकर पत्थर की एक बेंच पर बैठ गया और आराम से उन लोगों के हुलिये का निरीक्षण करने लगा। वे दोनों छोकरे थे, बीस बरस से ज़्यादा उनकी उम्र नहीं थी। उसी वक्त गोन्ज़ेल्ज़ उधर आता दिखाई दिया।

उसने देरी से आने के लिए माफ़ी माँगी और कहा, "यह हमारे दोस्त हैं।" फिर वह रेम्बर्त को दोनों छोकरों के पास ले गया और उसने बताया कि उनमें से एक का नाम मार्सेल और दूसरे का लुई है। उनकी शक्लें आपस में इतनी मिलती थीं कि रेम्बर्त को यक़ीन हो गया कि वे दोनों सगे भाई हैं।

"ठीक है, अब आप लोगों का परिचय हो गया है, आप काम-काज की बातें शुरू कर सकते हैं।" गोन्ज़ेल्ज़ ने कहा।

मार्सेल या लुई दोनों में से किसी एक ने कहा कि दो दिन बाद पहरे पर उनकी एक हफ्ते की ड्यूटी लगने वाली है। वे पहले यह देखेंगे कि कौन-सी रात इस काम के लिए सबसे ज़्यादा अच्छी रहेगी। मुसीबत यह थी कि पश्चिमी फाटक पर उन दोनों के अलावा दो संतरी और भी थे जो बाका-यदा फ़ौज के सिपाही थे। उन दोनों को इस मामले से दूर ही रखना पड़ेगा, उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता। इसके अलावा बेकार में ही खर्च बढ़ जाएगा। लेकिन कई बार ये संतरी नज़दीक के एक शराबखाने के पिछले कमरे में कई घण्टे गुज़ारते हैं। मार्सेल या लुई ने कहा कि रेम्बर्त के लिए

सबसे अच्छा तरीक़ा यही होगा कि वह उन लोगों के घर रहे जो कि फाटक से कुछ मिनट की दूरी पर ही है। जब रास्ता साफ़ होगा तो उनमें से एक आकर उसे ख़बर कर जाएगा। ऐसी हालत में रेम्बर्त के लिए 'भागना' काफ़ी आसान हो जाएगा। लेकिन वक्त बहुत कम है। सुना है कि फाटकों के बाहर दूर तक एक और संतरियों की चौकी बनने वाली है।

रेम्बर्त राज़ी हो गया और उसने अपनी बची हुई सिगरेटों में से कुछ सिगरेटें उन्हें पेश कीं। दोनों में से जो अभी तक ख़ामोश रहा था, उसने गोन्ज़ेल्ज़ से पूछा कि इस काम के लिए रकम तय हो चुकी है या नहीं, कुछ पेशगी भी मिलेगा या नहीं?

"नहीं," गोन्ज़ेल्ज़ ने कहा, "तुम्हें इस बात की चिन्ता करने की कोई ज़रूरत नहीं। यह मेरा दोस्त है, जाने के वक्त रकम अदा कर देगा।"

यह तय हुआ कि वे लोग फिर मिलेंगे। गोन्ज़ेल्ज़ ने कहा कि वे लोग परसों रात स्पेनिश रेस्तराँ में उसके साथ खाना खाएँ। वह जगह उन नौजवानों के घर के बहुत करीब थी जहाँ से वे पैदल भी वहाँ पहुँच सकते थे। गोन्ज़ेल्ज़ ने कहा, "दोस्त, पहली रात मैं तुम्हारा साथ दूँगा।"

अगले दिन जब रेम्बर्त अपने सोने के कमरे में जा रहा था तो होटल की सीढ़ियों पर उसकी मुलाकात तारो से हुई जो नीचे आ रहा था।

"मेरे साथ आओगे? मैं रियो से मिलने जा रहा हूँ।" तारो ने कहा। रेम्बर्त ने हिचकिचाहट ज़ाहिर की और कहा, "मुझे हमेशा ऐसा लगता है कि मैं उसके काम में दख़ल दे रहा हूँ।"

"इस बात की चिन्ता करने की कोई ज़रूरत नहीं। वह तुम्हारे बारे में बहुत सी बातें करता है।"

पत्रकार ने कुछ देर तक सोचने के बाद कहा, "देखो, अगर डिनर के बाद तुम्हारे पास कुछ वक्त ख़ाली हो तो क्यों न तुम और रियो आकर मेरे साथ शराब पियो? अगर देर भी हो जाए तो भी कोई परवाह नहीं।"

"यह तो रियो पर, और प्लेग पर ही निर्भर करेगा।" तारो का स्वर संदिग्ध था।

ख़ैर, रात के ग्यारह बजे रियो और तारो होटल के छोटे और तंग

शराबखाने में दाखिल हुए। वहाँ करीब तीस लोग जमा थे और सब-के-सब ऊँची आवाज़ में पूरी ताकत से बोल रहे थे। प्लेग से घिरे हुए शहर की खामोशी से रेस्तराँ में आने वाले ग्राहक अचानक इतना शोर सुनकर चौंक उठे और दहलीज़ में ही रुक गए। जब उन्होंने देखा कि अभी भी होटल में शराब मिलती है तो वे फ़ौरन इस शोर का कारण समझ गए। रेम्बर्त ने, जो एक कोने में रखे स्टूल पर बैठा था, उन्हें इशारे से बुलाया। बिना उत्तेजना दिखाए उसने एक शोर मचाने वाले को अपनी कोहनी से धकेलकर अपने दोस्तों के लिए जगह खाली की। "आप लोगों को एतराज़ तो नहीं होगा अगर शराब तेज़ हो ?"

"नहीं, बल्कि हमें खुशी होगी," तारो ने कहा।

जब रेम्बर्त ने रियो के हाथ में शराब का पेग दिया तो रियो ने शराब में मिली कड़वी चीज़ों को सूँघा। उस शोर-शराबे में अपनी आवाज़ दूसरों तक पहुँचाना बहुत मुश्किल था, लेकिन रेम्बर्त शराब में ज़्यादा दिलचस्पी दिखा रहा था। डॉक्टर यह तय नहीं कर पा रहा था कि उस पर शराब का नशा चढ़ा है या नहीं। शराब के काउण्टर के आसपास की अर्द्धचन्द्र के आकार की सारी जगह घिरी हुई थी। बीच की जगह एक नौसेना के अफ़सर ने घेर ली थी, जिसके आसपास दो लड़कियाँ बैठी थीं। अफ़सर एक मोटे लाल चेहरे वाले आदमी को काहिरा की टाईफ़स महामारी के बारे में बता रहा था, "वहाँ मिस्त्री लोगों के लिए कैम्प बने हुए थे। बीमारों को तम्बुओं में रखा जाता था। उनके चारों तरफ़ संतरियों का पहरा रहता था। अगर मरीज़ के परिवार का कोई आदमी चोरी से अहमक़ाना देसी दवाई भीतर भेजने की कोशिश करता था तो उसे देखते ही सन्तरी गोली चला देते। सख्ती तो थी लेकिन उन परिस्थितियों में सिर्फ़ यही किया जा सकता था। दूसरी मेज़ पर, जिसके गिर्द ज़िन्दादिल नौजवान लोग जमा थे, उनकी बातें सुनाई नहीं दे रही थीं, क्योंकि ऐन उनके सर के ऊपर एक लाउड स्पीकर कर्कश स्वर में 'सेंट जेम्ज़ अस्पताल' रिकार्ड सुना रहा था।

"कहो कुछ कामयाबी मिली ?"

रियो को अपनी आवाज़ ऊँची करनी पड़ी।

"कोशिश जारी है।" रेम्बर्त ने जवाब दिया, "शायद एक हफ़्ते में कुछ बात बने।"

"कितने अफ़सोस की बात है!" तारो ज़ोर से बोला।

"क्यों?"

रियो ने बताया, "ओह! तारो ने यह बात इसलिए कही है क्योंकि उसका ख़याल है कि यहाँ रहकर तुम हमारे लिए मददगार साबित हो सकते हो। लेकिन मैं तुम्हारी यहाँ से जाने की भावना को अच्छी तरह समझ सकता हूँ।"

तारो ने शराब के अगले दौर के दाम चुकाए।

रेम्बर्त अपने स्टूल से उठकर खड़ा हो गया और उसने पहली बार तारो से नजरें मिलाकर पूछा, "भला मैं यहाँ रहकर आप लोगों की क्या मदद कर सकता हूँ?"

"वाह, यह भी कहने की बात है? तुम हमारी सफ़ाई की टुकड़ियों में से किसी एक टुकड़ी में काम कर सकते हो।"

रेम्बर्त के चेहरे पर फिर चिन्ता और ज़िद्दीपन का भाव आ गया जो अक्सर दिखाई देता था। वह फिर अपने स्टूल पर चढ़कर बैठ गया।

"तुम्हारा क्या ख़याल है? क्या ये टुकड़ियाँ अच्छा काम नहीं कर रहीं?" तारो ने पूछा। उसने अपने गिलास में से अभी शराब का एक घूँट पिया था और वह रेम्बर्त की तरफ़ घूर रहा था।

"मुझे यक़ीन है कि वे अच्छा काम कर रही हैं।" रेम्बर्त ने जवाब दिया और वह अपने ग्लास की पूरी शराब पी गया।

रियो ने देखा कि रेम्बर्त का हाथ काँप रहा है। उसे यकीन हो गया कि रेम्बर्त की शराबख़ोरी बहुत बढ़ चुकी है।

अगले दिन जब रेम्बर्त दूसरी बार स्पेनिश रेस्तराँ में दाखिल हुआ तो उसे लोगों की भीड़ में से गुज़रना पड़ा। लोग अपनी कुरसियाँ उठाकर बाहर सड़क के किनारे आ गए थे और शाम की हरी सुनहरी रोशनी में ठंडी हवा के पहले झोंकों का मज़ा ले रहे थे। उनके तम्बाकू में से कड़वी गंध आ रही थी। रेस्तराँ करीब-करीब खाली था। रेम्बर्त पीछे वाले हिस्से

की मेज़ पर चला गया जहाँ उनकी पहली मुलाकात के रोज़ गोन्जेल्ज़ बैठा था। उसने वेट्रेस से कहा कि वह कुछ देर इन्तज़ार करने के बाद ऑर्डर देगा। साढ़े सात बजे थे।

दो-दो, तीन-तीन करके लोग भीतर आने लगे और मेज़ों के इर्द-गिर्द बैठ गए। वेट्रेसों ने खाने-पीने की चीज़ें परसनी शुरू कीं और तहखाने-जैसे कमरे में छुरी-काँटों की आवाज़ें और बातचीत की भनभनाहट गूँज उठीं। आठ बज गए। रेम्बर्त अभी तक इन्तज़ार कर रहा था। रेस्तराँ की बत्तियाँ जला दी गईं। उसकी मेज़ के पास आकर नये लोग बैठ गए। उसने खाने का ऑर्डर दिया। साढ़े आठ बजे उसने खाना खत्म किया। अभी तक गोन्ज़ेल्ज़ और दोनों नौजवानों में से कोई भी दिखाई नहीं दिया था। धीरे-धीरे रेस्तराँ खाली हो रहा था और बाहर तेज़ी से रात का अँधेरा फैल रहा था। दरवाज़े पर टँगे परदे समुद्र से आने वाली गरम हवा से हिल रहे थे। नौ बजे रेम्बर्त को एहसास हुआ कि रेस्तराँ बिलकुल खाली हो गया था और वेट्रेस जिज्ञासा की दृष्टि से उसे देख रही थी। उसने बिल चुकाया और बाहर चला आया। सड़क के सामने का कॉफ़ी-हाउस खुला देखकर वह भीतर चला गया और ऐसी जगह पर बैठ गया जहाँ से वह रेस्तराँ के दरवाज़े पर नज़र रख सकता था। साढ़े नौ बजे वह धीमे कदमों से अपने होटल में लौट आया। वह इस परेशानी में था कि गोन्ज़ेल्ज़ को तलाश करने का कोई तरीका खोजना चाहिए। उसे गोन्जेल्ज़ का पता भी मालूम नहीं था। उसने सोचा, हो सकता है कि फिर नये सिरे से यह सर-दर्द वाला मामला शुरू करना पड़े। इस आशंका से ही वह निरुत्साह हो गया।

इसी क्षण जब वह अँधेरी सड़कों में चल रहा था, जहाँ तेज़ी से एम्बुलेन्स गाड़ियाँ गुज़र रही थीं, अचानक उसे लगा कि इस बीच वह उस औरत को भूल ही गया था जिसे वह प्यार करता था। उसने बाद में डॉक्टर रियो को भी यह बात बताई। वह उन दीवारों में से निकलने की कोई दरार तलाश करने में इतना तल्लीन हो गया था—जिन्होंने उसे अपनी प्रियतमा से जुदा कर दिया था। लेकिन इसी वक्त जब मुक्ति के सारे रास्ते बन्द हो गए थे,

अपनी प्रियतमा को पाने की कामना उसके मन में अचानक इतनी तीव्र और प्रचण्ड हो उठी कि उसने इस दाहक यंत्रणा से बचने के लिए, जो दावानल की तरह उसके ख़ून में फैल रही थी, होटल की तरफ़ भागना शुरू कर दिया।

अगले दिन तड़के ही वह रियो के यहाँ गया और उससे कोतार्द का पता पूछा।

"मैं अब सिर्फ़ यही कर सकता हूँ कि इस मामले का फिर नये सिलसिले से शुरू करूँ।"

"कल रात यहाँ आना। तारो ने मुझसे कोतार्द को भी यहाँ निमंत्रित करने के लिए कहा था—न जाने क्यों। वह दस बजे यहाँ आयेगा। तुम साढ़े दस बजे पहुँच जाना।" रियो ने कहा।

जब कोतार्द अगले दिन डॉक्टर के यहाँ पहुँचा तो तारो और रियो एक मरीज़ के बारे में बहस कर रहे थे, जिसके स्वस्थ होने की कोई उम्मीद नहीं थी, इसके बावजूद वह अच्छा हो गया था।

"दस में से सिर्फ एक चान्स उसके बचने का था। वह बड़ा खुशक़िस्मत निकला।" तारो ने कहा।

"छोड़ो भी! हो सकता है उसे प्लेग न हुई हो।" कोतार्द ने कहा।

दोनों जनों ने उसे यक़ीन दिलाया कि उस मरीज़ को प्लेग ही थी।

"यह नामुमकिन है क्योंकि मरीज़ अच्छा हो गया है। सभी जानते हैं कि जब किसी को प्लेग हो जाती है तो जीने का चान्स ख़त्म हो जाता है।"

"आम तौर पर तो यह ठीक है, लेकिन अगर तुम हार मानने के लिए तैयार नहीं तो तुम्हारे लिए मेरे पास कुछ खुशख़बरियाँ हैं।"

कोतार्द हँसने लगा।

"खैर बहुत कम होंगी। आज शाम तुमने मौतों के आँकड़े देखे?"

तारो ने, जो कोतार्द की तरफ़ दोस्ती-भरी निगाहों से देख रहा था, कहा कि उसे ये नवीनतम आँकड़े मालूम हैं और वह यह भी जानता है कि स्थिति बहुत गम्भीर है। लेकिन इससे क्या साबित होता है? सिर्फ यही कि अधिकारियों को इससे भी ज़्यादा सख्त क़दम उठाने चाहिएँ।

"कैसे? जितनी सख्ती आजकल है उससे ज़्यादा सख्त क़दम और नहीं

उठाए जा सकते।"

"नहीं। लेकिन शहर के हर आदमी को अपने पर सख्ती करनी चाहिए।"

कोतार्द परेशानी से उसकी तरफ देखने लगा। तारो कहता गया कि शहर में आलसी और निकम्मे लोगों की तादाद बहुत ज़्यादा है। प्लेग से सबका सरोकार है और हर आदमी को अपना फर्ज़ पूरा करना चाहिए। मिसाल के लिए हर तन्दुरुस्त आदमी सफाई की टुकड़ियों में आने के लिए आमंत्रित है।

"विचार तो बहुत अच्छा है।" कोतार्द मुस्कराया, "लेकिन इससे कोई फ़ायदा नहीं निकलेगा प्लेग ने तुम लोगों पर काबू पा लिया है और तुम कुछ भी नहीं कर सकते।"

"हम देखेंगे यह बात सही है, यह नहीं," तारो ने अपनी आवाज़ को कोशिश करके संयत बनाया, "जब हम सभी तरीके अपना चुकेंगे तब नतीजा पता चलेगा।"

इस बीच रियो अपने डेस्क के आगे बैठकर रिपोर्टों की नकल कर रहा था। तारो अभी भी नाटे व्यापारी की तरफ देख रहा था जो बेचैनी से अपनी कुरसी में हिल-डुल रहा था।

"सुनिए मोशिये कोतार्द, आप हम लोगों का साथ क्यों नहीं देते?"

अपना गोल ऊनी हैट उठाकर कोतार्द कुरसी से खड़ा हो गया। उसके चेहरे से लगता था कि उसकी भावनाओं को ठेस पहुँची है।

उसने कहा, "यह मेरा काम नहीं है।" फिर उसने रोब से कहा, "सबसे बड़ी बात यह है कि प्लेग से मुझे फ़ायदा-ही-फ़ायदा है, इसलिए मुझे कोई वजह नज़र नहीं आती जिसके लिए मैं प्लेग को खत्म करने की कोशिश करूँ।"

तारो ने अपने माथे पर मुक्का मारा। लगता था जैसे उसे कोई नयी बात अचानक सूझी थी।

"अरे हाँ मैं भूल ही गया था। अगर तुम्हारी दोस्त प्लेग तुम्हारी मदद न करती तो तुम कभी के गिरफ़्तार हो जाते।"

कोतार्द चौंक पड़ा और उसने कसकर कुरसी की पीठ को पकड़ लिया। मालूम होता था कि वह नीचे गिरने वाला था। रियो ने लिखना बंद कर दिया और संजीदगी से कोतार्द को देखने लगा।

"तुम्हें यह किसने बताया ?" कोतार्द चीख़ उठा।

"वाह ! तुम्हीं ने तो बताया था।" तारो के चेहरे पर हैरानी का भाव था। "कम-से-कम तुम्हारी बातों से तो मैंने और डॉक्टर ने यही नतीजा निकाला है।"

अपना सारा संयम खोकर कोतार्द क़समें खाने लगा।

"तैश में मत आओ," तारो ने नरमी से कहा, "न डॉक्टर और न मैं पुलिस को तुम्हारी ख़बर पहुँचाने की बात सोच सकते हैं। तुमने कुछ भी किया हो उससे हमें कोई सरोकार नहीं। ख़ैर, जो भी हो, हमें पुलिस से कभी कोई काम नहीं पड़ा। छोड़ो भी, बैठ जाओ !"

कोतार्द ने कुरसी की तरफ़ देखा और फिर हिचकिचाता हुआ कुरसी पर बैठ गया। उसने एक गहरी साँस ली।

"यह मुद्दत पहले की बात है," उसने कहना शुरू किया, "न जाने कैसे उन लोगों ने गड़े मुर्दे उखाड़े हैं। मेरा ख़याल था कि लोग यह बात भूल गए हैं। लेकिन किसी ने बकवास शुरू कर दी।

उस आदमी को उड़ा देना चाहिए। पुलिस ने मुझे बुलवाया और कहा कि जब तक मामले की जाँच पूरी न हो मैं कहीं न जाऊँ। मुझे यकीन हो गया है कि अन्त में वे मुझे ज़रूर गिरफ़्तार कर लेंगे।

"क्या कोई गम्भीर मामला था ?" तारो ने पूछा।

"यह तो इस बात पर निर्भर करता है कि आप 'गम्भीर' शब्द का क्या अर्थ समझते हैं। जो भी हो, मैंने किसी का क़त्ल नहीं किया था।"

"क़ैद हो सकती है या आजीवन कारावास ?"

कोतार्द की बुरी हालत हो रही थी। "अगर मेरी क़िस्मत होगी तो सिर्फ़ क़ैद मिलेगी।" लेकिन क्षण-भर के बाद वह फिर उत्तेजित हो उठा। "मुझसे ग़लती हो गई थी। सब लोग ग़लतियाँ करते हैं। यह सच है या नहीं ? सिर्फ़ इसी वजह से मुझे सज़ा दी जाए, अपने घर, परिचितों,

रिश्तेदारों से अलहदा कर दिया जाए, मुझे अपने रहन-सहन की आदतों को छोड़ना पड़े, मैं यह बरदाश्त नहीं कर सकता।"

तारो ने पूछा, "तो क्या इसीलिए तुम्हारे दिमाग़ में अपने को फाँसी देने का शानदार ख़याल पैदा हुआ था ?"

"हाँ, मैं मानता हूँ, यह एक अहमक़ाना ख़याल था।"

पहली बार रियो बोला। उसने कोतार्द से कहा कि वह उसकी परेशानी को अच्छी तरह समझता है, लेकिन हो सकता है आख़िर में सारा मामला सुलझ जाए।

"ओह, फ़िलहाल तो मुझे कोई डर नहीं है।"

तारो ने कहा, "देखता हूँ कि तुम हमारी कोशिशों में शामिल नहीं होओगे।"

बेचैनी से अपने हैट को मरोड़ते हुए कोतार्द चालाक नज़रों से तारो की तरफ़ देखने लगा।

"मुझे उम्मीद है कि आप मेरे ख़िलाफ़ मन में कोई शिकवा नहीं रखेंगे मोसियो तारो…"

"हरगिज़ नहीं!" तारो मुस्कराया, "कम-से-कम जान-बूझकर तो प्लेग के कीटाणुओं की तादाद बढ़ाने की कोशिश मत करो।"

कोतार्द ने प्रतिवाद करते हुए कहा कि वह कभी नहीं चाहता था कि प्लेग फैले। प्लेग का फैलना एक संयोग है और अगर प्लेग की वजह से इन दिनों उसे सुविधा हो गई है तो इसमें उसका कोई क़सूर नहीं है। इसके बाद उसमें फिर साहस पैदा हो गया और जब रेम्बर्त कमरे में दाख़िल हुआ तो कोतार्द धमकी-भरे स्वर में चिल्ला रहा था।

"इसके अलावा मुझे पक्का यक़ीन है कि तुम्हारी कोशिशों से कोई फ़ायदा नहीं निकलेगा।"

जब रेम्बर्त को यह पता चला कि कोतार्द को गोन्ज़ेल्ज़ के घर का पता नहीं मालूम था तो उसे बहुत निराशा हुई। उसने सुझाव दिया कि वे एक बार फिर छोटे कॉफ़ी-हाउस में जाएँ। उन्होंने फ़ैसला किया कि वे कल फिर मिलेंगे। जब रियो ने रेम्बर्त से कहा कि वह रियो को बराबर यह

सूचित करता रहे कि उसे अपनी योजना में सफलता मिली है या नहीं, तो रेम्बर्त ने कहा कि रियो और तारो हफ्ते के आखिर में फिर किसी रात उससे मिलने आएँ—चाहे कितनी देर हो जाए, वह अपने कमरे में ही मौजूद रहेगा।

अगले दिन सुबह कोतार्द और रेम्बर्त कॉफ़ी-हाउस में गये और गार्सिया के लिए सन्देश छोड़ आए कि वह अगर हो सके तो उसी शाम को वरना अगले दिन उनसे आकर मिले। वे सारी शाम गार्सिया का इन्तज़ार करते रहे। अगले दिन गार्सिया आया। उसने खामोशी से रेम्बर्त की सारी बातें सुनीं, फिर उसे बताया कि उसे कुछ मालूम नहीं कि इस बीच क्या हुआ है। लेकिन वह जानता है कि इस बीच शहर के कई हिस्सों का चौबीस घण्टों तक आपस में सम्पर्क टूट गया था, क्योंकि हर घर का मुआइना हो रहा था। हो सकता है गोन्ज़ेल्ज़ और दोनों छोकरे पुलिस के घेरे को तोड़कर न निकल सके हों। वह सिर्फ इतना ही कर सकता है कि एक बार फिर राऔल से उसका सम्पर्क करा दे। साफ़ ज़ाहिर है कि यह परसों तक ही हो सकेगा।

"मैं समझ गया—मुझे नये सिरे से सारा मामला शुरू करना पड़ेगा।" रेम्बर्त ने कहा।

एक दिन बाद रेम्बर्त राऔल से सड़क के कोने पर मिला और उसने गार्सिया के अनुमान का समर्थन किया। सचमुच शहर की निचली बस्तियों का शहर से सम्पर्क टूट गया था और उनके गिर्द घेरा डाल दिया गया था। अब समस्या थी कि गोन्ज़ेल्ज़ के साथ कैसे मिला जाए। दो दिन बाद रेम्बर्त और फुटबॉल के खिलाड़ी ने एक साथ दोपहर का खाना खाया।

गोन्ज़ेल्ज़ ने कहा, "यह बड़ी अहमक़ाना बात है। तुम दोनों को आपस में मिलने का कोई तरीक़ा ज़रूर निकालना चाहिए था।"

रेम्बर्त ने पूरे दिल से इस बात का समर्थन किया।

गोन्ज़ेल्ज़ ने कहा, "कल सुबह हम फिर उन छोकरों से मिलेंगे और मामले को आगे चलाने की कोशिश करेंगे।"

लेकिन जब वे अगले दिन वहाँ गये तो छोकरे घर पर नहीं थे। वे एक

पुर्ज़ा छोड़ गए थे जिस पर लिखा था कि वे दोपहर को हाई स्कूल के बाहर मिलेंगे। जब रेम्बर्त अपने होटल में लौटा तो तारो उसके चेहरे का भाव देखकर चौंक उठा।

"तुम्हारी तबीयत ख़राब है?"

"नये सिरे से मुझे काम शुरू करना पड़ेगा, इसलिए मेरा मूड खराब हो गया है।" फिर उसने कहा, "तुम रात को आ रहे हो न?"

जब दोनों दोस्त रात को रेम्बर्त के कमरे में दाखिल हुए तो उन्होंने रेम्बर्त को बिस्तर पर लेटा हुआ पाया। वह फ़ौरन उठ खड़ा हुआ और उसने गिलासों में शराब डाली। गिलास पहले से ही तैयार रखे थे। गिलास होंठों से लगाने से पहले रियो ने उससे पूछा कि उसे अपने काम में कामयाबी मिल रही है या नहीं। पत्रकार ने जवाब दिया कि उसे फिर उसी दौर में से गुज़रना पड़ रहा है और मामला वहीं है जहाँ पहले था। एक या दो रोज़ में वह उन लोगों से आखिरी बार मिलेगा। फिर उसने शराब का एक घूंट पीकर निराश स्वर में कहा, "कहने की ज़रूरत नहीं, वे लोग इस बार भी नियत स्थान पर नहीं पहुँचेंगे।"

"छोड़ो भी! उन्होंने पिछली बार तुमसे धोखा किया था, इसका यह मतलब नहीं कि वे इस बार भी ऐसा ही करेंगे।"

"अच्छा तो तुम अभी तक नहीं समझ सके," रेम्बर्त ने हिक़ारत के साथ अपने कंधे सिकोड़कर कहा।

"किस बात को नहीं समझ सके?"

"प्लेग को।"

"आह!" रियो बोला।

"नहीं तुम नहीं समझ सके—इसका मतलब साफ है—बार-बार वही बात होती रहेगी।"

वह कमरे के कोने में गया और उसने एक छोटा-सा ग्रामोफ़ोन चला दिया।

"यह कौनसा रिकॉर्ड है? मैंने इसे पहले भी सुना है।"

"यह 'संत जेम्ज़ का हस्पताल' है।"

इसी वक्त दूर कहीं दो गोलियाँ सुनाई दीं।

"कोई कुत्ता या भगोड़ा होगा।" तारो ने कहा।

कुछ क्षणों के बाद जब रिकॉर्ड खत्म हो गया तो खिड़की के पास से किसी एम्बुलेन्स की घंटी सुनाई दी जो रात की खामोशी में खो गई।

"बड़ा बोर करने वाला रिकॉर्ड है।" रेम्बर्त ने टिप्पणी की, "आज शायद दसवीं बार मैंने इसे बजाया है।"

"क्या सचमुच तुम्हें यह रिकॉर्ड इतना अच्छा लगता है?"

"नहीं। मेरे पास सिर्फ़ यही एक रिकॉर्ड है।" एक क्षण बाद उसने कहा, "मैंने यही कहा था—बार-बार एक ही चीज़ करनी पड़ती है।"

उसने रियो से पूछा कि सफाई की टुकड़ियों का काम कैसा चल रहा है? इस वक्त पाँच टुकड़ियाँ काम कर रही थीं और उम्मीद थी कि कुछ नयी टुकड़ियाँ भी बनाई जाएँगी। लगता था कि पत्रकार बिस्तर पर बैठकर अपने हाथों के नाखूनों को ग़ौर से देख रहा था। रियो उसकी बलिष्ठ, झुकी हुई पालथी मारकर बैठी आकृति की तरफ़ देखने लगा। सहसा उसे एहसास हुआ कि रेम्बर्त भी उसकी तरफ़ देख रहा है।

"जानते हो डॉक्टर, मैंने तुम्हारे इस आन्दोलन पर काफ़ी सोच-विचार किया है। अगर मैं तुम्हारा साथ नहीं दे रहा तो उसके कई कारण हैं।··· नहीं, यह बात नहीं कि मैं अपनी जान जोखिम में डालने में डरता हूँ। मैंने स्पेन के गृह-युद्ध में हिस्सा लिया था।"

"तुम किस पक्ष के साथ थे?"

"हारने वालों के साथ। लेकिन उसके बाद से मैंने बहुत-कुछ सोचा है।"

"किस बारे में?"

"साहस के बारे में। मैं जानता हूँ कि इन्सान अनेक महान् काम कर सकता है, लेकिन अगर वह महान् भावनाओं को महसूस करने में असमर्थ है तो उसे देखकर मैं सर्द हो जाता हूँ।"

"हमारा तो ख़याल था कि इन्सान सब-कुछ कर सकता है।" तारो ने कहा।

"मैं इस बात से सहमत नहीं हो सकता। न इन्सान में बहुत ज़्यादा

देर तक दुख सहने की सामर्थ्य है, न सुख सहने की। इसका मतलब है कि उसमें असली चीज़ों की सामर्थ्य नहीं। उसने बारी-बारी से दोनों जनों को देखा और पूछा, "बताओ तारो, क्या तुम किसी की मुहब्बत में अपनी जान दे सकते हो ?"

"कह नहीं सकता, लेकिन मेरा ख़याल है कि मैं ऐसा नहीं कर सकता—इस हालत में तो बिलकुल नहीं कर सकता।"

"देखा! लेकिन तुम किसी विचार के लिए अपनी जान देने की सामर्थ्य रखते हो। यह बात फौरन नज़र आ जाती है। खैर, जहाँ तक मेरा ताल्लुक है मैंने बहुत से लोगों को देखा है जो किसी विचार के लिए अपनी जान देते हैं। मैं हीरो बनने में विश्वास नहीं करता। मैं जानता हूँ कि यह आसान है और मैंने सीख लिया है कि यह हत्याकारक बन सकता है। मुझे इस बात में दिलचस्पी है कि आदमी जिस चीज़ से प्यार करे उसी के लिए जिए और मर जाए।"

रियो बड़े ग़ौर से पत्रकार को देख रहा था। उसकी नज़रें अभी भी रेम्बर्त पर थीं। उसने धीमे स्वर में कहा, "रेम्बर्त, इन्सान एक विचार नहीं है।"

रेम्बर्त उछलकर बिस्तर से खड़ा हो गया। उसका चेहरा भावावेश से तमतमा उठा।

"इन्सान एक विचार है और वह बहुत क्षुद्र विचार बन जाता है जबकि वह प्यार से पीठ मोड़ लेता है। और यही मेरे कहने का असली मतलब है, हम—इन्सान प्यार करने की सामर्थ्य खो बैठे हैं। हमें इस हक़ीकत का सामना करना चाहिए, डॉक्टर! आइए हम वह सामर्थ्य प्राप्त करने के लिए प्रतीक्षा करें और अगर हम उस सामर्थ्य को प्राप्त नहीं कर सकते तो हम उस मुक्ति की प्रतीक्षा कर सकते हैं जो हममें से हरेक को प्राप्त होगी। उसे हीरो बनने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। जहाँ तक मेरा ताल्लुक है मैं इससे अधिक कामना नहीं करता।"

रियो उठ खड़ा हुआ। अचानक वह बेहद थका हुआ दिखाई देने लगा।

"तुम ठीक कहते हो रेम्बर्त, बिलकुल ठीक कहते हो। तुम जो भी करने

जा रहे हो, मैं हरगिज़ तुम्हें उससे विमुख करने की कोशिश नहीं करूँगा। मुझे यह बात बिलकुल सही और उचित मालूम होती है। लेकिन मैं तुम्हें एक बात ज़रूर बताना चाहूँगा। इन सब बातों में बहादुरी का कोई सवाल नहीं। यह साधारण सौजन्य का सवाल है। यह एक ऐसा विचार है जिसे सोचकर शायद कुछ लोग मुस्करा उठें, लेकिन प्लेग से लड़ने का एकमात्र तरीका है—साधारण सौजन्य।"

"साधारण सौजन्य से तुम्हारा क्या अभिप्राय है?" रेम्बर्त ने संजीदा ढंग से पूछा।

"और लोग इसका क्या मतलब समझते हैं यह तो मैं नहीं जानता, लेकिन जहाँ तक मेरा ताल्लुक है, मैं जानता हूँ कि सज्जनता का अर्थ है कि मैं अपना फर्ज़ अदा करूँ।"

"तुम्हारा फर्ज़! काश मैं भी निश्चय कर पाता कि मेरा फर्ज़ क्या है।" रेम्बर्त की आवाज़ में काटने वाला तीखापन था, "हो सकता है कि मैं ग़लती से प्यार को प्रधानता दे रहा होऊँ।"

रियो ने उससे नज़रें मिलाकर ज़ोरदार ढंग से कहा, "नहीं, तुम ग़लती पर नहीं हो।"

रेम्बर्त ने ध्यान से कुछ सोचते हुए दोनों की तरफ़ देखा और कहा, "मेरा ख़याल है कि इस सारी स्थिति में तुम्हें किसी चीज़ के खोने का डर नहीं है। इस तरह फ़रिश्तों की तरफ़दारी करना ज़रा आसान रहता है।"

रियो ने अपना गिलास ख़ाली कर दिया और तारो से कहा, "चलो चलें! हमें काम करना है।" वह बाहर चला गया।

तारो भी उसके पीछे-पीछे गया, लेकिन दरवाज़े के नज़दीक पहुँचकर उसने अपना निश्चय बदल दिया। वह रुककर पत्रकार को देखने लगा।

"शायद तुम्हें नहीं मालूम कि रियो की बीवी यहाँ से क़रीब सौ मील दूर एक सेनेटोरियम में है।" उसने रेम्बर्त से कहा।

रेम्बर्त ने आश्चर्य प्रकट किया और उसके कुछ कहने से पहले ही तारो कमरे से बाहर जा चुका था।

अगले दिन तड़के ही रेम्बर्त ने डॉक्टर को फ़ोन किया, "जब तक मैं शहर से निकलने का कोई तरीक़ा नहीं निकाल सकता, क्या तब तक तुम मुझे अपने साथ काम करने दोगे ?"

कुछ देर की खामोशी के बाद जवाब सुनाई दिया, "ज़रूर, रेम्बर्त ! धन्यवाद !"

तीसरा भाग

१

इस तरह हर हफ्ते प्लेग के क़ैदी भरसक संघर्ष करते रहे। कुछ तो रेम्बर्त की तरह यह कल्पना भी करने लगे कि वे अभी तक आज़ाद हैं और वे मन-पसन्द बातें कर सकते हैं। लेकिन दरअसल यह कहना ज़्यादा सही होता कि इस वक्त तक जब अगस्त का आधा महीना गुज़र चुका था, प्लेग ने हर चीज़ और हर आदमी को निगल लिया था। अब किसी व्यक्ति की अलग क़िस्मत नहीं थी—सबकी एक ही क़िस्मत थी, जो प्लेग से और सबकी साँझी भावनाओं से बनी थी। सबसे शक्तिशाली भावना निर्वासन और वंचना की थी जिससे विद्रोह और भय की तरंगें भी पैदा हो गई थीं। इसी-लिए कथाकार के विचार में यह क्षण, जिसमें गरमी और बीमारी अपनी परा-काष्ठा पर पहुँच चुकी थी, ज़िन्दा लोगों की ज़्यादतियों, लाशों के दफ़न और विरही प्रेमियों का चित्रण करने के लिए सबसे अधिक उपयुक्त है।

कई दिन तक प्लेग से पीड़ित शहर में लू चलती रही। ओरान के लोग ख़ास तौर पर हवा से डरते हैं, क्योंकि जिस पठार पर शहर बना है उसमें आँधी और लू को रोकने का कोई कुदरती तरीक़ा नहीं है, हवा बिना किसी रोक-टोक के प्रचण्ड रूप से सड़कों पर आफ़त मचा सकती है। उन महीनों में जब बारिश की एक बूँद भी नहीं गिरी थी, जिससे शहर में ताज़गी आ सकती, हर चीज़ पर धूल की परत चढ़ गई थी, जो हवा के ज़ोर से उड़कर धूल के बादलों में बदल गई। धूल और हवा में उड़ते हुए काग़ज़ के टुकड़े लोगों की टाँगों से टकराने लगे, सड़कें पहले से भी ज़्यादा वीरान नज़र आने लगीं। सिर्फ़ थोड़े-से लोग तेज़ क़दमों से कमर झुका-

कर, रूमालों से मुँह ढककर चलते नज़र आते थे। रात पड़ने पर भी पहली-जैसी भीड़ों की जगह जब हर आदमी यह सोचकर दिन को लम्बा करने की कोशिश करता था कि शायद यह उसकी ज़िन्दगी का आख़िरी दिन हो, अब लोगों को छोटे-छोटे झुण्ड तेज़ी से अपने घरों या मनपसन्द कॉफ़ी-हाउसों की तरफ़ बढ़ते हुए नज़र आते थे। इसके परिणामस्वरूप अँधेरा होते ही सड़कें ख़ामोश और खाली हो जाती थीं, सिर्फ़ लू की कर्कश साँय-साँय सुनाई देती थी। अदृश्य तूफ़ानी समुद्र से नमक और समुद्री पौधों की गन्ध आ रही थी। सूने शहर के बढ़ते हुए अँधेरे में शहर पर धूल की चादर बिछ जाती थी, समुद्र का कड़वा झाग आकर शहर को धो जाता था, हवा का कर्कश स्वर सुनाई देता था। ऐसे में हमारा शहर एक अभिशप्त द्वीप की तरह दिखाई देता था।

अभी तक शहर के केन्द्रीय भाग की अपेक्षा उन इलाक़ों में ही प्लेग से ज़्यादा मौतें हुई थीं जहाँ आबादी ज़्यादा थी या जहाँ मकान ठीक तरतीब से नहीं बने थे। लेकिन अचानक ही प्लेग ने नया हमला किया और शहर के व्यावसायिक केन्द्र पर कब्ज़ा कर लिया। लोगों ने हवा पर छूत फैलाने का इल्ज़ाम लगाया। होटल-मैनेजर के शब्दों में, हवा ने प्लेग के कीटाणुओं का 'प्रसार' किया था। चाहे कोई भी कारण रहा हो शहर के केन्द्रीय इलाक़ों में रहने वाले लोग जब हर रात एम्बुलेन्स गाड़ियों की आवाज़ सुनते थे, जो उनकी खिड़कियों के नीचे प्लेग की शोकपूर्ण भावना-शून्य घंटियाँ बजाकर उन्हें जगाती थीं, तो उन्हें एहसास होता था कि अब उनकी बारी भी आ गई है।

अधिकारियों का इरादा था कि जहाँ प्लेग का प्रकोप अधिक है उन इलाक़ों को बाक़ी शहर से अलग कर दिया जाए और उन्हीं लोगों को उस इलाक़े में जाने दिया जाए जिनका वहाँ जाना बहुत ही ज़रूरी हो। इन इलाक़ों के लोग समझने लगे कि ये पाबंदियाँ खास तौर पर उन्हीं के लिए लागू की गई हैं, इसलिए वे दूसरे इलाक़ों में रहने वाले लोगों से ईर्ष्या करने लगे, क्योंकि उन्हें अपेक्षाकृत अधिक आज़ादी थी। दूसरे इलाक़ों के लोग निराशा के क्षणों में अपना दिल खुश करने के लिए उन लोगों की दुर्दशा

की कल्पना करने लगे जिन्हें उनसे कम आज़ादी थी। उन दिनों लोगों के पास सान्त्वना का एक ही साधन था, "जो भी हो, कइयों की हालत तो मुझसे भी गई-गुज़री है।"

उसी वक्त शहर में आग लगने की घटनाएँ शुरू हो गईं, विशेषकर पश्चिमी फाटक के नज़दीक के मुहल्लों में। जाँच के बाद पता चला कि जो लोग छूत की बारकों में रहकर लौटे थे वे ही आग की इन घटनाओं के लिए ज़िम्मेदार थे। बेचैनी और रिश्तेदारों की मौत से वे अपना मानसिक सन्तुलन खो बैठे थे और वे इस विचित्र भ्रम में आकर मकानों को आग लगा रहे थे कि प्रचण्ड अग्नि में प्लेग का नाश हो जाएगा। इस किस्म की आग को बुझाना बड़ा कठिन हो गया था, जिसकी संख्या इतनी ज़्यादा थी और जो इतनी बार लगती थी कि कई इलाक़ों को खतरा पैदा हो गया था, क्योंकि इन दिनों बड़ी तेज़ हवाएँ चल रही थीं। अधिकारियों ने नेक इरादों से आग लगाने वालों को बहुत समझाने की कोशिश की कि उनके घरों में सरकार की तरफ़ से जिन कीटाणुनाशक दवाइयों का धुआँ दिया गया है उसके बाद उन्हें छूत लगने का कोई डर नहीं, लेकिन जब ये कोशिशें बेकार गईं तो इस तरह की आग लगाने वालों के लिए लम्बी सज़ाएँ घोषित की गईं। शायद सिर्फ़ क़ैद के डर से इन दुःखी लोगों ने अपनी हरकतें नहीं बंद कीं, बल्कि उन दिनों यह आम ख़याल था कि जेल की सज़ा मौत की सज़ा के बराबर है, क्योंकि शहर की जेल में बड़ी तादाद में मौतें होती थीं। यह मानना पड़ेगा कि लोगों के इस खयाल में कुछ-न-कुछ सचाई ज़रूर थी। ऐसा मालूम होता था कि प्लेग प्रत्यक्ष कारणों से सबसे अधिक प्रचंड आक्रमण उन लोगों पर करती थी जो मजबूरी से या अपनी मरज़ी से दूसरों के साथ रहते थे; मिसाल के लिए सिपाही, क़ैदी, पादरी और पादरिनें। हालाँकि कुछ क़ैदियों को औरों से अलग रखा जाता है फिर भी जेल एक क़िस्म की बिरादरी होती है। इस बात का सबूत यह है कि हमारे शहर की जेल में प्लेग से जितनी मौतें कैदियों की होती थीं उसी के अनुपात में वॉर्डरों की भी मौतें होती थीं। प्लेग किसी का लिहाज़ या इज़्ज़त नहीं करती थी और उसके निरंकुश शासन में गवर्नर से लेकर

मामूली अपराधी भी एक-सी सज़ा भुगत रहा था और जेल के इतिहास में शायद पहली बार निष्पक्ष रूप से इन्साफ़ हो रहा था।

प्लेग भेद-भावों को समतल कर रही थी, इसे दूर करने के लिए अधिकारियों ने छोटे-बड़े का वर्गीकरण किया। वे चाहते थे कि जो वॉर्डर अपना कर्तव्य-पालन करते हुए मौत का शिकार हुए थे उन्हें तमगे दिये जाएँ, लेकिन ये कोशिशें बेकार साबित हुईं। चूँकि मार्शल लॉ घोषित हो चुका था इसलिए एक लिहाज़ से वॉर्डरों को भी ड्यूटी पर समझा जा सकता था। उन्हें मृत्यु के बाद फ़ौजी मैडल दिये गए। क़ैदियों ने इसके ख़िलाफ़ कुछ नहीं कहा लेकिन फ़ौजी क्षेत्रों में इस बात पर सख्त एतराज़ उठाया गया। यह कहा गया, और यह तर्कसंगत भी था कि इसके परिणामस्वरूप जनता के मन में एक अत्यन्त खेदजनक ग़लतफ़हमी और घबराहट फैल जाएगी। नागरिक अधिकारी इस दलील के आगे झुक गए और उन्होंने तय किया कि जो वॉर्डर अपना काम करते हुए मौत के शिकार हुए थे उन्हें 'प्लेग मैडल' दिये जाएँ। चूँकि पहले जिन लोगों को फ़ौजी तमग़े मिले थे उसका बुरा असर पड़ चुका था। उन तमग़ों को अब वापस लेने का सवाल नहीं उठता था, इसलिए फ़ौजी क्षेत्रों में अभी भी असन्तोष छाया हुआ था। इसके अलावा प्लेग के तमगे में एक और भी कमी थी, क्योंकि उसका नैतिक असर फ़ौजी पुरस्कार से कहीं कम था—क्योंकि महामारी के ज़माने में लोगों को ऐसे तमगे तो आसानी से ही मिल जाते हैं, इसलिए कोई भी सन्तुष्ट नहीं था।

एक और दिक्कत यह थी कि जेल के अधिकारी धार्मिक और कुछ हद तक फौजी अधिकारियों द्वारा अपनाये हुए तरीकों का अनुसरण नहीं कर सकते थे। शहर के दोनों मठों के संन्यासियों को मठों से निकालकर फ़िलहाल कुछ धार्मिक विचारों वाले परिवारों के साथ रख दिया गया था। इसी तरह जब भी सम्भव हो सका छोटे-छोटे दलों में लोगों को बारकों से निकालकर स्कूलों या अन्य सार्वजनिक संस्थाओं में टिका दिया गया था। इस तरह बीमारी ने, जिसने प्रकट रूप से हमारे घिरे हुए शहर में मजबूरन एकता पैदा की थी, सदियों से बसी हुई बिरादरियों को विच्छिन्न कर दिया

श्रौर उन्हें श्रलग बाहर रहने के लिए खदेड़ दिया। इस बात से भी सबकी बेचैनी बढ़ गई थी।

इस बात की कल्पना की जा सकती है कि इन परिवर्तनों श्रौर तेज़ हवा ने मिलकर कुछ लोगों के मन पर कैसा विस्फोटक प्रभाव डाला होगा। शहर के फाटकों पर श्रक्सर हमले होते थे श्रौर श्रब हमला करने वाले हथियार-बंद होकर श्राते थे। दोनों तरफ़ से गोलियाँ चलती थीं, कुछ लोग ज़ख्मी भी होते थे श्रौर थोड़े-से लोग भागने में कामयाब हो गए थे। इसके बाद संतरियों की चौकियों पर सिपाहियों की संख्या बढ़ा दी गई श्रौर भागने की कोशिशें भी फौरन कम हो गईं। फिर भी इन घटनाश्रों से हिंसा की एक क्रान्तिकारी लहर पैदा हुई चाहे वह छोटे पैमाने पर ही थी। जिन मकानों को सफ़ाई के महक़मे के अधिकारियों ने जला दिया था या बंद करवा दिया था, उन्हें लूट लिया गया। लेकिन ये घटनाएँ सोच-समझकर पहले से ही तैयारी करके हुई थीं यह नहीं कहा जा सकता था। श्राम तौर पर क्षणिक प्रलोभन के कारण शिष्ट व्यक्ति भी ऐसी हरकतें कर बैठते थे जिनकी दूसरे लोग फ़ौरन नक़ल करते थे। कभी-कभी क्षणिक उन्माद में श्राकर कोई श्रादमी मकान-मालिक की नज़रों के सामने ही किसी जलते हुए मकान में घुस जाता था श्रौर मकान-मालिक शोक से विमूढ़ खड़ा श्राग की लपटों को देखता रहता था। उसकी उदासीनता देखकर बहुत से तमाशबीन पहले श्रादमी का श्रनुकरण करते थे श्रौर देखते-ही-देखते श्रंधेरी सड़क पर दौड़ने वालों की भीड़ लग जाती थी। बुझती हुई लपटों की मद्धिम लाली में जब वे घर से सजावट का सामान या फ़रनीचर श्रपने कंधों पर लादकर बाहर निकलते थे तो वे कुबड़े श्रौर कुरूप बौने-से दिखाई देते थे। इस तरह की वारदातों से मजबूर होकर ही अधिकारियों ने मार्शल-लॉ की घोषणा की थी श्रौर फ़ौजी क़ायदे लागू किये थे। मकान लूटने वाले दो श्रादमियों को गोली मार दी गई थी। लेकिन हमें शक है कि इससे लोगों पर कोई श्रसर नहीं पड़ा था। हर रोज़ इतनी मौतें होती थीं कि इन दो सज़ाश्रों की किसी को परवाह ही नहीं थी, ये समुद्र में बूंद के समान थीं। दरश्रसल इस तरह की वारदातें श्रक्सर होती रहीं श्रौर अधिकारियों ने उनमें दखल देने की कोई

कोशिश नहीं की, दिखावे के लिए भी नहीं। सिर्फ़ एक नियम का ही नागरिकों पर कुछ असर हुआ, वह था कर्फ़्यू ऑर्डर। ग्यारह बजे के बाद शहर में एकदम अँधेरा छा जाता था। ऐसे में ओरान एक विशाल कब्रिस्तान की तरह दिखाई देता था।

चाँदनी रातों में सीधी-लंबी सड़कें और मैली-सफ़ेद दीवारें, जिनपर कहीं किसी वृक्ष की भी परछाईं नहीं थी और जिनकी निस्तब्धता में किसी के क़दमों या कुत्ते के भूँकने की आवाज़ भी नहीं आती थी, पीली मद्धिम रोशनी में चमकती रहती थीं। ख़ामोश शहर अब सिर्फ़ विशाल, मुर्दा, घनाकार आकृतियों का संग्रह-मात्र रह गया था जिसमें महान् व्यक्तियों के काँसे के खोल-चढ़े बुत खड़े थे। उनके पत्थर या धातु के बने भावहीन चेहरों और उनकी असली शक्ल में एक शोकपूर्ण साम्य था। सूने चौकों और एवेन्युओं में ये दिखावटा बुत झुकते आसमान-तले अपनी हुक़ूमत जमाए थे; हो सकता था ये जड़ राक्षस जड़ता के उस शासन के प्रतीक हों जो ज़बरदस्ती हमारे ऊपर लादा गया था, या उस शासन के अंतिम पहलू हों—एक ऐसे निष्प्राण शहर के प्रतीक जिसमें प्लेग, पत्थरों और अँधेरे ने मिलकर हर आवाज़ को बंद कर दिया था।

लेकिन अँधेरा लोगों के दिलों में भी था। मुर्दों को दफ़न करने के बारे में जिस तरह की बे-सिर-पैर की अफ़वाहें हमारे शहर में फैली हुई थीं, उसी तरह उन्हें आश्वस्त करने वाले तथ्यों की तरफ़ उतना ही कम ध्यान दिया जाता था। कथाकार इन मुर्दों के दफ़न किए जाने की चर्चा किये बग़ैर नहीं रह सकता, इसलिए माफ़ी का एक शब्द यहाँ उचित ही होगा, क्योंकि वह अच्छी तरह जानता है कि लोग इस मामले में उसकी भर्त्सना करेंगे। कथाकार यह सफ़ाई देता है कि इस काल में लगातार लोग दफ़नाए जाते रहे और दफ़नाने का ढंग ही कुछ ऐसा था कि एक माने में न सिर्फ़ कथाकार ही बल्कि सब लोग उनकी तरफ़ ध्यान देने के लिए मजबूर हो गए थे। ख़ैर, जो भी हो, यह नहीं समझ लेना चाहिए कि कथाकार को ऐसी रस्मों के प्रति अस्वस्थ मोह है, बल्कि इससे विपरीत उसे ज़िन्दा लोगों की सोहबत ज़्यादा पसन्द है—इसकी जीती-जागती मिसाल समुद्र-

स्नान है। लेकिन नहाने के घाट पहुँच से बाहर थे और ज़िन्दा लोगों की सोहबत दिन-ब-दिन ख़तरनाक होती जा रही थी और मुर्दों की सोहबत में बदलती जा रही थी। यह तो ज़ाहिर ही था। इसमें शक़ नहीं कि अगर कोई चाहता तो हमेशा इस अप्रिय सचाई का सामना करने से इन्कार कर सकता था, उस तरफ़ से अपनी आँखें मूँद सकता था या उसे अपने दिल से निकाल सकता था। लेकिन इस प्रत्यक्ष सचाई में एक भयंकर और अकाट्य तर्क है। अन्त में यह तर्क तमाम बचाव के सभी साधनों को छिन्न-भिन्न कर देता है। मिसाल के लिए जिस दिन आपके किसी प्रियजन को दफ़नाने की ज़रूरत हो तो आप भला मुर्दों के दफ़न के प्रति कैसे लापर-वाही दिखा सकते हैं!

दरअसल जिस रफ़्तार से मुर्दे दफ़नाए जाते थे उसे देखकर हैरानी होती थी। सारी औपचारिकताएँ धीरे-धीरे ख़त्म हो गई थीं और साधा-रण तौर पर यह कहा जा सकता है कि ऐसी तमाम रस्मों पर, जो जटिल और विस्तृत थीं, पाबन्दी लगा दी गई थी। प्लेग का मरीज़ अपने परिवार के लोगों से दूर ही मर जाता था और रस्म के मुताबिक़ लाश की निगरानी करने पर भी पाबंदी लगा दी गई थी, जिसके परिणामस्वरूप अगर कोई आदमी शाम के वक्त मरता था तो उसकी लाश रात-भर अकेली ही रहती थी, जो दिन के वक्त मरते थे उन्हें फ़ौरन दफ़ना दिया जाता था। परिवार के लोगों को ख़बर तो दी ही जाती थी, लेकिन अधिकांश केसों में चूँकि मृतक मरीज़ मरने से पहले परिवार में रह चुका होता था इसलिए परिवार के सभी लोग छूत के वार्ड में होते थे और उनकी सारी हलचलें ख़त्म हो जाती थीं। लेकिन अगर मृतक परिवार में नहीं रहा होता था तो परिवार के लोगों को सूचित किया जाता था कि वे निश्चित समय पर जनाज़े का साथ दें—अर्थात् जब लाश को नहलाकर ताबूत में डाल दिया जाता था और जनाज़े को क़ब्रिस्तान ले जाने का वक्त आता था, तब कहीं परिवार के लोग वहाँ पहुँचते थे।

मिसाल के लिए हम कल्पना कर सकते हैं कि यह सारी कार्यवाही उस सहायक हस्पताल में हो रही थी, जिसके इन्चार्ज डॉक्टर रियो थे। यह

स्कूल की इमारत थी जिसे अस्पताल में बदल दिया गया था। मुख्य इमारत के पिछवाड़े बाहर निकलने का एक दरवाज़ा था। बरामदे के एक स्टोर में ताबूत जमा किये गए थे। जब मृतक के परिवार के लोग वहाँ पहुँचे तो उन्होंने बरामदे में एक ताबूत देखा जिसे पहले से ही कीलों से बन्द कर दिया गया था। इसके बाद सबसे महत्त्वपूर्ण कार्यवाही शुरू हुई। परिवार के मुखिया को सरकारी काग़ज़ों पर दस्तख़त करने थे। इसके बाद ताबूत को एक मोटरगाड़ी में रख दिया गया। यह मुर्दागाड़ी थी, या एक बड़ी एम्बुलेन्स को मुर्दागाड़ी में तब्दील कर दिया गया था। मातम करने वाले एक टैक्सी में बैठ गए, कुछ टैक्सियाँ अभी भी अधिकारियों की इजाज़त से चलती थीं। दोनों गाड़ियाँ तेज़ रफ़्तार से शहर के केन्द्र से बचते हुए एक दूसरे रास्ते से क़ब्रिस्तान की तरफ़ चल पड़ीं। फाटक पर एक चौकी के सामने सब गाड़ियाँ रुकती थीं जहाँ पुलिस के अफ़सर बाहर निकलने के सरकारी परमिट पर मोहर लगाते थे। इस मोहर के बग़ैर हमारे नागरिकों को क़ब्रिस्तान में, जिसे अन्तिम विश्राम-स्थल कहते हैं, जगह नहीं मिल सकती थी। पुलिसमैन एक तरफ़ हट गया और कारें ज़मीन के एक टुकड़े के पास आकर रुकीं जहाँ बहुत सी क़ब्रें खुदी थीं और मेहमानों का इन्तज़ार कर रही थीं। एक पादरी शोक करने वालों से मिलने आया, क्योंकि अब मुर्दों को दफ़नाने के वक्त धार्मिक रस्मों पर पाबंदी लगा दी गई थी। प्रार्थनाओं के साथ ताबूत को मुर्दागाड़ी से घसीटकर उतारा गया और रस्सियों से बाँधकर क़ब्र के नज़दीक लाया गया, रस्से खींच लिये गए और ताबूत अपना बोझ लिये क़ब्र के तले में विश्राम के लिए पहुँच गया। पादरी ने पवित्र जल छिड़कना शुरू किया ही था कि ताबूत के ढक्कन पर ज़ोर से मिट्टी गिरने की आवाज़ आई। एम्बुलेन्स पहले से ही जा चुकी थी और उसे कीटाणुनाशक दवाई छिड़ककर साफ़ किया जा रहा था। इधर क़ब्र पर मिट्टी का ढेर बढ़ता जाता था और कुदालों से मिट्टी डालने की विषादपूर्ण आवाज़ आ रही थी, उधर परिवार के लोग टैक्सी में पुलिन्दों की तरह भरे जा रहे थे। पन्द्रह मिनट बाद वे घर लौट वापस पहुँच गए।

इस सारी कार्यवाही को कम-से-कम जोखिम और ज़्यादा-से-ज़्यादा

तेज़ रफ़्तार से पूरा किया गया। इसमें शक नहीं कि प्लेग के शुरू के दिनों में मृतकों के सम्बन्धियों की सहज-भावनाओं को इस तेज़ रफ़्तार की कार्य-वाही से चोट पहुँची थी। लेकिन यह ज़ाहिर था कि प्लेग के ज़माने में ऐसी भावनाओं का ध्यान नहीं रखा जा सकता, इसलिए कार्यकुशलता पर सब-कुछ न्योछावर कर दिया गया, हालाँकि दफ़नाने के इस संक्षिप्त तरीक़े से शुरू में लोगों का मनोबल डावाँडोल हो गया था। आम तौर पर लोगों को यह नहीं मालूम होता कि सम्बन्धियों को अच्छी तरह दफ़नाने की भावना कितनी प्रबल होती है। लेकिन ज्यों-ज्यों वक्त गुज़रता गया हमारे शहर के लोगों का ध्यान अपनी तात्कालिक आवश्यकताओं पर केन्द्रित होने लगा। खाद्य-समस्या गम्भीर हो गई। सरकारी काग़ज़ों की ख़ानापूरी, खाने की चीज़ों को तलाश करने और दुकानों-दफ़्तरों के आगे क़तारों में खड़े होने में ही लोगों का सारा वक्त कट जाता था। उन्हें यह सोचने की फ़ुरसत नहीं थी कि उनके आसपास लोग किस तरह मर रहे हैं और किसी दिन वे खुद भी इसी तरह मर जाएंगे। इस तरह हमारे दैनिक जीवन की बढ़ती हुई पेचीदगियों से जो मुसीबतें थीं एक माने में हमारे लिए वरदान साबित हुईं। दरअसल अगर प्लेग इतनी तबाही न मचाती तो जो होता भलाई के लिए होता।

उस वक्त ताबूतों की, मुर्दों को लपेटने के कफ़नों की और कब्रिस्तान में जगह की कमी हो गई। इस सिलसिले में फ़ौरन कोई कदम उठाना ज़रूरी था और व्यावहारिक सुविधा के लिहाज़ से यह ज़रूरी हो गया कि बहुत से लोगों को एक ही क़ब्र में दफ़ना दिया जाए और ज़रूरत पड़ने पर हस्पताल और क़ब्रिस्तान के बीच मुर्दागाड़ी के चक्कर बढ़ा दिए जाएँ। एक बार तो रियो के हस्पताल में सिर्फ़ पाँच ही ताबूत रह गए। जब पाँचों सन्दूक लाशों से भर गए तो उन्हें एक-साथ एम्बुलेन्स में लाद दिया गया। क़ब्रिस्तान पहुँचकर सन्दूकों को खाली कर दिया गया और लोहे-जैसे भूरे रंग की लाशों को स्ट्रेचरों पर रखकर एक छप्पर में पहुँचा दिया गया जो खास तौर से इसीलिए बनाया गया था। वहाँ लाशें अपने दफ़न होने का इन्त-ज़ार करने लगीं। इस बीच खाली ताबूतों में कीटाणुनाशक दवा छिड़की गई

और उन्हें अस्पताल ले जाया गया। जब भी ज़रूरत पड़ती, लाशें दफ़नाने का यह तरीका अख्तियार किया जाता। यह तरीका कामयाब रहा और प्रीफ़ेक्ट ने इसका समर्थन किया। यहाँ तक कि उसने रियो से यह भी कहा कि किताबों में प्लेग के वर्णनों में लिखा है कि हब्शी लोग लाशों से भरे छकड़े खींचा करते थे—उससे तो मौजूदा तरीका कहीं बेहतर है।

"हाँ," रियो ने कहा। "इस बार भी प्लेग में उतने ही लोग मरते और दफ़नाए जाते हैं जितने कि पुराने ज़माने की प्लेग में दफ़नाए जाते थे, लेकिन अब हम मौत के आँकड़े रखते हैं। आपको मानना पड़ेगा कि इसी का नाम प्रगति है।"

हालाँकि व्यावहारिक रूप में यह पद्धति सफल रही, लेकिन जिस तरीके से मृतकों को दफ़नाया जाता था, उसकी वजह से प्रीफेक्ट को भी मजबूर होकर पाबंदी लगानी पड़ी कि लाश को कब्र में दफ़नाते वक्त मृतक का कोई रिश्तेदार वहाँ मौजूद न रहे। यह हुक्म जारी करने में उसे काफ़ी तकलीफ हुई थी। रिश्तेदारों को सिर्फ क़ब्रिस्तान के फाटकों तक आने की इजाज़त थी, वह भी सरकारी तौर पर नहीं। जहाँ तक दफ़नाने की आखिरी रस्म का सवाल था, स्थिति बहुत-कुछ बदल चुकी थी। कब्रिस्तान के एक सुदूर कोने में ज़मीन के एक खुले टुकड़े में, जहाँ कहीं-कहीं मस्तगी के पेड़ लगे थे, दो बड़े गड्ढे खोदे गए थे। एक मर्दों के लिए सुरक्षित था और दूसरा औरतों के लिए। इस लिहाज़ से अधिकारी अभी तक औचित्य को महत्त्व देते थे। बाद में जाकर परिस्थितियों की मजबूरी से शालीनता के इस बचे-खुचे अंश को भी तिलांजलि दे दी गई और अंधाधुन्ध मर्दों और औरतों की लाशों को गड्ढों में फेंका गया। तसल्ली सिर्फ इसी बात की है कि यह अपमानजनक कार्यवाही प्लेग की तबाही के आखिरी दौर में हुई।

जिस दौर की हम अब चर्चा कर रहे हैं, उसमें अभी तक मर्दों और औरतों की लाशों को अलग-अलग रखा जाता था और अधिकारी इस बात पर ज़ोर देते थे। हर गड्ढे के नीचे बिना बुझाये हुए चूने की एक गहरी परत बिछा दी गई थी, जो ज़ोर से खौलता था और जिसमें से भाप उठती थी। गड्ढे के ओंठों के पास चूने की एक मेड़ में से बुलबुले उठ रहे थे जो

ऊपर आकर हवा में फूट जाते थे। जब एम्बुलेन्स अपना काम खत्म कर चुकती थी तो स्ट्रेचरों का सीधी क़तार में गड्ढों के पास लाया जाता था। नंगी लाशें, जो ऐंठकर बदसूरत हो जाती थीं, एकसाथ गड्ढे में धकेल दी जाती थीं और उन पर चूने की परत बिछाकर मिट्टी डाल दी जाती थी। मिट्टी की परत सिर्फ़ कुछ इंच गहरी होती थी, ताकि बाद में आने वाले लाशों के ढेर के लिए जगह की गुंजाइश रखी जा सके। अगले दिन मृतकों के रिश्तेदारों से मुर्दों के रजिस्टर में दस्तख़त करने के लिए कहा जाता था, जिससे ज़ाहिर होता है कि इन्सान और दूसरे जीवों की मौत में, मिसाल के लिए कुत्तों की मौत में, फ़र्क़ किया जा सकता है। इन्सानों की मौतें बाक़ायदा रजिस्टर में दर्ज की जाती हैं और आँकड़ों का सावधानी से हिसाब रखा जाता है।

ज़ाहिर है कि इन तमाम कामों के लिए बहुत से स्टाफ़ की ज़रूरत थी और अक्सर रियो के पास काम करने वालों की कमी रहती थी। बहुत से कब्र खोदने वाले, स्ट्रेचर उठाने वाले और इसी तरह के लोग, जो सरकारी नौकर थे और बाद में कई लोग अपनी मरज़ी से भी यह काम करने लगे थे, प्लेग से मर चुके थे। चाहे कितनी ही सावधानियाँ बरती गईं, लेकिन आख़िरकार छूत ने अपना असर किया ही। लेकिन तमाम बातों के बावजूद सबसे ज़्यादा हैरानी की बात यह है कि जब तक महामारी चलती रही, इन कामों के लिए लोगों की कोई कमी नहीं महसूस हुई। नाज़ुक वक्त तब आया जब महामारी अपने शिखर पर थी। डॉक्टर की परेशानी स्वाभाविक ही थी। उस वक्त ऊँचे ओहदों और सख्त कामों, दोनों के लिए कर्मचारियों की कमी हो गई। रियो दफ़नाने वालों के काम को सख्त काम कहता था। लेकिन ज़रा यह विरोधाभास देखिए कि जब सारा शहर बीमारी की पकड़ में आ गया तो प्लेग ने ही परिस्थितियों को आसान बना दिया, क्योंकि शहर की आर्थिक ज़िन्दगी के विच्छिन्न हो जाने से बहुत से लोग बेकार हो गए थे। इनमें से बहुत कम प्रशासनिक ओहदों के क़ाबिल थे, लेकिन 'मोटे-झोटे' काम के लिए लोगों को भरती करना बहुत आसान हो गया। इसके बाद से डर की बजाय ग़रीबी ज़्यादा बड़ी प्रेरक-शक्ति बन गई,

क्योंकि जोखिम की वजह से ऐसे काम करने वालों का ज़्यादा तनख्वाह मिलती थी। सफ़ाई करने वालों के पास काम चाहने वालों की अर्ज़ियों की एक सूची थी। जब भी कोई जगह खाली होती तो उन लोगों को खबर दे दी जाती जिनका नाम सूची में सबसे ऊपर होता था। अगर ये लोग ज़िन्दा रहते थे तो बुलाए जाने पर ज़रूर हाज़िर होते थे। प्रीफेक्ट, जो हमेशा से जेल के क़ैदियों को काम पर लगाने से हिचकिचाता था, इस अप्रिय क़दम को उठाने की मजबूरी से बच गया। उसने कहा कि जब तक बेकार लोग मौजूद हैं हम इन्तज़ार कर सकते हैं, कैदियों से काम लेने की कोई ज़रूरत नहीं।

इस तरह अगस्त के अंत तक हमारे शहरियों की लाशों को उनके अंतिम विश्राम-स्थल तक पहुँचाया जाता रहा, शालीन ढंग से नहीं तो कम-से-कम इतने व्यवस्थित ढंग से कि अधिकारी महसूस करते थे कि वे मृतकों और उनके रिश्तेदारों के प्रति अपना कर्तव्य निभा रहे हैं। खैर हम यहाँ आने वाली घटनाओं का थोड़ा अंदाज़ लगा सकते हैं और उन परिस्थितियों को बयान कर सकते हैं जिनमें से हमें प्लेग के आखिरी दौर में गुज़रना पड़ा। अगस्त के बाद से इतनी मौतें होने लगीं कि हमारे शहर के छोटे-से क़ब्रिस्तान में और लाशों को दफ़नाने की गुंजाइश ही नहीं रही। दीवारों को गिराकर पड़ोसियों की ज़मीन में भी दखल देने के सुविधाजनक तरीक़े अपनाये गए, लेकिन वे पर्याप्त नहीं थे। फ़ौरन ही किसी नये तरीक़े के अपनाने की ज़रूरत थी। पहला कदम यह उठाया गया कि लाशों को रात के वक्त दफ़नाया जाने लगा। ज़ाहिर है कि रात को दफ़नाने की कार्यवाही अधिक संक्षिप्त की जा सकती थी। एम्बुलेन्सों में ज़्यादा तादाद में लाशों के ढेर लगाए जाने लगे। कर्फ़्यू के बाद जो लोग शहर के बाहर की बस्तियों में घूमते थे या जो अपनी ड्यूटी की वजह से बाहर निकलते थे, उन्हें अक्सर लंबी सफ़ेद एम्बुलेन्स गाड़ियाँ तेज़ रफ़्तार से गुज़रती हुई दिखाई देती थीं। गाड़ियों की घंटियों की नीरस खनखनाहट से आसपास की सारी सड़कें गूँज उठती थीं। लाशों को अंधाधुंध गड्ढों में गिरा दिया जाता था, और गड्ढे में पहुँचते ही कुदालें भर-भरकर बिना बुझा चूना उनके ऊपर डाला जाता था, जिससे उनके चेहरे जल जाते थे। सबके ऊपर एक साथ

मिट्टी डाल दी जाती थी—वक्त के साथ-साथ गड्ढों को और भी ज़्यादा गहरा खोदा जाने लगा।

कुछ दिनों बाद ही नयी जगह तलाश करने के लिए नये क़दम उठाने की ज़रूरत पड़ गई। संकटकालीन तरीके के तौर पर नागरिकों की लाशों के अवशेषों को कब्रों से निकालकर जलाने के लिए भेजा गया और इसके बाद लाशों को जलाया जाने लगा। इसके फलस्वरूप शहर के पूर्व में, फाटकों से बाहर बना श्मशान काम में लाया जाने लगा। पूर्वी फाटक के संतरियों की चौकी को अपनी जगह से हटाकर और आगे भेज दिया गया। फिर म्युनिसिपैलिटी के एक कर्मचारी का एक ऐसी तरकीब सूझी जिससे मुसीबतज़दा अधिकारियों को काफ़ी मदद मिली। उसने सलाह दी कि समुद्र-तट की सड़क पर जो ट्रामें जाती थीं और जो अब खाली थीं, उन्हें इस प्रयोजन के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। अब तो ट्रामों और छकड़ों को इस नये काम के लिए इस्तेमाल किया जाने लगा और श्मशान तक पहुँचने के लिए ट्राम की छोटी पटरियाँ बिछा दी गईं। इस तरह श्मशान ट्रामों का टर्मिनस स्टेशन बन गया।

गरमी के आखिरी महीनों में और पतझड़ के सारे मौसम में हर रोज़ समुद्र-तट की चट्टानों के गिर्द बनी सड़क पर आसमान की पृष्ठभूमि में झूलकर चलती हुई ट्रामों का एक विलक्षण जलूस दिखाई देता था। इन ट्रामों में एक भी मुसाफ़िर नहीं रहता था। इस इलाके में रहने वाले लोगों को जल्द ही सारी स्थिति का ज्ञान हो गया। हालाँकि चट्टानों पर दिन-रात पहरा रहता था, फिर भी लोगों के छोटे-छोटे झुंड पुलिस की नज़रें बचाकर चट्टानों के बीच जाकर खुले छकड़ों और ट्रामों पर फूल फेंकते थे। गरमी की रातों के गरम अँधेरे में फूलों और लाशों से भरी गाड़ियों के पहियों का कर्कश स्वर सुनाई देता था।

शुरू के कुछ दिनों में शहर की पूर्वी बस्तियों पर एक चिपचिपा, बदबूदार धुएँ का बादल छाया रहा। सब डॉक्टरों की राय थी कि यह बदबू अप्रिय होते हुए भी नुकसान नहीं पहुँचा सकती। लेकिन इस इलाके के लोगों ने धमकी दी कि वे एक साथ यह इलाका छोड़कर कहीं और चले

जाएँगे। उन्हें यकीन हो गया था कि आसमान से उन पर कीटाणु बरस रहे हैं—इसके परिणामस्वरूप उन्हें खुश करने के लिए अधिकारियों को वहाँ से धुआँ हटाने के लिए लम्बा-चौड़ा इन्तज़ाम करना पड़ा और मशीनें लगानी पड़ीं। इसके बाद जब कभी तेज़ हवा चलती तभी पूर्व से आती हुई बदबू उन्हें इस बात की याद दिलाती कि वे एक व्यवस्था में रह रहे हैं और हर रोज़ रात को प्लेग की लपटें अपनी वसूली करती हैं।

प्लेग जब अपने शिखर पर थी तो उसके ये नतीजे निकले थे। खुश-किस्मती से हालत इससे ज्यादा नहीं बिगड़ी वरना यह आसानी से यक़ीन किया जा सकता है कि हमारे अधिकारियों की साधन-सम्पन्नता, अफ़सरों की कार्य-कुशलता और श्मशान की मुर्दे जलाने की क्षमता भी स्थिति का सामना न कर पाती। रियो जानता था कि अधिकारी हताश होकर और भी भयंकर क़दम उठाने पर बहसें कर रहे हैं; मिसाल के लिए लाशों को समुद्र में फेंकना। रियो की आँखों के सामने एक तस्वीर आई। उसे लगा जैसे चट्टानों के नीचे उथले पानी में कोई बदसूरत चीज़ हिल-डुल रही है। वह यह भी जानता था कि अगर प्लेग की मौतों की संख्या बढ़ गई तो कोई संस्था, चाहे वह कितनी ही कार्य-कुशल हो, स्थिति का मुकाबला नहीं कर सकेगी। ढेरों लोग एक साथ मरेंगे और सड़कों पर लाशें सड़ा करेंगी। अधिकारी चाहे जो करें चौराहों में मरते हुए लोग किसी बोध्य घृणा या विक्षिप्त आशा से पागल होकर ज़िन्दा लोगों का आलिंगन करते हुए नज़र आएँगे।

इन्हीं दृश्यों और डरों ने हमारे नगरवासियों में इस भावना को ज़िन्दा रखा था कि वे निर्वासित हैं और बाक़ी दुनिया से अलग हो गए हैं। इस सिलसिले में कथाकार को यह पूरा एहसास है कि वह किसी दर्शनीय या चमत्कारपूर्ण बात को, किसी साहसी कारनामे को या किसी स्मरणीय काम को दर्ज नहीं कर सकता। जब हम पुराने ऐतिहासिक विवरणों को पढ़ते हैं तो ऐसी बातों से हमारा दिल थिरक उठता है। हक़ीक़त यह है कि महामारी से कम सनसनीखेज़ और नीरस घटना कोई नहीं हो सकती। बड़ी मुसीबतें अगर ज़्यादा देर तक रहती हैं तो वे नीरस बन जाती हैं।

जो लोग इस दौर में से गुज़रे थे, उनकी स्मृतियों में प्लेग के ये अवसादपूर्ण दिन जस्त के रंग की आकाश तक फैली प्रचण्ड, देदीप्यमान लपटों की तरह सुरक्षित नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे दानव की पूर्व-निश्चित, धीमी प्रगति के रूप में सुरक्षित हैं जो अपने रास्ते में आने वाली हर चीज़ को नष्ट कर देता है।

नहीं, प्लेग के शुरू के दौर में रियो के मन में महामारी के विषय में जो शानदार आडम्बरपूर्ण कल्पनाए पैदा हुई थीं, वे सचमुच की प्लेग से बिलकुल मेल नहीं खाती थीं। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि प्लेग एक चालाक और कभी न झुकने वाला दुश्मन था। वह एक कुशल संगठन-कर्ता थी जो अपना काम मुस्तैदी से और पूरी तरह निभा रही थी। बातों-ही-बातों में हम यह भी कह दें कि कथाकार ने इसलिए निष्पक्ष और वस्तु-परक दृष्टि अपनाई है ताकि वह न सचाई के प्रति, न अपने प्रति बेइन्साफ़ी कर सके। उसने कलात्मक प्रभाव पैदा करने के लिए अपने ब्यौरे में कहीं कोई रद्दोबदल नहीं की। सिर्फ़ जहाँ घटनाओं को तर्क-संगत ढंग से बयान करने की ज़रूरत पड़ी वहाँ उसने साधारण संशोधन किये हैं। इस कठिनाई को सामने रखते हुए कथाकार को बड़े अफ़सोस से यह क़बूल करना पड़ता है कि लोगों के दुख का सबसे बड़ा, सबसे गहरा और विस्तृत कारण प्रियजनों से विछुड़ा था—कथनाकार का कर्तव्य है कि प्लेग के अन्तिम दौर में यह भावना जिस रूप में आयी वह उसे बयान करे, लेकिन इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि इस दुख की तीव्रता भी कुछ-कुछ कम हो चली थी।

क्या इसका कारण यह था कि हमारे नगरवासी, यहाँ तक कि वे लोग भी जिन्हें अपने प्रियजनों से बिछुड़कर तीव्र वेदना हुई थी, प्रियजनों के बग़ैर रहने के आदी हो गए थे। एकदम ऐसा मान लेना सचाई के खिलाफ़ होगा। यह कहना ज़्यादा सही होगा कि उनकी भावनाएँ और शरीर दिना-दिन शोक में घुलते जा रहे थे। प्लेग के शुरू में उनके मन में बिछुड़े प्रिय-जनों की स्मृति बिलकुल साफ़ थी और उनकी अनुपस्थिति को महसूस करके उन्हें बड़ी तकलीफ़ होती थी। लेकिन उन्हें अपने प्रियतमों या प्रिय-

तमाशों के चेहरे, मुस्कराहटें और कुछ ऐसे क्षण याद थे जब कि वे बेहद सुखी थे (वे अपने अतीत का सिंहावलोकन कर रहे थे)। लेकिन उन क्षणों में, जब वे अतीत की स्मृतियों को ताज़ा कर रहे थे, उनके प्रियतम या प्रियतमाएँ क्या कर रही होंगी, यह कल्पना करने में उन्हें बड़ी दिक्कत पेश आती थी, खास तौर पर जब उन्हें एक सुदूर पृष्ठभूमि की कल्पना करनी पड़ती थी जहाँ तक पहुँचने की वे उम्मीद भी नहीं कर सकते थे। कहने का अर्थ यह है कि ऐसे क्षणों में स्मृति तो अपना काम करती थी लेकिन कल्पना असफल हो जाती थी। प्लेग के दूसरे दौर में उनकी स्मृति भी असमर्थ हो गई। उन्हें प्रिय व्यक्ति का चेहरा भूल गया हो यह बात नहीं थी, लेकिन वे चेहरे को उसके सजीव मांसल रूप में नहीं देख पाते थे और अब उसे स्मृति के आईने में देखने में असमर्थ थे, जो कि चेहरे को भूलने के बराबर ही था।

इस तरह पहले कुछ हफ़्तों में तो उनकी शिकायत थी कि उनका प्यार जैसा था और उनके लिए प्यार का जो अर्थ था अब उसकी छाया मात्र बाक़ी रह गई है। अब उन्हें यह बोध हुआ कि परछाइयाँ भी क्षीण हो सकती हैं और ज़िन्दगी के वे मद्धिम रंग, जो स्मृतियों से पैदा होते हैं, खत्म हो जाते हैं। इतने लंबे बिछोह के बाद वे उस आत्मीयता और निकटता की कल्पना करने में भी असमर्थ हो गए थे, यहाँ तक कि वे यह भी नहीं समझ पाते थे कि किसी ऐसे व्यक्ति के साथ रहने में, जिसकी ज़िन्दगी उनकी ज़िन्दगी में लिपटी हुई है, कैसी अनुभूति होती है।

इस दृष्टि से उन्होंने अपने को प्लेग की दशा के अनुसार ढाल लिया था। यह दशा साधारण होने की वजह से और भी ज्यादा शक्तिशाली हो गई थी। इन लोगों में से किसी में उदात्त भावना की अनुभूति की शक्ति नहीं रह गई थी। सबके दिलों में क्षुद्र और नीरस भावनाएँ थीं। "अब तो इस मुसीबत को खत्म होना चाहिए।" लोग अक्सर कहते थे, क्योंकि मुसीबत के वक्त सब यही चाहते हैं कि वह जल्द खत्म हो जाए और दर-असल सब यही चाहते थे। लेकिन इस तरह की बातें करते वक्त हमारे दिल में वह तीव्र आकुलता या प्रचण्ड क्षोभ नहीं उठता था जो प्लेग के

पहले दौर में उठा करता था। हमारे दिमाग़ों की धुंधली रोशनी में अब भी कुछ स्पष्ट विचार बच रहे थे, हम दरअसल उन्हीं में से एक विचार को व्यक्त किया किरते थे। पहले हफ़्तों के क्षोभपूर्ण विद्रोह का स्थान एक विशाल निराशा ने ले लिया था, पाठक इसे असहायपन न समझें ह्'लाँकि इसमें एक निष्क्रियता और सामयिक समर्पण था।

हमारे नागरिक साथियों ने हार मान ली थी और जैसा कहा जाता है, हमने परिस्थितियों के मुताबिक अपने को ढाल लिया था, क्योंकि इसके सिवा हमारे आगे कोई चारा नहीं था। उनके मन की उदासी और दुख अभी भी क़ायम थे, लेकिन अब उन्हें उनकी कसक नहीं महसूस होती थी। कुछ लोगों के लिए, जिनमें डॉक्टर रियो भी थे, यही चीज़ सबसे अधिक निराशाजनक मालूम होती थी; उदासी की आदत उदासी से कहीं बदतर है। अभी तक जो लोग अपने प्रियजनों से बिछुड़े थे वे पूरी तरह से दुखी नहीं हुए थे। उनके दुःख की रात्रि में हमेशा आशा की एक किरण झल-कती रहती थी, लेकिन अब वह किरण भी बुझ गई थी। आप उन्हें सड़क के कोनों में, कॉफ़ी-हाउसों में, या दोस्तों के मकानों में देख सकते थे। वे बेचैन, उदासीन और इतने ऊबे हुए नज़र आते थे कि उनकी वजह से सारा शहर रेलवे-वेटिंग रूम की तरह दिखाई देता था। जिनके पास नौक-रियाँ थीं, वे बिलकुल प्लेग की रफ़्तार से और एक मंद धैर्य से काम करते थे। हर आदमी में विनयशीलता आ गई थी। पहली बार लोग बिना किसी हिचकिचाहट के दिल खोलकर अपने प्रियजनों के बारे में बातें करने लगे। सब लोग एक ही तरह के शब्द इस्तेमाल करते थे और अपनी वंचना को एक ही दृष्टिकोण से देखते थे, जिससे वे महामारी के ताज़े आँकड़ों को देखते थे। यह परिवर्तन आश्चर्यजनक था, क्योंकि अब तक वे बड़े जतन से अपनी व्यक्तिगत पीड़ा को जनसाधारण की पीड़ा से अलग सँजोकर रखे हुए थे। अब उन्होंने उसे सर्वसाधारण की पीड़ा में शामिल करना स्वीकार कर लिया था। स्मृतियों और उम्मीदों के बग़ैर वे सिर्फ़ क्षण के लिए जीने लगे। 'यहीं' और 'अब' उनके लिए सब-कुछ बन गए थे। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि प्लेग ने धीरे-धीरे हम सबमें न सिर्फ़

प्यार की बल्कि दोस्ती की क्षमता भी खत्म कर दी थी। यह स्वाभाविक ही था क्योंकि प्यार भविष्य की माँग करता है और हमारे पास वर्तमान के क्षणों की पंक्ति के सिवा कुछ नहीं बच रहा था।

ख़ैर, हमारी दुर्दशा के इस बयान की सिर्फ़ मोटी रूपरेखा दी गई है। यह सच है कि सब बिछुड़े हुए लोगों की आखिर में यही हालत हुई थी, लेकिन साथ में हमें यह भी कहना चाहिए कि सब लोगों की एक साथ यह हालत नहीं हुई; इसके अलावा इस पूर्ण जड़ता में जकड़े जाने पर भी उनमें मेधा-शक्ति की चिनगारियाँ और स्मृति की टूटी-फूटी किरणें थीं जिन्होंने निर्वासितों में पहले से अधिक तारुण्य-भरी और तेज़ चेतना जगा दी थी। यह तब हाता था जब मिसाल के लिए वे यह सोचकर कि प्लेग खत्म हो गई है, भविष्य की योजनाएँ बनाते थे या अनायास ही, संयोगवश उनके मन में ईर्ष्या की टीस उठती थी—ईर्ष्या का कोई पात्र नहीं था, फिर भी उनकी ईर्ष्या में तीव्रता थी। कुछ और लोगों में अचानक ताकत की बाढ़ आ जाती थी और हफ़्ते में कुछ दिन उनकी क्लान्ति दूर हो जाती थी। इतवार को और शनिवार की दोपहर को ऐसा होता था। इसके कारण साफ़ थे, क्योंकि उस ज़माने में जब प्रेमी-प्रेमिकाएँ एक साथ थे तो ये दिन आनन्द मनाने के लिए नियत थे। कई बार अँधेरा छाने के साथ ही उनके मन पर अवसाद छा जाता था, जो एक प्रकार की चेतावनी थी कि बीते दिनों की स्मृतियाँ फिर सतह पर तैर रही हैं—लेकिन यह चेतावनी हमेशा सही नहीं साबित होती थी। संध्या का समय, जो धार्मिक वृत्ति के लोगों के लिए अन्तरात्मा में झाँकने का समय होता है, एक क़ैदी और निर्वासित के लिए, जिसके पास मन केन्द्रित करने के लिए शून्य के सिवा कुछ नहीं है, सबसे ज़्यादा कठिन समय होता है। क्षण-भर के लिए उनका मन डावाँडोल हो जाता था, फिर वे अपनी जड़ता में डूब जाते थे; जेल का दरवाज़ा फिर बन्द हो जाता था।

ज़ाहिर है कि इन परिस्थितियों में उन्हें अपनी ज़िन्दगी की सबसे अधिक व्यक्तिगत बातों को छोड़ना पड़ा था। जबकि प्लेग के प्रारम्भिक दिनों में उन्हें वे छोटी-छोटी बातें अत्यन्त महत्वपूर्ण मालूम हुई थीं जो औरों के

लिए अर्थहीन थीं, इन बातों का उनके लिए विशेष महत्त्व था। इस तरह शायद जिन्दगी में उन्हें पहली बार एहसास हुआ था कि हर व्यक्ति अपने में अपूर्व है। इसके विपरीत अब उन्हें सिर्फ़ उन्हीं बातों में दिलचस्पी थी जिनमें सब लोगों को दिलचस्पी थी। उनके विचार साधारण थे और उनकी कोमलतम अनुभूतियाँ अब अमूर्त मालूम होती थीं—साधारण श्रेणी की बातें। प्लेग उन पर इस तरह छा गई थी कि कई बार तो उनके मन में एक ही आकांक्षा उठती थी कि वे प्लेग की लायी हुई नींद में हमेशा के लिए सो जाएँ। "बड़ा अच्छा हो अगर मुझे भी प्लेग की छूत लग जाए—सारा किस्सा खत्म हो जाए!" लेकिन दरअसल वे पहले से ही सोए हुए थे; यह सारा दौर उनके लिए लम्बी रात की गहरी नींद के सिवा और कुछ नहीं था। शहर में नींद में चलने वाले लोग रहते थे, जिनकी नींद बहुत कम मौकों पर टूटती थी। जब रात को उनके दिल के ज़ख्म, जो देखने में बिलकुल बन्द मालूम होते थे, अचानक फट जाते थे, वे चौंककर जग जाते थे और खोए-खोए मन की जिज्ञासा से अपने ज़ख्मों को सहलाने लगते थे, और विद्युत्गति से उनका शोक फिर भड़क उठता था और उनकी आँखों के आगे उनके प्यार का शोकपूर्ण स्वरूप अनायास ही आ जाता था। सुबह वे फिर साधारण परिस्थितियों में अर्थात् प्लेग के वातावरण में लौट जाते थे।

यह सवाल पूछा जा सकता है कि देखने वालों पर प्लेग के इन निर्वासितों ने क्या प्रभाव डाला था? जवाब बड़ा सीधा-सादा है; इन लोगों ने कोई भी असर नहीं डाला या अगर इसे दूसरे शब्दों में कहा जाए तो ये लोग बाकी लोगों की तरह ही दिखाई देते थे, अविशिष्ट। वे शहर की गति-शून्यता और निरर्थक बचकाने आंदोलन में हिस्सा लेते थे; उनकी विवेचन-शक्ति का नामोनिशान न रहा, बल्कि उनमें एक सर्द उदासीनता पैदा हो गई थी। मिसाल के लिए सबसे ज़्यादा मेधावी लोग भी बाकियों की तरह इस उम्मीद में कि उन्हें प्लेग के जल्द खत्म होने का यक़ीन हो जाए, अख़बार पढ़ने और रेडियो सुनने का दिखावा करते हुए देखे जा सकते थे। अखबार पढ़कर या तो उनके मन में विलक्षण आशाएँ जागृत होती थीं या अतिरंजित भय पैदा होते थे, जबकि उन पंक्तियों को किसी

पत्रकार ने ऊब से उबासी लेते हुए बिना समझे-बूझे अन्धाधुन्ध ही लिखा होता था। इस बीच लोग बीयर पीते थे, अपने बीमार रिश्तेदारों की देख-भाल करते थे, आलस में वक्त गँवाते थे या काम करके अपने को भुलावे में रखते थे, दफ्तर की फ़ायलों में कागज़ात रखते थे, या घर बैठकर ग्रामोफ़ोन बजाते थे। वे अपनी किसी गति-विधि से यह ज़ाहिर नहीं होने देते थे कि वे बाकी लोगों से अलग हैं। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि उन्होंने अपने मन के मुताबिक अपनी ज़िन्दगी को निर्धारित करना छोड़ दिया था। प्लेग ने सबकी विवेक-शक्ति खत्म कर दी थी। यह इस बात से ज़ाहिर होता था कि लोगों को इस बात की बिलकुल परवाह नहीं रही थी कि वे किस किस्म के कपड़े पहनते हैं या कैसा खाना खाते हैं। ज़िन्दगी में जो भी दिक्कतें आती थीं, वे उनका सामना करने के लिए तैयार रहते थे।

और अन्त में अपने प्रियजनों से बिछुड़े लोगों के पास वह विचित्र अधिकार भी न रहा, जो प्लेग के शुरू में उन्हें प्राप्त था। वे प्यार के अहंवाद और उससे पैदा होने वाले फ़ायदे को खो बैठे थे। अब कम-से-कम उनके सामने स्थिति साफ़ हो गई थी; इस मुसीबत से लड़ना सबकी ज़िम्मेदारी बन गई थी। शहर के फाटकों से सुनाई देने वाली बन्दूकों की आवाज़ें, ज़िन्दगी और मौत की लय पर निशान लगाने वाली रबर की मोहरों की नपी-तुली आवाज़ें, फ़ाइलें, आगें, घबराहट और औपचारिकताएँ, सब एक बदसूरत, लेकिन रजिस्टर में दर्ज मौत के निमित्त काम कर रही थीं। ज़हरीले धुओं, एम्बुलेंसों की खामोश खनखनाहटों में हम सब एक समान निर्वासन के दुख उठा रहे थे और अचेतन रूप से अपने प्रियजनों से मिलने, फिर से पाई शान्ति के चमत्कार की प्रतीक्षा कर रहे थे। इसमें शक नहीं कि हमारा प्यार अभी भी ज़िन्दा था, लेकिन व्यावहारिक दृष्टि से उसका कोई फ़ायदा नहीं था। वह हमारे दिलों के भीतर एक निश्चल पदार्थ की तरह बन्द था और किसी अपराध या उम्र-क़ैद की तरह ऊसर था। एक ऐसे सब्र को पाकर, जिसका कोई फ़ायदा नहीं था, हम सिर्फ़ उम्मीद करने की ज़िद पर अड़े हुए थे। इस दृष्टि से देखने पर हमारे कुछ शहरियों का दृष्टिकोण खाने के सामान की दुकानों के बाहर लगी लम्बी क़तारों से

मिलता-जुलता था जो आजकल देखने में आती थीं। वही मजबूरी, लम्बी, कभी न ख़त्म होने वाली सहनशीलता, जिसमें किसी क़िस्म के भ्रम की गुंजाइश नहीं थी। फ़र्क़ सिर्फ़ इतना था कि खाना तलाश करने वालों की मानसिक स्थिति की तीव्रता अगर बहुत बढ़ जाए तब कहीं जाकर वह विरह की कचोटने वाली व्यथा का मुक़ाबला कर सकती थी। विरह की व्यथा एक ऐसी भयंकर भूख से पैदा हुई थी जो कभी सन्तुष्ट नहीं हो सकती थी।

ख़ैर, अगर पाठक इन निर्वासितों की मनःस्थिति का सही अनुमान लगा लें तो हमें एक बार फिर उन नीरस शामों की कल्पना करनी पड़ेगी, जो धूल की परत और सुनहरे आलोक में से छनकर उन वृक्षहीन सड़कों पर छा रही थीं, जहाँ औरतों और मर्दों की भारी भीड़ें थीं, क्योंकि दिन के अन्तिम प्रकाश में नहाये हुए छज्जों की तरफ़ अब एक ही क़िस्म की आवाज़ उठती थी—धीमी आवाज़ों, पदचापों और असंख्य जूतों के तलों की एक सम्मिलित ऊँची आवाज़ जो गरम लू में प्लेग की पैशाचिक साँय-साँय से ताल मिला रही थी। अब मोटरों और गाड़ियों का शोर बन्द हो गया था, जो साधारण परिस्थितियों में शहरों की एकमात्र आवाज़ होती है। नई आवाज़ एक ऐसे विशाल जनसमूह की आवाज़ थी जो किसी तरह अपने दुर्भाग्य के दिन काट रहा था और अच्छे दिनों के आने का इन्तज़ार कर रहा था। यह कभी न ख़त्म होने वाली, दम घोटने वाली भिनभिनाहट थी, जो धीरे-धीरे शहर के एक कोने से दूसरे कोने में छा जाती थी और हर शाम को उस अन्धी सहनशीलता को पूरी सचाई और शोकाकुलता से व्यक्त करती थी जिसने हमारे दिलों में से प्यार को खदेड़ दिया था।

चौथा भाग

१

सारे सितम्बर और अक्तूबर में शहर प्लेग की दया पर निर्भर रहा। किसी तरह 'काम चलाने' के सिवा और कोई चारा नहीं था। लाखों मर्द और औरतें हफ़्तों तक यही करते रहे। लगता था ये हफ़्ते कभी ख़त्म नहीं होंगे। हमारी सड़कों पर बारी-बारी से कुहरे, गरमी और बारिश का बोलबाला रहा। दक्षिण से मैनाओं और चिड़ियों के ख़ामोश झुंड आये, जो बहुत ऊँचाई पर उड़ रहे थे। लेकिन वे शहर से दूर-दूर रहते थे मानो उस दैत्याकार मूसल ने, जो घरों के ऊपर आवाज़ करता हुआ चक्कर काट रहा था और जिसका फ़ादर पैनेलो ने ज़िक्र किया था, पक्षियों को चेतावनी देकर हम लोगों से दूर कर दिया था। अक्तूबर के शुरू में बारिश की बौछारों ने आकर सड़कों को धो डाला। इस बीच सिवा 'काम चलाने' के बृहद् प्रयास के हमारी ज़िन्दगी में और कोई भी महत्त्वपूर्ण घटना नहीं हुई।

अब आकर रियो और उसके दोस्तों को एहसास हुआ कि वे कितने थक गए थे। सचमुच सफाई की टुकड़ियों में काम करने वालों के लिए अब अपनी थकान को सँभालना बस से बाहर हो गया। रियो ने अपने और अपने साथियों में आई इस तब्दीली को देखा, जिसने हर चीज़ के प्रति एक विचित्र उदासीनता का रूप धारण कर लिया था। मिसाल के लिए जो लोग अभी तक प्लेग से सम्बन्धित हर खबर में गहरी दिलचस्पी दिखाते आए थे बिलकुल उदासीन हो गए। रेम्बर्त, जिसे अस्थायी तौर पर छूत के निरोधक एक वॉर्ड की निगरानी के लिए नियुक्त किया गया था, जिसके होटल को इसी मक़सद के लिए क़ब्जे में ले लिया गया था, किसी भी वक्त

उन लोगों की संख्या बता सकता था जो उसके सुपुर्द किये गए थे। जिन लोगों में अचानक प्लेग के लक्षण नज़र आने लगते थे उन्हें फ़ौरन अस्पताल पहुँचाने के लिए उसने जो तरीका निकाला था उसका पूरा ब्यौरा उसके मन में पक्की तरह से बैठ गया था और वह मुँह-ज़बानी सब-कुछ बता सकता था। उसी तरह उसकी देखरेख में प्लेग की छूत से बचाने के लिए जिन्हें टीके लगाए जाते थे, उनका क्या असर होता था, इसके आँकड़े भी उसे मुँह-ज़बानी याद थे। फिर भी हफ़्ते में प्लेग से कितनी मौतें हुईं, यह वह नहीं बता सकता था, यहाँ तक कि वह यह भी नहीं बता सकता था कि मौतों की संख्या बढ़ रही है या कम हो रही है, और इस बीच परिस्थितियों के बावजूद भी उसने 'भाग निकलने' की उम्मीद नहीं छोड़ी थी।

जहाँ तक दूसरे लोगों का सम्बन्ध था वे दिन-भर और रात को देर तक लगातार काम करते रहते थे, उन्होंने कभी अख़बार पढ़ने या रेडियो सुनने की परवाह नहीं की थी। जब उन्हें किसी ऐसे प्लेग के मरीज़ के स्वस्थ होने की ख़बर बताई जाती थी, जिसके बचने की कोई उम्मीद नहीं थी, तो वे दिखावटी तौर पर दिलचस्पी तो लेते थे लेकिन दरअसल उनकी भावना-शून्य उदासीनता की तुलना किसी महायुद्ध के सैनिक से की जा सकती थी जो लगातार लड़ने के बोझ से चूर-चूर हो चुका है, जो सिर्फ़ अपनी दैनिक ड्यूटी के बारे में ही सोचता है, यहाँ तक कि जिसने यह उम्मीद करना भी छोड़ दिया है कि कभी आखिरी मुठभेड़ होगी या सुलह का बिगुल सुनाई देगा।

ग्रान्द अभी भी क़ायदे से प्लेग के आँकड़े तैयार करता था, लेकिन वे आँकड़े किस दिशा की ओर संकेत करते थे, यह बताना उसके लिए असम्भव था। रियो, रेम्बर्त और तारो की तरह, जिन्होंने प्रबल सहन-शक्ति का परिचय दिया था, उसकी सेहत भी अच्छी नहीं थी। और अब म्युनिसिपैलिटी के दफ़्तर में ड्यूटी देने के अतिरिक्त उसे रात को रियो के क्लर्क का काम भी करना पड़ता था। इस थकान का असर उसकी सेहत पर साफ़ दीख रहा था, और वह सिर्फ़ दो या तीन विचारों की मदद से ज़िन्दा रह रहा था जो उसके दिमाग़ में पक्की तरह बैठ गए थे। उनमें से एक विचार तो यह था कि

प्लेग के खत्म होते ही वह एक हफ्ते की छुट्टी लेकर अपनी किताब पूरी कर डालेगा। वह बहुत ज्यादा भावुक हो गया था और भावुकता के क्षणों में रियो से अपने दिल की बातें किया करता था और जीन की चर्चा करता था। वह अब कहाँ होगी? वह सोचता था, अख़बारों को पढ़कर क्या कभी उसे ग्रान्द का ख़याल आता होगा? एक दिन रियो को यह देखकर अपने पर ताज्जुब हुआ कि वह ग्रान्द से अपनी बीवी के बारे में बड़े साधारण ढंग से बातें कर रहा था। आज तक उसने किसी से ऐसी बातें नहीं की थीं।

अपनी बीवी के भेजे हुए तार किसी हद तक विश्वसनीय थे, इस बात में उसे शक था। तारों में वह हमेशा यक़ीन दिलाती थी कि उसकी सेहत ठीक है। रियो ने सेनेटोरियम के डॉक्टर को तार देने का फ़ैसला किया। डॉक्टर ने जवाब दिया कि रियो की बीवी की हालत पहले से बिगड़ गई है, लेकिन पूरी कोशिश की जा रही है कि बीमारी आगे न बढ़े। रियो ने यह ख़बर किसी को नहीं बताई थी। उसका ख़याल था कि स्नायविक थकान की वजह से ही वह ग्रान्द को यह बात बता बैठा है। जीन के बारे में डॉक्टर से बातें करने के बाद ग्रान्द ने मदाम रियो के बारे में कुछ सवाल पूछे और रियो का जवाब सुनकर कहा, "जानते हो आजकल के डॉक्टर बीमारी को जिस तरह दूर कर देते हैं वह निरा चमत्कार है।" रियो ने इस बात का समर्थन किया और सिर्फ़ इतना कहा कि बहुत लंबे अरसे से अपनी बीवी से अलग रहने की वजह से उसकी सेहत पर असर पड़ा है। हो सकता है अगर वह अपनी बीवी के साथ रहता तो बीवी की हालत सुधर जाती। मौजूदा परिस्थितियों में बेचारी अपने को बहुत ज्यादा अकेली महसूस करती होगी। इसके बाद रियो ख़ामोश हो गया और ग्रान्द के अगले सवालों को उसने गोलमोल जवाब देकर टाल दिया।

बाकी लोगों की भी यही हालत थी। तारो अपने को औरों से ज़्यादा सँभाले हुए था, लेकिन उसकी डायरी से ज़ाहिर होता था कि उसकी जिज्ञासा की गहराई अभी तक क़ायम थी और उसका वैविध्य समाप्त हो चुका था। इस दौर में उसे सिर्फ़ एक ही आदमी में दिलचस्पी थी, वह कोतार्द था। शाम के मक्त वह रियो के फ़्लैट में लौटता था। जब से होटल

को अधिकारियों ने क्वारेन्टीन केन्द्र बना दिया था तब से तारो रियो के यहाँ आकर रहने लगा था। जब ग्रान्द और रियो प्लेग के दैनिक आँकड़ों को पढ़ते थे तो वह रत्ती-भर दिलचस्पी नहीं दिखाता था। उसे ज्योंही मौक़ा मिलता वह बातचीत का रुख़ अपने प्रिय विषय, ओरान के दैनिक जीवन के छोटे-छोटे पहलुओं की तरफ़ मोड़ देता।

डॉक्टर कास्तेल सबसे ज़्यादा थका-माँदा दिखाई देता था। जिस दिन उसने आकर रियो को बताया कि प्लेग की सीरम तैयार हो गई है और जब उसने पहली बार सीरम को मोसिये ओथों के नन्हे बेटे पर आज़माने का फ़ैसला किया था, जिसके बचने की कोई उम्मीद नहीं थी तो अचानक रियो ने ताज़े आँकड़े पढ़कर सुनाते हुए देखा कि डॉक्टर कास्तेल अपनी कुरसी में पड़ा गहरी नींद सो रहा था। अपने पुराने दोस्त का बदला हुआ चेहरा देखकर रियो को बड़ा सदमा पहुँचा। कास्तेल के चेहरे पर हर वक्त एक सहृदय और व्यंग्य-भरी मुस्कान छाई रहती थी जिससे उसके चेहरे पर अक्षय यौवन की कान्ति रहती थी। लेकिन अब अचानक संयम से बाहर होने पर, जबकि उसके खुले हुए होंठों में से लार बह रही थी, वही चेहरा अपनी असली उम्र और ज़िंदगी के निष्फल बरसों की सूचना दे रहा था। इस दृश्य को देखकर रियो को लगा जैसे उसके गले में कोई चीज़ अटक गई है।

इन्हीं बातों से रियो अपनी थकान का अनुमान लगा सका। उसकी विवेक-शक्ति काबू से बाहर हो रही थी। दबी रहने के कारण वह सख़्त हो गई थी और आसानी से अक्सर एकदम चटख जाती थी और रियो भावनाओं के तूफ़ान में अपने को सर्वथा असहाय पाता था। अपनी भावनाओं पर क़ाबू रखने और अपने हृदय की रक्षा करने के लिए उसे सख़्त बनाने के सिवा रियो के पास और कोई चारा न रहा। वह जानता था कि दिन काटने का यही एकमात्र तरीका है। हर सूरत में अब उसके दिमाग़ में बहुत कम भ्रम बच रहे थे और थकान इन बचे-खुचे भ्रमों को भी खत्म कर रही थी। वह जानता था कि एक अनिश्चित काल के लिए जिसके ओर-छोर की झलक भी उसे नहीं मिल सकती, उसका काम मरीज़ों को स्वस्थ करना

नहीं बल्कि प्लेग के लक्षण बताना और जाँच करना, देखना, बताना, दर्ज करना और फिर मौत के हवाले कर देना, यही उसका मौजूदा काम था। कभी-कभी कोई औरत उसकी आस्तीन पकड़कर हृदय-विदारक स्वर में रो पड़ती, "डॉक्टर, तुम इसे बचा लोगे न !" लेकिन रियो अब ज़िन्दगी बचाने के लिए नहीं बल्कि बीमार को अस्पताल में पहुँचाने के लिए, वहाँ मौजूद रहता था। लोगों के चेहरों पर उसे जो नफ़रत दिखाई देती थी वह कितनी निष्फल थी ! एक बार एक औरत ने उससे कहा, "क्या तुम्हारे सीने में दिल नहीं है ?" वह ग़लती पर थी। रियो के पास दिल था। उसी की ताक़त से तो वह दिन में बीस घंटे काम करता था, और हर घंटे मरते हुए लोगों को देखता था जिन्हें ज़िन्दा रहना चाहिए था। इसी की वजह से तो वह हर रोज़ सुबह नये सिरे से काम करता था। जिस तरह की परिस्थितियाँ अब थीं, उनका सामना करने भर के लिए ही तो उसके दिल में ताक़त थी। भला वह दिल किसी ज़िन्दगी को कैसे बचा सकता था !

नहीं, उन व्यस्त दिनों में वह लोगों को डॉक्टरी मदद नहीं पहुँचाता था; लोगों को सिर्फ़ सूचनाएँ देता था। स्पष्ट है कि यह ऐसा काम नहीं था, जो किसी इन्सान को शोभा देता, लेकिन उस सारी परिस्थिति में भला उस आतंकग्रस्त जनसंख्या में से, जिसका दशांश कम हो गया था, किस व्यक्ति के पास पौरुषपूर्ण काम करने का क्षेत्र रह गया था ! एक माने में रियो की यह थकान उसके लिए वरदान साबित हुई। अगर उसकी थकान ज़रा भी कम होती और उसकी विचार-शक्ति अधिक सचेत होती, तो मौत की सर्वव्यापी बदबू उसे अधिक भावुक बना देती। लेकिन जब किसी आदमी को नींद के लिए सिर्फ़ चार घंटे मिलते हों तो वह भावुक नहीं हो सकता। उसे सब चीज़ें अपनी असली शक्ल में दिखाई देती हैं अर्थात् वह उन्हें इन्साफ़ की विकराल, जड़ इन्साफ़ की चमकीली रोशनी में देखता है। दूसरे लोग, वे मर्द और औरतें जिन्हें मौत की सज़ा मिली थी इस नीरस बोध के साझीदार थे। प्लेग पहले उसे पैगम्बर समझा जाता था। वह दो गोलियों या एक इन्जैक्शन से ही लोगों को ठीक कर देता था, और जब वह किसी मरीज़ के कमरे में जाता था तो लोग रास्ते में ही उसे बाँह से पकड़ लेते थे। यह

सुखद लेकिन ख़तराक अनुभूति थी। इसके विपरीत अब वह सिपाहियों को साथ लेकर आता था और वे राइफ़लों के कुंदों से दरवाज़े पीटते थे, तब कहीं जाकर परिवार के लोग दरवाज़ों को खोलते थे। उनका बस चलता तो वे रियो को और समस्त मानव-जाति को अपने साथ कब्र में घसीटकर ले जाते। हाँ, यह बात बिलकुल सच साबित हो गई थी कि इन्सान इन्सानों के बग़ैर ज़िन्दा नहीं रह सकता। यह भी सच था कि रियो भी इन दुखी लोगों की तरह असहाय था और वह भी दया की उस हल्की सिहरन का पात्र था जो उसके मन में उन लोगों से मिलने के बाद उठती थी।

जो भी हो, उन लम्बे हफ़्तों में जो लगता था कभी ख़त्म नहीं होंगे, डॉक्टर के दिल में विरह के साथ-ही-साथ ये विचार भी उठते थे और उसके दोस्तों के मन में भी ऐसे ही विचार उठते थे, कम-से-कम उनके चेहरों को देखकर तो रियो को ऐसा ही लगता था। लेकिन प्लेग से लड़ने वाले लोगों की थकान का सबसे ख़तरनाक प्रभाव इस बात में नहीं था कि वे बाहर की घटनाओं और दूसरे लोगों की भावनाओं के प्रति अपेक्षाकृत उदासीन थे; बल्कि इस बात में कि उन्होंने अपने जीवन के व्यक्तिगत पहलुओं पर सुस्ती और निष्क्रियता को छाने दिया था। उनमें एक नयी प्रवृत्ति पैदा हो गई थी। वे हर ऐसे काम से बचते थे जो उन्हें तात्कालिक दृष्टि से आवश्यक नहीं मालूम होता था, या जिसके करने में उन्हें बहुत ज़्यादा मेहनत पड़ती थी जो उनकी दृष्टि में व्यर्थ थी। इस तरह ये लोग दिन-ब-दिन और भी ज़्यादा स्वच्छता के नियमों का उल्लंघन करने लगे। और कीटाणुओं के नाश के लिए उन्हें जो क़दम उठाने चाहिए थे, उनमें भी कमी करने लगे। कई बार तो वे प्लेग से अपना बचाव करने के प्रबन्ध किये बग़ैर ही न्यूमोनिक प्लेग के मरीज़ों को देखने चले जाते थे। उनका कहना था कि उन्हें बहुत देर से ख़बर मिलती थी इसलिए उन्हें किसी सफ़ाई के केन्द्र में जाकर अपने कपड़ों पर कीटाणुनाशक दवाई डलवाने की फ़ुरसत नहीं थी। इसी में ज़्यादा ख़तरा था; क्योंकि बीमारी से लड़ने में वे जो ताक़त लगाते थे उसके कारण उन्हें छूत लगने की सम्भावना बढ़ गई थी। संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि वे अपनी क़िस्मत से जुआ खेल रहे थे और कोई भी

क़िस्मत पर दबाव डालकर अपनी बात नहीं मनवा सकता।

लेकिन शहर में सिर्फ़ एक आदमी ऐसा था जो न हताश दीखता था, न ही थका हुआ, जो सन्तोष का जीता-जागता स्वरूप था। वह आदमी कोतार्द था। रियो और रेम्बर्त से सम्पर्क रखते हुए भी वह उनसे दूर-दूर रहता था, लेकिन इन दिनों उसने जान-बूझकर तारो से मेल-जोल बढ़ा लिया था। तारो को बहुत कम फुरसत मिलती थी, लेकिन जब भी तारो को फ़ुरसत मिलती थी, कोतार्द उसे ज़रूर मिलता था। एक तो इसलिए कि तारो को उसके सारे केस का पता था, दूसरे यह कि तारो हमेशा एक दोस्त की तरह उससे मिलता था और उसकी ख़ातिरदारी करता था। तारो में यह बहुत बड़ी विशेषता थी; चाहे उसे कितनी भी मेहनत क्यों न करनी पड़े वह हमेशा ग़ौर से दूसरों की बातें सुनता था और उसका साथ पाकर लोगों को सुख मिलता था। यहाँ तक कि कई बार शाम को जब वह थकान से चूर दिखाई देता था, अगले दिन उसमें अचानक नयी ताक़त आ जाती थी। "तारो ऐसा आदमी है जिससे बातें की जा सकती हैं," एक बार कोतार्द ने रेम्बर्त से कहा था, "क्योंकि उसमें सचमुच इन्सान के गुण हैं। अगर तुम मेरा आशय समझ सको तो मैं यही कहूँगा कि वह दूसरों के दिल की बात समझता है।"

इस दौर में तारो की डायरी कोतार्द के व्यक्तित्व पर केन्द्रित थी, शायद इसका यही कारण था। स्पष्ट था कि तारो कोतार्द के व्यक्तित्व की पूरी तस्वीर खींचने की कोशिश कर रहा था। कोतार्द की बातों के आधार पर या अपनी व्याख्या के अनुसार वह कोतार्द की हर प्रतिक्रिया और विचार को नोट करता था। 'कोतार्द और प्लेग से उसके सम्बन्ध' शीर्षक से हम उसकी डायरी में कई पृष्ठों के बहुत से नोट्स पाते हैं। कथाकार का ख़याल है कि उन नोट्स का सारांश यहाँ ज़रूर देना चाहिए।

डायरी में सबसे पहले तारो ने कोतार्द के तत्कालीन व्यक्तित्व के बारे में साधारण वक्तव्य दिया है। "उसका व्यक्तित्व खिल रहा है। उसकी सहृदयता और खुशमिज़ाजी का विस्तार हो रहा है।" प्लेग जो शक्ल अख़्तियार कर रही थी उससे कोतार्द बिलकुल परेशान नहीं हुआ था। कभी-कभी तारो

के सामने वह अपना असली भावनाओं को भी व्यक्त कर बैठता था, "हालत बिगड़ रही है न ? ख़ैर, अब सब एक ही नाव पर सवार हैं।"

तारो ने टिप्पणी लिखी है, "इसमें शक नहीं कि और लोगों की तरह उसकी जान भी खतरे में है, लेकिन यही असली बात है; वह 'दूसरों के साथ' खतरे में है। और मुझे पूरा यक़ीन है कि वह गम्भीरता से कभी नहीं सोचता कि उसकी जान को ज़्यादा खतरा है। लगता है कि उसके दिमाग़ में यह बात बैठ गई है और यह बात उतनी अस्वाभाविक नहीं है जितनी कि यह मालूम होती है कि अगर किसी आदमी को कोई खतरनाक बीमारी या गम्भीर चिन्ता हो तो उसे दूसरी बीमारियाँ और चिन्ताएँ नहीं लग सकतीं।" उसने मुझसे पूछा, "क्या कभी तुमने इस बात पर ग़ौर किया है कि कभी किसी आदमी को दो बीमारियाँ एक साथ नहीं होतीं ? मान लो कि तुम्हें कैंसर या बढ़ते हुए तपेदिक-जैसी कोई असाध्य बीमारी है, ऐसी हालत में तुम्हें कभी प्लेग या टाईफ़स की छूत नहीं लग सकती, यह एकदम नामुमकिन है। इससे दूर भी हम जा सकते हैं; क्या तुमने कभी सुना है कि कोई ऐसा आदमी, जिसे कैन्सर हो, मोटर-दुर्घटना में मरा हो ?" यही सिद्धान्त, चाहे इसमें कितनी भी हक़ीक़त हो, कोतार्द की खुशमिज़ाजी क़ायम रखता है। अगर उसे सब लोगों से अलग रहना पड़े तो उसे बहुत बुरा लगेगा। एकान्त में क़ैद काटने की बजाय वह प्लेग मुक्त लोगों की भीड़ में रहना ज़्यादा पसंद करेगा। प्लेग ने आकर पुलिस की जाँचों, जासूसी, गिफ़्तारी के वारंटों को खत्म कर दिया है, और अगर वैसे देखा जाए तो इन दिनों हमारे पास कोई पुलिस नहीं है, अतीत या वर्तमान के कोई अपराध या अपराधी नहीं हैं—सिर्फ़ मौत की सज़ा पाए लोग हैं जो माफ़ी की उम्मीद लगाए बैठे हैं। यह माफ़ी देने वाले की सनक पर निर्भर करता है और ऐसे लोगों में पुलिस के सिपाही भी शामिल हैं।

इस तरह कोतार्द के पास (अगर हम तारो के विश्लेषण पर यकीन कर सकें) अपने आस-पास के लोगों की मानसिक अशान्ति और दुख को खुशी और रस ले-लेकर संतोष प्रकट करने के पर्याप्त कारण थे। उसकी यह प्रवृत्ति इस टिप्पणी द्वारा स्पष्ट हो सकती थी, "बके जाओ मेरे दोस्तो !

लेकिन मैं पहले ही यह सब भुगत चुका हूँ।"

तारो ने लिखा है, "जब मैंने उसे सुझाव दिया कि दूसरों से सम्पर्क न तोड़ने का सबसे अच्छा तरीक़ा यह है कि आदमी की अंतरात्मा साफ़ हो।" तो वह चिढ़कर बोला, "अगर ऐसी बात है तो सब लोग हमेशा एक-दूसरे से अलग रहते हैं।" और एक क्षण बाद उसने कहा, "तारो, तुम जो चाहे कहो लेकिन मैं तुम्हें यह बता दूँ, लोगों को एक साथ लाने का एकमात्र तरीक़ा यह है कि उन पर प्लेग का अभिशाप छोड़ दिया जाए। तुम अपने आस-पास की परिस्थितियों पर नज़र डालो तो तुम्हें इस बात की सचाई का पता चल जाएगा।" मैं उसके दृष्टिकोण को अच्छी तरह से समझता हूँ और यह भी समझता हूँ कि हमारी मौजूदा ज़िन्दगी का ढर्रा कोतार्द के लिए कितना सुखद है। हर क़दम पर वह अपने मन में उठने वाली प्रतिक्रियाओं को भला कैसे न पहचानता? हर आदमी दूसरों की नज़रों में अच्छा बना रहने की कोशिश करता है, कई बार लोग रास्ता भटकने वाले पर मेहरबानी करके उसकी मदद करते हैं और कई बार चिड़चिड़ेपन का प्रदर्शन करते हैं; जिस ढंग से लोग बढ़िया रेस्तराँओं में जमा होते हैं, वहाँ रहने में उन्हें सुख मिलता है और वे वहाँ से बाहर नहीं निकलना चाहते; सिनेमाघरों के सामने रोज़ लोगों की क़तारें रहती हैं। थियेटरों, संगीत-गृहों और यहाँ तक कि डांस के हॉलों में भी भीड़ रहती है। सारे चौक और एवेन्यू लोगों से भर जाते हैं। लोग हर क़िस्म के सम्पर्क से बचना चाहते हैं, फिर भी सबके मन में इन्सानों के सामीप्य की आकांक्षा है जिससे प्रेरित होकर इन्सान इन्सानों के प्रति, शरीर शरीरों के प्रति आकर्षित होते हैं और मर्द और औरत में आकर्षण पैदा होता है। ज़रूर कोतार्द इन सारे अनुभवों में से गुज़रा होगा—सिवाय एक अनुभव के; जहाँ तक उसका सवाल है, औरतों का मामला निकाल देना चाहिए। भला उसके-जैसी थूथनी से…। मैं कह सकता हूँ कि जब उसे किसी चकले में जाने की ख्वाहिश होती है तो वह अपने मन पर क़ाबू पा लेता है; इसमें बदनामी की आशंका है और हो सकता है कभी यह बात उसके ख़िलाफ़ चली जाए।

संक्षेप में इस महामारी ने उसे अहंकारी बना दिया है। अकेली ज़िन्दगी बसर करने वाले इस आदमी को जिसे एकाकीपन से नफ़रत थी, महामारी ने अपनी साज़िश में उसे साथी बना लिया है। हाँ 'साथी', उसके लिए यह शब्द उपयुक्स्त है, और उसे इस साज़िश में शामिल होने में कितना मज़ा आता है! वह अपने इर्द-गिर्द के सभी लोगों, उनके अन्ध-विश्वासों, बेबुनियाद घबराहटों से सामंजस्य स्थापित किये हुए है। इन लोगों के स्नायु हर वक्त तने रहते हैं, उनके दिमाग में एक ही विचार छाया है कि वे प्लेग के बारे में कम-से-कम बात करेंगे। फिर भी वे सारा वक्त इसी के बारे में बातें करते रहते हैं; ज़रा-सा सर दर्द होने पर वे आतंकित हो उठते हैं—वे जान गए हैं कि सर-दर्द प्लेग का प्रारम्भिक लक्षण है; और उनका थकान से चूर चिड़चिड़ा मिजाज जिसकी वजह से वे छोटी-छोटी भूलों पर भी बुरा मनाते हैं और अगर उनकी पतलून का एक भी बटन गुम जाता है तो उनकी आँखों में आँसू आ जाते हैं।

तारो अक्सर कोतार्द के साथ शाम को टहलने निकलता था। उसने बताया है किस तरह वे दोनों अँधेरा होने पर सड़कों पर खड़ी भीड़ में घुस, किस तरह सड़क के लैम्पों की चंचल रोशनी में हिलते हुए सफ़ेद और काले जनसमूह में कंधों-से-कंधे जोड़कर शामिल हो जाते थे और इन्सानों के रेवड़ के साथ-साथ मनोरजन के स्थानों में अपने को बहने देते थे, जहाँ लोगों के सामीप्य की गरमी प्लेग की सर्द साँस से बचने का साधन मालूम होती थी। कुछ महीने पहले सार्वजनिक स्थानों पर कोतार्द जिस विलासिता, प्रचुरता और उन्मादपूर्ण रात्रि-उत्सवों की कल्पना किया करता था—जो उसकी सामर्थ्य से बाहर थीं, अब शहर के सारे लोग उन्हीं की तलाश में थे। क़ीमतों के दिन-ब-दिन बढ़ने के बावजूद लोगों ने इतनी फ़ज़ूलखर्ची कभी नहीं की थी। लोगों की न्यूनतम ज़रूरतें अक्सर पूरी नहीं होती थीं, लेकिन अनावश्यक चीज़ों पर इससे पहले कभी इतना पैसा नहीं लुटाया गया था। फुरसत के सारे मनोरंजन सौ गुना बढ़ गए, हालाँकि अब बेकारी की वजह से लोग मनोरंजन की तलाश में रहते थे। कई बार तारो और कोतार्द कुछ मिनट तक प्रेमी जोड़ों में से किसी जोड़े का पीछा करते;

साधारण परिस्थितियों में ये युगल प्रेमी अपने प्रेमाकर्षण को दुनिया की नज़रों से छिपाने की कोशिश करते, लेकिन अब वे एक-दूसरे से सटकर सड़कों पर भीड़ में चलते थे। उनमें महान् प्रेमियों की आत्म-तन्मयता और सम्मोहन पैदा हो गया था। उन्हें अपने आसपास के लोगों की उपस्थिति का कोई एहसास न था। कोतार्द उन्हें वासना-भरी नज़रों से घूरता और कहता, "शाबाश प्यारो! तुम बहुत अच्छा काम कर रहे हो! इसे जारी रखो!" यहाँ तक कि उसकी आवाज़ भी बदल गई थी और पहले से ऊँची हो गई थी। जब तारो ये पंक्तियाँ लिख रहा था तो कोतार्द का व्यक्तित्व सर्वसाधारण की उत्तेजना के अनुकूल वातावरण में 'खिल' रहा था। कॉफ़ी-हाउसों की मेज़ों पर लोग अपने मौजीपन में बहुत ज्यादा बख्शीश छोड़ जाते थे, कोतार्द की आँखों के सामने ही अनेक प्रेम-सम्बन्ध स्थापित हो रहे थे।

लेकिन तारो को कोतार्द के दृष्टिकोण में ईर्ष्या और बदले की भावना कहीं नहीं दिखाई दी, "मैं इन सब अनुभवों में से गुज़र चुका हूँ।" कोतार्द के इस कथन में विजय की भावना की अपेक्षा दया की मात्रा ही अधिक थी। तारो ने लिखा, "कोतार्द इन लोगों को बहुत पसन्द करने लगा है जो शहर की दीवारों के भीतर आसमान के छोटे से टुकड़े-तले क़ैद हैं। मिसाल के लिए अगर उसे मौक़ा मिलता तो वह ज़रूर इन लोगों को समझाता कि आखिर स्थिति इतनी बुरी नहीं है। उसने मुझे कहा था, "तुम इन लोगों को यह कहता हुआ सुनते हो। प्लेग के बाद मैं यह करूँगा और वह करूँगा···वे लोग जहाँ हैं वहीं रहने की बजाय चिन्ता में घुले जा रहे हैं और उन्हें अपनी सुख-सुविधाओं का एहसास तक नहीं होता। मेरी ही मिसाल लो! क्या मैं कह सकता हूँ, 'गिरफ्तार होने के बाद मैं यह करूँगा और वह करूँगा···?' गिरफ्तारी अन्त नहीं बल्कि शुरुआत है। जबकि प्लेग··· जानते हो मैं क्या सोचता हूँ? ये लोग इसलिए क्षुब्ध हैं क्योंकि ये मुक्त हृदय से आनन्द नहीं मनाते। और मैं होश-हवास में बातें कर रहा हूँ··· ।"

तारो लिखता है, "हाँ, कोतार्द होश-हवास में बातें कर रहा है, उसे यहाँ के लोगों की ज़िन्दगियों की असंगति का अच्छी तरह पता था जिनके

मन में इन्सानों के सम्पर्क की तीव्र आकांक्षा थी लेकिन वे इस इच्छा के आगे झुक नहीं सकते थे, क्योंकि उनके मन का अविश्वास ही उन्हें दूसरों से अलग किये हुए था, क्योंकि इस बात को सब जानते हैं कि पड़ौसी पर विश्वास नहीं किया जा सकता; वह आपको बीमारी की छूत दे देगा और आपको पता ही नहीं चलेगा, आपकी क्षणिक भूल का फ़ायदा उठाकर वह आपको छूत देने से नहीं चूकेगा। अगर किसी ने कोतार्द की तरह ज़िन्दगी गुज़ारी है तो उसे हर आदमी जासूस दिखाई देता है—वे लोग भी जिनके प्रति वह आकर्षित होता है—उसकी यह प्रतिक्रिया आसानी से समझी जा सकती है। वे लोग जिन्हें हर वक्त डर बना रहता है कि कहीं असम्भावित रूप में ही प्लेग अपना सर्द हाथ उनके कन्धों पर न रख दे और जब वे अपने को मुबारकबाद देते हैं कि वे सही-सलामत हैं तो उसी वक्त प्लेग शायद उन पर धावा बोल देती है, ऐसे लोगों के प्रति मन में भाईचारे की भावना होना सम्भव है। जहाँ तक यह सम्भव है, कोतार्द आतंक के इस साम्राज्य में भी निश्चिन्त है। लेकिन मुझे शक है क्योंकि वह लोगों से पहले आतंक में से गुज़र चुका है, वह इस अनिश्चितता में हिस्सा नहीं बटा सकता, जो हर वक्त लोगों के मन पर छाई रहती है। सारी परिस्थितियों है। हम सब लोगों की तरह, जो अभी प्लेग से नहीं मरे, उसे पूरा एहसास है कि किसी भी क्षण उसकी आज़ादी और उसकी ज़िन्दगी उससे छिन सकती है। लेकिन चूँकि उसने लगातार भय में रहना सीख लिया है इसलिए वह इस बात को स्वाभाविक ही समझता है कि दूसरे लोगों की भी यही मनःस्थिति हो। या शायद इसे यों व्यक्त करना चाहिए; कोतार्द को जब अकेले ही डर का बोझ बरदाश्त करना पड़ता था उसकी अपेक्षा अब इन परिस्थितियों में वह डर को ज़्यादा आसानी से बरदाश्त कर सकता है। इस दृष्टि से वह गलती पर है इसलिए और लोगों की बजाय उसे समझना अधिक कठिन है। जो भी हो, इसी वजह से उसे ज़रूर समझना चाहिए।

नोट्स के अंत में तारो ने प्लेग-पीड़ित शहर के लोगों की, जिनमें कोतार्द भी शामिल था, विचित्र मानसिक स्थिति का चित्र खींचने के लिए एक कहानी दी है। इस कहानी में इस काल का सारा विक्षिप्त वातावरण फिर से सजीव

हो उठता है। इसीलिए कथाकार ने इसे इतना महत्त्व दिया है।

एक शाम को कोतार्द और तारो म्युनिसिपल थियेटर और ऑपेरा-हाउस में गये जहाँ ग्लक का ऑपेरा 'ऑर्फ़ियस' दिखाया जा रहा था। बहार के मौसम में एक टूरिंग ऑपेरा कम्पनी इस ऑपेरा को कुछ दिनों के लिए पेश करने के लिए ओरान आयी थी। इसी बीच प्लेग फैल गई और कम्पनी को वहीं रुकना पड़ा—उन्हें बहुत सी दिक्कतें पेश आईं, इसलिए उन्होंने ऑपेरा-हाउस के प्रबन्धकों के साथ एक समझौता कर लिया जिसके मुताबिक उन्हें अगली सूचना मिलने तक हफ्ते में एक दिन ऑपेरा खेलने के लिए कहा गया। इसलिए पिछले कई महीनों से हर शुक्रवार की शाम को हमारा ऑपेरा-हाउस ऑर्फ़ियस[1] और युरिडिस[2] की प्रार्थनाओं के संगीतमय क्रन्दन से गूँजता आ रहा था। फिर भी ऑपेरा की लोकप्रियता क़ायम रही और हर शुक्रवार को सारा हॉल भर जाता था। सबसे ऊँचे दामों की सीटों पर बैठकर कोतार्द और तारो नीचे स्टालों की तरफ़ देख सकते थे जो ओरान की सोसाइटी के प्रमुख लोगों से ठसाठस भरे थे। अपनी सीटों पर जाते वक्त वे जिस शालीनता से चल रहे थे, उसे देखकर कोतार्द और तारो को बड़ा मज़ा आया। जब ऑर्केस्ट्रा के वादक सावधानी से आकर अपनी जगहों पर बैठ रहे थे, तो ईवनिंग-ड्रेस पहने लोग एक कतार से दूसरी कतार में बड़ी अदा से अपने दोस्तों का अभिवादन करते हुए नज़र आते थे। स्टेज का अगला हिस्सा रोशनी में नहा उठता था। शिष्ट बातचीत की कोमल भिनभिनाहट में उनका आत्म-विश्वास लौट आता था जा उन्हें शहर की अँधेरी सड़कों पर चलते वक्त नहीं मिलता था। प्लेग से बचने के लिए ईवनिंग-ड्रेस एक तावीज़ का काम दे रही थी।

ऑपेरा के पहले अंक में सारा वक्त ऑर्फ़ियस अपनी खोई युरिडिस के लिए मधुर स्वर में विलाप करता रहा और यूनानी पोशाकें पहने कुछ स्त्रियाँ ऑर्फ़ियस की दुर्दशा पर सुरीले गीत गाकर टिप्पणियाँ करती रहीं। संगीत की हर तीसरी पंक्ति में प्रेम की उपासना की गई थी। श्रोताओं ने संयत

१., २. यूनानी पौराणिक गाथाओं के पात्र।

भाव से तालियाँ बजाकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। सिर्फ थोड़े-से लोगों ने ग़ौर किया कि दूसरे अंक के गीत में ऑर्फ़ियस ने गले में थर्राहट पैदा की थी जो शुरू के संगीत में नहीं थी और दूसरे अंक में पाताल के स्वामी[1] को अपने आँसुओं की शक्ति से प्रभावित करते वक्त ऑर्फ़ियस के अतिरंजित भावुकता व्यक्त की थी। उसने अपनी आवाज़ को कई बार झटके दिये थे जिससे हमारे नाट्यकला के पारंगत लोगों ने सोचा कि ऑर्फ़ियस अपने शब्दों के भावों को प्रकट करने में चतुराई से कोशिश कर रहा है हालाँकि उसकी अदायगी अतिरंजित थी।

तीसरे अंक में जाकर जब ऑर्फ़ियस और युरिडिस का लंबा दोगाना शुरू हुआ, ऐन उस मौक़े पर जब युरिडिस को ज़बरदस्ती उसके प्रेमी से अलग किया जा रहा था तो श्रोताओं में आश्चर्य से खलबली मच गई। लगता था कि गायक ऑर्केस्ट्रा के संकेत के इन्तज़ार में था, या स्टॉलो ने उसकी भावनाओं का समर्थन किया था। अचानक उसी क्षण ऑर्फ़ियस लड़-खड़ाते क़दमों से असंगत और हास्यास्पद भाव से स्टेज की अगली रोशनियों की तरफ़ बढ़ा। पुराने ढंग के चोग़े में से निकलकर उसकी बाँहें और टाँगें फैली हुई थीं। वह स्टेज के बीचों-बीच बने बाड़े में गिर पड़ा जहाँ नाटक का सामान वग़ैरह रखा जाता था। ऑर्फ़ियस का इस तरह गिरना हमेशा दक़ियानूसी मालूम होता था, लेकिन इस बार दर्शकों की नज़रों में यह बात और भी भयंकर और अर्थपूर्ण हो गई थी, क्योंकि इसी वक्त ऑर्केस्ट्रा ख़ामोश हो गया, दर्शक उठ खड़े हुए और हॉल से बाहर जाने लगे। शुरू में तो वे किसी प्रार्थना-गृह या किसी मृतक के कमरे में से निकलने वाले जन-समूह की तरह ख़ामोश थे। औरतों ने अपनी स्कर्टें ऊपर उठा ली थीं और वे सिर झुकाकर चल रही थीं। मर्द औरतों की कोहनियों को थामकर चल रहे थे ताकि वे ऊपर उठी हुई सीटों से न टकरा जाएँ। लेकिन धीरे-धीरे उनकी गति तेज़ होती गई, फुसफुसाहट शोर में बदल गई और अंत में भीड़ भगदड़ मचाती हुई दरवाज़ों से बाहर निकलने लगी। सब एक-दूसरे को धक्का देकर बाहर निकलने की कोशिश करने लगे रास्ता तंग हो गया।

१. प्लूटो—ऑर्फ़ियस की पत्नी युरिडिस को प्लूटो ने क़ैद कर लिया था।

और लोग बेतरतीब शक्ल में निराशापूर्ण कोलाहल मचाते हुए सड़क पर आ गए।

कोतार्द और तारो, जो अभी अपनी सीटों से उठकर खड़े ही हुए थे, सामने अपने ज़माने की ज़िन्दगी की एक नाटकीय तस्वीर देख रहे थे। स्टेज पर प्लेग ने एक अभिनेता को मूक बनाकर पछाड़ दिया था और स्टॉलों में विलासिता के खिलौने, लाल मख़मल की सीटों पर पड़े पंखे और लेस के शॉल, जिन्हें लोग वहीं छोड़ गए थे, बिलकुल निष्प्रयोजन मालूम हो रहे थे।

२

सितम्बर के शुरू में रेम्बर्त बड़ी मेहनत और ईमानदारी से रियो के साथ काम करता रहा। जिस दिन उसे लड़कों के स्कूल के बाहर गोन्ज़ेल्ज़ और दोनों छोकरों से मिलना था, उस दिन उसने सिर्फ़ दो घंटे की छुट्टी माँगी।

गोन्ज़ेल्ज़ ठीक वक्त पर निश्चित स्थान पर पहुँच गया था। जब वह रेम्बर्त से बातें कर रहा था तो उन्होंने देखा दोनों लड़के हँसते हुए उनकी तरफ़ आ रहे थे। उन्होंने कहा कि पिछले हफ्ते उन्हें कोई कामयाबी नहीं मिली थी, लेकिन कामयाबी की कोई उम्मीद भी नहीं थी। ख़ैर, इस हफ़्ते सन्तरी-चौकी पर उनकी ड्यूटी नहीं है। रेम्बर्त को अगले हफ़्ते तक सब्र करना चाहिए। वे फिर एक बार कोशिश करेंगे। रेम्बर्त ने कहा कि निश्चय ही ऐसे कामों में सब्र की ज़रूरत होती ही है। गोन्ज़ेल्ज़ ने सुझाव दिया कि वे सब अगले सोमवार को इसी वक्त फिर मिलें, और इस बार बेहतर होगा अगर रेम्बर्त मार्सेल और लुई के साथ रहे। "हम दोनों मुलाक़ात के लिए वक्त तय करेंगे। अगर मैं न आ सका तो तुम सीधे उनके घर चले जाना। मैं तुम्हें इनका पता दे दूँगा।" लेकिन मार्सेल या लुई ने कहा कि सबसे अच्छी बात होगी कि वह अपने 'दोस्त' को सीधा वहीं ले चलें, फिर उसे ढूँढ़ने में कोई दिक्कत नहीं होगी। अगर उसे एतराज़ न हो तो वह वहीं खाना भी खा सकता है। चारों जनों के लिए वहाँ काफ़ी खाना

मिल जाएगा। इस तरह से उसे 'सब बातों का अन्दाज़ भी लग जाएगा।' गोन्ज़ेल्ज़ ने भी कहा कि यह सुझाव बहुत अच्छा है। चारों जने बन्दरगाह की तरफ़ रवाना हुए।

मार्सेल और लुई घाटों से दूर चट्टानों के सामने वाले फाटक के पास रहते थे। उनका छोटा-सा मकान स्पेनिश शैली का था। सिटनियों पर शोख़ रंग किया गया था और कमरे ख़ाली और अँधेरे थे। लड़कों की माँ ने, जो स्पेनिश बुढ़िया थी और जिसके झुर्रियों वाले चेहरे पर मुस्कराहट थी, खाने की एक चीज़ परसी, जिसमें चावलों का इस्तेमाल किया गया था। गोन्ज़ेल्ज़ ने आश्चर्य प्रकट किया, क्योंकि कुछ दिनों से शहर में चावल नहीं मिल रहा था। मार्सेल ने बताया, "हम फाटक पर यह सौदा तय कर लेते हैं।" रेम्बर्त ने पेट भरकर खाना खाया और शराब पी। गोन्ज़ेल्ज़ ने उससे कहा कि वह बड़ा ही शानदार आदमी है। दरअसल पत्रकार अगले हफ़्ते के बारे में सोच रहा था।

पता चला कि अब उसे पंद्रह दिन रुकना पड़ेगा क्योंकि संतरियों की ड्यूटी एक हफ्ते की बजाय दो हफ्ते कर दी गई है ताकि बार-बार ड्यूटियाँ बदलनी न पड़ें। उस पखवाड़े में रेम्बर्त ने अथक परिश्रम किया और सुबह से लेकर रात तक जैसे आँख मूँदकर अपनी शक्ति की हर बूँद ख़र्च कर रहा था। वह रात को बहुत देर से सोता था और उसे गहरी नींद आती थी। आलस की ज़िन्दगी गुज़ारने के बाद फ़ौरन उसे लगातार काम करना पड़ रहा था जिससे उसका मन क़रीब-क़रीब विचार-शून्य हो गया था और शरीर अशक्त हो गया था। वह अपनी भागने की योजना के बारे में बहुत कम बात करता था। यहाँ पर सिर्फ़ एक घटना नोट करने योग्य है। जब उसने डॉक्टर के सामने क़बूल किया था कि पहली बार उसे सचमुच शराब का नशा चढ़ा था—यह एक दिन पहले शाम की बात है—शराबख़ाने से बाहर निकलकर उसे ऐसा महसूस हुआ कि उसके पेट के निचले भाग में सूजन है और बाँहें हिलाने पर उसकी बग़लों में दर्द हो रहा है। उसने सोचा, अब मेरी शामत आ गई है। उसके मन में जो पहली प्रतिक्रिया हुई वह बड़ी असंगत और हास्यास्पद थी—जैसा कि उसने रियो के सामने

साफ़-साफ़ कबूल किया था—उसके मन में विचार उठा कि वह भागता हुआ अपर टाउन में जाए और उस छोटे चौक पर पहुँचकर, जहाँ से अगर समुद्र नहीं तो खुले आकाश का काफ़ी बड़ा टुकड़ा नज़र आता था, शहर की दीवारों के पार ज़ोर से चिल्लाकर अपनी बीवी को पुकारे। घर लौटकर जब उसने देखा कि उसके शरीर पर प्लेग का कोई भी लक्षण नहीं है तो उसे अपनी प्रतिक्रिया पर बहुत शरम आई। लेकिन रियो ने कहा कि वह जानता है कि कभी-कभी आदमी के मन में इस तरह की ख्वाहिश उठ सकती है। "ऐसी बात मन में उठना बहुत आसान है।"

जब रेम्बर्त रियो को गुड नाइट कहकर चलने लगा तो रियो ने अचानक कहा, "आज सुबह मोसिये ओथों तुम्हारे बारे में बातें कर रहे थे। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मैं तुम्हें जानता हूँ ? मैंने कहा 'हाँ'।" उन्होंने कहा, "अगर वह आपका दोस्त है तो उससे कहिए कि स्मग्लर्ज़ के साथ न मिला-जुला करे। ऐसी बात फ़ौरन नज़र में आ जाती है।"

"इसका क्या मतलब है ?"

"इसका मतलब यह है कि तुमने जो करना है जल्दी कर डालो।"

"शुक्रिया," कहकर रेम्बर्त ने डॉक्टर से हाथ मिलाया।

दरवाज़े पर पहुँचकर रेम्बर्त ने सहसा पीछे मुड़कर देखा। जब से प्लेग शुरू हुई थी, रियो ने पहली बार रेम्बर्त को मुस्कराते हुए देखा था।

"लेकिन तुम मेरा जाना रोक क्यों नहीं देते ? तुम आसानी से यह कर सकते हो।"

रियो ने अपनी आदत के मुताबिक़ सावधानी से रेम्बर्त से हाथ मिलाया और कहा कि वह किसी के मामले में दखल नहीं देना चाहता। रेम्बर्त ने खुशी का रास्ता चुना है, इसलिए उसे रोकने के लिए रियो के पास कोई दलील नहीं है। व्यक्तिगत रूप से वह यह फ़ैसला करने में असमर्थ है कि रेम्बर्त ने जो रास्ता चुना है वह सही है या गलत है।

"तो फिर तुम मुझसे जल्दी करने के लिए क्यों कह रह हो ?"

अब रियो की मुस्कराने की बारी थी।

"इसीलिए क्योंकि मैं भी तुम्हारी खुशी में अपना फर्ज़ अदा करना

चाहता हूँ ।"

अगले दिन दोनों अधिकांश वक्त एक साथ काम करते रहे, लेकिन दोनों में से किसी ने भी इस विषय पर बात न की। इतवार को रेम्बर्त छोटे स्पेनिश मकान में रहने के लिए चला गया। उसे बैठक में सोने के लिए चारपाई दी गई। दोनों भाई खाना खाने के लिए घर नहीं आते थे और उसे कहा गया था कि वह घर से बहुत कम बाहर निकले। वह सारा वक्त अकेला रहता था। कभी-कभी उन लड़कों की माँ से मुलाक़ात हो जाती थी। बुढ़िया का सूखा शरीर गठरी की तरह दिखाई देता था। वह हमेशा काले रंग की पोशाक पहनती थी और हर वक्त काम में व्यस्त रहती थी। उसके बादामी चेहरे पर झुर्रियाँ-ही-झुर्रियाँ थीं और बाल एकदम सफ़ेद थे। वह ज़्यादा बातें नहीं करती थी, लेकिन रेम्बर्त को देखकर वह स्नेह से मुस्करा देती थी।

एक बार उसने रेम्बर्त से पूछा, "क्या उसे यह डर नहीं कि कहीं उसकी बीवी को भी प्लेग की छूत लग सकती है?" रेम्बर्त ने जवाब दिया कि छूत लगने का खतरा तो ज़रूर है लेकिन बहुत कम। अगर वह ओरान में ही रहा, तो हो सकता है कि वे दोनों ज़िन्दगी में कभी एक-दूसरे से न मिल सकें।

बुढ़िया मुस्कराई। उसने पूछा, "क्या वह अच्छी है?"

"बहुत अच्छी।"

"खूबसूरत है?"

"मेरे ख़याल में तो खूबसूरत है।"

"आह! तभी तुम इतने परेशान हो," बुढ़िया ने सर हिलाकर कहा।

वह हर रोज़ सुबह प्रार्थना के लिए चर्च जाती थी। एक बार सुबह प्रार्थना से लौटकर उसने रेम्बर्त से पूछा, "तुम खुदा में यक़ीन नहीं करते?"

जब रेम्बर्त ने क़बूल किया कि वह ईश्वर को नहीं मानता तो उसने फिर कहा, "तभी तुम इतने परेशान हो।"

इसके बाद बुढ़िया ने कहा, "तुम ठीक सोचते हो। तुम्हें अपनी बीवी

के पास लौट जाना चाहिए वरना तुम्हारे पास क्या बच रहेगा ?"

रेम्बर्त अपना अधिकांश समय कमरे में चक्कर काटने में, रोगन की हुई दीवारों को शून्य दृष्टि से देखने में और पंखों को छूने में लगाता था जो उस घर की एकमात्र सजावट थे या फिर मेज़पोश के किनारों पर लगे ऊन के गेंदनुमा फुँदनों को गिनता रहता था। शाम के वक्त लड़के घर लौटते थे। वे इतना ही कहते थे कि अभी उचित अवसर नहीं आया। खाने के बाद मार्सेल गिटार बजाता था और सब जने सौंफ़ की खुशबू वाली शराब पाते थे। रेम्बर्त गहरे सोच में डूबा रहता था।

बुधवार को मार्सेल ने कहा, "कल रात के लिएँ मामला तय हुआ है, आधी रात को। देखना, वक्त पर तैयार रहना।" उसने बताया कि उसके साथ जिन दो संतरियों की ड्यूटी थी उनमें से एक को प्लेग हो गई है और दूसरे आदमी पर, जो उसी कमरे में सोता था, निगरानी रखी जा रही है। इसीलिए दो या तीन दिन तक मार्सेल और लुई चौकी पर अकेले ही रहेंगे। रात को वे तैयारियों को अन्तिम रूप दे चुके हैं, रेम्बर्त उन पर पूरा भरोसा कर सकता है। रेम्बर्त ने उन्हें धन्यवाद दिया।

"अब तो खुश हो ?" बुढ़िया ने पूछा।

रेम्बर्त ने कहा, "हाँ"। लेकिन वह किसी दूसरे सोच में पड़ा था।

अगले दिन बड़ी गरमी थी, धूल छाई हुई थी और गरमी की धुंध से सूरज भी ढक गया था। प्लेग से मरने वालों की संख्या बढ़ गई थी। लेकिन स्पेनिश बुढ़िया पहले की तरह शान्त रही। उसने कहा, "दुनिया में इतना ज़्यादा पाप है, अगर लोग मरेंगे नहीं तो और क्या होगा ?"

मार्सेल और लुई की तरह रेम्बर्त भी कमर तक नंगा था। फिर भी उसके कंधों और सीने पर से पसीना बह रहा था। बन्द कमरे की मद्धिम रोशनी में उनके धड़ पॉलिश की हुई महोगनी लकड़ी की तरह चमक रहे थे। रेम्बर्त पिंजरे में बन्द जानवर की तरह खामोशी से कमरे में चक्कर काट रहा था। अचानक शाम के चार बजे उसने कहा कि वह बाहर जा रहा है।

"भूलना मत। ठीक आधी रात वहाँ पहुँच जाना। सारे इन्तज़ाम कर लिये गए हैं।" मार्सेल ने कहा।

रेम्बर्त डॉक्टर के फ्लैट पर गया। रियो की माँ ने उसे बताया कि डॉक्टर अपर टाउन के अस्पताल में मिल सकता है। पहले की तरह आज भी फाटकों के इर्द-गिर्द लोगों की भीड़ जमा थी। रह-रहकर एक पुलिस सार्जेण्ट, जिसकी आँखें बाहर की तरफ़ निकली हुई थीं, चिल्ला उठता था, "आगे चलो !" भीड़ आगे बढ़ती थी लेकिन हमेशा एक दायरे में। "यहाँ भटकने का कोई फ़ायदा नहीं। तुम लोग घर क्यों नहीं जाते ?" सार्जेण्ट का कोट पसीने से तर हो गया था। लोग जानते थे कि वहाँ रहने से 'कोई फ़ायदा नहीं।' लेकिन झुलसा देने वाली गरमी के बावजूद वे वहीं खड़े रहे। रेम्बर्त ने सार्जेण्ट को अपना 'पास' दिखाया। सार्जेण्ट ने कहा कि वह तारो के दफ्तर में चला जाए। उसके दफ्तर का दरवाज़ा सहन में खुलता था। वह फ़ादर पैनेलो के नज़दीक से गुज़रा जो दफ्तर से बाहर निकल रहे थे।

तारो काले रंग की लकड़ी के डेस्क के आगे बैठा था। उसने कमीज़ की आस्तीनें ऊपर चढ़ा रखी थीं और वह रूमाल से कोहनी के मोड़ का पसीना पोंछ रहा था। दफ्तर के छोटे कमरे में से, जिसमें सफ़ेद रोगन किया गया था, दवाइयों और सीले कपड़ों की बू आ रही थी।

"तुम अभी तक यहीं हो ?" तारो ने आश्चर्य प्रकट किया।

"हाँ, मैं रियो से एक बात करना चाहता हूँ।"

"वह वार्ड में है, देखो। क्या तुम उससे मिले बग़ैर अपना काम नहीं कर सकते ?"

"क्यों ?"

"डॉक्टर ज़रूरत से ज़्यादा मेहनत कर रहा है। मैं भरसक उसे मिलने वालों से बचाता हूँ।"

रेम्बर्त ने ग़ौर से तारो की तरफ़ देखा। वह पहले से दुबला हो गया था और थकान से उसकी आँखें और चेहरा निस्तेज हो गए थे। उसके चौड़े कन्धे नीचे ढुलक गए थे। दरवाज़े पर एक दस्तक सुनाई दी और एक

सहायक चेहरे पर सफ़ेद नक़ाब लगाए भीतर आया। उसने तारो के डेस्क पर कार्डों की एक छोटी-सी ढेरी रख दी। नक़ाब में से उसकी आवाज़ मोटी होकर सुनाई दे रही थी। उसने कहा, "छः" और वह बाहर चला गया। तारो ने पत्रकार की तरफ़ देखा और कार्डों को पंखे की तरह फैलाकर उसे दिखाया।

"साफ़-सुथरे हैं न ? ये मौतें हैं, कल रात के शिकार।" फिर माथे पर त्यौरियाँ डालकर उसने कार्डों को सरकाकर आपस में मिला दिया। "हमारे लिए एक ही काम बचा है—मुनीमगीरी !"

मेज़ का सहारा लेकर तारो धीरे-धीरे खड़ा हो गया।

"तो क्या तुम जल्द ही जा रहे हो ?"

"आज आधी रात को।"

तारो ने कहा कि उसे यह सुनकर बड़ी ख़ुशी हुई है। उसने रेम्बर्त को सलाह दी कि वह अपनी देखभाल करे।

"क्या तुमने यह बात सच्चे दिल से कही है ?"

तारो ने अपने कन्धे सिकोड़ लिए।

"मेरी उम्र में आकर इन्सान को सच्चा होना ही पड़ता है। झूठ बोलने में बहुत मेहनत पड़ती है।"

"माफ़ करना तारो, लेकिन मेरे मन में डॉक्टर से मिलने की बहुत ख़्वाहिश है।" पत्रकार ने कहा।

"मैं जानता हूँ। मुझसे भी ज़्यादा उसमें इन्सान का दिल है। अच्छी बात है, आओ।"

"दरअसल इसलिए नहीं···" रेम्बर्त ने शब्दों के अभाव में, वाक्य को अधूरा छोड़ दिया।

तारो ने उसकी तरफ़ देखा और अप्रत्याशित रूप से उसके चेहरे पर मुस्कराहट फूट पड़ी।

वे एक तंग बरामदे में से गुज़रे। दीवारों पर हल्के हरे रंग की सफ़ेदी की गई थी और मछलियों के हौज़ की तरह वहाँ की रोशनी नीले रंग की थी। बरामदे के आख़िर के कमरे में जाने से पहले, जहाँ दो पल्ले वाले शीशों

के दरवाज़े में से हिलती-डुलती छायाकृतियाँ दिखाई दे रही थीं, तारो रेम्बर्त को एक छोटे-से कमरे में ले गया, जिसकी सारी दीवारें अलमारियों से ढकी थीं। एक अलमारी खोलकर उसने कीटाणुनाशक मशीन से, मलमल में लिपटे दो रुई के नक़ाब निकाले, और उनमें से एक रेम्बर्त को दिया और कहा कि वह उसे मुँह पर बाँध ले।

पत्रकार ने पूछा—क्या सचमुच नक़ाब बाँधने से कोई फायदा होगा? तारो ने कहा, "नहीं," लेकिन इससे दूसरों में विश्वास पैदा होता है।

शीशे का दरवाज़ा खोलकर वे एक बड़े-से कमरे में दाख़िल हुए, जिसकी सारी खिड़कियाँ गरमी के बावजूद भी बन्द थीं। छत पर पंखे चल रहे थे और वे मटमैले बिस्तरों की दो लम्बी कतारों पर गरम और बासी हवा को बिलो रहे थे। हर तरफ़ से लोग दबी ज़बान में या चीखकर कराह रहे थे। इन आवाज़ों ने मिलकर एक नीरस मर्सिये-जैसे स्थायी स्वर पैदा कर दिए थे। सलाखों वाली ऊँची खिड़कियों में से तेज़ रोशनी कमरे में आ रही थी, जिसमें सफ़ेद पोशाक वाले कुछ आदमी धीरे-धीरे हर पलंग के पास जा रहे थे। वार्ड की भयंकर गरमी से रेम्बर्त का जी घबरा गया और वह बड़ी मुश्किल से रियो को पहचान सका। रियो एक कराहती हुई आकृति के ऊपर झुका था और मरीज़ के पेट में नश्तर लगा रहा था। दो नर्सों ने मरीज़ की टाँगों को पकड़कर अलग कर दिया था। फौरन रियो सीधा खड़ा हो गया। उसने अपने औज़ार एक ट्रे में डाल दिए जिसे एक सहायक उठाये हुए था और वह कुछ क्षण तक बिना हिले-डुले मरीज़ की तरफ़ देखता रहा, जिसके ज़ख़्मों पर अब पट्टी बाँधी जा रही थी।

"कोई ख़बर है?" उसने तारो से पूछा जो आकर उसके पास खड़ा हो गया था।

"क्वारंटीन केन्द्र में फ़ादर पैनेलो रेम्बर्त की जगह पर आने के लिए राज़ी हो गए हैं। वे पहले भी बहुत मुफ़ीद काम कर चुके हैं। रेम्बर्त जा रहा है, इसलिए हमें तीसरे नम्बर के ग्रुप को नये सिरे से संगठित करना होगा।"

रियो ने सर हिलाया।

"कास्तेल ने प्लेग के टीकों की पहली शीशियाँ तैयार कर ली हैं। वह इन्हें फ़ौरन आज़माए जाने के पक्ष में है।"

"गुड। यह तो अच्छी ख़बर है।" रियो ने कहा।

"और रेम्बर्त यहाँ आया है।"

रियो ने अपने आसपास देखा। जब उसकी दृष्टि पत्रकार पर पड़ी तो नकाब के ऊपर उसकी आँखें सिकुड़ गईं।

"तुम यहाँ किसलिए आये हो ? तुम्हें तो कहीं और होना चाहिए था ?" रियो ने कहा। तारो ने बताया कि 'वह मामला' आधी रात के लिए तय हुआ है। इसके साथ ही रेम्बर्त ने अपनी बात जोड़ी "फ़िलहाल यही स्कीम है।"

जब भी इन लोगों में से कोई नकाब में से बात करता था तो मलमल फूलकर होठों के ऊपर गीली हो जाती थी। इस बात से बातचीत में एक प्रकार की कृत्रिमता आ गई थी, लगता था जैसे तीन बुत आपस में बातें कर रहे हों।

"मैं तुमसे एक बात करना चाहूँगा," रेम्बर्त ने कहा।

"अच्छी बात है। मैं अभी घर जा रहा हूँ। तारो के दफ़्तर में मेरा इन्तज़ार करो।"

करीब एक मिनट बाद रेम्बर्त और रियो कार की पिछली सीट पर बैठे हुए थे।

तारो ड्राइव कर रहा था, गीयर लगाते वक्त उसने आसपास देखा।

"पेट्रोल ख़त्म हो रहा है। कल हमें फ़ौजियों की तरह कतार बाँधकर चलना पड़ेगा।" तारो ने कहा।

रेम्बर्त बोला, "डॉक्टर, मैं शहर छोड़कर नहीं जा रहा। मैं तुम्हारे पास रहना चाहता हूँ।"

तारो बिना हिले-डुले कार चलाता रहा। लगता था कि रियो अपनी थकान से छुटकारा पाने में असमर्थ था।

"और—'उसका' क्या होगा ?" रियो की आवाज़ बड़ी मुश्किल से सुनाई दे रही थी।

रेम्बर्त ने जवाब दिया कि उसने सारे मामले पर बड़ी गम्भीरता से सोच-विचार किया है। उसके विचार तो नहीं बदले लेकिन अगर वह चला गया तो उसे अपने पर शरम आएगी, जिसकी वजह से अपनी प्रियतमा के साथ उसका सम्बन्ध और भी पेचीदा हो जाएगा।

इस बार और अधिक उत्साह दिखाते हुए रियो ने कहा कि यह निरी बकवास है। अगर कोई अपने सुख को ज़्यादा पसन्द करता है तो इसमें उसे शरम नहीं महसूस करनी चाहिए।

"यह तो सही है," रेम्बर्त ने जवाब दिया, "लेकिन जब सब दुखी हों तो सिर्फ़ अपना सुख हासिल करने में शरम महसूस हो सकती है।"

तारो ने, जो अभी तक ख़ामोश रहा था, पीछे मुड़कर देखे बग़ैर कहा कि अगर रेम्बर्त दूसरे लोगों के दुःख में हिस्सा बटाने की इच्छा रखता है तो उसके पास फिर अपने सुख के लिए कोई समय नहीं बचेगा। इसलिए दोनों रास्तों में से उसे एक रास्ता चुनना ही पड़ेगा।

"बात यह नहीं है," रेम्बर्त ने फिर कहा। "अब तक मैं हमेशा अपने को इस शहर में एक अजनबी-सा महसूस करता था और मुझे ऐसा लगता था कि आप लोगों से मेरा कोई रिश्ता नहीं है। लेकिन अब मैंने अपनी आँखों से जो कुछ देखा है, इसके बाद मैं जान गया हूँ कि मैं चाहूँ या न चाहूँ मैं यहीं का हूँ। प्लेग से लड़ना सबका फ़र्ज़ है।" जब दोनों जने खामोश रहे तो रेम्बर्त चिढ़-सा गया। "लेकिन मेरी तरह आप लोग भी इस बात को जानते हैं। डैम इट! उस अस्पताल में आखिर आप लोग क्या कर रहे हैं? क्या आप लोगों ने पूरी तरह से अपना रास्ता चुन लिया है और खुशी को ठुकरा दिया है?"

रियो और तारो ने अब भी कुछ न कहा। डॉक्टर के घर के नज़दीक पहुँचने तक खामोशी छाई रही। रेम्बर्त ने फिर अपना सवाल ज़ोरदार आवाज़ में दुहराया। रियो ने बड़ी मुश्किल से अपने शरीर को गद्दी पर से उठाया और रेम्बर्त की तरफ मुड़कर कहा।

"माफ़ करना रेम्बर्त—सचमुच मैं नहीं जानता क्यों···लेकिन अगर तुम हम लोगों के पास रुकना चाहते हो तो ज़रूर रुको।" कार के मुड़ने

की वजह से क्षण-भर के लिए डॉक्टर की बात टूट गई, फिर सीधा अपने सामने देखते हुए रियो बोला, "क्योंकि आदमी जिस चीज़ से प्यार करता है उससे कभी पीठ नहीं मोड़नी चाहिए, किसी कीमत पर भी नहीं। लेकिन मैं भी तो यही कर रहा हूँ—क्यों कर रहा हूँ, यह नहीं जानता।" वह फिर गद्दी में धँस गया। उसने क्लान्त स्वर में कहा, "ऐसी ही परिस्थिति है। और कोई चारा नहीं। इसलिए इस हकीकत को सामने रखकर हमें नतीजे निकालने चाहिएँ।"

"कौनसे नतीजे ?"

रियो ने कहा, "आह ! आदमी इलाज करने के साथ-साथ 'जान' नहीं सकता। इसलिए हमें जल्द-से-जल्द इलाज करना चाहिए। यह ज़्यादा जरूरी बात है।"

आधी रात के वक्त तारो और रियो रेम्बर्त को एक इलाके का नक्शा दे रहे थे जिस पर रेम्बर्त को निगरानी रखने का काम सौंपा गया था।

तारो ने अपनी घड़ी की तरफ़ देखा। फिर रेम्बर्त की नज़रों से उसकी नज़रें टकराईं।

"क्या तुमने उन लोगों को ख़बर कर दी है ?" तारो ने पूछा।

रेम्बर्त ने मुँह दूसरी तरफ़ फेर लिया, और बड़ी कठिनाई से उसके मुँह से ये शब्द निकले, "आप लोगों के पास आने से पहले मैंने उन्हें एक पुर्ज़ा लिखकर भिजवा दिया था।"

२

अक्तूबर के अंत में प्लेग से लड़ने के लिए कास्तेल की सीरम पहली बार आज़माई गई। एक माने में यह रियो का आख़िरी दाँव था। अगर इसमें असफलता मिलती तो डॉक्टर को यकीन था कि सारा शहर महामारी की दया पर निर्भर करेगा। या तो अनिश्चित काल के लिए प्लेग अपनी तबाही जारी रखेगी या अचानक अपने-आप ही ख़त्म हो जाएगी।

जिस दिन कास्तेल रियो से मिलने आया था उससे एक दिन पहले मोसिये ओथों का बेटा बीमार पड़ गया था और परिवार के सब लोगों को क्वारंटीन में नज़रबन्द कर दिया गया था। इस तरह बच्चे की माँ ने, जो अभी क्वारंटीन वार्ड से छूटकर आयी थी, अपने-आपको फिर परिवार से अलग पाया। सरकारी कायदों की पाबन्दी करते हुए मजिस्ट्रेट ने ज्योंही बच्चे में प्लेग के लक्षण देखे त्यों ही उसने डॉक्टर रियो को बुलवा भेजा। जब रियो कमरे में दाखिल हुआ तो बच्चे के माँ-बाप मरीज़ के सिरहाने खड़े थे। बच्चा सख्त कमज़ोरी की हालत में था और बिना रोए-धोए उसने डॉक्टर को अपनी जाँच करने दी। जब रियो ने आँखें ऊपर उठाईं तो उसने देखा मजिस्ट्रेट की नज़रें उसी पर गड़ी थीं। उसके पीछे बच्चे की माँ का पीला चेहरा नज़र आया। वह मुँह पर एक रूमाल लगाए खड़ी थी। उसकी बड़ी-बड़ी आँखें, जो आशंका से और भी फैल गई थीं, डॉक्टर की हर गति-विधि का पीछा कर रही थीं।

"इसे छूत 'लग' गई है न ?" मजिस्ट्रेट ने बेसुरी आवाज़ में पूछा।

"हाँ" कहकर रियो फिर बच्चे की तरफ़ देखने लगा।

माँ की आँखें और भी ज़्यादा फैल गईं, लेकिन उसने अब भी कुछ न कहा। मोसिये ओथों भी कुछ देर तक खामोश रहे, फिर उन्होंने पहले से भी धीमी आवाज़ में कहा, "अच्छा डॉक्टर, हमें जो कहा जाएगा हम वही करेंगे।"

रियो मदाम ओथों की तरफ़ नहीं देखना चाहता था जो अभी भी मुँह पर रूमाल लगाए खड़ी थीं।

रियो ने सकपकाकर संकोच से कहा, "अगर आप मुझे अपना फ़ोन इस्तेमाल करने दें तो ज़्यादा देर नहीं लगेगी।"

मजिस्ट्रेट ने कहा कि वह डॉक्टर को टेलीफ़ोन के पास ले चलेगा। लेकिन जाने से पहले डॉक्टर ने मदाम ओथों की तरफ़ मुड़कर देखा।

"मुझे सख्त अफ़सोस है, लेकिन आपको अपना सामान तैयार करना पड़ेगा। आप जानती ही हैं कि कैसी परिस्थिति है।"

मदाम ओथों घबरायी हुई दिखाई दे रही थीं। वे फ़र्श की तरफ़ ताक रही थीं।

धीरे से अपना सर हिलाकर वे बड़बड़ाई, "मैं समझ गई। फ़ौरन तैयारी शुरू करती हूँ।"

जाने से पहले रियो ने किसी आकस्मिक आवेग से प्रेरित होकर ओथों-दम्पति से पूछा कि क्या वह उनके लिए कुछ कर सकता है? बच्चे की माँ ख़ामोशी से उसकी तरफ़ देखती रही और अब मजिस्ट्रेट ने रियो की नज़रों से अपनी नज़रें हटा लीं।

"नहीं" कहकर मजिस्ट्रेट ने बड़ी मुश्किल से अपना थूक निगलकर कहा, "लेकिन···मेरे बेटे को बचा लो।"

प्लेग के शुरू के दिनों में सिर्फ़ औपचारिकता के लिए लोगों को क्वारंटीन में रखा जाता था, लेकिन रियो और रेम्बर्त ने इसका पुनर्संगठन किया था और वे इस मामले में बड़ी सख्ती से पेश आ रहे थे। वे मरीज़ के परिवार के लोगों को एक-दूसरे से अलग रखने का खास तौर से ख़याल कर रहे थे, ताकि परिवार के एक आदमी को अगर छूत लग भी जाए तो छूत को और आगे न फैलने दिया जाए। रियो ने यह बात मजिस्ट्रेट को समझाई, जिसने इस कार्यवाही का समर्थन किया। लेकिन पति-पत्नी ने एक-दूसरे की तरफ़ ऐसी निगाहों से देखा जिससे रियो के सामने यह स्पष्ट हो गया कि वे दोनों इस तरह ज़बरदस्ती अलग कर दिए जाने को कितना महसूस करते हैं। मदाम ओथों और उनकी नन्हीं बच्ची को क्वारंटीन अस्पताल में रेम्बर्त की देखभाल में कमरे दिये जा सकते थे। लेकिन मजिस्ट्रेट के लिए प्लेग के नज़रबन्दों के कैम्प के सिवा और कहीं जगह नहीं मिल सकती थी। अधिकारी आजकल सड़क-विभाग द्वारा सप्लाई किये गए तम्बुओं से म्युनिसिपैलिटी के खेल के मैदान में यह कैंप बना रहे थे। जब रियो ने मजिस्ट्रेट से क्षमा माँगी कि वह उसे इससे अच्छी जगह नहीं दिला सकता तो मोसिये ओथों ने जवाब दिया कि सब लोगों के लिए एक ही नियम लागू होता है, इसलिए उसका पालन करना ही उचित है।

लड़के का सहायक अस्पताल के एक छोटे कमरे में रखा गया जो प्लेग

से पहले छोटे बच्चों की पढ़ाई का कमरा था। बीस घंटे बाद रियो को विश्वास हो गया कि लड़के के बचने की कोई उम्मीद नहीं। छूत लगातार बढ़ रही थी और लड़के का शरीर बीमारी से लड़ने की कोई कोशिश नहीं कर रहा था। बच्चे की छोटी-छोटी बाँहों और टाँगों के जोड़ों में छोटी-छोटी गिल्टियाँ, जो अभी पूरी तरह से नहीं उभरी थीं, चिपकी हुई थीं। साफ़ ज़ाहिर था कि इस लड़ाई में प्लेग की जीत होने वाली थी। इन परिस्थितियों में लड़के पर कास्तेल की सीरम आज़माने के विचार से रियो की अन्तरात्मा को बिलकुल नहीं धिक्कारा। उसी रात खाने के बाद बच्चे को टीका लगाया गया, इसमें काफ़ी देर लगी, लेकिन उसका रत्ती-भर फ़ायदा न हुआ। अगले दिन तड़के ही वे इस टीके का असर देखने के लिए बच्चे के पलंग के गिर्द जमा हुए—इसी नतीजे पर सब-कुछ निर्भर करता था।

बच्चे का शैथिल्य कुछ कम हो गया था और वह बिस्तर पर छटपटाता हुआ करवटें बदल रहा था। तड़के चार बजे से डॉक्टर, कास्तेल और तारो बच्चे के सिरहाने बैठे बीमारी के बढ़ने और घटने की हर अवस्था को नोट कर रहे थे। तारो का भरकम शरीर पलंग के सिरहाने झुका हुआ था, और पायताने के पास एक कुरसी पर बैठा कास्तेल पुराने चमड़े की जिल्द में बँधी एक किताब पढ़ रहा था। रियो उसके पास खड़ा था। जब क्लास-रूम में रोशनी बढ़ गई तो एक-एक करके अस्पताल के और लोग भी जमा होने लगे। सबसे पहले फ़ादर पैनेलो आये थे और पलंग के सामने की दीवार का सहारा लेकर खड़े थे। उनका चेहरा शोक से खिंचा हुआ था, और कई दिनों की थकान जमा हो जाने से उनके विशाल माथे पर झुर्रियाँ पड़ गई थीं। इस बीच उन्होंने क्षण-भर के लिए भी अपने को आराम नहीं करने दिया था। इसके बाद ग्रान्द आया। सात बजे थे और ग्रान्द की साँस फूल रही थी। इसके लिए उसने माफ़ी माँगी। वह सिर्फ़ कुछ क्षणों के लिए वहाँ रुक सकता था। उसने पूछा—टीके का कोई फ़ायदा नज़र आया या नहीं? बिना कुछ कहे रियो ने बच्चे की तरफ़ इशारा किया। बच्चे की आँखें बन्द थीं, दाँत भिंचे हुए थे, तकलीफ़ से उसका चेहरा ऐंठ गया था और वह तकिये पर बार-बार सर घुमा रहा था। जब कमरे में कुछ ज्यादा रोशनी हो गई और

दूर कोने में टँगे ब्लैकबोर्ड पर चॉक से अभी तक लिखा समीकरण का सवाल दिखाई देने लगा, तो उसी वक्त रेम्बर्त कमरे में दाखिल हुआ। साथ वाले पलंग के पायताने के पास खड़े होकर उसने जेब से सिगरेटों का पैकेट निकाला, लेकिन बच्चे की तरफ़ नज़र जाते ही उसने पैकेट फिर जेब में रख लिया।

अपनी कुरसी पर बैठे-बैठे कास्तेल ने चश्मे में से रियो को देखा।

"बच्चे के बाप की कोई ख़बर है?"

"नहीं, वह नज़रबन्द कैम्प में है।"

डॉक्टर के हाथ पलंग के डंडे को कसकर पकड़े हुए थे और उसकी नज़रें नन्हे, तड़पते हुए शरीर पर लगी थीं। अचानक बच्चे का शरीर अकड़ गया और कमर कुछ ढीली पड़ गई, धीरे-धीरे बाँहें और टाँगें अंग्रेज़ी के एक्स अक्षर की तरह फैल गईं। फ़ौजी कंबल से ढके शरीर से सीली ऊन और बासे पसीने की बू आई। लड़के ने फिर दाँत भींच लिए। इसके बाद धीरे-धीरे उसका शरीर ढीला पड़ने लगा, उसकी बाँहें और टाँगें फिर पलंग के बीचों-बीच आ गईं। वह खामोश और निश्चल था, उसकी आँखें अभी भी बन्द थीं और साँस जैसे तेज़ हो गई थी। रियो ने तारो की तरफ देखा, तारो ने फौरन अपनी नज़रें नीची कर लीं। वे पहले भी बच्चों को मरता हुआ देख चुके थे—कई महीनों से मौत बिना किसी पक्षपात के निर्ममता दिखाती आई थी, लेकिन उन लोगों ने कभी किसी बच्चे की यंत्रणा को इस तरह हर मिनट बाद नहीं देखा था जिस तरह वे आज लड़के से देखते आ रहे थे। यह कहने की ज़रूरत नहीं कि प्लेग के इन मासूम शिकारों की पीड़ा उन्हें हमेशा अपने सही रूप में ही दिखाई देती थी। यह बड़ी भयंकर और घिनौनी चीज़ थी। लेकिन अभी तक वे उसके घिनौनेपन को अमूर्त रूप में देखते आए थे। उन्होंने कभी इतनी देर तक किसी मासूम बच्चे को मौत की यंत्रणा में छटपटाते हुए नहीं देखा था।

और उसी वक्त बच्चे का शरीर अचानक ऐंठ गया, लगता था जैसे उसके पेट में किसी ने काट खाया हो। उसके मुँह से एक लम्बी चीख निकली। कुछ क्षण तक, जो अनन्त मालूम होते थे, उसकी वह अजब ऐंठन छाई

रही, बार-बार उसका शरीर काँपकर ऐंठ उठता था। लगता था जैसे उसका नाजुक शरीर प्लेग की भयंकर फूत्कार के आगे झुक रहा था और हवा के बार-बार आने वाले झोंकों में टूट रहा था। फिर तूफानी हवाएँ गुज़र गईं, शान्ति छा गई और बच्चा कुछ आराम करने लगा। उसका बुखार भी कम मालूम होता था और वह महामारी के गीले किनारे पर हाँफ रहा था। उस पर मौत-जैसा शैथिल्य छाया था। जब तीसरी बार विनाश की आग्नेय लहर ने उस पर धावा बोला और उसे थोड़ा-सा ऊपर उठा लिया तो बच्चा सिकुड़कर बिस्तर के कोने में चला गया। लगता था आगे बढ़ती हुई लपटों के डर से, जो उसके अंगों को चाट रही थीं, वह सहम गया। क्षण-भर बाद ज़ोर से अपना सर इधर-उधर पटकने के बाद उसने अपना कंबल उतारकर फेंक दिया। सूजी हुई पलकों से बड़े-बड़े आँसू जमा होकर धँसे हुए, शीशे-जैसे रंग के गालों पर लुढ़क पड़े। जब ऐंठन का दौरा गुज़र गया तो बच्चा, जिसकी दुबली बाँहें और टाँगें तन गई थीं, अड़तालीस घण्टों के भीतर ही जिनका सारा गोश्त सूख गया था और सिर्फ हड्डियाँ नज़र आ रही थीं, पीठ के बल अस्त-व्यस्त बिस्तर में छटपटाकर लेट गया, जैसे उसे शिकजे में यंत्रणा दी गई हो। वह सलीब पर जड़े हुए ईसा का विद्रूप बना लेटा था।

नीचे झुककर तारो ने अपने भरकम हाथ से आँसुओं और पसीने से तर उस नन्हे चेहरे को सहलाया। कास्तेल ने कुछ क्षण पहले अपनी किताब बन्द कर दी थी और अब उसकी नज़रें बच्चे पर गड़ी थीं। उसने बोलना शुरू किया, लेकिन बोलने से पहले उसे खाँसना पड़ा। उसकी आवाज़ में एक कर्कश गूंज थी।

"आज सुबह तो हालत में कुछ सुधार नहीं हुआ था, रियो ?"

रियो ने सर हिलाया, लेकिन यह कहा कि बच्चा उम्मीद से ज़्यादा बीमारी से लड़ रहा है। फादर पैनेलो ने, जो दीवार के साथ लगकर खड़े थे, धीमे स्वर में कहा, "अगर यह मर गया तो इसने औरों से ज्यादा दुःख झेला होगा।"

वॉर्ड में रोशनी बढ़ रही थी, दूसरे बिस्तरों पर लेटे नौ मरीज करवटें

बदल रहे थे और कराह रहे थे, लेकिन दबी आवाज़ों से। उन्होंने जान-बूझ-कर अपनी आवाज़ धीमी कर ली थीं। दूर, वॉर्ड के आख़िर में एक मरीज़ चिल्ला रहा था और रह-रहकर कुछ कह रहा था, जिससे दर्द की बजाय आश्चर्य का आभास मिलता था। सचमुच ऐसा लगता था कि मरीज़ों के लिए भी पहले दौर का विक्षिप्त आतंक गुज़र चुका था और उन्होंने अब बीमारी के प्रति शोकपूर्ण आत्मसमर्पण का दृष्टिकोण अपना लिया था। सिर्फ़ बच्चा अपनी पूरी नन्ही ताकत से लड़ रहा था। बीच-बीच में रियो उसकी नाड़ी देखता था—इसलिए नहीं कि इसमें कोई फ़ायदा था बल्कि इसलिए कि वह अपने इस सम्पूर्ण असहायपन से बचना चाहता था—और जब वह अपनी आँखें बन्द करता था तो उसे लगता था कि बच्चे की नाड़ी की हलचल उसके अपने खून की उत्तेजना में मिल गई थी। और फिर यंत्रणा सहते हुए बच्चे के साथ एक होकर उसने अपने शरीर की बची-खुची ताक़त से बच्चे को बचाने के लिए संघर्ष किया। लेकिन कुछ क्षण तक जुड़े रहने के बाद जल्द ही उनके दिलों की धड़कनों की लय अलग-अलग हो गई, बच्चा उसके हाथों से निकल गया और एक बार फिर रियो को अपनी अशक्तता का एहसास हुआ। उसने बच्चे की नन्ही, पतली कलाई छोड़ दी और वापस अपनी जगह पर आ बैठा।

सफ़ेदी की हुई दीवारों पर रोशनी का रंग गुलाबी से पीले में बदल रहा था। नये गरमी से तपे हुए दिन की पहली तरंगें खिड़कियों से टकराने लगीं। ग्रान्द यह कहकर कि वह फिर लौटेगा, उठ खड़ा हुआ, किसी ने उसकी आवाज़ न सुनी। सब इन्तज़ार कर रहे थे। बच्चे की आँखें अभी भी बन्द थीं। वह पहले से अधिक शान्त दिखाई देने लगा। पक्षी के नाख़ूनों की तरह उसकी नन्ही उँगलियाँ बिस्तर के दोनों छोरों को नोच रही थीं। फिर उसकी उँगलियाँ उठीं, उसने घुटनों पर पड़ा कंबल नोचा और अचानक उसका शरीर दोहरा हो गया। वह अपनी जाँघें पेट पर ले आया और बिना हिले-डुले पड़ा रहा। पहली बार उसने आँखें खोलीं और रियो की तरफ़ देखा जो उसके ऐन सामने खड़ा था। उसका नन्हा चेहरा भूरे रंग की मिट्टी के नक़ाब की तरह सख्त हो गया था। धीरे-धीरे उसके होंठ

खुले और उनमें से एक लम्बी अविराम चीख निकली, जो साँस लेने के बावजूद ज्यों-की-त्यों बनी रही। इस चीख़ ने वॉर्ड को एक भयंकर क्षोभ-पूर्ण प्रोटेस्ट से भर दिया, शैशव का यह नन्हा क्रंदन वॉर्ड के सब संतप्त लोगों की वेदना की सामूहिक अभिव्यक्ति बन गया। रियो ने अपने होंठ भींच लिए, तारो दूसरी तरफ़ देखने लगा, रेम्बर्त जाकर कास्तेल के पास खड़ा हो गया, जिसके घुटनों पर बन्द किताब पड़ी थी। फ़ादर पैनेलो ने बच्चे के नन्हे मुँह की तरफ़ देखा जिसे प्लेग की मलिनता ने विषाक्त कर दिया और जिसमें से मौत की क्रुद्ध चीत्कार निकल रही थी जो आदिकाल से मानवता सुनती आई है। फ़ादर पैनेलो घुटनों के बल बैठ गए और सबने उस अनाम, अनन्त क्रन्दन में उनके भर्राए गले की आवाज़ सुनी।

"मेरे खुदा, इस बच्चे को ज़िन्दा रहने दो ..."

लेकिन बच्चे की चीत्कार जारी रही और दूसरे मरीज़ भी बेचैन हो उठे। वार्ड के छोर वाला मरीज़, जो लगातार चीख रहा था, अब और ज़ोर से चीखने लगा था। उसकी चीखें एक अखण्ड चीख में बदल गईं। दूसरे मरीज़ों की कराहटें भी तेज़ हो गईं। सिसकियों का एक झोंका तेज़ी से आया, जिसमें फ़ादर पैनेलो की प्रार्थना की आवाज़ भी डूब गई। रियो ने, जो अभी तक पलंग के डंडे को कसकर पकड़े हुए था, अपनी आँखें मूँद लीं जो थकान और ग्लानि से चौंधिया गई थीं।

जब उसने आँखें खोलीं तो तारो उसके पास खड़ा था।

"मैं जा रहा हूँ। मुझसे ये आवाज़ें बरदाश्त नहीं होतीं।" रियो ने कहा।

लेकिन उसी वक्त अचानक सारे मरीज़ खामोश हो गए। अब डॉक्टर को एहसास हुआ कि बच्चे का क्रन्दन धीरे-धीरे क्षीण होकर फड़फड़ाता हुआ खामोशी में बदल गया है। मरीज़ों ने फिर कराहना शुरू किया, लेकिन इस बार मध्यम आवाज़ में यह सुदूर प्रतिध्वनि उस लड़ाई की थी जो अब खत्म हो चुकी थी, क्योंकि अब वह सचमुच खत्म हो चुकी थी। कास्तेल पलंग की दूसरी तरफ़ चला गया था, उसने कहा कि अन्त नज़दीक आ गया है। बच्चे का मुँह अब भी खुला हुआ था, लेकिन वह खामोश था और

उसका नन्हा सिकुड़ा शरीर अस्त-व्यस्त कंबलों के बीच पड़ा था। उसके गाल अब भी आँसुओं से गीले थे।

फ़ादर पैनेलो बच्चे के पलंग के पास गये और उन्होंने हाथ उठाकर आशीर्वाद दिया। फिर अपना चोगा समेटकर वे पलंगों की क़तार में से निकलकर बाहर चले गए।

"क्या आपको नये सिरे से काम शुरू करना पड़ेगा?" तारो ने कास्तेल से पूछा।

बूढ़े डॉक्टर ने धीरे से सिर हिलाया। उसके चेहरे पर एक ऐंठी हुई मुस्कान थी।

"शायद! जो भी हो बच्चे ने बहुत देर तक बीमारी से लड़ाई की थी जिसे देखकर मुझे आश्चर्य हुआ है।"

रियो उठकर बाहर जा रहा था, उसकी चाल इतनी तेज़ थी और चेहरे पर ऐसा विचित्र भाव छा गया था कि जब वह दरवाज़े में से फ़ादर पैनेलो के नज़दीक से गुज़रने लगा तो फ़ादर पैनेलो ने उसे रोकने के लिए बाँह बढ़ाई।

"सुनो भी तो, डॉक्टर···" उसने कहना शुरू किया।

रियो क्रुद्ध भाव से उसकी तरफ़ मुड़ा और कहा, "आह! वह बच्चा तो बिलकुल मासूम था। मेरी तरह आप भी इस बात को जानते हैं।"

और रियो फ़ादर पैनेलो से रगड़ खाता हुआ स्कूल के खेलने के मैदान के पार चला गया और धुंधले, छोटे पेड़ों-तले एक लकड़ी के बेंच पर बैठकर अपना पसीना पोंछने लगा जो बहकर उसकी आँखों में जाने लगा था। उसके दिल को जैसे कोई शिकंजे में जकड़कर दबा रहा था। उसके मन में आया कि इस जकड़ से बचने के लिए ज़ोर-ज़ोर से शाप दे। अंजीरों के पेड़ों की टहनियों में से गरमी छनकर आ रही थी। एक सफ़ेद धुंध तेज़ी से सुबह के नीले आकाश में फैल रही थी जिससे हवा में और भी ज़्यादा दम घुटने लगा था। रियो थककर बेंच पर लेट गया। जब उसने खुरदरी टहनियों और चमकते हुए आसमान की तरफ़ देखा तो उसका साँस फूलना बन्द हो गया और उसने अपनी थकान से लड़ने की कोशिश का। उसे अपने पीछे एक

आवाज़ सुनाई दी।

"अभी तुम्हारी आवाज़ में क्रोध क्यों था? जो दृश्य हम लोग देखते आ रहे थे वह मेरे लिए भी उतना ही असह्य था जितना तुम्हारे लिए था।"

रियो ने मुड़कर पैनेलो की तरफ़ देखा।

"मैं जानता हूँ। मुझे अफ़सोस है, लेकिन थकान एक किस्म का पागल-पन होती है। और कई बार तो मेरे मन में सिर्फ़ अंधे विद्रोह की भावना ही उठती है।"

पैनेलो ने धीमी आवाज़ में कहा, "मैं सब समझता हूँ। इस तरह की बात विद्रोह इसलिए पैदा करती है, क्योंकि वह इन्सान की समझ के बाहर की चीज़ है। लेकिन शायद हमें उन चीज़ों से भी प्यार करना चाहिए जिन्हें हम समझ नहीं सकते।"

रियो धीरे-धीरे उठकर बैठ गया। उसने पैनेलो की तरफ़ थकान के खिलाफ़ अपनी सारी ताकत और उत्साह को बटोरकर देखा, फिर उसने अपना सिर हिलाकर कहा, "नहीं फ़ादर! प्यार के बारे में मेरे मन में दूसरी ही किस्म के विचार हैं। और अपनी ज़िन्दगी के आखिरी दिन तक मैं ऐसे विधान से हरगिज़ प्यार नहीं कर सकूँगा जिसमें बच्चों को इतनी यंत्रणा दी जाती है।"

पादरी के चेहरे पर चिन्ता की एक परछाईं नज़र आई। वह क्षण-भर के लिए खामोश रहा। फिर उसने उदास स्वर में कहा, "आह डॉक्टर! अभी मुझे एहसास हुआ है कि 'रहमत' का क्या मतलब है?"

रियो फिर बेंच में धँस गया था। उसकी थकान फिर लौट आई थी, जिसकी गहराइयों में से वह बोल रहा था। उसके स्वर में कोमलता आ गई थी।

"यह एक ऐसी चीज़ है जो मेरे पास नहीं है। मैं यह जानता हूँ लेकिन इस बारे में मैं आपसे बहस न करूँ तो अच्छा होगा। हम मिलकर एक ऐसी चीज़ के लिए काम कर रहे हैं जिसने हमें एकता के सूत्र में बाँध दिया है—जो कुफ़्र और प्रार्थनाओं से परे की चीज़ है। और यही असली चीज़ है।"

फ़ादर पैनेलो रियो के पास बैठ गए। ज़ाहिर था कि उनके दिल पर गहरा

असर पड़ा था ।

"हाँ-हाँ, तुम भी इन्सान की मुक्ति के लिए काम कर रहे हो ।" पैनेलो ने कहा ।

रियो ने मुस्कराने की कोशिश की ।

"मुक्ति मेरे लिए बहुत बड़ा शब्द है । मैं इतनी बड़ी महत्त्वाकांक्षा नहीं रखता । मेरा सम्बन्ध इन्सान की सेहत से है; मेरे लिए पहली चीज़ उसकी सेहत है ।"

पैनेलो को कुछ हिचकिचाहट-सी महसूस हुई । उन्होंने अपनी बात शुरू की, "डॉक्टर···" लेकिन फिर ख़ामोश हो गए । उनके चेहरे से भी पसीना टपक रहा था । "अच्छा फ़िलहाल के लिए अलविदा," कहकर फ़ादर उठ खड़े हुए । उनकी आँखें भीग गई थीं । जब वे जाने लगे तो रियो, जो किसी सोच में डूबा हुआ नज़र आ रहा था, अचानक खड़ा हो गया और पैनेलो की तरफ़ एक क़दम आगे बढ़ा ।

"मैं फिर माफ़ी चाहता हूँ और वादा करता हूँ कि इस तरह का प्रलाप मैं आगे से नहीं करूँगा ।"

पैनेलो ने अपना हाथ आगे बढ़ाया और अफ़सोस ज़ाहिर करते हुए कहा, "और अभी भी––मैं तुम्हें यक़ीन नहीं करवा सका ।"

"इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है ! आप जानते ही हैं कि मुझे मौत और बीमारी से नफ़रत है । आप चाहें या न चाहें, हम लोग साथी हैं और इन दुश्मनों से एक साथ लड़ रहे हैं । रियो अभी भी पैनेलो का हाथ थामे हुए था । "तो आपने देखा––अब ख़ुदा भी हमें अलग नहीं कर सकता ।" रियो ने कहा, लेकिन उसने कोशिश की कि उसकी नज़रें पादरी की नज़रों से न मिलें ।

४

रियो के स्वयंसेवकों के दल में शामिल होने के बाद से फ़ादर पैनेलो अपना सारा वक्त अस्पतालों में और ऐसी जगहों में काटते थे जहाँ प्लेग से उनका सीधा सम्पर्क होता था। उन्होंने जान-बूझकर अपने लिए ऐसी जगह चुनी थी जो उनकी दृष्टि में उन्हीं पर आश्रित थी—लड़ाई में सबसे अगली जगह। और तब से लगातार वे मौत से अपने कन्धे रगड़ रहे थे। हालाँकि सैद्धान्तिक रूप से समझा जा सकता था कि बीच-बीच में टीके लगवाने के कारण उन पर छूत असर नहीं कर सकती थी, लेकिन वे अच्छी तरह जानते थे कि किसी भी क्षण मौत उन पर भी कब्ज़ा कर सकती है और उन्होंने इस बारे में सोच-विचार भी किया था। बाहर से मालूम होता था कि उनकी शान्ति में कोई फ़र्क नहीं आया, लेकिन जिस दिन से उन्होंने एक बच्चे की मौत देखी थी, उसी दिन से उनके दिल में कोई चीज़ बदल गई थी। उनके दिल का बढ़ता हुआ तनाव उनके चेहरे से ज़ाहिर होता था। जब एक दिन पैनेलो ने रियो को मुस्कराकर बताया था कि वे एक छोटा-सा निबन्ध लिख रहे हैं, जिसका शीर्षक है 'क्या किसी पादरी को डॉक्टर से मशवरा करना चाहिए ?' तो रियो को पादरी की बात के अन्दाज़ से ऐसा लगा कि उसके पीछे कोई-न-कोई गम्भीर बात ज़रूर है। जब डॉक्टर ने कहा कि वह भी निबन्ध को पढ़ना चाहेगा तो पैनेलो ने उसे बताया कि जल्द ही वे पुरुषों की एक प्रार्थना में प्रवचन देंगे और उसी में इस विषय पर उनके अधिकांश विचार भी प्रकट हो जाएँगे।

"उम्मीद है तुम भी आओगे डॉक्टर ! तुम्हें यह विषय दिलचस्प मालूम होगा।"

जिस दिन फ़ादर पैनेलो ने अपना दूसरा प्रवचन दिया, उस दिन बहुत तेज़ हवा चल रही थी। यह मानना पड़ेगा कि श्रोताओं की संख्या पहली बार से कम थी; इसका एक कारण यह भी था कि हमारे शहरियों के लिए इस तरह के प्रवचनों की नवीनता ख़त्म हो गई थी। दरअसल उन्हें जिन असाधारण परिस्थितियों का सामना करना पड़ रहा था उनमें 'नवीनता'

शब्द का कोई अर्थ नहीं रहा था। इसके अलावा अधिकांश लोगों ने यह मानकर कि उन्होंने धार्मिक रस्मों को एकदम तिलांजलि नहीं दी थी या उन्होंने सीधेपन में आकर अपनी अनैतिक और भ्रष्ट ज़िन्दगियों के साथ नहीं मिला दिया था, अब साधारण धार्मिक कृत्यों की जगह स्वेच्छाचारी अन्ध-विश्वासों को अपना लिया था। इस तरह वे प्रार्थना में शामिल होने की बजाय सन्त रोश के पदक पहनना अधिक पसन्द करते थे, जो उनके ख़याल में उन्हें बीमारी से बचा सकते थे।

मिसाल के तौर पर उन दिनों हर किस्म की भविष्यवाणियों में लोगों की दिलचस्पी बहुत बढ़ गई थी। उम्मीद की जाती थी कि बहार के मौसम में महामारी अपने-आप अचानक किसी भी क्षण खत्म हो जाएगी; इसलिए कोई भी, प्लेग कितने दिन चलेगी, इस बारे में किसी को अनुमान लगाते हुए नहीं सुनना चाहता था, क्योंकि हर आदमी ने अपने को यकीन दिला दिया था कि प्लेग ज़्यादा दिन नहीं चलेगी। लेकिन दिनों के गुज़रने के साथ ही लोगों के दिलों में यह डर बढ़ने लगा कि हो सकता है यह मुसीबत अनिश्चित काल तक चलती रहे। इसके बाद सब लोगों की उम्मीदें प्लेग की समाप्ति पर ही केन्द्रित हो गईं, जिसके परिणामस्वरूप भविष्यवाणियों की कॉपियाँ—जो कहा जाता था कि ज्योतिषियों या केथोलिक चर्च के संतों ने की हैं—हाथों-हाथ पढ़ी जाने लगीं। स्थानीय छापेखानों को फ़ौरन ख़याल आया कि लोगों के इस नये शौक को पूरा करके काफ़ी मुनाफ़ा पैदा किया जा सकता है, इसलिए उन्होंने उन भविष्यवाणियों को छाप दिया। यह देखकर कि इस तरह के साहित्य के लिए जनता की भूख अभी तक शान्त नहीं हुई, उन्होंने म्युनिसिपल पुस्तकालयों में प्राचीन वृत्तान्तों, संस्मरणों इत्यादि में से मस्तिष्क के इस चारे के लिए रिसर्च कराई। और जब यह सोता भी सूख गया तो उन्होंने पत्रकारों को भविष्यवाणियाँ लिखने के लिए नियुक्त किया और कम-से-कम इस दृष्टि से तो पत्रकारों ने अपने को प्राचीन काल के भविष्यवक्ताओं के बराबर ही साबित कर दिया।

इस तरह की भविष्यवाणियाँ सचमुच हमारे अख़बारों में धारावाहिक रूप से छपी थीं और उन्हें उतनी ही दिलचस्पी और शौक से पढ़ा जाने

लगा जिस तरह स्वस्थ सरगरम ज़माने में इन कॉलमों में छपने वाली इश्क-मुहब्बत की कहानियाँ पढ़ी जाती थीं। कुछ भविष्यवाणियाँ तो गणित की विलक्षण गणनाओं पर आधारित थीं जिनमें साल की कुल मौतों और प्लेग के महीनों का सम्बन्ध जोड़ा गया था। कुछ लोगों ने पिछले ज़माने की महामारियों के साथ प्लेग का मुकाबला किया था और उनकी समानताएँ साबित की थीं (भविष्यवक्ता इन्हें 'अचल तत्त्व' कहते थे) और उनका दावा था कि वे उनसे ऐसे नतीजे निकाल सकते हैं जो वर्तमान मुसीबत पर भी लागू होंगे। लेकिन सबसे लोकप्रिय भविष्यवक्ता वे थे जो रहस्यमयी अनर्गल भाषा में घटनाओं के अनुक्रम की घोषणा करते थे जिनमें से किसी को भी व्याख्या करके वर्तमान परिस्थितियों पर लागू किया जा सकता था और वे इतनी गूढ़ थीं कि उनकी मनचाही व्याख्या की जा सकती थी। इस तरह रोज़ नोस्त्रादेमस और संत ओदिलिया से मशवरा किया जाता था जिससे हमेशा सुखद परिणाम निकलता था। लेकिन एक बात सारी भविष्य वाणियों में समानरूप से पाई जाती थी—वे लोगों को आशा दिलाती थीं जबकि बदकिस्मती से प्लेग कोई आशा नहीं दिलाती थी।

इस तरह हमारे शहर में अंधविश्वास ने जबरदस्ती धर्म की जगह ले ली। इसीलिए जिस गिरजे में फादर पैनेलो प्रवचन दे रहे थे वह सिर्फ तीन-चौथाई भरा था। उस रोज़ शाम को जब रियो वहाँ आया तो झूलने वाले दरवाज़ों में से हवा के तेज़ झोंके भीतर जा रहे थे और गिरजे के आस-पास के रास्तों में भी अचानक हवा भर गई थी। सर्द और खामोश गिरजे में रियो ने पुरुष श्रोताओं से घिरे फादर को मंच पर चढ़ते देखा। वह पहली बार की अपेक्षा अधिक कोमल और गम्भीर लहज़े में बोल रहे थे और कई बार तो उपयुक्त शब्दों के अभाव में उनकी ज़बान लड़खड़ा जाती थी। सबसे बड़ा परिवर्तन यह आया था कि वे 'तुम' की बजाय 'हम' शब्द का इस्तेमाल कर रहे थे।

लेकिन धीरे-धीरे उनके स्वर में दृढ़ता आती गई। उन्होंने श्रोताओं को यह याद दिलाया कि कई महीनों से प्लेग हमारे बीच रह रही है और प्लेग को अक्सर अपनी मेज़ों और अपने प्रियजनों के पलंगों पर हमने कई

बार नज़दीक से देखा है, इसलिए अब हम इसे ज़्यादा अच्छी तरह समझते हैं। हमने प्लेग को अपनी बगल में चलते देखा था और जहाँ हम काम करते थे वहाँ प्लेग हमारी इन्तज़ार में रहती थी। इस तरह अब शायद हम इस स्थिति में हैं कि प्लेग हमें लगातार जो सन्देश देती आ रही है हम उसका अर्थ समझें। हो सकता है कि जब प्लेग पहली बार यहाँ आयी थी तो हमें इतना धक्का पहुँचा था कि हमने इस संदेश को ध्यानपूर्वक सुना ही नहीं था। फ़ादर ने पहले प्रवचन में जो बातें कही थीं, वे अभी भी लागू होती हैं कम-से-कम उनका तो यही विश्वास था और शायद हममें से किसी का ख़याल हो (फ़ादर ने अपने सीने पर ज़ोर से मुक्का मारा) कि उनके शब्दों में उदारता नहीं थी। चाहे कुछ हो, एक बात का खंडन नहीं हो सकता—और हर परिस्थिति में इस सचाई को हमें याद रखना चाहिए। एक ईसाई की दृष्टि में हर चीज़, हर घटना उसकी भलाई के लिए है, चाहे ऊपर से देखने में वह कितनी ही हृदयहीन क्यों न मालूम हो, चाहे उसे कितनी तकलीफ़ें झेलनी पड़ें, और परीक्षा की इस कठिन घड़ी में हर ईसाई को चाहिए कि वह उस भलाई को पहचाने, और समझे कि वह भलाई किन चीज़ों में है और किस तरह वह उन्हें अपने अनुकूल बना सकता है।

इस पर रियो के नज़दीक बैठे लोग अपने बैठने की जगहों पर बनी हाथ टिकाने की हत्थियों का सहारा लेकर आराम से बैठ गए। एक बड़ा गद्दीदार दरवाज़ा हवा में धीमी आवाज़ कर रहा था, कोई आदमी उसे बन्द करने के लिए उठा, जिसके परिणामस्वरूप रियो का ध्यान प्रवचन से हटकर दूसरी तरफ चला गया और उसने पैनेलो की अगली बातें नहीं सुनीं। लेकिन उनका सारांश यह मालूम होता था; हम प्लेग के कारण खोजने की चाहे जितनी कोशिशें करें लेकिन हमें यह भी जानना चाहिए कि प्लेग हमें क्या सबक सिखाना चाहती है। रियो ने अनुमान लगाया कि फ़ादर के ख़याल में प्लेग का कोई कारण नहीं बताया जा सकता।

रियो की दिलचस्पी बढ़ गई जब फ़ादर ने ज़ोरदार लहजे में कहा कि कुछ चीज़ें ऐसी भी हैं जिन्हें हम उसी तरह छू सकते हैं जिस तरह ईश्वर को छू सकते हैं और कुछ चीज़ों को बिलकुल नहीं छू सकते। इसमें किसीको

शक नहीं हो सकता कि दुनिया में अच्छाई और बुराई दोनों चीज़ें मौजूद हैं और उनमें फ़र्क समझना ज़रूरी है। दिक्कत तब शुरू होती है जब हम बुराई की तह में जाते हैं। इन्सान के दुःख को भी फ़ादर ने बुरी चीज़ों में शामिल किया। इस तरह हमारी ज़िन्दगी में ऐसा दर्द भी है जो हमें ज़रूरी मालूम होता है और ऐसा भी है जो हमें निरर्थक मालूम होता है।

डॉन जुआन के दोजख़ में जाने की और एक बच्चे की मिसाल लीजिए। दुराचारी आदमी पर ईश्वर की कोपदृष्टि पड़े और वह मर जाए यह बात तो हमें सही मालूम होती है, लेकिन हमारी समझ में यह नहीं आता कि एक मासूम बच्चा किसलिए तकलीफ़ उठाता है। और सच यह है कि बच्चे की व्यथा से अधिक बड़ी और महत्त्वपूर्ण कोई चीज़ नहीं; उसे देखते ही हमारे मन में दहशत छा जाती है और हमें उसके औचित्य के लिए कारण तलाश करने पड़ते हैं। ज़िन्दगी के दूसरे क्षेत्रों में ईश्वर ने हमारा काम आसान कर दिया है इसलिए उस हद तक हमारे धर्म में कोई गुण नहीं है। लेकिन इस बात में ईश्वर ने हमें परास्त कर दिया है। सचमुच हम उस ईश्वर से टकरा रहे हैं जिसे प्लेग ने हमारे गिर्द खड़ा कर दिया है और उस दीवार की प्राणघातक छाँह में ही हमें अपनी मुक्ति का कोई तरीक़ा निकालना है। फ़ादर पैनेलो दीवार को लाँघने के आसान तरीकों को अपनाने के लिए तैयार नहीं थे, क्योंकि इस तरह वे आसानी से श्रोताओं को विश्वास दिला सकते थे कि बच्चे की पीड़ा के एवज़ में उन्हें अनन्त काल तक सुख मिलेगा। लेकिन वे यह विश्वास कैसे दे सकते थे जब उसे इस बारे में कुछ भी मालूम नहीं था। दावे से यह कहने का साहस किसमें है कि अनन्त सुख इन्सान की पीड़ा के लिए एक क्षण का बदला चुका सकता है? जो इस तरह का दावा करे वह कभी सच्चा ईसाई नहीं हो सकता और उस महान् शिक्षक का शिष्य नहीं हो सकता जिसने अपने शरीर और आत्मा में पीड़ा की यंत्रणा का अनुभव किया था। न ही फ़ादर पैनेलो पीड़ा के उस प्रतीक, सलीब पर चढ़े ईसा के संतप्त शरीर में आस्था रखेंगे। वे अपनी जगह पर डटे रहकर ईमानदारी से बच्चे की पीड़ा की भयंकर समस्या का सामना करेंगे, और उन लोगों से, जो आज उनके शब्द सुन रहे हैं, कहेंगे, "मेरे भाइयो, हम

लोगों की परीक्षा का वक्त आ पहुँचा है। या तो हमें हर चीज में आस्था रखनी होगी या हर चीज़ में अविश्वास करना होगा। और मैं पूछता हूँ आप लोगों में से किसमें इतना साहस है कि वह हर चीज़ में अविश्वास करे?"

रियो को लगा कि इन बातों के ज़रिये फ़ादर पैनेलो कुफ़्र के विचार से खिलवाड़ कर रहा है, लेकिन अन्त तक इस विचार का पीछा करने के लिए उसके पास वक्त नहीं है। फ़ादर ज़ोरदार शब्दों में कह रहा था कि "ईसाइयों को जो यह कठिन कर्तव्य सौंपा गया है, यही उसका सबसे बड़ा गुण और विशेषाधिकार है।" वह अच्छी तरह जानता है कि कुछ लोग जिनकी शिक्षा पुरानी नैतिकता और ढिलाई के साथ हुई है, इस बात से क्षुब्ध होंगे, और उस ईसाई-गुण की चर्चा से क्रुद्ध भी होंगे जो देखने में बहुत कठोर मालूम होता है और जिसके बारे में वह श्रोताओं से बात करने जा रहा है। लेकिन प्लेग के ज़माने का धर्म हर रोज़ का धर्म नहीं हो सकता। सुख के दिनों में इन्सान की आत्मा बिना कष्ट के रहे और आनन्द मनाए, इस बात को खुदा मंजूर कर सकता है और इसकी ख्वाहिश भी करता है, लेकिन कठिन मुसीबत के दिनों के लिए खुदा ने इन्सान की आत्मा पर कठिन कर्तव्य भी लगा दिए हैं। इसलिए आज खुदा ने अपने जीवों की परीक्षा के लिए उन्हें यंत्रणा भेजी है ताकि वे सबसे बड़े गुण को सीखें और उस पर अमल करें—पूरी तरह या बिलकुल नहीं।

कई शताब्दी पहले धर्म-विरोधी और कलुषित विचारों वाले एक लेखक ने पादरियों के एक राज़ को खोलने का दावा किया था। उसने घोषणा की थी कि 'पर्गेटरी'[1] का अस्तित्व ही नहीं है। वह यह बताना चाहता था कि खुदा बीच का क़दम नहीं उठाता। इन्सान को स्वर्ग और नर्क में से एक को चुनना पड़ता है। या आत्मा को सुख मिलता है या नर्क में भेज दिया जाता है। पैनेलो का कहना था कि यह एक धर्म-विरोधी विचार है जो सिर्फ़ अंधी, अशान्त आत्मा से ही पैदा हो सकता है। लेकिन सम्भव है कि इतिहास में ऐसे दौर भी आये हों जब 'पर्गेटरी' की उम्मीद न रही हो, जब क्षम्य पापों की चर्चा करना भी सम्भव न रहा हो, जब

१. ईसाई मत के अनुसार पापमोचन का स्थान।

हर पाप मारक रहा हो, और हर उपेक्षा अपराध रही हो। बीच का कोई रास्ता न रहा हो।

यहाँ आकर पादरी रुक गया और रियो को बाहर सनसनाती हुई हवा की आवाज़ साफ़ सुनाई देने लगी। बंद दरवाज़ों के नीचे से आने वाली आवाज़ों से लगता था कि हवा ने बढ़कर तूफ़ान की शक्ल ले ली थी। उसे फिर फादर पैनेलो की आवाज़ सुनाई दी। वह कह रहा था जिस सम्पूर्ण समर्पण और स्वीकृति की वह बात कर रहा था उसका सीमित शाब्दिक अर्थ नहीं समझना चाहिए जैसा कि आमतौर पर सभी शब्दों का समझा जाता है; वह केवल समर्पण या उससे भी कठिन गुण विनयशीलता की बात नहीं कर रहा; वह उस अपमान और अहंकार-दमन की बात कर रहा है जिसमें अपमानित व्यक्ति की भी स्वीकृति रहती है। यह सच है कि किसी बच्चे की यंत्रणा को देखकर दिल और दिमाग में अपमान की भावना जागृत होती है, लेकिन इसीलिए तो इससे समझौता करना ज़रूरी है, फ़ादर पैनेलो ने श्रोताओं को विश्वास दिलाया कि वह जो बात कहने जा रहा है वह कहना आसान नहीं; क्योंकि यही खुदा की मरज़ी है, इसलिए हमारी भी उसमें रज़ामन्दी है। इसी तरह और सिर्फ इसी तरह ही एक सच्चा ईसाई इस समस्या का ईमानदारी से सामना कर सकता है और वह छल-कपट को त्यागकर सबसे बड़े सवाल की तह में पहुँचने की कोशिश करेगा और वह सवाल है सही रास्ता चुनना। वह हर चीज़ में आस्था रखेगा ताकि उसे अनास्था के लिए मजबूर न होना पड़े। उन नेक औरतों की तरह, जो यह सुनकर कि गिल्टियों के रास्ते से ही कुदरत प्लेग की छूत को शरीर से बाहर निकालती है, गिरजाघर में जाकर प्रार्थना करने लगीं, "या खुदा उसके शरीर में गिल्टियाँ पैदा कर दे!" इसी तरह हर ईसाई को पूरी तरह खुदा की मरज़ी के आगे समर्पण कर देना चाहिए चाहे वह उसकी विवेक-शक्ति का सीमा से बाहर की चीज़ ही क्यों न हो। यह कहना गलत है, "मैं 'यह' समझता हूँ लेकिन 'वह' मुझे मंजूर नहीं है।" हमें सीधे उन बातों की तह में पहुँचना चाहिए जो हमें मंजूर नहीं हैं सिर्फ इसलिए क्योंकि इसी तरह हमें अपना रास्ता चुनने पर विवश होना पड़ता है। बच्चों की यंत्रणाएँ हमारी

मुसीबतों का खाद्य हैं; लेकिन इस खाद्य के बग़ैर हमारी आत्माएँ आध्यात्मिक भूख से मर जाएँगी।

जब पादरी थोड़ी देर के लिए रुकता था तो बाहर से आने वाली आवाज़ें सुनाई देने लगती थीं। अचानक पादरी ने अपनी आवाज़ ऊँची कर ली और जैसे अपने को श्रोताओं की जगह रखकर वह पूछ रहा था कि ऐसी परिस्थितियों में क्या करना उचित होगा। वह जानता था कि वह जो बात कहने जा रहा है लोग उसके लिए 'भाग्यवाद' का शब्द इस्तेमाल करेंगे। खैर वह इस शब्द से डरेगा नहीं, बशर्ते इसे उस शब्द के आगे 'सक्रिय' शब्द जोड़ने की इजाज़त मिल जाए। यह कहने की जरूरत नहीं कि अबीसीनिया के उन ईसाइयों की नकल नहीं की जा सकती थी जिनकी चर्चा वह पहले प्रवचन में कर चुका था। न ही हमें उन ईरानियों का अनुकरण करना चाहिए जिन्होंने प्लेग के ज़माने में अपने छूत-लगे कपड़े सफाई का काम करने वाले ईसाइयों पर फेंक दिए थे और ऊँची आवाज़ में खुदा से मिन्नत की थी कि वह इन काफ़िरों को भी प्लेग की छूत दे दे जो खुदा की भेजी हुई महामारी को रोकने की कोशिशें कर रहे थे। लेकिन काहिरा के उन पादरियों का अनुकरण करना भी गलत होगा, जिन्होंने, जब शहर में प्लेग का प्रकोप था तो प्रार्थना में प्रसाद बाँटने के लिए चिमटियों का इस्तेमाल किया था, ताकि वे लोगों के गीले गरम मुँहों के स्पर्श से बच सकें, हो सकता था वहाँ छत छिपी हो। प्लेग-ग्रस्त ईरानवासी और पादरी दोनों ही गलती पर थे। ईरानियों को किसी बच्चे की यन्त्रणा की परवाह नहीं थी; इसके विपरीत पादरियों के व्यवहार यंत्रण का में स्वाभाविक आतंक अत्यधिक रूप में झलकता था। दोनों ने असली समस्या से बचने की कोशिश की थी; उन्होंने खुदा की आवाज़ सुनने से इन्कार कर दिया था।

लेकिन पैनेलो ने कहा कि कई और भी मिसालें हैं जिनकी याद वह श्रोताओं को कराएगा। अगर मार्साई की प्लेग के ऐतिहासिक विवरण विश्वसनीय हैं तो उनमें लिखा है कि मर्सी मठ के इक्यासी पादरियों में से सिर्फ चार ही प्लेग में ज़िन्दा बच गए थे, इनमें से चार भाग गए। इतिहासकार ने सिर्फ़ तथ्य ही दिये थे, उसका इतना ही फर्ज़ था। लेकिन इस

विवरण को पढ़ते वक्त फ़ादर पैनेलो का ध्यान उस पादरी पर लगातार केन्द्रित रहा जो अपने सत्तर साथियों की मौत के बावजूद, और अपने उन तीन भाइयों की मिसाल के बावजूद, जो मठ छोड़कर भाग गए थे, अकेला रह गया था। मंच के कोने पर ज़ोर से मुक्का मारकर फ़ादर पैनेलो गरज उठा, "मेरे भाइयो, हममें से हरेक को उसी पादरी की तरह डटे रहना चाहिए।"

प्लेग से बचने के लिए सावधानी न बरतने का या जनता की भलाई के लिए जारी किये गए हुक्मों को न मानने का सवाल ही नहीं उठता। न ही हमें उन नैतिकतावादियों की सलाह माननी चाहिए जो कहते हैं कि हम प्लेग के आगे घुटने टेक दें और अपना संघर्ष बन्द कर दें। नहीं, हमें आगे बढ़ना चाहिए अँधेरे में रास्ता टटोलते हुए। हो सकता है बीच-बीच में हमें ठोकरें भी खानी पड़ें। हमें भरसक भलाई करनी चाहिए। इसके अलावा मुझे यही कहना है कि हमें खुदा के रहम पर भरोसा करके डटे रहना चाहिए, नन्हे बच्चों की मौत देखकर भी हमारी आस्था अडिग रहनी चाहिए और हमें आराम की ख्वाहिश छोड़ देनी चाहिए।

यहाँ फ़ादर पैनेलो ने श्रोताओं को मार्साई की प्लेग के ज़माने के बिशप बेल्ज़ून्स के महान् व्यक्तित्व की याद दिलाई—किस तरह महामारी के अंतिम दौर में बिशप ने अपना कर्तव्य निभाने के बाद, जैसा कि उसे शोभा देता था, अपने को अपने महल में बंद कर लिया, जिसके इर्द-गिर्द ऊँची दीवारें थीं, और अपने साथ उसने खाने-पाने का काफ़ी सामान रख लिया। अचानक बिशप के प्रति जनता की भावना बदल गई, जैसा कि घोर मुसीबत के ज़माने में अक्सर होता है। मार्साई के लोग, जो बिशप की पूजा करते थे, अब उसके खिलाफ़ हो गए। उन्होंने बिशप के महल में छूत भेजने के लिए उसके महल के आस-पास लाशों का ढेर लगा दिया और यहाँ तक कि दीवारों के ऊपर से भी लाशें फेंक दीं ताकि बिशप की मौत अवश्य हो जाए। इस तरह क्षणिक कमज़ोरी में बहकर बिशप ने अपने को बाहर की सारी दुनिया से अलग कर लिया। और देखिए, उसके सर पर लाशें बरसने लगीं। इससे हम सबको सबक़ सीखना चाहिए। हमें अपने को पूरी तरह से यक़ीन दिलाना चाहिए

कि प्लेग के समय में बचाव का कोई द्वीप नहीं है। न ही बीच का कोई रास्ता। हमें यह संकट स्वीकार करना ही पड़ेगा। हमें या तो ख़ुदा से मुहब्बत करनी पड़ेगी या नफ़रत करनी पड़ेगी। और ख़ुदा से नफ़रत करने की ज़ुर्रत किसमें है ?

"मेरे भाइयो," पादरी की आवाज़ से ऐसा लगता था कि प्रवचन ख़त्म होने वाला है, "ख़ुदा से प्यार करना बड़ा मुश्किल है। यह प्यार सम्पूर्ण आत्म-समर्पण की माँग करता है, इसमें अपने मानवीय व्यक्तित्व को तुच्छ समझना पड़ता है। फिर भी इस प्यार के कारण हम बच्चों की यन्त्रणाओं और मौतों से समझौता कर लेते हैं, सिर्फ़ इसी प्यार के कारण हम उन्हें उचित ठहरा सकते हैं, चूँकि हम इन बातों को समझने में असमर्थ हैं और ख़ुदा की मरज़ी को ही अपनी मरज़ी बना सकते हैं। इसी को आस्था कहते हैं, जो इन्सानों की नज़रों में ज़ुल्म है और ख़ुदा की नज़रों में बड़ी नाज़ुक चीज़ है। हमें हमेशा इसी आस्था को प्राप्त करने का यत्न करना चाहिए। हमें अपनी सीमाओं से आगे उस ऊँचे और आतंकपूर्ण दृश्य तक उठने की आकांक्षा रखनी चाहिए। उस ऊँचे समतल मैदान में हर चीज़ अपनी जगह पर चली जाएगी, सारे असामंजस्य दूर हो जाएँगे और दिखावटी इन्साफ़ के काले बादलों में से सचाई फूट पड़ेगी। दक्षिणी फ्रांस के कुछ गिरजों के पूर्वी भागों के चबूतरों के नीचे सदियों से प्लेग से मरे लोगों को दफ़नाया जाता रहा है, और पादरी उनकी समाधियों के ऊपर खड़े होकर प्रवचन देते हैं। उनके मुँह से निकला हुआ ख़ुदाई पैग़ाम उस चबूतरे से निकलता है जिसमें बच्चों ने भी योग दिया है।

जब रियो उठकर जाने की तैयारी कर रहा था तो अधखुले दरवाज़ों में से हवा के एक तेज़ झोंके ने आकर गिरजे के बीच के हिस्से को आन्दोलित कर दिया और बाहर निकलते हुए श्रोताओं के चेहरों पर ज़ोर से प्रहार किया। हवा अपने साथ वर्षा की गन्ध, भीगे फ़ुटपाथों का तेज़ स्वाद लाई थी और उन्हें बाहर के मौसम के बारे में चेतावनी दे रही थी। रियो के आगे ही एक बूढ़ा पादरी और एक नौजवान पादरी जा रहे थे, हवा में उनकी टोपियाँ उड़ी जा रही थीं और टोपियों को सर पर रखे रहने में उन्हें

बड़ी दिक़्क़त हो रही थी। लेकिन इसकी वजह से बड़े पादरी को पैनेलो के प्रवचन के बारे में बहस करने में कोई दिक़्क़त नहीं हो रही थी। वह फ़ादर की भाषण-शैली की तारीफ़ कर रहा था, लेकिन पैनेलो के दुस्साहस पूर्ण विचारों से वह दुविधा में पड़ गया था। उसकी राय में पैनेलो के प्रवचन में सच्ची शक्ति के बजाय घबराहट ज़्यादा थी, और इस उम्र में तो पादरी को बिलकुल नहीं घबराना चाहिए। नौजवान पादरी ने, जिसने हवा से बचने के लिए चेहरा नीचे की तरफ़ झुकाया हुआ था, जवाब दिया कि वह फ़ादर को बहुत अरसे से देखता आ रहा है। उसने फ़ादर के विचारों का विकास भी देखा है और उसका ख़याल है कि आगामी पैम्फ़लेट में उसके फ़ादर के विचार और भी ज़्यादा दुस्साहसपूर्ण हो जाएँगे। हो सकता है कि उसे प्रेस वाले छापने से इन्कार कर दें।

"क्या तुम्हारा ऐसा ख़याल है? पैम्फ़लेट का मुख्य विचार क्या है?"

अब वे कैथीड्रल स्क्वेयर में पहुँच गए थे और कुछ क्षण तक हवा के गर्जन के कारण नौजवान के लिए बोलना असम्भव हो गया। जब हवा कुछ थमी तो उसने संक्षेप में अपने साथी को बताया, "किसी पादरी के लिए डॉक्टर को बुलाना असंगतिपूर्ण है।"

जब रियो ने तारो को पैनेलो के प्रवचन के बारे में बताया तो तारो ने कहा कि वह एक ऐसे पादरी को जानता है जा युद्ध के दौरान अपनी आस्था खो बैठा था, क्योंकि उसने एक ऐसे नौजवान को देखा था जिसकी दोनों आँखें नष्ट हो गई थीं।

तारो ने कहा, "पैनेलो ठीक कहता है। अगर एक मासूम नौजवान की आँखें तबाह हो सकती हैं तो एक ईसाई के सामने दो ही रास्ते हैं—या तो वह अपनी आस्था गँवा दे या अपनी आँखों को नष्ट करने की स्वीकृति दे दे। पैनेलो को अपनी आस्था खोना मंज़ूर नहीं है, इसलिए वह अन्त तक इस विभीषिका का साथ देगा—उसके कहने का यही मतलब था।"

हो सकता है तारो की यह टिप्पणी बाद में होने वाली अफ़सोसनाक घटनाओं पर रोशनी डाले, जिनके दौरान पादरी के व्यवहार को उसके दोस्त भी नहीं समझ पाए थे। पाठक इसका निर्णय खद करें।

प्रवचन के कुछ दिन बाद पैनेलो को अपने कमरे छोड़ने पड़े। यह वह दौर था जब बहुत से लोगों को प्लेग की नयी परिस्थितियों से मजबूर होकर अपने मकान बदलने पड़े थे। जब होटल को ज़ब्त कर लिया गया तो तारो रियो के घर जाकर रहने लगा था। अब फ़ादर को भी वे कमरे ख़ाली करने पड़े जो चर्च के अधिकारिओं ने एक धार्मिक वृत्ति की वृद्ध महिला के घर में दिलवाए थे। यह महिला अभी तक महामारी से बची रही थी। घर बदलने में पैनेलो को बहुत ज़्यादा शारीरिक और मानसिक थकान हुई थी, जिसका उसकी मेज़बान पर बुरा असर पड़ा था। एक रोज़ शाम को जब वृद्धा बड़े उत्साह से सन्त ओदिलिया की भविष्यवाणियों की तारीफ़ों के पुल बाँध रही थी तो पादरी शायद थकान की वजह से थोड़ी अधीरता का प्रदर्शन कर बैठा। इसके बाद से वृद्धा को प्रसन्न करने की और उसका क्रोध शान्त करने की सारी कोशिश बेकार साबित हुई। बुढ़िया के मन पर पादरी के बारे में बुरा ख़याल पैदा हो गया था जिसकी कड़वाहट बनी रही। हर रात अपने सोने के कमरे में जाने से पहले, जहाँ सारा फ़रनीचर क्रोशिये के बनाए कपड़ों से ढका था, पादरी ड्राइंग रूम में से गुज़रता था जहाँ उसकी मेज़बान बैठी रहती थी। बिना गरदन घुमाए वह 'गुडनाइट फ़ादर' कहती थी। पादरी को इस कड़वी 'गुडनाइट' की स्मृति लेकर सोने के लिए जाना पड़ता था और इस सारी घटना की कल्पना से ही उसे घबराहट होने लगती थी। एक ऐसी ही शाम को पादरी ने महसूस किया कि जिस तरह बाँध का पानी बाँधों को तोड़ देता है, उसी तरह उसकी कलाइयों और कनपटियों में बुखार ज़ोर मार रहा था जो पिछले कई दिनों से उसके खून में छिपा था।

बाद की घटनाओं का ब्यौरा सिर्फ़ वृद्धा की ज़बान से पता चला। अगले रोज़ सुबह वह अपनी आदत के मुताबिक़ जल्दी उठी। करीब एक घंटे तक इन्तज़ार करने के बाद भी जब पैनेलो कमरे से बाहर न निकला तो वृद्धा ने हिचकिचाते हुए कमरे का दरवाज़ा खटखटाया। पादरी अभी तक बिस्तर में लेटा था, रात-भर उसे नींद नहीं आई थी। उसे साँस लेने में दिक्क़त हो रही थी और चेहरा भी पहले से ज़्यादा लाल था। वृद्धा ने विनीत

स्वर में (यह वृद्धा का कहना है) कहा कि फ़ौरन किसी डॉक्टर का बुला लेना चाहिए, लेकिन पादरी ने उसके सुझाव को बड़ी 'बदतमीज़ी' से ठुकरा दिया। वृद्धा कमरे से चली आई, इसके सिवा वह और कर भी क्या सकती थी ! बाद में फ़ादर ने घंटी बजाकर नौकरानी को बुलाया और वृद्धा से मिलने की इच्छा प्रकट की। उसने अपनी अशिष्टता के लिए माफ़ी माँगी और वृद्धा को आश्वासन दिया कि उसे प्लेग नहीं हो सकती; क्योंकि प्लेग का कोई भी लक्षण दिखाई नहीं दिया था; मामूली तबीअत खराब हो गई थी। वृद्धा ने शालीनतापूर्वक जवाब दिया कि उसने किसी आशंका के कारण डॉक्टर को बुलाने का सुझाव नहीं दिया था—उसे अपनी सुरक्षा की तनिक भी चिन्ता नहीं थी—क्योंकि वह खुदा के हाथों में थी; लेकिन चूँकि फ़ादर उसके मेहमान हैं, इसलिए वह फ़ादर की भलाई के लिए कुछ हद तक अपने को ज़िम्मेवार समझती है। जब पादरी ने कुछ न कहा तो वृद्धा ने पादरी के प्रति अपना कर्तव्य निभाने के लिए (उसका यही कहना है) फिर अपने डॉक्टर को बुलाने का सुझाव दिया। फ़ादर पैनेलो ने कहा कि तक़लीफ़ उठाने की कोई ज़रूरत नहीं। उसने कुछ दलीलें भी दी थीं, जो वृद्धा को बेहूदी और असंगत मालूम हुई थीं। वृद्धा के पल्ले सिर्फ़ यही दलील पड़ी थी, जिसे वह सबसे ज़्यादा असंगत समझती थी कि फ़ादर ने इसीलिए डॉक्टर को बुलाने के खिलाफ़ सैद्धान्तिक एतराज़ उठाया था। वृद्धा को ऐसा लगा कि शायद बुखार की वजह से उसके मेहमान का दिमाग गड़बड़ हो गया है, इसलिए उसने चाय का एक प्याला लाने के सिवा और कुछ न किया।

अपना कर्तव्य निभाने के दृढ़ निश्चय से प्रेरित होकर वह हर दो घंटे बाद बीमार के पास जाती रही। पादरी की बेचैनी जो दिन-भर जारी रही थी, उसे देखकर बुढ़िया को हैरत हुई थी। वह कंबल उतारकर फेंक देता था, फिर उसे ओढ़ लेता था। वह लगातार अपने पसीने से तर माथे पर हाथ फेरता जा रहा था। बीच-बीच में वह उठकर बिस्तर पर बैठ जाता था और भर्राए गले से खाँसकर अपना गला साफ करता था। लगता था कि उसे उल्टी आ रही है, और कोई आधी ठोस-सी चीज़ उसके फेफड़ों में

फँसकर उसका दम घोंट रही है जिसे वह निकाल देना चाहता है। हर बार उसकी कोशिश व्यर्थ जाती थी। फिर थकान से चूर होकर वह तकिये पर सर रखकर लेट जाता था। फिर ज़रा-सा उठकर वह आँखें फाड़-फाड़कर सामने की तरफ़ देखने लगता था। यह बात बीमारी के दौरों से भी ज़्यादा घबराने वाली थी। अभी भी वृद्धा डॉक्टर को बुलाकर अपने मेहमान को नाराज़ नहीं करना चाहती थी। हो सकता है वह सिर्फ़ बुखार हो—लक्षणों की प्रचण्डता से तो ऐसा ही ज़ाहिर होता था।

दोपहर को उसने एक बार फिर पादरी से बात करने की कोशिश की, लेकिन पादरी के मुँह से सिर्फ़ चन्द अनर्गल वाक्य ही निकले। वृद्धा ने फिर डॉक्टर को बुलाने का सुझाव दिया। इस पर पादरी उठकर बैठ गया और उसने दृढ़, लेकिन घुटी हुई आवाज़ में इन्कार कर दिया। इन परिस्थितियों में वृद्धा ने अगले दिन सुबह तक इन्तज़ार करना उचित समझा; अगर फादर की हालत में सुधार न हुआ तो वह उस नम्बर पर टेलीफ़ोन कर देगी जो हर रोज़ दस बार रेंस्डाक सूचना विभाग द्वारा प्रसारित किया जाता था। उसे अभी भी अपने कर्तव्य का एहसास था, उसने सोचा कि वह रात को भी मरीज़ को देखने जाएगी और अगर उसे किसी देखभाल की ज़रूरत पड़ी तो उसे पूरा करेगी। लेकिन ग्यारह बजे के करीब पादरी को जड़ी-बूटियों का काढ़ा पिलाने के बाद उसने आध घंटे तक आराम करने का फ़ैसला किया जब उसकी नींद खुली तो दिन निकल आया था। सबसे पहले वह पादरी के कमरे में गयी।

पैनेलो बिना हिले-डुले लेटा था; चेहरे की लाली गायब हो गई थी, अब उस पर मौत-जैसा पीलापन छाया था, गाल भीतर नहीं धँसे थे इसलिए यह पीलापन और भी ज़्यादा ज़ाहिर हो रहा था। पादरी बिस्तर के ऊपर लटकते हुए लैंप के आसपास बनी मोतियों की झालर की तरफ़ देख रहा था। जब वृद्धा कमरे में दाखिल हुई तो पादरी ने अपना चेहरा घुमाया। वृद्धा ने पादरी के चेहरे को बड़े अजब ढंग से बयान किया था। ऐसा लगता था जैसे रात-भर पादरी की सख्त पिटाई होती रही थी। वह एक ज़िन्दा आदमी की बजाय मुर्दा मालूम हो रहा था। जब वृद्धा ने पूछा कि उसकी तबीअत

कैसी है, तो उसने उदासीन स्वर में जवाब दिया कि उसकी हालत खराब है। उसके स्वर की उदासीनता से वृद्धा को हैरत हुई। पादरी ने कहा कि उसे डॉक्टर की ज़रूरत नहीं, वह सिर्फ़ यही चाहता है कि सरकारी नियमों के अनुसार उसे अस्पताल में पहुँचा दिया जाए। वृद्धा घबरायी हुई टेली-फ़ोन की तरफ़ भागी।

रियो दोपहर को पहुँचा। वृद्धा की सारी बातें सुनने के बाद उसने उत्तर दिया कि पैनेलो ठीक है, लेकिन शायद अब उसे बचाया नहीं जा सकता। फ़ादर ने बिलकुल उदासीन भाव से रियो का स्वागत किया था। रियो ने उसकी जाँच की और उसे यह देखकर ताज्जुब हुआ कि सिवा फेफड़ों की रुकावट के न्यूमोनिक या ब्यूबोनिक प्लेग के कोई लक्षण नहीं थे, जो अक्सर नज़र आते हैं। लेकिन नब्ज़ इतनी धीरे चल रही थी और पादरी की हालत इतनी चिन्ताजनक थी कि अब उसके बचने की बहुत कम उम्मीद थी।

रियो ने पादरी को बताया, "आपके शरीर में प्लेग का कोई भी विशिष्ट लक्षण नहीं, लेकिन मैं ठीक से नहीं कह सकता इसलिए आपको अलग वार्ड में रखना होगा।"

पैनेलो जैसे शिष्टतावश, बड़े विचित्र ढंग से मुस्कराया। रियो टेली-फ़ोन करने के लिए बाहर गया और लौटकर उसने पादरी की तरफ़ देखा।

"मैं आपके पास ही ठहरूँगा," रियो ने मृदु स्वर में कहा।

पैनेलो ने अधिक सजीवता दिखाई और डॉक्टर को देखकर उसकी आँखों में एक प्रकार का उत्साह आ गया। फिर वह बड़ी कठिनाई से बोला। यह कहना भी असम्भव था कि उसकी आवाज़ में उदासी थी या नहीं। उसने कहा, "धन्यवाद! लेकिन पादरियों के दुनिया में कोई दोस्त नहीं होते। वे अपना सर्वस्व ईश्वर को सौंप देते हैं।"

पादरी ने कहा कि उसे सलीब दे दिया जाए, जो पलंग के ऊपर टँगा था। वह मुँह फेरकर सलीब की तरफ़ देखने लगा।

अस्पताल पहुँचकर पैनेलो ने मुँह से एक शब्द भी नहीं निकाला। उसने बिना किसी विरोध के अपना इलाज होने दिया, लेकिन क्षण-भर के लिए भी सलीब को अपने से अलग न होने दिया। पादरी को संदिग्ध हालत

में देखकर रियो यह फ़ैसला न कर सका कि उसे आखिर क्या बीमारी है। पिछले कुछ हफ़्तों से प्लेग ने जैसे पकड़ में न आने का हठ कर रखा था। पनेलो की अनिश्चित हालत का कोई परिणाम न निकला।

उसका बुखार बढ़ गया, दिन-भर खाँसी ज़ोर पकड़ती गई, जिसने उसकी क्षीण देह को झकझोर दिया। रात को जाकर पैनेलो के फेफड़ों से वह चीज़ निकली जो उसका दम घोट रही थी। यह लाल रंग की थी। तेज़ बुखार में भी पैनेलो की आँखों की शान्ति क़ायम रही। अगले दिन सुबह जब वह मरा हुआ पाया गया, उसका शरीर बिस्तर पर झुका हुआ था। तब भी उसकी आँखों से कुछ ज़ाहिर न हुआ। पादरी के नाम के कार्ड पर लिख दिया गया—'संदिग्ध केस'।

५

उस साल 'ऑल सोल्ज़ डे' का वातावरण पहले सालों की अपेक्षा भिन्न था। इसमें शक़ नहीं कि मौसम अच्छा हो गया था। अचानक उसमें तब्दीली आई थी और तेज़ गरमी की जगह पतझड़ की हलकी हवा ने ले ली थी। पहले बरसों की तरह दिन-भर ठंडी हवा चलती थी और बड़े-बड़े बादल क्षितिज के एक छोर से दूसरे छोर तक दौड़ लगाते थे और मकानों पर अपनी परछाइयाँ फेंकते जाते थे। उनके जाते ही नवम्बर के आसमान की पीली सुनहरी रोशनी मकानों पर छा जाती थी।

इस मौसम में पहली बार बरसातियाँ नज़र आईं—चमकदार रबड़ चढ़ी हुई बरसातियाँ पहनने वालों की संख्या इतनी अधिक थी कि देखकर ताज्जुब होता था। इसका कारण यह था कि हमारे अख़बारों में यह खबर छपी थी कि दो सौ साल पहले दक्षिणी फ्रांस में फैलने वाली भयंकर महामारियों में डॉक्टर छूत से बचने के लिए मोमजामे के कपड़े पहना करते थे। दुकानों ने इस मौक़े से फ़ायदा उठाकर उन तमाम बरसातियों के स्टॉक को, जिनका अब फ़ैशन नहीं रहा था, बेच लिया। खरीदने वालों का खयाल

था कि ये बरसातियाँ उन्हें 'कीटाणुओं' से बचाने की गारंटी हैं।

लेकिन 'ऑल सोल्ज़ डे' के इन परिचित दृश्यों में हम यह नहीं भूल सके कि लोग कब्रिस्तानों में नहीं गये थे। पहले सालों में ट्रामों में गुलदाऊदी के फूलों की मन्द सुगन्ध छाई रहती थी और कब्रिस्तानों के आगे हाथों में फूल लिये औरतों की लम्बी कतारें दिखाई दिया करती थीं, जो अपने परिवार के मृतकों की क़ब्रों पर फूल चढ़ाकर श्रद्धांजलि अर्पण करना चाहती थीं। यह वह दिन था जब कई महीनों की विस्मृति और लापरवाही की कसर चुकाई जाती थी। लेकिन जिस साल प्लेग आयी, लोग अपने मृतक रिश्तेदारों का स्मरण नहीं करना चाहते थे। क्योंकि वे पहले से ही ज़रूरत से ज़्यादा मृतकों के बारे में सोच रहे थे, इसलिए अफ़सोस और उदासी के साथ फिर कब्रिस्तान में जाने का सवाल ही नहीं उठता था। मृतक अब वे परित्यक्त नहीं रहे थे, जिनके पास साल में एक बार आकर उनके रिश्तेदार अपनी निर्दोषिता सावित करते थे। अब वे अनधिकार चेष्टा से ज़िन्दा लोगों में आने वाले मेहमान थे, जिन्हें भूल जाने की ख्वाहिश होती है। इसीलिए इस साल मृतकों के दिन को जान-बूझकर लेकिन चुपचाप भुला दिया गया। जैसी कि कोतार्द ने रूखे ढंग से टिप्पणी की थी, आजकल हमारे लिए हर दिन मृतकों का दिन है। तारो ने देखा कि दिन-ब-दिन कोतार्द की मज़ाक करने की आदत बढ़ती जा रही है।

और सचमुच श्मशान में प्लेग से मरे लोगों की चिताओं की प्रचंडता पूर्ववत् क़ायम थी। इसमें शक़ नहीं कि मौत के आँकड़ों में कोई वृद्धि नहीं हुई थी, लेकिन ऐसा लगता था कि प्लेग हमेशा के लिए अपने प्रचंड रूप में हमारे बीच बस गई थी और एक कार्य-कुशल सरकारी अफ़सर की तरह हर रोज़ नियम और उत्साहपूर्वक मौतों की वसूली कर लेती थी। सैद्धान्तिक और सरकारी दृष्टिकोण से यह आशाजनक आसार था। बहुत लम्बी उठने के बाद मौत के ग्राफ़ की रेखा सीधी हो गई थी, इससे बहुत से लोग मिसाल के लिए डॉक्टर रिचर्ड आश्वस्त हो गए थे। डॉक्टर ख़ुशी से अपने हाथ रगड़कर कहता था, "आज तो ग्राफ़ बहुत अच्छा है।" उसके विचार में बीमारी सबसे ऊँचे निशान पर पहुँच चुकी थी, इसलिए सिवा

कम होने के अब उसके पास कोई रास्ता नहीं था। उसने इसका श्रेय डॉक्टर कास्तेल की नयी सीरम को दिया, जिसकी वजह से सचमुच कई ऐसे लोग बच गए थे, जिनके बचने की कोई उम्मीद नहीं थी। इस बात से इन्कार न करते हुए भी वृद्ध डॉक्टर ने उसे याद दिलाया कि भविष्य अनिश्चित है; इतिहास यह साबित करता है कि महामारियाँ अनायास ही फिर ज़ोर पकड़ लेती हैं जब कि उनके ज़ोर पकड़ने की कोई उम्मीद नहीं होती। अधिकारियों ने, जो बहुत दिनों से नगरवासियों के नैतिक साहस को बढ़ावा देना चाहते थे, लेकिन प्लेग की प्रचंडता के कारण ऐसा न कर सके थे, डॉक्टरों की एक मीटिंग बुलाकर उनसे इस विषय पर ऐलान जारी करवाने का फैसला किया। बदक़िस्मती से, मीटिंग होने से पहले डॉक्टर रिचर्ड भी प्लेग के शिकार हो गए, जबकि प्लेग ठीक 'पानी चढ़ने के निशान' तक पहुँची थी।

यह खेदजनक घटना, जो सनसनीखेज़ थी, दरअसल कोई बात साबित न कर सकी। हमारे अधिकारी उतने ही अस्वाभाविक ढंग से फिर निराशावादी बन गए, जिस तरह वे आशावादी बने थे। रही डॉक्टर कास्तेल की बात, वे सीरम बनाने में ज़्यादा-से-ज़्यादा सावधानी बरतने लगे। इस वक़्त तक कोई सार्वजनिक स्थान या इमारत ऐसी नहीं थी जो अस्पताल या क्वारंटीन कैम्प में न बदल दी गई हो। सिर्फ़ प्रीफ़ेक्ट के दफ्तर बच गए थे, जिनकी शासन-प्रबन्ध और कमेटी की मीटिंगों के लिए ज़रूरत थी। वैसे महामारी में अपेक्षाकृत स्थिरता आ गई थी, इसलिए रियो की संस्था अभी भी स्थिति का सामना करने में समर्थ थी। हालाँकि उन पर लगातार काम का बोझ पड़ रहा था, लेकिन डॉक्टर और उनके सहायकों को इससे ज़्यादा कोशिशें करने की ज़रूरत नहीं दिखाई दे रही थी। उन्हें तो मशीन की तरह अपना काम करना था, जो इन्सान की ताक़त से कहीं बड़ा था। न्यूमोनिक प्लेग की छूत, जिसके कुछ केस पाए जा चुके थे, अब सारे शहर में फैल रही थी। ऐसा लगता था कि हवाएँ छत की आग को भड़का रही थीं और लोगों के सीनों में सुलगा रही थीं। न्यूमेटिक प्लेग के मरीज़ खून-मिला थूक फेंककर जल्द ही खत्म हो जाते थे। महामारी की यह नयी शक्ल

ज़्यादा फैलने वाली और सांघातिक थी। लेकिन विशेषज्ञों की राय में हमेशा से मतभेद रहा था। अधिक सुरक्षा के लिए सफ़ाई-विभाग के सभी कर्मचारी तीन बार तह की हुई मलमल के नक़ाब पहनते थे, जिन्हें उबालकर कीटाणुरहित कर लिया गया था। लेकिन ब्यूबोनिक प्लेग के केस कम हो जाने के बावजूद मरने वालों की संख्या पहले-जैसी ही बनी रही।

इस बीच खाद्य-सप्लाई में दिक्कत होने के कारण अधिकारी चिन्तित हो उठे थे। मुनाफ़ाखोर खाने-पीने की चीज़ों को, जो दुकानों में नहीं मिलती थीं, बहुत महँगे दामों पर बेच रहे थे। इसके परिणामस्वरूप गरीब परिवारों की बड़ी दुर्दशा हुई और अमीरों को किसी चीज़ की भी कमी महसूस नहीं हो रही थी। प्लेग को अपने निष्पक्ष शासन से नगरवासियों में समानता पैदा करनी चाहिए थी, लेकिन अब उसका उल्टा ही असर हुआ और अभ्यस्त लालसाओं के संघर्ष के कारण लोगों के दिलों में अन्याय की कटु भावना और भी तीव्र हो उठी। मौत की अचूक समानता का रास्ता अब भी उनके लिए खुला था—लेकिन इस तरह की समानता की किसी को ख्वाहिश नहीं थी। गरीब लोग, जो इस मुसीबत के शिकार थे, आसपास के गाँवों के बारे में आकांक्षा-भरे सपने देखने लगे, जहाँ अब भी रोटी सस्ती थी और ज़िन्दगी पर कोई पाबन्दी नहीं थी। उनके मन में यह स्वाभाविक किन्तु असंगतिपूर्ण इच्छा जाग्रत हुई कि उन्हें भी इन सुखी गाँवों में जाने की इजाज़त मिलनी चाहिए। यह भावना एक नारे में प्रकट हुई, जिसे लोग सड़कों पर लिखते थे और जो दीवारों पर चॉक से लिखा गया था, "रोटी दो या ताज़ी हवा दो!" यह अर्द्ध-व्यंग्यपूर्ण युद्ध का नारा उन प्रदर्शनों का सूचक था, जिन्हें आसानी से दबा लिया गया था, लेकिन जिनसे सब सचेत हो गए थे कि नगरवासियों में आक्रोश की अप्रीतिकर भावना बढ़ती जा रही है।

यह कहना न होगा कि अखबार अधिकारियों द्वारा दी गई हिदायत का पालन कर रहे थे, कि हर सूरत में लोगों की आशावादिता क़ायम रखी जाए। अखबारों के मुताबिक हमारे नगरवासी 'साहस और दृढ़ता की मिसाल थे,' लेकिन ऐसे शहर में, जिसे अपने ही साधनों पर निर्भर रहना था,

जहाँ कोई चीज़ गुप्त नहीं रह सकती थी, किसी को जनता की इस मिसाल के बारे में भ्रम नहीं था। लोगों के साहस और दृढ़ता का अन्दाज़ा, जिसकी हमारे पत्रकार चर्चा करते थे, आप किसी क्वारंटीन डिपो में या नज़रबन्दों के कैम्पों में जाकर लगा सकते थे। संयोगवश, अन्यत्र व्यस्त रहने के कारण कथाकार को इन कैम्पों में ज़्यादा जाने का मौक़ा नहीं मिला, इसलिए वह इन स्थानों की दशा के ब्योरे के लिए तारो की डायरी पर भरोसा करने के लिए मजबूर है।

तारो एक बार रेम्बर्त के साथ म्युनिसिपैलिटी के खेल के मैदान में बने कैम्प में गया था, जिसका विवरण उसने अपनी डायरी में दिया है। यह मैदान शहर की सीमा पर बना है, उसकी एक तरफ़ ट्राम की लाइन है और दूसरी तरफ ऊसर भूमि है, जो उस पठार के सुदूर कोने तक चली गई है जिस पर ओरान बसा है। मैदान के आसपास कंक्रीट की ऊँची दीवारें बनी थीं और चारों फाटकों पर सन्तरी तैनात कर दिये गए थे, जिसकी वजह से बाहर निकलकर भागना असम्भव हो गया था। दीवार एक और काम भी करती थी—सड़क पर से गुज़रने वाले लोग क्वारंटीन में रहने वाले अभागों को नहीं देख सकते थे, लेकिन इसका एक फ़ायदा यह था कि भीतर के लोग सारा दिन ट्रामों की आवाज़ सुनते थे, हालाँकि उन्हें दिखाई कुछ नहीं देता था। जब सड़क पर ट्रैफिक का शोर बढ़ जाता था, तो वे अन्दाज़ लगा लेते थे कि लोग काम पर जा रहे हैं या काम से लौट रहे हैं। उन्हें यह एहसास होता था कि वे जिस ज़िन्दगी से वंचित कर दिये गए हैं वह ज़िंदगी उनसे कुछ गज़ की दूरी पर ही पूर्ववत् चल रही है और इन ऊँची दीवारों ने दो संसारों को अलग कर दिया है, जो दो ग्रहों की तरह एक-दूसरे से अपरिचित हैं।

तारो और रेम्बर्त ने खेल के मैदान में जाने के लिए एक इतवार की शाम चुनी। उनके साथ फुटबॉल का खिलाड़ी गोन्ज़ेल्ज़, भी था, जिसके साथ रेम्बर्त ने सम्पर्क पैदा किया था और जो औरों के साथ बारी-बारी से कैम्प की निगरानी के लिए राज़ी हो गया था। इस बार रेम्बर्त गोन्ज़ेल्ज़ को कैम्प के कमांडेन्ट से परिचय करवाने लाया था। उस रोज़ दोपहर को

जब उनकी मुलाक़ात हुई तो गोन्ज़ेल्ज़ ने फ़ौरन कहा कि प्लेग से पहले इस वक्त वह फुटबॉल की वर्दी पहनना शुरू करता था। अब तो खेल के मैदान भी ज़ब्त हो गए हैं. सब बातें अतीत की कहानी बनकर रह गई हैं। गोन्ज़ेल्ज़ अपने को बेकार महसूस कर रहा था और उसके व्यवहार से यह बात ज़ाहिर भी हो रही थी। इसीलिए उसने रेम्बर्त के सुझाव पर यह काम स्वीकार कर लिया था, लेकिन उसने एक शर्त रखी थी कि वह सिर्फ़ हफ़्ते के अन्त में ही ड्यूटी दिया करेगा।

आसमान में बादल छाए थे, और उनकी तरफ़ देखकर गोन्ज़ेल्ज़ ने अफ़सोस-भरे स्वर में कहा कि ऐसा दिन जब न ज़्यादा गरमी है, न पानी बरस रहा है, मैच खेलने के लिए सबसे अच्छा रहता। फिर उसने अतीत की बातों को भरसक कोशिशों से याद करना शुरू किया—ड्रेसिंग रूम्ज़ से आती हुई मालिश की गंध, भीड़ से ठसाठस भरे स्टैण्ड, खिलाड़ियों की रंगीन कमीज़ें, जो ब्राउन धरती की पृष्ठभूमि में खूब चमकती थीं। हॉफ़ टाइम के वक्त वे लोग नींबू का शरबत या लेमनेड पिया करते थे, जो उनके सूखे गलों को गुदगुदाकर फिर से ताज़ा कर देता था। तारो ने यह भी दर्ज किया है कि किस तरह जब वे गन्दी सड़कों पर से गुज़रे तो फुटबॉल के खिलाड़ी ने रास्ते में पड़े सब पत्थरों को ठोकर लगाई थी। उसका मक़सद परनाले के छेदों में पत्थरों को डालना था। जब भी कोई पत्थर छेद में पहुँच जाता था, तो गोन्ज़ेल्ज़ चिल्ला उठता था, "शाबाश ! गोल हो गया !" अपना सिगरेट खत्म करके उसने अधजले टुकड़े को मुँह से निकालकर फेंक दिया और उसके ज़मीन पर गिरने से पहले ही उसे पैरों के अँगूठे पर पकड़ने की कोशिश की। खेल के मैदान के पास कुछ बच्चे खेल रहे थे। जब उनमें से एक ने उनकी तरफ़ गेंद फेंकी तो गोन्ज़ेल्ज़ ने विशेष रूप से भागकर गेंद को सफ़ाई से 'लौटा' दिया।

जब वे मैदान में दाखिल हुए तो स्टैण्डों पर लोगों की खचाखच भीड़ थी। खेल के मैदान में तम्बू गड़े थे, जिनके भीतर से बिस्तर, कम्बल और कपड़ों की गठरियाँ दिखाई देती थीं। गरमी और बारिश में नज़रबंदों के लिए स्टैण्डों को रखा गया था। लेकिन यह कैम्प का नियम था कि सूरज

डूबने के बाद हर आदमी अपने तम्बू में पहुँच जाए। स्टैण्डों के नीचे नहाने के फव्वारे वाले नल लगा दिये गए थे और जो कमरे कभी खिलाड़ियों के ड्रेसिंग-रूम हुआ करते थे उन्हें दफ्तरों और बीमारों के कमरों में बदल दिया गया था। कैम्प के अधिकांश लोग स्टैण्डों पर इधर-उधर बैठे थे। कुछ 'टच लाइन'[1] पर चहलकदमी कर रहे थे और कुछ लोग अपने तम्बुओं के सामने बैठकर निर्लिप्त भाव से आसपास का दृश्य देख रहे थे। कुछ लोगों के पैर एक-दूसरे पर रखे लकड़ी के तख्तों पर फिसल रहे थे; उनके चेहरों पर एक अज्ञात आशा की झलक थी।

"ये लोग दिन-भर क्या करते हैं?" तारो ने रेम्बर्त से पूछा।

"कुछ भी नहीं।"

करीब-करीब सभी लोग खाली हाथ थे और बाँहें लटकाए चल रहे थे। इन मुसीबतज़दा लोगों की भीड़ में एक और विशेष बात नज़र आई थी—सब-के-सब खामोश थे।

रेम्बर्त ने कहा, "जब शुरू में ये लोग यहाँ आये थे तो इतना शोर मचता था कि कोई बात सुनाई ही नहीं देती थी। लेकिन धीरे-धीरे वे खामोश हो गए।"

अपने नोट्स में तारो ने कुछ बातें लिखी हैं, जो उसकी दृष्टि में इस परिवर्तन को अच्छी तरह समझा सकती हैं। उसने कल्पना की है कि शुरू के दिनों में वे लोग किस तरह एक साथ सटकर तम्बुओं में रहते होंगे, मक्खियों की भिनभिनाहट सुनते होंगे, अपने जिस्म खुजलाते होंगे और जब कभी उन्हें कोई कृपालु श्रोता मिलता होगा तो वे अपने क्षोभ और आशंकाओं को कर्कश स्वर में व्यक्त करते होंगे। लेकिन जब कैम्प में ज़रूरत से ज़्यादा भीड़ हो गई तो सहानुभूति से किसी की बात सुनने वाले श्रोताओं की भी कमी हो गई। इसलिए खामोश रहने और हर चीज़ और हर आदमी के खिलाफ़ मन में संदेह पालने के सिवा उनके पास कोई चारा न रहा। सचमुच दर्शक को ऐसा लगता था जैसे लाल ईंटों के कैम्प पर भूरे रंग के चमकदार आसमान से ओस की तरह संदेह की भावना बरस रही थी।

१. सीमा की लाइन, जिसके बाहर खिलाड़ी नहीं जा सकते।

हाँ, सबका आँखों में संदेह था। वे यह तो सोच ही रहे थे कि उन्हें नज़रबन्द कर दिए जाने का कोई-न-कोई उचित कारण तो होगा ही—वे उन भयाक्रान्त लोगों की तरह थे जो अपनी समस्या में उलझे हुए थे। तारो को सबकी आँखों में वही शून्यता नज़र आई। उन्हें उन तमाम चीज़ों से अलग कर दिया गया था, जो उनकी ज़िन्दगी थीं, इसलिए उन्हें बेहद मानसिक पीड़ा हो रही थी। चूँकि वे सारा वक्त मौत के बारे में ही नहीं सोच सकते थे, इसलिए वे कुछ भी नहीं सोचते थे। वे एक माने में छुट्टी पर थे। तारो ने लिखा है, "लेकिन सबसे ज़्यादा बुरी बात तो यह है कि लोग उन्हें भूल गए हैं और उन्हें इस बात का पूरा एहसास है। उनके दोस्त उन्हें भूल गए हैं; क्योंकि उनके पास सोचने के लिए और बहुत सी बातें हैं। यह स्वाभाविक ही है। वे जिन्हें प्यार करते हैं वे भी उन्हें भूल गए हैं, क्योंकि उनकी सारी शक्तियाँ उन्हें कैम्प से निकालने के लिए योजनाएँ बनाने और व्यावहारिक क़दम उठाने में ही लग गई हैं। हमेशा इन योजनाओं और क़दमों में उलझे रहने के कारण उन्होंने उन लोगों के बारे में सोचना ही बन्द कर दिया है, जिनकी रिहाई के लिए वे कोशिशें कर रहे हैं और यह भी स्वाभाविक ही है। दरअसल स्थिति यूँ है—कोई भी असली माने में किसी दूसरे के बारे में सोचने की क्षमता नहीं रखता, चाहे कितनी ही बड़ी मुसीबत क्यों न आ जाए; क्योंकि सचमुच किसी के बारे में सोचने का अर्थ है कि दिन में सारा वक्त उसी के बारे में सोचा जाए, विचार-धारा में तनिक भी व्याघात न पड़े। खाना खाते वक्त, अगर गाल पर मक्खी आकर बैठ जाए, घर का काम-काज करना पड़े या अचानक कहीं खुजली हो जाए, तब भी मन की एकाग्रता न टूटे। लेकिन मक्खियाँ और खुजलाहटें तो बनी ही रहती हैं। इसीलिए ज़िन्दगी बसर करना कठिन काम है—और ये लोग इस बात को अच्छी तरह से जानते हैं।"

कैम्प का प्रेज़ीडेंट आया। उसने कहा कि ओथों नामक एक सज्जन उनसे मिलना चाहते हैं। गोन्ज़ेल्ज़ को दफ़्तर में छोड़कर वह दूसरे लोगों को स्टैंड के एक कोने में ले गया जहाँ ओथों अकेला बैठा था। उन्हें आते देखकर मजिस्ट्रेट खड़ा हो गया, उसने वही पोशाक पहन रखी थी, जो वह

पहले पहना करता था और उसका कॉलर अभी भी अकड़ा हुआ था। तारो को सिर्फ़ एक ही परिवर्तन नज़र आया। मजिस्ट्रेट ने कनपटी के पास बालों की एक लट को कंघी से पीछे नहीं किया था और एक बूट के तस्मे खुले हुए थे। वह बहुत थका मालूम होता था, उसने एक बार भी आगंतुकों के चेहरे की तरफ़ नहीं देखा। ओथों ने कहा कि उसे सब लोगों से मिलकर बड़ी खुशी हुई है और वे जाकर डॉक्टर रियो को उसकी तरफ़ से धन्यवाद दे दें।

कुछ क्षणों की खामोशी के बाद मजिस्ट्रेट ने बोलने की कोशिश की, "उम्मीद है कि यक़ को ज़्यादा तक़लीफ़ नहीं हुई।"

तारो ने पहली बार मजिस्ट्रेट के मुँह से उसके बेटे का नाम सुना और उसे एहसास हुआ कि कोई चीज़ बदल गई है। सूरज डूब रहा था और बादलों के एक छेद में से सूरज की समतल किरणें स्टैण्डों को कुरेद रही थीं और उन लोगों के चेहरों पर एक पीली आभा डाल रही थीं।

"नहीं," तारो ने कहा, "नहीं, बच्चे को सचमुच तक़लीफ़ नहीं हुई।"

जब वे वहाँ से जा रहे थे, तो मजिस्ट्रेट अभी भी प्रकाश की तरफ़ टकटकी लगाकर देख रहा था।

वे गोन्ज़ेल्ज़ से विदा लेने के लिए दफ़्तर में पहुँचे, तो गोन्ज़ेल्ज़ ड्यूटियों की फ़ेहरिस्त पढ़ रहा था। उन लोगों से हाथ मिलाते वक्त फुटबॉल का खिलाड़ी खूब हँसा।

"खैर, मैं फिर अपने पुराने ड्रेसिंग-रूम में पहुँच गया। चलो, कुछ काम तो मिल ही गया।"

इसके फ़ौरन बाद ही जब कैम्प का प्रेज़ीडेण्ट तारो और रेम्बर्त को छोड़ने के लिए बाहर आया तो उन्हें स्टैण्डों से घर्र-घर्र की आवाज़ आई। क्षण-भर बाद ही लाउडस्पीकरों ने, जो सुखी ज़माने में मैचों के नतीजे की घोषणा करते थे या टीमों का परिचय कराते थे, कैम्पवासियों को सूचित किया कि वे रात के खाने के लिए अपने-अपने तम्बुओं में चले जाएँ। धीरे-धीरे सब लोग कतारें बाँधकर स्टैण्डों से चले आए और पैर घसीटते हुए तम्बुओं की तरफ़ चल पड़े। जब सब तम्बुओं में पहुँच गए, तो दो बिजली

से चलने वाली ट्रॉलियाँ, जो रेलवे-प्लेटफ़ॉर्मों पर सामान पहुँचाया करती थीं, तम्बुओं की कतार के बीच चलने लगीं। तम्बुओं में से लोगों ने अपने हाथ आगे बढ़ा दिए, हर ट्राली पर रखी दो देगों में से दो करछुलों ने खाने की चीज़ें निकालकर सफ़ाई से लोगों के हाथों में पकड़े बरतनों में डाल दीं, फिर ट्राली अगले तम्बू के आगे जाकर रुक गई।

"कितने सलीक़े और फ़ुरती से यहाँ काम होता है," तारो ने कहा।

उन लोगों से हाथ मिलाते वक्त कैम्प के प्रेज़ीडेण्ट का चेहरा खुशी से खिल उठा। उसने कहा, "है न ? इस कैम्प में हम सलीक़े और फ़ुरती पर वहुत ज़ोर देते हैं।"

अँधेरा फैल रहा था। आसमान के बादल साफ़ हो गए थे और कैम्प एक ठंडी नरम रोशनी में नहा उठा था। शाम की निस्तब्धता में प्लेटों और चम्मचों की मद्धिम खनखनाहट सुनाई दे रही थी। तम्बुओं के ऊपर चिमगादड़ मँडरा रहे थे और अचानक अँधेरे में ग़ायब हो जाते थे। दीवारों के बाहर पटरियों पर एक ट्राम-कार की कर्कश चीत्कार सुनाई दे रही थी।

"बेचारे मोसिये ओथों !" जब कैम्प का फाटक बन्द हो गया तो तारो अस्फुट स्वर में बुदबुदाया। "उनकी मदद करने को जी चाहता है। लेकिन एक जज की मदद कैसे की जा सकती है ?"

६

शहर में इसी क़िस्म के और भी कई कैम्प थे, लेकिन चूंकि कथाकार को उनके बारे में व्यक्तिगत अनुभव नहीं है और वह सचाई के ख़िलाफ़ कोई बात नहीं लिखना चाहता, इसलिए उसने दूसरे कैम्पों के बारे में कुछ नहीं लिखा। इन कैम्पों के अस्तित्व-मात्र से, उनमें बन्द जनसमूहों में से आने वाली गन्ध से, संध्या के झुटपुटे में सुनाई देने वाली लाउडस्पीकरों की आवाज़ों से, और कैम्प के इर्द-गिर्द बने रहस्यमय वातावरण से इन वर्जित स्थानों से पैदा हुए डर से हमारे नगरवासियों के नैतिक साहस में गम्भीर

गिरावट आ गई थी, सबके मन घबराहट और आशंका से भर उठे थे। अक्सर शहर की शान्ति भंग होती थी और छोटे-मोटे दंगे हो जाते थे।

ज्यों-ज्यों नवम्बर नज़दीक आ रहा था, सुबह के वक्त सरदी बढ़ती जाती थी। बारिश की तेज़ बौछारों ने सड़कों को धो दिया था और आसमान के बादल भी साफ़ हो गए थे। सुबह के वक्त शहर क्षीण, चमकदार धूप में नहा उठता था। लेकिन रात होने के साथ-साथ हवा गरम हो जाती थी। ऐसी ही एक रात को तारो ने रियो को अपनी जिन्दगी की कहानी सुनाई।

एक दिन जब उन्हें बहुत ज़्यादा काम करना पड़ा था, तारो ने सुझाव दिया कि वे दोनों एक साथ रियो के पुराने मरीज़ को देखने चलेंगे, जो दमे से पीड़ित था। शहर के पुराने हिस्से के मकानों के शिखरों पर अभी भी धूप की हल्की आभा थी, चौराहों पर हवा के मंद झोंके उनके चेहरों का स्पर्श कर रहे थे। खामोश सड़कों से गुज़रने के बाद शुरू में तो उन्हें बूढ़े के बातूनीपन से चिढ़ हुई।

वह अलंकृत शैली में भाषण दे रहा था कि कुछ लोग तो हालत से तंग आ गए हैं और बार-बार चन्द मुट्ठी-भर लोग ही खाने की सारी बढ़िया चीज़ें हड़प जाते हैं। यह बात हमेशा नहीं चलेगी, एक दिन—यह कहकर बूढ़े ने अपने हाथ मले, "एक दिन तो सारे कूड़े-कचरे का सफ़ाया हो जाएगा।" जब तक डॉक्टर बूढ़े की जाँच करता रहा, बूढ़ा इसी विषय पर बोलता रहा।

इसी वक्त ऊपर किसी के क़दमों की आहट सुनाई दी। तारो की नज़रें छत की तरफ़ लगी देखकर बुढ़िया ने बताया कि पड़ोसियों की लड़कियाँ छत पर टहल रही हैं। उसने यह भी बताया कि ऊपर से बहुत अच्छा दृश्य दिखाई देता है, शहर के इस हिस्से में अक्सर घरों की छतें एक तरफ़ मिली रहती हैं, इसलिए औरतों को अपनी पड़ोसिनों से मिलने के लिए सड़क पर से होकर नहीं जाना पड़ता।

"क्यों न ऊपर हो आइए? आपको ताज़ी हवा मिल जाएगी।"

छत पर कोई नहीं था। सिर्फ़ तीन कुरसियाँ पड़ी थीं। एक तरफ़,

जहाँ तक नज़र जाती थी, छतों की क़तार थी। सबसे दूर की छत एक काली खुरदरी चीज़ की तरफ़ झुकी हुई थी। तारो और रियो ने पहचाना, वह शहर के सबसे नज़दीक की पहाड़ी थी। दूसरी तरफ़ कुछ सड़कों और अदृश्य बन्दरगाह को मापती हुई उनकी नज़रें क्षितिज पर जा टिकीं जहाँ समुद्र और आसमान एक मद्धम, थर्राती हुई भूरी रेखा में मिल रहे थे। काले टुकड़े के पार जहाँ चट्टानें थीं, अचानक रह-रहकर एक रोशनी उठती थी, वह रोशनी किधर से आ रही थी, यह वे न जान सके। जहाज़ों के प्रवेश-मार्ग पर अभी भी बत्ती जल रही थीं ताकि ओरान के सूने बन्दरगाह पर से गुज़रकर समुद्रतटवर्ती दूसरे बन्दरगाहों पर जाने वाले जहाज़ों को सुविधा हो। रात की हवा ने आसमान को बुहारकर स्फटिक की तरह चमकदार बना दिया था। तारे चाँदी के टुकड़ों की तरह मालूम हो रहे थे, घूमती हुई बत्ती की पीली चमक में रह-रहकर उनकी आभा मन्द पड़ जाती थी। हवा के झोंकों में मसालों और गरम पत्थरों की सुगन्ध थी। हर चीज़ खामोश थी।

एक कुरसी पर बैठते हुए रियो ने कहा, "बड़ी अच्छी जगह है। लगता है जैसे प्लेग यहाँ तक नहीं पहुँची।"

तारो डॉक्टर की तरफ़ पीठ किए समुद्र को देख रहा था।

"हाँ, यहाँ आकर बड़ा अच्छा लगता है," उसने क्षण-भर की खामोशी के बाद कहा।

फिर रियो की बग़ल वाली कुरसी पर बैठकर उसने रियो के चेहरे पर अपनी नज़रें गड़ा दीं। तीन बार आसमान में रोशनी फैली और फिर लुप्त हो गई। नीचे एक कमरे से, जो सड़क की तरफ़ खुलता था, चीनी के बरतनों की धीमी खनखनाहट सुनाई दी। घर में ज़ोर से कोई दरवाज़ा बन्द हुआ।

तारो ने साधारण स्वर में कहा, "रियो, क्या तुम्हें इस बात का एहसास है कि तुमने कभी यह जानने की कोशिश नहीं की कि मैं कैसा आदमी हूँ? क्या मैं तुम्हें अपना दोस्त समझ सकता हूँ?"

"हाँ, हम दोस्त तो हैं ही, लेकिन हमें दोस्ती का प्रदर्शन करने के लिए वक्त नहीं मिला।"

"गुड । इससे मुझमें कुछ विश्वास पैदा हुआ है। मान लो, अगर हम अब एक घण्टा दोस्ती के लिए निकाल लें।"

रियो जवाब में मुस्कराया।

"तो लो···।"

कुछ सड़कें छोड़कर गीली सड़क पर तेज़ी से चलती कार की मद्धम, लेकिन लम्बी फूत्कार सुनाई दी—फिर यह फूत्कार बन्द हो गई। दूर कहीं अस्पष्ट चिल्लाहटों ने वातावरण की नीरवता को भंग किया। उसके बाद तारों-भरे आसमान से जैसे किसी मोटे आवरण ने इन दोनों जनों को लपेट लिया और ख़ामोशी छा गई। तारो उठकर मुँडेर पर जा बैठा था, उसका मुँह रियो की तरफ़ था जो अपनी कुरसी में धँसा बैठा था। टिमटिमाते आसमान की पृष्ठभूमि में रियो के भरकम शरीर की काली रेखाकृति दीख रही थी। तारो को बहुत-कुछ कहना था, उसके अपने शब्दों में ही हम सारी बातें बताएँगे।

"मैं चाहता हूँ तुम्हें मेरी बात समझने में आसानी हो, रियो ! इसलिए सबसे पहले मैं यही कहूँगा कि मुझे पहले प्लेग हो चुकी है—इस शहर में आकर प्लेग का सामना करने से बहुत पहले। दूसरे शब्दों में इसका यह अर्थ हुआ कि मैं भी और लोगों की तरह ही हूँ। कुछ लोग ऐसे हैं, जो इस बात को नहीं जानते या इस हालत में बेचैनी महसूस करते हैं। कुछ लोग जानते हैं और इस हालत में से निकलना चाहते हैं। जहाँ तक मेरा व्यक्तिगत सवाल है, मैं हमेशा इस हालत में से निकलना चाहता था।

"जवानी में मैं अपनी मासूमियत के ख़याल पर ज़िन्दा था, जिसका मतलब है कि मेरे मन में कोई ख़याल ही नहीं था। मैं उन लोगों में से नहीं, जो अपने को यंत्रणा देते हैं। मैंने उचित ढंग से अपनी ज़िन्दगी शुरू की थी। मैंने जिस काम में हाथ डाला उसीमें मुझे सफलता मिली। बुद्धिजीवियों के क्षेत्र में, बेतकल्लुफ़ी से विचरण करता था, औरतों के साथ मेरी ख़ूब पटती थी और अगर कभी-कभी मेरे मन में पश्चात्ताप की कसक उठती थी तो वह जितनी आसानी से पैदा होती थी उतनी आसानी से ख़त्म भी हो जाती थी। फिर एक दिन मैंने सोचना शुरू किया और अब···

"मैं तुम्हें यह बता दूँ कि तुम्हारी तरह जवानी में मैं ग़रीब नहीं था। मेरे पिता ऊँचे ओहदे पर थे—वे पब्लिक प्रोसीक्यूशनों के डायरेक्टर थे। लेकिन उनकी तरफ़ देखकर कोई यह अनुमान नहीं लगा सकता था। देखने में वे बड़े ख़ुशमिज़ाज और दयालु मालूम होते थे, और वे सचमुच ऐसे ही थे। मेरी माँ बड़ी सादी और शरमीली औरत थी और मैं हमेशा उन्हें बहुत चाहता था, लेकिन मैं माँ के बारे में बात न ही करूँ तो अच्छा है। मेरे पिता मुझे पर हमेशा मेहरबान थे, और मेरा ख़याल है कि वे मुझे समझने की कोशिश भी करते थे। वे एक आदर्श पति नहीं थे—इस बात को मैं अब जान गया हूँ, लेकिन इस बात से मेरे मन पर कोई विशेष आघात नहीं पहुँचा। अपनी बेवफ़ाइयों में भी वे बड़ी शालीनता से व्यवहार करते थे जैसी कि उनसे उम्मीद की जा सकती थी। आज तक उनकी बदनामी नहीं हुई। कहने का मतलब यह कि उनमें मौलिकता बिलकुल नहीं थी और अब उनके मरने के बाद मुझे एहसास हुआ है कि वे पलस्तर के बने संत तो नहीं थे, लेकिन एक आदमी की हैसियत से वे बड़े नेक और शालीन थे। बस, वे बीच के रास्ते पर चलते थे। वे उस किस्म के लोगों में से थे, जिनके लिए मन में हल्की, लेकिन स्थिर भावना उमड़ती है—यही भावना सबसे अधिक टिकाऊ होती है।

"मेरे पिता में एक विशेष बात थी—हमेशा वे रात को सोने से पहले रेलवे का बड़ा टाइमटेबल पढ़ते थे। इसलिए नहीं कि उन्हें अक्सर ट्रेन में सफ़र करना पड़ता था। ज़्यादा-से-ज़्यादा वे ब्रिटेनी तक जाते थे जहाँ देहात में उनका छोटा-सा मकान था। हम लोग हर साल गरमियों में वहाँ जाया करते थे। लेकिन वे चलते-फिरते टाइमटेबल थे। वे आपको पेरिस-बर्लिन एक्सप्रेसों के आने और जाने का सही टाइम बता सकते थे; ल्यों से वार्सा कैसे पहुँचा जा सकता है, किस वक्त कौनसी ट्रेनें पकड़नी चाहिएँ, इसका उन्हें पूरा पता रहता था। तुम अगर उनसे किन्हीं दो राजधानियों के बीच का फासला पूछते तो वे तुम्हें सही-सही बता सकते थे। भला तुम मुझे बता सकते हो कि ब्रियान्को से केमोनी कैसे पहुँचा जा सकता है? मेरे ख़याल में तो अगर किसी स्टेशन-मास्टर से यह सवाल किया जाए तो वह

भी अपना सिर खुजलाने लगेगा। लेकिन मेरे पिता के पास इस सवाल का जवाब तुरन्त तैयार मिलता था। करीब-करीब हर शाम वे इस विषय में अपने ज्ञान की वृद्धि करते थे और उन्हें इस बात पर बड़ा गर्व था। उनके इस शौक से मेरा बहुत मनोरंजन होता था। मैं यात्रा-सम्बन्धी बड़े पेचीदा सवाल उनसे पूछा करता था और उनके जवाबों को रेलवे टाइमटेबल से मिलाकर देखा करता था। उनके जवाब हमेशा बिलकुल सही निकलते थे। शाम को मैं और मेरे पिता रेलवे के ये खेल खेला करते थे, जिसकी वजह से हम दोनों की खूब पटती थी। उन्हें मेरे-जैसे श्रोता की ही ज़रूरत थी जो ध्यान से उनकी बातें सुने और पसन्द करे। मेरी दृष्टि में उनकी यह प्रवीणता अधिकांश गुणों की तरह प्रशंसनीय थी।

"लेकिन मैं बहक रहा हूँ और अपने आदरणीय पिता को बहुत अधिक महत्त्व दे रहा हूँ। दरअसल उन्होंने मेरे हृदय-परिवर्तन की महान् घटना में केवल अप्रत्यक्ष योग दिया था, मैं उस घटना के बारे में तुम्हें बताना चाहता हूँ। सबसे बड़ा काम उन्होंने सिर्फ़ यही किया कि मेरे विचार जागृत किये। जब मैं सत्रह बरस का था तो मेरे पिता ने मुझसे कहा कि मैं कचहरी में आकर उन्हें बोलता हुआ सुनूं। कचहरी में एक बड़ा केस चल रहा था और शायद उनका खयाल था कि मैं उन्हें उनके सर्वोत्तम रूप में देखूँगा। मुझे यह भी शक़ हुआ कि उनका ख़याल था कि मैं क़ानून की शान-शौक़त और औपचारिक दिखावे से प्रभावित हो जाऊँगा और मुझे यही पेशा अपनाने की प्रेरणा मिलेग। मैं जानता था कि वे मेरे वहाँ जाने के लिए बड़े उत्सुक थे। और हम घर में अपने पिता का जो व्यक्तित्व देखते थे उससे अलग किस्म का व्यक्तित्व देखने को मिलेगा, यह कल्पना मुझे अत्यन्त सुखद मालूम हुई। मेरे वहाँ जाने के सिर्फ़ यही दो कारण थे। अदालत की कार्यवाही मुझे हमेशा सहज और कायदे के मुताबिक मालूम होती थी, जैसी कि चौदह जुलाई की परेड या स्कूल के भाषण-दिवस की कार्यवाही। इस सम्बन्ध में मेरे विचार अमूर्त थे और मैंने इस बारे में कभी गम्भीरता से नहीं सोचा था।

उस दिन की कार्यवाही के बाद मेरे मन में सिर्फ़ एक ही तस्वीर उभरी

थी, वह तस्वीर मुजरिम की थी। मुझे इस बात में शक नहीं कि वह अपराधी था—उसने क्या अपराध किया था, यह ज्यादा महत्त्व की बात नहीं। तीस बरस का वह नाटा आदमी, जिसके बाल विरले और भुरभुरे थे, सबकुछ क़बूल करने के लिए इतना उत्सुक दिखाई दे रहा था। अपने अपराध पर उसे सच्ची ग्लानि हो रही थी और उसके साथ जो होने वाला था उसके प्रति वह आशंकित था। कुछ मिनट बाद मैंने सिवा अपराधी के चेहरे के, हर तरफ़ देखना बंद कर दिया। वह पीले रंग का उल्लू मालूम होता था, बहुत ज्यादा रोशनी से जिसकी आँखें अन्धी हो रही हों। उसकी टाई कुछ अस्त-व्यस्त थी। वह लगातार दाँतों से अपने नाखून काट रहा था, सिर्फ़ दाएँ हाथ के···क्या इससे भी आगे कुछ कहने की मुझे ज़रूरत है? क्यों? तुम तो समझ ही गए होगे—वह एक ज़िन्दा इन्सान था।

"जहाँ तक मेरा सम्बन्ध था—अचानक बिजली की तरह मेरे मन में यह एहसास कौंध गया। अभी तक तो मैं उस आदमी को उसकी उपाधि 'प्रतिवादी' के साधारण रूप में देखता रहा था। मैं ठीक से नहीं कह सकता कि मैं अपने पिता को भूल गया, लेकिन उसी क्षण जैसे किसी चीज़ ने मेरे मर्मस्थल को जकड़ लिया और कटघरे में खड़े उस आदमी पर मेरे सारे ध्यान को केन्द्रित कर दिया। मुकदमे की कार्यवाही मुझे बिलकुल सुनाई नहीं दी, मैं सिर्फ़ इतना जानता था कि वे लोग उस ज़िन्दा आदमी को मारने पर तुले हुए थे और किसी सहज-प्राकृतिक भावना की लहर ने बहाकर मुझे उस आदमी के पक्ष में खड़ा कर दिया था। मुझे उस वक्त होश आया जब मेरे पिता अदालत के सामने बोलने के लिए खड़े हुए।

"लाल गाउन में उनका व्यक्तित्व एकदम बदल गया था। वे दयालु या खुशमिज़ाज नहीं मालूम होते थे। उनके मुँह से लम्बे दिखावटी वाक्य साँपों की अन्तहीन पाँत की तरह निकल रहे थे। मुझे एहसास हुआ कि मेरे पिता क़ैदी की मौत की पुकार कर रहे थे, वे जूरी से कह रहे थे कि वे क़ैदी को दोषी सिद्ध करके समाज के प्रति अपने दायित्व को पूरा करें। यहाँ तक कि वे यह भी कह रहे थे कि उस आदमी का सर काट देना चाहिए। मैं मानता हूँ कि उन्होंने ऐन यही शब्द इस्तेमाल नहीं किये थे।

उनका फॉरमूला था, "इसे सबसे बड़ी सज़ा मिलना चाहिए" लेकिन इन दोनों बातों में बहुत कम फ़र्क था और मतलब एक ही था। मेरे पिता ने जिस सर की माँग की थी वह सर उन्हें मिल गया। लेकिन सर उतारने का काम मेरे पिता ने नहीं किया। मैं अन्त तक मुकदमे को सुनता रहा था, मेरे मन में उस अभागे आदमी के प्रति एक ऐसी भयंकर और नज़दीकी आत्मीयता जागृत हुई, जो मेरे पिता ने कभी महसूस नहीं की होगी। फिर भी सरकारी वकील होने के नाते उन्हें उस मौक़े पर मौजूद रहना पड़ा जिसे शिष्ट भाषा में 'क़ैदी के अंतिम क्षण' कहा जाता है; लेकिन जिसे दरअसल हत्या कहना चाहिए—हत्या का सबसे घृणित रूप।

"उस दिन के बाद से मैं जब भी रेलवे टाइमटेबल देखता तो मेरा मन ग्लानि से काँप उठता। मैं मुक़दमों की कार्यवाही में, मौत की सज़ाओं में और फाँसियों में एक हैरत-भरी दिलचस्पी लेने लगा। मुझे यह क्षोभपूर्ण एहसास हुआ कि मेरे पिता ने अक्सर ये पाशविक हत्याएँ देखी होंगी—जब वे सुबह बहुत जल्दी उठा करते थे, और तब मैं उनके जल्दी उठने के कारण का अनुमान नहीं लगा पाता था। मुझे याद है कि ऐसे मौक़ों पर ग़लती से बचने के लिए वे अपनी घड़ी में अलार्म लगा देते थे। माँ के सामने इस प्रसंग को खोलने का मुझमें साहस नहीं था। लेकिन अब मैं अपनी माँ को ज़्यादा ग़ौर से देखने लगा और मैंने देखा कि उनका दाम्पत्य-जीवन अब निरर्थक था और माँ ने उसके सुधार की उम्मीद भी छोड़ दी थी। इससे मुझे माँ को 'माफ़ करने' में मदद मिली। उस वक्त मैं यही सोचता था। बाद में मुझे मालूम हुआ कि माफ़ी की कोई बात ही नहीं थी; शादी से पहले वह बड़ी गरीब थीं और गरीबी ने उन्हें परिस्थितियों के आगे झुकना सिखाया था।

"शायद तुम मुझसे यह सुनने की उम्मीद रखते हो कि मैंने फौरन घर छोड़ दिया। नहीं, मैंने बहुत महीने, दरअसल पूरा एक साल वहाँ गुज़ारा। फिर एक दिन शाम को मेरे पिता ने अलार्म वाली घड़ी माँगी, क्योंकि उन्हें अगले दिन जल्दी उठना था। उस रात मुझे नींद नहीं आयी। अगले दिन पिताजी के घर लौटने से पहले ही मैं जा चुका था।

"संक्षेप में यह हुआ कि मेरे पिता ने मुझे खत लिखा, वे मुझे तलाश करने के लिए तहकीक़ात करवा रहे थे। मैं उनसे मिलने गया और अपने कारण बताये बग़ैर मैंने उन्हें शान्त भाव से समझा दिया कि अगर उन्होंने मुझे घर लौटने के लिए मजबूर किया तो मैं आत्महत्या कर लूंगा। उन्होंने मुझे आज़ादी देकर सारा झगड़ा खत्म कर दिया क्योंकि वे दयालु-हृदय आदमी थे—जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ। उन्होंने मुझे 'अपने ढंग से ज़िन्दगी बसर करने' की बेवकूफ़ी पर लेक्चर दिया, (उनकी दृष्टि में मेरे उस व्यवहार का यही कारण था और मैंने उन्हें धोखा न दिया हो ऐसा नहीं कह सकता) और मुझे बहुत सी नेक सलाहें भी दीं। मैं देख रहा था कि इस बात ने उनके दिल पर गहरा असर डाला था और वे बड़ी मुश्किल से अपने आँसुओं को रोकने की कोशिश कर रहे थे। बाद में—बहुत अरसे के बाद मैं बीच-बीच में अपनी माँ से मिलने के लिए जाने लगा, ऐसे मौक़ों पर मैं अपने पिता से भी ज़रूर मिलता था। मेरा खयाल है कि कभी-कभी की इन मुलाक़ातों से मेरे पिता सन्तुष्ट थे। व्यक्तिगत तौर पर मेरे मन में उनके प्रति ज़रा भी दुश्मनी नहीं थी, बल्कि दिल में कुछ उदासी-सी छा गई थी। पिता की मौत के बाद मैंने माँ को अपने पास बुला लिया और अगर वे ज़िन्दा रहतीं तो अभी भी मेरे पास ही रहतीं।

"मुझे अपनी शुरू की ज़िंदगी के बारे में ज़्यादा इसलिए बताना पड़ा, क्योंकि मेरे लिए यह शुरुआत थी...हर चीज़ की। अठारह बरस की उम्र में ही मुझे ग़रीबी का सामना करना पड़ा—उससे पहले मैं आराम की ज़िन्दगी बसर करता आया था। मैंने बहुत से काम किये और किसी काम में मुझे असफलता नहीं मिली। लेकिन मेरी असली दिलचस्पी मौत की सज़ा में थी। मैं कटघरे में खड़े उस बेचारे अन्धे 'उल्लू' के साथ हिसाब चुकाना करना चाहता था इसलिए मैं लोगों के शब्दों में एक आन्दोलनकारी बन गया, बस मैं विनाश नहीं करना चाहता था : मेरे विचार में मेरे इर्द-गिर्द की सामाजिक व्यवस्था मौत की सज़ा पर आधारित थी और स्थापित सत्ता के ख़िलाफ़ लड़कर मैं हत्या के ख़िलाफ़ लड़ूंगा। यह मेरा विचार था, और लोगों ने भी मुझे यही कहा था और मेरा अभी तक यह विश्वास है

कि मेरा वह विचार ठोस रूप से सही था। मैं उन लोगों के एक दल में मिल गया जिन्हें मैं उस समय पसन्द करता था और दरअसल जिन्हें मैं अभी भी पसन्द करता हूँ। यूरोप का कोई ऐसा देश नहीं जिसके आन्दोलनों में मैंने हिस्सा न लिया हो। लेकिन वह दूसरी ही कहानी है।

यह कहने की ज़रूरत नहीं कि मौक़ा पड़ने पर हम भी मौत की सज़ाएँ देते थे। लेकिन मुझे बताया गया था कि एक नये संसार के निर्माण के लिए—जिसमें हत्याएँ बन्द हो जाएँगी—ये मौतें ज़रूरी हैं। यह भी कुछ हद तक सच था—और हो सकता है। जहाँ सचाई की व्यवस्था का सवाल है मुझमें डटे रहने की क्षमता नहीं। इसका कारण चाहे कुछ भी हो, मेरे मन में हिचकिचाहट पैदा हुई। लेकिन फिर मुझे कटघरे में खड़े उस अभागे उल्लू' का खयाल आया और उससे मुझे अपना काम जारी रखने का साहस मिला। यह साहस उस दिन तक बना रहा जब मैं एक फाँसी के वक्त मौजूद था—हंगरी में[1] और मुझे वैसा ही विक्षिप्त आतंक महसूस हुआ जैसा बचपन में हुआ था। मेरी आँखों के आगे सब चीज़ें चकराने लगीं।

"क्या तुमने कभी किसी फ़ायरिंग स्क्वैड द्वारा किसी आदमी को गोली से उड़ाया जाता देखा है ? नहीं, तुमने नहीं देखा होगा। चुने हुए लोगों को ही यह दृश्य देखने को मिलता है। एक प्राइवेट दावत की तरह इसमें शामिल होने के लिए निमन्त्रण की ज़रूरत होती है। किताबों और तस्वीरों से आम तौर पर फ़ायरिंग स्क्वैड के बारे में विचार बटोरे जाते हैं। कल्पना की जाती है कि एक खम्भे के साथ एक आदमी बँधा है, जिसकी आँखों पर पट्टी बँधी है और कुछ दूर पर सिपाही खड़े हैं। लेकिन दरअसल नज़ारा बिलकुल और ही तरह का होता है। तुम्हें मालूम है कि फ़ायरिंग स्क्वैड मौत की सज़ा पाए आदमी से सिर्फ़ डेढ़ गज़ दूर खड़ा होता है ? क्या तुम्हें मालूम है कि अगर उनका शिकार दो क़दम भी आगे बढ़ आए तो उसके सीने पर राइफ़लों का स्पर्श होगा ? क्या तुम जानते हो कि इतने कम फ़ासले पर खड़े होकर सिपाही उस आदमी के दिल पर निशाना लगाते हैं

१. उपन्यास सन् १९४७ में छपा था।

और उनकी बड़ी गोलियाँ इतना बड़ा छेद कर देती हैं जिसमें पूरा हाथ जा सकता है ? नहीं, तुम्हें यह नहीं मालूम ! ये ऐसी बातें हैं जिनका ज़िक्र नहीं किया जाता। प्लेग-पीड़ित लोग किसी इन्सान की ज़िन्दगी के मुक़ाबले अपनी मानसिक शान्ति को अधिक तरजीह देते हैं। शालीन लोगों की नींद में खलल नहीं पड़ना चाहिए न ! क्यों ? सचमुच यह सब जानते हैं कि ऐसे ब्यौरों पर अधिक समय ख़र्च करना भयंकर कुरुचि का परिचय देना है। लेकिन जहाँ तक मेरा सवाल है इस घटना के बाद से मुझे कभी ठीक तरह नींद नहीं आई। उसका कड़वा स्वाद मेरे मुँह में बना रहा और मेरा मन उसके ब्यौरे में उलझा रहा और चिन्तामग्न रहा।

"और इस तरह मुझे एहसास हुआ बहुत सालों से मैं प्लेग से पीड़ित हूँ और यह एक विरोधाभास भी था, चूँकि मेरा पक्का विश्वास था कि मैं अपनी समस्त शक्ति से इससे जूझ रहा था। मुझे एहसास हुआ कि हज़ारों लोगों की मौतों में अप्रत्यक्ष रूप से मेरा हाथ रहा है। मैंने उन कामों और सिद्धान्तों का समर्थन किया है, जिनसे वे मौतें हुई हैं और मौतों के सिवा उनका कोई और नतीजा नहीं निकल सकता था। और लोगों को इन विचारों से ज़रा भी परेशानी नहीं हुई थी, कम-से-कम वे स्वयं इसे व्यक्त नहीं करते थे। लेकिन मैं उनसे अलग था, मुझे जो एहसास हुआ था वह मेरे गले में अटक गया था। मैं उन लोगों के साथ होते हुए भी अकेला था। जब मैं इन बातों की चर्चा छेड़ता तो वे कहते कि मुझे इतना अधिक शंकालु नहीं होना चाहिए; मुझे याद रखना चाहिए कि कितने बड़े सवाल इसके साथ जुड़े हुए हैं ! और उन्होंने कई दलीलें दीं जो अक्सर बहुत जोरदार थीं ताकि मैं उस चीज़ को निगल सकूँ जो उनकी दलीलों के बावजूद मेरे मन में ग्लानि पैदा करती थी। मैंने जवाब में कहा कि प्लेग से अभिशप्त लोगों में, विशिष्ट व्यक्तियों के पास भी जो लाल चोगे पहनते हैं—अपने कामों को सही ठहराने की दलीलें हैं और अगर एक बार मैंने अनिवार्यता और बहुमत की शक्ति की दलील मान ली, जो कि अक्सर कम विशिष्ट लोगों द्वारा पेश की जाती है, तो मैं विशिष्ट लोगों की दलीलों को कभी अस्वीकार नहीं कर सकता। इसके जवाब में उन लोगों ने यह कहा कि

अगर मौत की सज़ा पूरी तरह से लाल चोग़े वालों के हाथ में छोड़ दी जाए तो हम पूरी तरह से उनके हाथों में खेलने लगेंगे। इसका जवाब मैंने दिया कि अगर हम एक बार झुक जाते हैं तो फिर हर बार हमें झुकते जाना पड़ेगा। मुझे लगता है कि इतिहास ने मेरी बात को सच साबित किया है। आज इस बात की होड़ लगी हुई है कि कौन सबसे ज़्यादा हत्याएँ करता है। सब पागल होकर हत्या करने में लगे हैं और चाहने पर भी वे इसे बन्द नहीं कर सकेंगे।

"जो भी हो, दलीलों से मुझे ज़्यादा सरोकार नहीं था। मुझे तो उस बेचारे 'उल्लू' में दिलचस्पी थी, जबकि एक धोखेधड़ी की कार्यवाही में प्लेग की बदबू से सड़े मुँहों ने एक हथकड़ी लगे आदमी को बताया था कि उसकी मौत नज़दीक आ रही है। उन्होंने इस तरह के वैज्ञानिक प्रबन्ध किये कि कई दिन और रातों तक मानसिक पीड़ा झेलने के बाद उसे बेरहमी से क़त्ल कर दिया जाए। मुझे इन्सान के सीने में बने मुट्ठी-जितने बड़े छेद से सरोकार था और मैंने मन-ही-मन तय कर लिया कि जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, दुनिया की कोई चीज़ मुझसे कोई ऐसी दलील को स्वीकार नहीं करवा सकती, जो इन क़त्लों को सही ठहराए। हाँ, मैंने जान-बूझकर अन्धे हठ का रास्ता चुना, उस दिन तक के लिए जब मुझे अपना रास्ता ज़्यादा साफ़ दिखाई देगा।

"अभी भी मेरे विचार वही हैं। कई साल तक मुझे इस बात पर शर्मिन्दगी रही, सख़्त शर्मिन्दगी रही कि मैं अपने नेक इरादों के साथ, कई स्तर पीछे हटकर भी हत्यारा बना था। वक्त के साथ-साथ मैं सिर्फ़ इतना ही सीख सका कि वे लोग भी, जो दूसरों से बेहतर हैं, आजकल अपने को और दूसरों को हत्या करने से नहीं रोक सकते, क्योंकि वे इसी तर्क के सहारे ज़िन्दा रहते हैं, और हम इस दुनिया में किसी की जान को जोखिम में डाले बग़ैर कोई छोटे-से-छोटा काम नहीं कर सकते। हाँ, तब से मुझे अपने पर शर्म आती रही है; मुझे एहसास हो गया है कि हम सब प्लेग से पीड़ित हैं, मेरे मन की शान्ति नष्ट हो गई है। और आज भी मैं उसे पाने की कोशिश कर रहा हूँ; अभी भी सभी दूसरे लोगों को समझने की कोशिश

कर रहा हूँ और चाहता हूँ कि मैं किसी का जानी दुश्मन न बनूं। मैं सिर्फ़ इतना जानता हूँ कि इन्सान को प्लेग के अभिशाप से मुक्त होने के लिए भरसक कोशिश करनी चाहिए और सिर्फ़ इसी तरीके से हम कुछ शान्ति की उम्मीद कर सकते हैं। और अगर शान्ति नहीं तो शालीन मौत तो नसीब हो सकती है। इसीसे और सिर्फ़ इसीसे इन्सान की मुसीबतें कम हो सकती हैं, अगर वे मरने से नहीं बच सकते तो उन्हें कम-से-कम नुकसान पहुँचे और हो सकता है थोड़ा फायदा भी पहुँचे। इसीलिए मैंने तय किया है कि मैं ऐसी किसी चीज़ से सम्बन्ध नहीं रखूंगा जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, अच्छे या बुरे कारणों से किसी इन्सान को मौत के मुँह में धकेलती है या ऐसा करने वालों को सही ठहराती है।

"इसीलिए महामारी मुझे इसके सिवा कोई नया सबक नहीं सिखा पाई कि मुझे तुम्हारे साथ मिलकर उससे लड़ना चाहिए। मैं पूरी तरह से जानता हूँ—हाँ रियो, मैं कह सकता हूँ कि मैं इस दुनिया की नस-नस पहचानता हूं—हममें से हरेक के भीतर प्लेग है, धरती का कोई आदमी इससे मुक्त नहीं है। और मैं यह भी जानता हूँ कि हमें अपने ऊपर लगातार निगरानी रखनी पड़ेगी ताकि लापरवाही के किसी क्षण में हम किसी के चेहरे पर अपनी साँस डालकर उसे छूत न दे बैठें। दरअसल कुदरती चीज़ तो रोग का कीटाणु है। बाकी सब चीज़ें ईमानदारी, पवित्रता, (अगर तुम इसे भी जोड़ना चाहो) इन्सान की इच्छा-शक्ति का फल हैं—ऐसी निगरानी का फल हैं जिसमें कभी ढील नहीं होनी चाहिए। नेक आदमी, जो किसी को छूत नहीं देता. वह है जो सबसे कम लापरवाही दिखाता है—लापरवाही से बचने के लिए बहुत बड़ी इच्छा-शक्ति की और कभी न खत्म होने वाले मानसिक तनाव की ज़रूरत है। हाँ रियो, प्लेग का शिकार होना बड़ी थकान पैदा करता है। लेकिन प्लेग का शिकार न होना और भी ज़्यादा थकान पैदा करता है। इसीलिए दुनिया में आज हर आदमी थका हुआ नज़र आता है; हर आदमी एक माने में प्लेग से तंग आ गया है। इसीलिए हममें से कुछ लोग, जो अपने शरीरों में से प्लेग को बाहर निकालना चाहते हैं, इतनी हताशपूर्ण थकान महसूस करते हैं—ऐसी थकान

जिससे मौत के सिवा और कोई चीज़ हमें मुक्ति नहीं दिला सकती।

"जब तक मुझे वह मुक्ति नहीं मिलती, मैं जानता हूँ कि आज की दुनिया में मेरी कोई जगह नहीं है। जब मैंने हत्या करने से इन्कार किया था तभी से मैंने अपने को निर्वासित कर लिया था, यह निर्वासन कभी खत्म नहीं होगा। 'इतिहास का निर्माण' करने का काम मैं दूसरों पर छोड़ता हूँ। मैं यह भी जानता हूँ कि मुझमें इतनी योग्यता नहीं कि मैं उन लोगों के कामों के औचित्य पर अपना निर्णय दे सकूँ। मेरे मन की बनावट में कोई कमी है जिसकी वजह से मैं समझदार हत्यारा नहीं बन सकता। इसलिए यह विशिष्टता नहीं, बल्कि कमज़ोरी है। लेकिन इन परिस्थितियों में मैं जैसा हूँ वैसा ही रहने के लिए तैयार हूँ। मैंने विनयशीलता सीख ली है। मैं सिर्फ़ यह कहता हूँ कि इस धरती पर महामारियाँ हैं और उनसे पीड़ित लोग हैं और यह हम पर निर्भर करता है कि जहाँ तक सम्भव हो सके हम इन महामारियों का साथ न दें। हो सकता है इस बात में बचकानी सरलता हो; यह सरल है या नहीं इसका निर्णय तो मैं नहीं कर सकता, लेकिन मैं यह जानता हूँ कि यह बात सच्ची है। तुमने देख ही लिया है कि मैंने इतनी ज़्यादा दलीलें सुनी थीं जिन्होंने क़रीब-क़रीब मेरी मति भ्रष्ट कर दी थी, और दूसरे लोगों की मति भी इतनी अधिक भ्रष्ट कर दी थी कि वे हत्या के समर्थक बन गए थे। मुझे यह एहसास हुआ कि हम स्पष्ट नपी-तुली भाषा का प्रयोग नहीं करते—यही हमारी सारी मुसीबतों की जड़ है। इसलिए मैंने तय किया कि मैं हमेशा अपनी बातचीत और व्यवहार में स्पष्टता बरतूंगा। अपने को सही रास्ते पर लाने का मेरे पास सिर्फ़ यही तरीक़ा था। इसीलिए मैं सिर्फ़ यही कहता हूँ कि दुनिया में महामारियाँ हैं और उनका शिकार होने वाले लोग हैं—अगर इतना कहने-मात्र से ही मैं प्लेग की छूत को फैलाने का साधन बनता हूँ तो कम-से-कम मैं जान-बूझकर ऐसा नहीं करता। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि मैं मासूम हत्यारा बनने की कोशिश करता हूँ। तुमने देख ही लिया होगा कि मैं महत्त्वाकांक्षी आदमी नहीं हूँ।

"मैं मानता हूँ कि इन दो श्रेणियों में हमें तीसरी श्रेणी भी जोड़ लेनी

चाहिए—सच्चे चिकित्सकों की श्रेणी, लेकिन यह एक मानी हुई बात है कि ऐसे लोग बहुत विरले होते हैं और निश्चय ही उनका काम बहुत कठिन होगा। इसीलिए मैंने हर मुसीबत में, मुसीबतज़दा लोगों की तरफ़ होने का फ़ैसला किया ताकि मैं नुक़सान को कम कर सकूँ। कम-से-कम उन लोगों में मैं यह तलाश कर सकता हूँ कि तीसरी श्रेणी तक कैसे अर्थात् शान्ति तक कैसे पहुँचा जा सकता है।"

तारो ने जब यह बात ख़त्म की तो वह टाँग हिलाता हुआ मुँडेर पर जूते की एड़ी से आवाज़ कर रहा था। थोड़ी देर की ख़ामोशी के बाद डॉक्टर ने अपनी कुरसी में ज़रा ऊपर उठकर पूछा कि क्या तारो को शान्ति पाने का रास्ता मालूम है?

"हाँ," तारो ने जवाब दिया। 'वह हमदर्दी का रास्ता है।"

दूर दो एम्बुलेन्सों की खनखनाहट सुनाई दे रही थी। अभी तक वे जिन छितराती हुई आवाज़ों को सुनते आ रहे थे वे एक साथ शहर के बाहरी हिस्से में, पथरीली पहाड़ियों के पास जमा हो गई थीं, इसके बाद गोली चलने की-सी आवाज़ सुनाई दी और फिर ख़ामोशी छा गई। रियो ने गिना दो बार घूमने वाली बत्ती चमकी थी। हवा के झोंके में ताज़गी आ गई और समुद्र से आने वाले झोंके में क्षण-भर के लिए नमकीन गंध छा गई। उसी वक्त उन्हें चट्टानों के नीचे टकराती हुई लहरों का मन्द स्वर साफ़ सुनाई दिया।

तारो ने अकस्मात लापरवाही से कहा, "मुझे इस बात में दिलचस्पी है कि आदमी संत कैसे बन सकता है।"

"लेकिन तुम तो ख़ुदा में यक़ीन नहीं करते।"

"बिलकुल सही है! क्या बिना ख़ुदा के इन्सान संत बन सकता है? यही तो समस्या है, एकमात्र समस्या है, जिसका आज मैं सामना कर रहा हूँ।"

अचानक जहाँ से आवाज़ें आई थीं, वहाँ आग की लपट दिखाई दी और हवा की धार को काटती हुई बहुत सी आवाज़ों की फुसफुसाहट उन्हें सुनाई दी। लपटें फ़ौरन ठंडी हो गईं और लाल रंग की मद्धिम लालिमा पीछे रह

गई, फिर एक झोंके के साथ उन्हें लोगों की चिल्लाहट और बंदूक चलने की आवाज़ सुनाई दी इसके बाद लोगों की क्षुब्ध भीड़ का गर्जन सुनाई दिया। तारो उठ खड़ा हुआ और कान लगाकर सुनने लगा—लेकिन अब कोई और आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी।

"लगता है फाटकों पर फिर कोई मुठभेड़ हुई है।"

"ख़ैर अब तो झगड़ा ख़त्म हो गया है।"

तारो ने धीमी आवाज़ में कहा कि ख़त्म तो हो गया है और अनेक लोग इसके शिकार हुए होंगे, क्योंकि ऐसा ही होता है।

"शायद !" डॉक्टर ने जवाब दिया। "लेकिन जानते हो, मुझे संतों की बजाय पराजित लोगों से ज़्यादा हमदर्दी होती है। मुझे लगता है कि बहादुरी और धार्मिकता इतना प्रभावित नहीं करतीं—मुझे इन्सान की इन्सानियत में ज़्यादा दिलचस्पी है।"

"हाँ, हम दोनों एक ही चीज़ की तलाश में हैं, लेकिन मैं कम महत्त्वाकांक्षी हूँ।"

रियो ने यह सोचकर कि तारो मज़ाक कर रहा है, मुस्कराकर उसकी तरफ़ देखा। लेकिन आसमान की मंद आभा में तारो का चेहरा उदास और गम्भीर दिखाई दे रहा था। हवा का एक और झोंका आया, रियो ने अपनी त्वचा पर गरमी का स्पर्श महसूस किया। तारो ने अपने को तनिक-सा झटका दिया।

उसने कहा, "जानते हो अब हमें दोस्ती की ख़ातिर क्या करना चाहिए ?"

"तुम जो भी चाहो, तारो !"

"हमें तैरने के लिए जाना चाहिए। यह उन मासूम ख़ुशियों में से है, जिनमें एक संत भी हिस्सा ले सकता है। क्यों तुम्हारा क्या ख़याल है ?" रियो फिर मुस्कराया और तारो ने कहा, "सचमुच यह बड़ी बेहूदी बात है कि हम सिर्फ़ प्लेग के वातावरण में और प्लेग की ख़ातिर ही ज़िन्दा रहें। इन्सान को मुसीबतज़दा लोगों की तरफ़ से ज़रूर लड़ना चाहिए, लेकिन अगर वह लड़ाई के सिवा हर चीज़ में दिलचस्पी लेना बन्द कर दे तो लड़ाई

का क्या फ़ायदा है ?"

"ठीक है, आओ चलें।" रियो ने कहा।

कुछ मिनटों बाद कार बन्दरगाह के फाटक के सामने खड़ी हो गई। चाँद निकल आया था और परछाइयों के साथ मिली दूधिया चितकबरी चाँदनी उनके आसपास फैली थी। उनके पीछे शहर था, एक परत या दूसरी परत चढ़ी थी, जिससे बदबूदार हवा आ रही थी, जिससे बचने के लिए वे समुद्र की तरफ़ गये। उन्होंने एक संतरी को अपने 'पास' दिखाए। संतरी ने बड़ी बारीकी से उनका मुआइना किया और वे एक मैदान पार करके, जिसमें कनस्तरों का ढेर लगा था, जेटी की तरफ़ बढ़े। यहाँ की हवा में बासी शराब और मछली की सड़ाँध फैली थी। जेटी तक पहुँचने से पहले ही उन्हें आयोडीन और समुद्री पौधों की गंध आई, जो समुद्र के नज़दीक होने की सूचना दे रही थी। उन्हें विशाल शिलाओं से टकराती हुई लहरों का स्वर भी क़रीब-क़रीब सुनाई दे रहा था। जेटी पर पहुँचकर उन्होंने अपने सामने फैला हुआ समुद्र देखा, कोमल स्पंदित रोंएदार मख़मल, जो किसी जंगली जीव की तरह चमकीली थी। वे समुद्र के सामने एक पत्थर पर बैठ गए। धीरे-धीरे लहरें उठने-गिरने लगीं। शान्ति से साँस लेने वाली लहरों के ऊपर अचानक एक स्निग्ध रोशनी आ गई और टिमटिमाती बत्तियों की धुंध में समुद्र की सतह पर झिलमिलाने लगी। उनके सामने असीम अँधेरा फैला था। रियो को अपने हाथ के नीचे जलवायु से घिसी और ऐंठी हुई चट्टानें नज़र आ रही थीं—उसके मन पर एक अजब ख़ुशी छा गई। उसने देखा कि तारो के चेहरे पर भी वही ख़ुशी थी—ऐसी ख़ुशी जो कुछ नहीं भूलती, यहाँ तक कि हत्या को भी नहीं।

दोनों ने कपड़े उतार दिए और रियो ने पहले पानी में डुबकी लगाई। सरदी की पहली कँपकँपी दूर होने पर जब वह ऊपर आया तो उसे पानी गुनगुना मालूम हुआ। कुछ डुबकियों के बाद उसने महसूस किया कि पानी में पतझड़ की गरमी है जो समुद्रों को गरमी के लम्बे दिनों से तपे किनारों से मिलती है जिनमें गरमी जमा हो जाती है। रियो लगातार तैर रहा था और उसके पैर बुलबुले छोड़ते जाते थे, पानी उसकी बाँहों से फिसलकर

टाँगों के पास जमा हो रहा था। तभी जोर से एक छपाका सुनाई दिया, जिससे पता चला कि तारो ने भी डुबकी लगाई थी। रियो पीठ के बल बिना हिले-डुले पानी में लेट गया और चाँद-सितारों से जगमगाते आसमान के गुम्बद को देखने लगा। उसने एक गहरी साँस ली। उसके बाद उसे पानी में छपछप की आवाज़ सुनाई दी जो प्रतिक्षण तेज़ होती गई। रात के खोखले अँधेर में वह आवाज़ आश्चर्यजनक रूप से स्पष्ट थी। तारो तैरकर उसके पास आ रहा था, अब वह तारो की साँसों की आवाज़ सुन सकता था।

रियो मुड़कर अपने दोस्त के बराबर तैरने लगा और तारो की बाँहों की लय पर बाँहें चलाने लगा, लेकिन तारो ज़्यादा तेज़ तैराक़ था और उसके साथ मिलने के लिए रियो को अपनी रफ़्तार तेज़ करनी पड़ी। कुछ मिनट तक वे साथ-साथ तैरते रहे—एक ही उत्साह, एक ही लय में। सारी दुनिया से अलग वे शहर के वातावरण और प्लेग से मुक्ति पा गए थे। फिर रियो रुक गया और वे धीरे-धीरे तैरते हुए वापस आये, सिर्फ़ एक जगह पर उन्होंने अप्रत्याशित रूप से अपने को बरफ-जैसी ठंडी धारा में जकड़ा हुआ पाया। समुद्र के बिछाए इस फन्दे से उनकी ताक़त को जैसे किसी ने कोड़ा मारकर सचेत कर दिया था। दोनों पहले से ज़्यादा ज़ोर से बाँहें चलाने लगे।

कपड़े पहनकर वे वापस शहर की तरफ़ चल पड़े। दोनों में से किसी ने एक भी शब्द न कहा, लेकिन दोनों को ऐक्य का एहसास हो रहा था और वे जानते थे कि इस रात की स्मृति हमेशा उनके मन में ताज़ी रहेगी। जब उन्हें प्लेग का संतरी दिखाई दिया तो रियो भाँप गया कि तारो भी उसी की तरह यह सोच रहा है कि बीमारी ने उन्हें क्षण-भर विश्राम करने की इजाज़त दे दी है, जो बहुत अच्छी बात है और अब उन्हें फिर दिल लगाकर काम करना चाहिए।

७

हाँ, प्लेग ने उन्हें थोड़ा-सा आराम का वक्त दिया था और उन्हें फिर दिल लगाकर काम करना चाहिए। दिसम्बर के पूरे महीने में प्लेग हमारे शहरियों के सीने के भीतर-ही-भीतर सुलगती रही, श्मशान की चिताओं को तेज़ करती रही और कैम्पों में इन्साननुमा इन्सानों को असबाब की तरह भरती रही। कहने का मतलब यह है कि प्लेग लगातार अपनी आदत के मुताबिक़ झटके देती हुई, लेकिन बिना रुके, लगातार आगे बढ़ती रही। अधिकारियों को उम्मीद थी कि जाड़ा आकर प्लेग की भीषणता को कम कर देगा, लेकिन शुरू में जब सरदी का ज़ोर हुआ तो प्लेग ज्यों-की-त्यों बनी रही। इसलिए हम लोगों के सामने सिर्फ़ एक ही रास्ता था कि हम इन्तज़ार करते रहें। चूँकि बहुत लम्बे इन्तज़ार के बाद इन्सान इन्तज़ार करना खत्म कर देता है, इसलिए लोग इस तरह दिन काट रहे थे जैसे उनका कोई भविष्य न हो।

जहाँ तक डॉक्टर रियो का सवाल था, शान्ति और दोस्ती का वह संक्षिप्त घण्टा उसकी जिन्दगी में दोबारा न आ सका। एक और अस्पताल खुल गया था और बातचीत करने के लिए सिर्फ़ मरीज़ ही उसके साथी थे। लेकिन उसने देखा कि महामारी में कुछ परिवर्तन आ गया है; क्योंकि दिन-ब-दिन न्यूमोनिक प्लेग के केस बढ़ते जा रहे थे; अपने ढंग से मरीज़ भी जैसे डॉक्टर का समर्थन कर रहे थे। प्लेग के शुरू के दौर की तरह वे हताश या विक्षिप्त नहीं हुए थे, बल्कि अब उन्हें अच्छी तरह मालूम हो गया था कि उनकी भलाई किस बात में है और वे खुद-ब-खुद अधिकारियों से ऐसी कार्यवाही करने की माँग करते थे जिसमें उनकी भलाई थी। वे हर वक्त पीने के लिए कोई-न-कोई चीज़ माँगते थे और चाहते थे कि उन्हें भरसक गरम रखा जाए। रियो का काम पहले की तरह ही थका देने वाला था, लेकिन अब उसे यह नहीं लगता था कि वह अकेला ही प्लेग से लड़ रहा है; मरीज़ उसकी मदद करते थे।

दिसम्बर के अंत में रियो को मोसिये ओथों का एक खत मिला, जो

अभी तक क्वारंटीन में थे। उसने लिखा था कि उसकी क्वारंटीन में रहने की मियाद पूरी हो गई है, लेकिन बदकिस्मती से वह जिस तारीख को कैम्प में दाखिल हुआ था वह कागज़ दफ्तर में कहीं खो गया है। इसलिए उनकी नज़र-बंदी के लिए दफ्तर वाले ज़िम्मेदार हैं जिन्होंने गलती की है। उसकी पत्नी हाल ही में रिहा होकर प्रीफेक्ट के दफ्तर में प्रोटेस्ट करने गई थी लेकिन वहाँ उसके साथ बदतमीज़ी का सलूक किया गया था; उन लोगों ने मदाम ओथों से कहा कि दफ्तर कभी ऐसी गलती नहीं करता। रियो ने रेम्बर्त से इस मामले की खोजबीन करने को कहा और कुछ दिनों बाद मोसिये ओथों रियो से मिलने आये। सचमुच दफ्तर वालों ने गलती की थी। रियो ने इस पर क्षोभ भी प्रकट किया था। लेकिन ओथों ने, जो इस बीच दुबला हो गया था, तिरस्कारपूर्वक अपना शिथिल हाथ उठाया और अपने शब्दों को तौलते हुए कहा कि गलती हर आदमी से हो सकती है। डॉक्टर ने मन-ही-मन सोचा कि निश्चय ही कोई परिवर्तन हुआ है।

रियो ने पूछा, "अब आप क्या करेंगे मोसिये ओथों ? मेरा खयाल है कि आपका बहुत सा काम जमा हो गया होगा ?"

"मैं तो छुट्टी की दरख्वास्त दे रहा हूँ।"

"मैं समझ गया। आपको आराम की ज़रूरत है।"

"यह बात नहीं। मैं वापस कैम्प जाना चाहता हूँ।"

रियो को अपने कानों पर विश्वास न हुआ।

"लेकिन आप अभी तो कैम्प से छूटकर आये हैं ?"

"शायद मैं अपनी बात स्पष्ट नहीं कर सका। मैंने सुना है कि सर-कारी दफ्तरों के कुछ कर्मचारी उस कैम्प में स्वयंसेवकों की हैसियत से काम कर रहे हैं।" मजिस्ट्रेट ने अपनी आँखों को गोल घुमाया और बालों की एक लट सहलाते हुए कहा, "इससे मेरा मन काम में उलझा रहेगा और मैं जानता हूँ कि आपको यह बात हास्यास्पद मालूम होगी—लेकिन मैं अपने नन्हे बेटे से कम अलगाव महसूस करूँगा।"

रियो ने मोसिये ओथों की तरफ देखा; क्या उन कठोर भाव-शून्य आँखों में अचानक कोई कोमलता आ गई थी ? हाँ, मजिस्ट्रेट की आँखें

धुंधली हो गई थीं और उनकी फौलादी चमक गायब हो गई थी।

रियो ने कहा, "ज़रूर! चूंकि यह आपकी ख्वाहिश है, मैं आपको कैम्प में भिजवा दूंगा।"

डॉक्टर ने अपना वादा पूरा किया; और प्लेग-पीड़ित शहर की हालत क्रिसमस तक वैसी ही बनी रही। तारो हर समस्या में अपनी खामोश कार्य-कुशलता का परिचय देता था। रेम्बर्त ने डॉक्टर को अपना एक राज़ बताया, वह दो नौजवान संतरियों की मदद से अपनी बीवी को ख़त भेजता है और कभी-कभी बीवी का जवाब भी आ जाता है। उसने रियो को सुझाव दिया कि वह भी इस गुप्त ज़रिये का फ़ायदा उठाए। रियो राज़ी हो गया। कई महीनों बाद पहली बार वह ख़त लिखने बैठा। उसे यह बड़ा कष्ट-साध्य मालूम हुआ, उसे लगा जैसे वह भूल गया है कि ख़त में कैसी भाषा लिखनी चाहिए। ख़त भेज दिया गया। जवाब आने में बहुत देर लगी। जहाँ तक कोतार्द का सम्बन्ध था वह दिन-ब-दिन सम्पन्न होता जा रहा था और छिप-छिपकर ग़ैर-कानूनी सौदों में खूब पैसे बना रहा था। लेकिन ग्रान्द की हालत इससे विपरीत थी; क्रिसमस का मौसम उसे माफ़िक नहीं आया था।

सचमुच उस साल क्रिसमस में पुराने वक्त की कोई याद नहीं रही थी। स्वर्ग के बजाय वह नर्क का सूचक बन गया था। दुकानें ख़ाली और अँधेरी थीं। मिठाई की दुकानों की खिड़कियों में ख़ाली डिब्बे थे या बनावटी मिठाइयाँ थीं, ट्रामों में उदासीन और निर्लिप्त लोगों की भीड़ें थीं—यह सब पहले वक्त में क्रिसमस की रौनक़ से बिलकुल विपरीत था। तब शहर के अमीर-ग़रीब सभी लोग त्यौहार मनाते थे; अब सिर्फ़ थोड़े-से खुश-क़िस्मत लोग, जिनके पास सभी सुख-सुविधाएँ थीं और जो पैसा फूंक सकते थे, त्यौहार मना रहे थे। वे भी पिछवाड़े की किसी दुकान या घर के कमरे के एकान्त में शराब पी रहे थे, लेकिन उन्हें अपने व्यवहार पर शर्म महसूस हो रही थी। गिरजाघरों में गीतों के बजाय प्रार्थनाएँ अधिक गाई जा रही थीं। कुछ बच्चे। जो इतने छोटे थे कि उन्हें मालूम ही नहीं था कि वे किस ख़तरे के मुँह में हैं, पाले से सर्द सड़कों पर खेल रहे थे। लेकिन किसी में

इतना साहस नहीं था कि बीते दिनों की तरह ख़ुदा के नाम पर उनका स्वागत करता, जो अपने साथ तोहफ़े लाता है, जो इन्सान के दुख-जितना पुराना और नौजवानों की उम्मीदों-जैसा नया है। किसी के दिल में एक पुरानी धुँधली उम्मीद के सिवा और किसी भावना के लिए स्थान नहीं था—ऐसी उम्मीद जिसके बल पर इन्सान अपने को मौत की तरफ़ नहीं बहने देता, यह उम्मीद सिर्फ़ ज़िन्दा रहने की हटधर्मी थी।

पिछली शाम को ग्रान्द को हमेशा की तरह दफ़्तर में न देखकर रियो परेशान हो उठा था और वह तड़के ही ग्रान्द के घर पहुँचा, लेकिन ग्रान्द घर पर नहीं था। ग्रान्द के दोस्तों से कहा गया कि वे उसकी खोज करें। क़रीब ग्यारह बजे रेम्बर्त ने अस्पताल में आकर खबर दी कि उसे दूर से ग्रान्द की एक झलक मिली थी, वह निरुद्देश्य 'बड़े विचित्र ढंग से' घूम रहा था। बदक़िस्मती से वह फ़ौरन उसकी नज़रों से ग़ायब हो गया था। तारो और डॉक्टर कार में बैठकर ग्रान्द को तलाश करने लगे।

दोपहर के वक्त रियो कार से निकलकर सर्द हवा में आया; कुछ दूर उसे अभी ग्रान्द की एक झलक दिखाई दी थी। ग्रान्द एक दुकान की खिड़की के शीशे से चेहरा सटाकर खड़ा था। खिड़की के भीतर फूहड़ ढंग से तराशे हुए लकड़ी के खिलौने रखे थे। बूढ़े के गालों पर लगातार आँसू बह रहे थे, जिनसे डॉक्टर का दिल कचोट उठा; क्योंकि वह उन आँसुओं का कारण अच्छी तरह जानता था—समवेदना में उसके अपने आँसू भी उमड़ आए। उसकी आँखों के आगे बहुत दिन पहले के उस दृश्य की तस्वीर आई—एक दूसरी दुकान की खिड़की के सामने छोटा लड़का खड़ा था, इसी लड़के की तरह क्रिसमस के लिए बढ़िया पोशाक पहने। और अचानक जीन भावावेश में आकर उसकी तरफ मुड़ी थी और उसने कहा था कि वह बड़ी खुश है। रियो जान गया था कि ग्रान्द के मन में उन धुँधले बरसों की स्मृतियाँ उमड़ रही हैं, विषाद के क्षणों में ग्रान्द के कानों में जीन की तरुण आवाज़ गूँज रही है और वह यह भी जानता था कि आँसू बहाता हुआ बूढ़ा क्या सोच रहा था। रियो ने भी सोचा कि प्यार के बग़ैर दुनिया मौत की तरह सूनी है और हमेशा इन्सान की ज़िन्दगी में ऐसा वक्त

आता है जब वह क़ैद से, अपने काम से, कर्तव्य-परायणता से ऊब जाता है और सिर्फ एक ही चीज़ की तमन्ना करने लगता है—किसी प्रिय चेहरे की, प्यार-भरे किसी दिल की गरमी और जादू पाने की।

ग्रान्द ने खिड़की के शीशे में डॉक्टर की परछाईं देखी। वह अभी भी रो रहा था। उसने अपनी गरदन घुमाई और दुकान के सामने के हिस्से का सहारा लेकर खड़ा हो गया, उसने रियो को अपनी तरफ़ आते देखा।

"ओह, डॉक्टर, डॉक्टर···!" इससे ज्यादा वह कुछ न कह सका।

रियो भी बोल न सका, उसने एक अस्पष्ट इशारे से अपनी हमदरदी ज़ाहिर की। वह भी ग्रान्द के शोक में इस क्षण साझीदार था। उसके हृदय में भी वही तीव्र क्षोभ था, जो सारी मानवता की साँझी पीड़ा देखकर हमारे मन में जागृत होता है।

"हाँ ग्रान्द," वह बड़बड़ाया।

"काश, मैं उसे ख़त लिखने के लिए समय निकाल सकता! उसे ख़बर देता···उसे बिना पश्चात्ताप के सुखी होने देता!"

रियो ने एक झटके से ग्रान्द की बाँह पकड़ी और उसे आगे खींच ले गया। ग्रान्द ने इसका विरोध नहीं किया और वह टूटे-फूटे वाक्य बड़-बड़ाता रहा।

"बहुत दिन हो गए हैं! इसे बरदाश्त करते-करते बहुत दिन हो गए हैं! हर वक्त आदमी अपने मन का बोझ हल्का करना चाहता है और एक दिन मजबूर होना ही पड़ता है···ओह, डॉक्टर, मुझे मालूम है कि मैं देखने में ख़ामोश क़िस्म का आदमी मालूम होता हूँ, बाक़ी सब लोगों की ही तरह। लेकिन मुझे बड़ी भयंकर कोशिश करनी पड़ी है···सिर्फ़···सिर्फ़ नॉर्मल दिखाई देने के लिए और अब यह भी मेरे लिए बहुत मुश्किल हो गया है।"

यह कहकर वह एकदम ख़ामोश हो गया। वह ज़ोर से काँप रहा था, उसकी आँखों में बुख़ार-जैसी चमक थी। रियो ने उसका हाथ छूकर देखा, हाथ बुख़ार से जल रहा था।

"तुम्हें घर जाना चाहिए।"

लेकिन ग्रान्द ने अपना हाथ छुड़ा लिया और तेज़ी से भागने लगा। कुछ दूर जाकर वह रुक गया, उसने अपनी बाँहें आगे फैलाकर घुमानी शुरू कर दीं। फिर वह एड़ी के बल लट्टू की तरह घूमने लगा और धम्म से फुटपाथ पर गिर पड़ा। कुछ लोग, जो नज़दीक आ रहे थे, हठात् रुक गए और दूर से ही इस दृश्य को देखने लगे—उन्हें नज़दीक आने की हिम्मत नहीं हो रही थी। रियो को बूढ़े को उठाकर कार में पहुँचाना पड़ा।

ग्रान्द बिस्तर में लेटा था, उसे साँस लेने में दिक्कत हो रही थी, उसके फेफड़ों में सूजन आ गई थी। रियो गहरे सोच में पड़ गया। बूढ़े के परिवार में कोई नहीं था। उसे अस्पताल ले जाने से क्या फ़ायदा था? उसने सोचा कि वह और रियो मिलकर उसकी देखभाल कर लेंगे।

ग्रान्द का सर तकिये में धँसा था। उसके गालों पर एक हरा-सा भूरापन आ गया था, उसकी आँखें भावशून्य और अपारदर्शी हो गई थीं। लगता था कि वह नज़रें गड़ाकर उस आग की तरफ़ देख रहा था, जिसे तारो एक पुरानी लकड़ी की पेटी के बचे-खुचे हिस्सों को फूँककर जला रहा था। "मेरी हालत बुरी है," वह बुदबुदाया। वह जब बोलने की कोशिश करता था तो उसके बुख़ार से झुलसे हुए फेफड़ों से एक अजब क़िस्म की कड़कती हुई आवाज़ सुनाई देती थी। रियो ने उसे बोलने के लिए मना किया और कहा कि वह फिर उसे देखने आयेगा। मरीज़ के होंठ एक विचित्र मुस्कान से खुल गए और उसके दुबले चेहरे पर सहयोग का हास्यपूर्ण भाव आ गया, "अगर मैं बच सका, डॉक्टर—हैट्स ऑफ़!" क्षण-भर बाद वह कमज़ोरी से निढाल हो गया।

कुछ घंटे बाद देखा गया कि ग्रान्द बिस्तर में आधा उठकर बैठ गया है। उसके चेहरे पर अचानक जो परिवर्तन आया था, उसे देखकर रियो भयभीत हो उठा। बीमारी की ज्वालाओं से उसका चेहरा झुलस गया था। लेकिन उसकी बेचैनी कम हो गई थी, वह होश-हवास में था। उसने फ़ौरन मेज़ की दराज़ से अपनी पाण्डुलिपि मँगवाई, जो हमेशा दराज़ में रखी रहती थी। जब तारो ने पन्ने उसके हाथ में पकड़ाए तो उसने उसकी तरफ़ देखे बगैर ही उन्हें सीने से लगा लिया और फिर डॉक्टर के हाथ में पकड़ा

दिया, वह इशारे से डॉक्टर को समझा रहा था कि वह उन पन्नों को पढ़े। पाण्डुलिपि में करीब पचास पन्ने थे। रियो ने एक नज़र डालकर देखा कि अधिकांश पत्रों में बार-बार एक ही वाक्य लिखा था, कहीं-कहीं थोड़ा परिवर्तन किया गया था, सरलीकरण किया गया था या उसे अधिक विस्तृत रूप दिया गया था। बार-बार मई के महीने का, घुड़सवार महिला का और बोये के एवेन्युओं का अलग-अलग ढंग से ज़िक्र किया गया था। स्पष्टीकरण के लिए लिखे नोट्स के अलावा शब्दों के चुनाव के लिए कुछ लम्बी सूचियाँ भी दी गई थीं। लेकिन आख़िरी पन्ने के नीचे बड़े सुन्दर और साफ़ अक्षरों में लिखा हुआ था, "मेरी प्रियतमा जीन, आज क्रिसमस है और···" सिर्फ़ आठ शब्द। उसके ऊपर बहुत ही सुन्दर अक्षरों में प्रसिद्ध वाक्य का सबसे नया रूप था। ग्रान्द फुसफुसाया, "इसे पढ़ो।" रिया ने पढ़ना शुरू किया—

"मई के महीने की एक सुहानी सुबह, एक छरहरे बदन की घुड़सवार महिला बोये के एवेन्युओं में जहाँ चमकदार फूल उगे थे, एक चमकदार ब्राउन रंग की चितकबरी घोड़ी पर सवार देखी जा सकती थी···"

"क्या यह सही है ?" उस बूढ़ी आवाज़ में बुखार की कंपकँपी थी। रियो ने जान-बूझकर उसकी तरफ़ से नज़रें हटा लीं और ग्रान्द बिस्तर पर करवटें लेने लगा। "मैं जानता हूँ, तुम क्या सोच रहे हो। यहाँ पर 'सुहाना' शब्द नहीं जँचता। यह···"

रियो ने चादर के नीचे से उसका हाथ पकड़ लिया।

"नहीं डॉक्टर ! अब कुछ नहीं हो सकता···अब कोई वक्त नहीं है···" उसके सीने में बड़ी तकलीफ़ हो रही थी, फिर उसने ऊँची, चीखती आवाज़ में कहा, "इसे जला डालो !"

डॉक्टर हिचकिचाया, लेकिन ग्रान्द के आदेश का लहजा इतना भीषण था और उसकी आवाज़ में इतनी पीड़ा थी कि रियो उठकर अँगीठी तक गया और उसने बुझती हुई आग में वे कागज़ डाल दिए। आग भड़क उठी और अचानक कमरे में रोशनी और गरमी फैल गई। जब डॉक्टर बिस्तर के नज़दीक आया तो ग्रान्द ने अपनी पीठ मोड़ ली थी और उसका चेहरा

दीवार को छू रहा था। सीरम का टीका लगाने के बाद रियो ने फुसफुसाकर तारो से कहा था कि ग्रान्द रात भी नहीं काट सकेगा। तारो ने मरीज़ के पास रहने की इच्छा प्रकट की। डॉक्टर राज़ी हो गया।

रात-भर रियो को ग्रान्द की मौत का ख़याल सताता रहा। लेकिन अगले दिन सुबह उसने देखा कि ग्रान्द बिस्तर में बैठकर तारो से बातें कर रहा था। उसका बुखार उतरकर नॉर्मल हो गया था और साधारण कम-ज़ोरी के सिवा उसके शरीर में बीमारी का कोई चिह्न नहीं दिखाई देता था।

ग्रान्द ने कहा, "हाँ डॉक्टर ! मैंने व्यर्थ में ही जल्दबाज़ी की। लेकिन मैं फिर नये सिरे से कोशिश करूँगा। तुम देखना, मुझे एक-एक शब्द याद है।"

रियो ने संदिग्ध नज़रों से तारो की ओर देखा और कहा, "हमें इन्त-ज़ार करना चाहिए।"

लेकिन दोपहर तक भी उसकी हालत वैसी ही रही। अँधेरा होने तक ख़तरा टल गया था। ग्रान्द के इस 'पुनर्जन्म' का रहस्य समझना रियो की बुद्धि से परे की चीज़ थी।

रियो को कई और बातों से भी बहुत आश्चर्य हुआ। उसी वक्त एक लड़की हस्पताल में लायी गई, जिसे देखकर रियो ने कह दिया कि वह नहीं बचेगी, इसलिए फ़ौरन उसे छूत के वॉर्ड में भेज दिया गया। वह तेज़ बुख़ार में प्रलाप कर रही थी और उसमें न्यूमोनिक प्लेग के सारे लक्षण मौजूद थे। लेकिन अगले दिन सुबह उसका टेम्प्रेचर कम हो गया, ग्रान्द के केस की तरह डॉक्टर ने सोचा कि सुबह तो अक्सर ही बुखार कम हो जाता है। वह अपने अनुभव से जानता था कि यह बुरा लक्षण है। लेकिन दोपहर के वक्त भी लड़की का टेम्प्रेचर न बढ़ा और रात को सिर्फ़ कुछ डिग्री ही बढ़ा। बेहद थकान के बावजूद उसे साँस लेने में कोई तक़लीफ़ नहीं हो रही थी। रियो ने तारो से कहा कि लड़की की हालत में सुधार होना 'सब डॉक्टरी असूलों के ख़िलाफ़' है, लेकिन अगले हफ़्ते में चार और ऐसे केस रियो ने देखे।

हफ्ते के आखिर में जब रियो और तारो दमा के बूढ़े मरीज से मिलने के लिए गये तो उसके उत्साह का कोई ठिकाना न था।

"क्या आप यक़ीन करेंगे, वे फिर बाहर निकल रहे हैं!"

"कौन?"

"अरे वाह! चूहे और कौन!"

अप्रैल के बाद से शहर में एक भी ज़िन्दा या मरा हुआ चूहा नहीं दिखाई दिया था। तारो ने परेशान होकर रियो की तरफ़ देखा।

"तो क्या प्लेग फिर नये सिरे से शुरू हो रही है?"

बूढ़ा अपनी हथेलियाँ रगड़ रहा था।

"डॉक्टर, तुम देखना वे किस तरह भागते हैं! बस मज़ा आ जाएगा!" उसने खुद दो चूहों को सड़क के दरवाजे के रास्ते घर में घुसते देखा था और कुछ पड़ोसियों ने भी उसे बताया था कि उन्हें तहखानों में चूहे दिखाई दिए थे। कुछ घरों में लोगों ने लकड़ी के काम के पीछे खुरचने की चुर-मुराहट की परिचित आवाजें सुनी थीं। रियो बेचैनी से मौत के आँकड़ों का इन्तज़ार करने लगा, जो हर सोमवार को घोषित किये जाते थे। उनमें कमी हो गई थी।

पाँचवाँ भाग

१

हालाँकि अचानक प्लेग का इस तरह पीछे हटना अप्रत्याशित होने के साथ-ही-साथ सुखद भी था, लोगों ने इसका स्वागत किया था, लेकिन हमारे शहर के लोग खुशी मनाने की जल्दी में नहीं थे। उन लम्बे महीनों ने उसके मन में प्लेग से मुक्ति पाने की प्रबल आकांक्षा तो जगा दी थी लेकिन उन्हें बुद्धिमत्ता भी सिखा दी थी। अब उन्हें प्लेग की तत्काल समाप्ति पर बहुत कम भरोसा रह गया था। लेकिन फिर भी सारे शहर में बीमारी के इस नये मोड़ की चर्चा थी, और इसे न स्वीकार करने के बावजूद लोगों के दिलों में आशाएँ पनपने लगी थीं। बाकी सब बातों को मन से खदेड़कर दूर हटा दिया गया; इस लड़खड़ा देने वाले तथ्य के आगे लोग यह भी भूल गए कि कई लोग हर रोज़ प्लेग के शिकार होते थे। वह तथ्य यह था कि साप्ताहिक आँकड़ों के अनुसार मौतों की संख्या में कमी हो गई थी। सेहत के भूतपूर्व सुनहरी ज़माने के लौटने की लोग मन-ही-मन उम्मीद कर रहे थे, उसकी एक निशानी यह भी थी कि हमारे शहरी हालाँकि अपनी इस उम्मीद को व्यक्त नहीं करते थे—लेकिन यह सच है कि वे बड़े सतर्क और अनासक्त भाव से उस नयी ज़िन्दगी के बारे में बातें करते थे जो प्लेग के खत्म होने के बाद शुरू होने वाली थी।

सब इस बात से सहमत थे कि पहले ज़माने की सब सुविधाएँ उन्हें फौरन नहीं मिल सकतीं। दोबारा निर्माण करने की बजाय तबाही ज़्यादा आसानी और ज़ल्दी से की जा सकती है। लेकिन लोगों का खयाल था कि खाने-पीने की चीज़ों की सप्लाई की हालत में तो ज़रूर सुधार होगा और

कम-से-कम वह चिन्ता तो हट जाएगी जो हर परिवार के लिए सबसे बड़ी समस्या बनी हुई थी। लेकिन दरअसल इन मामूली और कोमल आकांक्षाओं के पीछे उन्मुक्त और उन्मत्त आशाएँ छिपी थीं और अक्सर जब हममें से किसी को इस बात का एहसास होता था तो वह फौरन यह टिप्पणी जोड़ देता था कि—अधिक-से-अधिक आशावादी दृष्टिकोण से भी हम यह उम्मीद नहीं कर सकते कि प्लेग एक ही दिन में कम हो जाएगी।

दरअसल प्लेग एक ही दिन में तो नहीं थमी, लेकिन हमारी उम्मीदों से कहीं ज़्यादा जल्दी उसका प्रकोप कम हो गया। जनवरी के पहले हफ़्ते में बेहद सरदी का दौर शुरू हुआ और सरदी जैसे बिल्लौर की परत बनकर शहर पर छा गई, लेकिन इससे पहले आसमान कभी इतना नीला नहीं दिखाई दिया था। दिन-ब-दिन उसकी बरफ़ानी दीप्ति तेज़ रोशनी के साथ मिलकर शहर में फैलती रही और पाले से साफ़ की हुई हवा में जैसे बीमारी ने अपनी प्रचण्डता खो दी और बाद के तीन हफ़्तों में हर हफ़्ते मौत के आँकड़ों में भारी कमी का ऐलान किया गया। इस तरह अपेक्षाकृत बहुत कम समय में बीमारी अपनी उन तमाम जीतों को हार बैठी, जो उसने पिछले कई महीनों में इकट्ठी की थीं। ग्रान्द और रियो के अस्पताल में भरती होने वाली लड़की पर भी जिसकी क़िस्मत में शायद मौत लिखी थी, जब प्लेग ने कोई असर न किया, जब कुछ इलाकों में दो-तीन दिन तक प्लेग का प्रकोप बढ़ने लगा और दूसरे इलाकों में प्लेग एकदम ख़त्म हो गई, जब प्लेग ने एक नया तरीक़ा अपनाया—सोमवार के दिन ज़्यादा लोग बीमार होने लगे और बुधवार को क़रीब-क़रीब सब रोग से छुटकारा पाने लगे—संक्षेप में कुछ दिन की प्रचण्डता के बाद जब प्लेग का उत्साह एकदम ठंडा पड़ने लगा—तो लोग समझने लगे कि प्लेग की ताक़त कम हो रही है और थकान और कोफ़्त से मजबूर होकर प्लेग अपना आत्म-संयम, और गर्वित-सरीखी कार्य-कुशलता भी खो रही है, जो अभी तक उसकी ताक़त का सबसे बड़ा राज था। अचानक कास्तेल के प्लेग-निरोधक इन्जेक्शनों को अक्सर ऐसी क़ामयाबी मिलने लगी जो अभी तक नहीं मिली थी। दरअसल डॉक्टरों के सारे अस्थायी इलाज जिनके अभी तक कोई नतीजे नहीं निकले थे, सब

रोगियों पर असर करने लगे। ऐसा लगता था जसे प्लेग का पीछा करके उसे घेर लिया गया हो और प्लेग की आकस्मिक कमजोरी से उसके खिलाफ़ इस्तेमाल होने वाले कुंद हथियार तेज़ हो गए। सिर्फ दुर्लभ क्षणों में बीमारी अपने को समेटकर तीन या चार ऐसे मरीज़ों पर अंधी होकर झपट्टा मारती थी, जिनके बारे में उम्मीद की जाती थी कि वे बच जाएँगे, मौत के पंजे में उनके प्राण निकल जाते थे। सचमुच कुछ ऐसे बदक़िस्मत लोग थे, जब उनके बचने की उम्मीद सबसे ज़्यादा थी, तभी वे मारे गए थे—मजिस्ट्रेट मोसिये ओथों के साथ भी यही हुआ था, जिन्हें क्वारंटीन कैम्प से छुट्टी मिली थी। तारो ने उनके बारे में कहा था कि, 'उनकी क़िस्मत ने उनका कोई साथ नहीं दिया।' लेकिन कह कहना मुश्किल था कि तारो ने यह बात मोसिये ओथों की ज़िन्दगी का दृष्टि में रखकर कही थी या मौत को।

लेकिन आम तौर पर यह कहा जा सकता है कि महामारी हर दिशा में पीछे हट रही थी। सरकारी विज्ञप्तियों में भी जो शुरू में सिर्फ़ धुँधली, उत्साहहीन आशाओं को ही प्रोत्साहन देती थीं, अब लोगों के इस विचार का समर्थन रहता था कि लड़ाई जीत ली गई है और दुश्मन मोर्चे से पीछे हट रहा है। लेकिन इसे जीत कहा जा सकता था, इसमें शक था। सिर्फ़ इतना ही कहा जा सकता था कि बीमारी जिस रहस्यमय ढंग से आयी थी उसी ढंग से जा रही थी। हमारी नीति नहीं बदली थी, लेकिन कल तक वह स्पष्ट रूप से असफल रही थी आज उसकी जीत हो रही थी। सबसे बड़ी बात यह नज़र आती थी कि महामारी अपने सारे उद्देश्य पूरे करने के बाद ही पीछे हटी थी—दूसरे शब्दों में अगर कहा जाए तो महामारी ने अपना उद्देश्य पूरा कर लिया था।

फिर भी ऐसा मालूम होता था कि शहर में कुछ नहीं बदला था। दिन-भर सड़कों पर ख़ामोशी छाई रहती थी। अँधेरा होने पर हमेशा की तरह भीड़ें जमा हो जाती थीं, अब लोग ओवरकोट और स्कॉर्फ पहनते थे। कॉफ़ी-हाउसों और सिनेमाघरों की आमदनी पहले जैसी ही थी। लेकिन नज़दीक से देखने पर लोग पहले से कम परेशान नज़र आते थे और वे

कभी-कभी मुस्कराते भी थे। इससे यह बात साबित होती थी कि प्लेग फूटने के बाद से आज तक कोई आदमी सबके सामने मुस्कराता हुआ दिखाई नहीं दिया था। दरअसल कई महीनों से शहर बिना हवा के कफ़न में लिपटा था और उसका दम घुट रहा था, अब उस चादर में एक छेद हो गया था। हर सोमवार को जब हम रेडियो सुनते थे तो हमें मालूम हो जाता था कि यह छेद और भी बढ़ रहा है। जल्द ही हम आज़ादी की हवा में साँस ले सकेंगे। लेकिन यह सान्त्वना नकारात्मक थी। लोगों की ज़िन्दगियों पर इसका फ़ौरन कोई असर नहीं पड़ा था। फ़िर भी अगर एक महीना पहले अगर किसी को कहा जाता कि कभी कोई ट्रेन छूटी है, या समुद्र में किश्ती छोड़ी गई है या कारों को फिर सड़कों पर आने की इजाज़त मिल गई है, तो वह इस खबर को अविश्वास पूर्वक सुनता। लेकिन जनवरी के मध्य में इस तरह की घोषणा से किसी को कोई हैरानी नहीं हुई होगी। लेकिन इस दशा में बहुत मामूली परिवर्तन हुआ था, फिर भी यह हमारे नगरवासियों की उम्मीद को बढ़ाने में बहुत अधिक सहायक साबित हुआ था और सचमुच यह कहा जा सकता था कि एक बार अगर आशा की मद्धम-सी किरण भी फूट सकती तो प्लेग के साम्राज्य का अन्त हो जाता।

लेकिन यह मानना ही पड़ेगा कि हमारे नागरिकों की प्रतिक्रियाएँ इतनी भिन्न थीं कि वे असंगत मालूम होती थीं। यह कहना ज़्यादा सही होगा कि वे अतिशय आशावादिता और तीव्र निराशा के बीच झूल रहे थे। इसीलिए यह विलक्षण परिस्थिति पैदा हुई कि उस वक्त जब मौत के आँकड़े सबसे अधिक आशाजनक थे, कई लोगों ने शहर के फाटकों से बाहर भागने की कोशिश की। अधिकारियों को इसकी बिलकुल उम्मीद नहीं थी और साफ़ जाहिर था कि संतरी भी इसके लिए तैयार नहीं थे, क्योंकि बहुत-से 'भगोड़े' भागने में सफल हो गए थे। लेकिन इस मामले की गहराई में देखने से पता चलता है कि इस बार भागने वाले लोग तर्कसंगत कारणों से प्रेरित हुए थे। उनमें से कुछ में प्लेग ने इतनी अनास्था पैदा कर दी थी कि वह एक प्रकार से उनकी प्रकृति ही बन गई थी। वे किसी भी प्रकार की आशा के प्रति बहुत संवेदनशील थे। जब प्लेग का दौर ख़त्म हो गया तब

भी वे प्लेग के ज़माने के नियमों पर ही चलते रहे। उनके बारे में यह कहा जा सकता है कि वे ज़माने से पिछड़ गए थे। बाकी लोग—ख़ास तौर पर वे जो अभी तक मजबूरी से अपने प्रियजनों से अलग रह रहे थे—निराशा और क़ैद के इन महीनों के बाद आशा के झोंके ने उनकी बेसब्री की, चिनगारियों को भड़काकर शोलों में बदल दिया और उसी आँधी में उनका आत्मसंयम भी बह गया। यह सोचकर उनमें घबराहट हो गई थी कि कहीं ऐसा न हो कि अपनी मंज़िल के नज़दीक पहुँचकर ही उनकी मौत हो जाए और वे कभी अपने प्रियजनों को न देख पाएँ और इतने लम्बे अरसे तक वंचित रहने के बावजूद उन्हें कोई लाभ न हो। इसलिए लगातार कई महीनों तक वे इस लम्बी यन्त्रणा में दृढ़ता और सहनशक्ति का परिचय देते आए थे, लेकिन आशा की पहली थिरकन ने ही उस चीज़ को तोड़ दिया था, जिसे भय और निराशा भी क्षीण नहीं कर सके थे। जल्दबाज़ी के पागलपन में उन्होंने प्लेग को पछाड़ने की कोशिश की, वे अन्त तक प्लेग की रफ़्तार का साथ न दे सके।

उधर बढ़ती हुई आशावादिता के अनेक लक्षण दिखाई दे रहे थे। मिसाल के लिए क़ीमतों में अचानक भारी कमी हो गई थी। सिर्फ़ आर्थिक दृष्टिकोण से इस कमी को समझना मुश्किल था। हमारी मुश्किलें पहले की ही तरह मौजूद थीं, फाटकों को सख़्ती से बन्द रखा जाता था और खाद्य-स्थिति में कोई सुधार नहीं हो रहा था। इसलिए क़ीमतों में कमी पूरी तरह से एक मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया थी। लगता था कि प्लेग की क्षीणता का असर सभी क्षेत्रों पर पड़ना अनिवार्य था। आशावादिता की इस बढ़ती हुई लहर से उन लोगों को भी फ़ायदा हुआ था, जो प्लेग से पहले दलों में रहते थे और अब जिन्हें अकेले रहने के लिए मजबूर होना पड़ा था। दोनों ईसाई-मठ फिर खुल गए और उनकी साधारण ज़िन्दगी फिर शुरू हो गई, कार्य-क्रम भी होने लगे। फ़ौज़ियों को भी उन बारकों में जमा कर दिया गया, जो ज़ब्त नहीं की गई थीं, वे पहले दिनों की तरह फिर गैरिसन की ज़िन्दगी बसर करने लगे। ये मामूली बातें थीं, लेकिन बहुत ज़्यादा अर्थपूर्ण थीं।

दबी हुई, लेकिन सक्रिय उत्तेजना की यह हालत २५ जनवरी तक बनी

रही, जब मौत के साप्ताहिक आँकड़ों में इतनी भारी कमी हो गई कि मैडि-कल बोर्ड से मशवरा करने के बाद अधिकारियों ने यह घोषणा की कि अब यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि महामारी थम गई है। विज्ञप्ति में यह भी कहा गया था कि अक्लमन्दी से काम लेते हुए प्रीफ़ेक्ट ने यह भी तय किया है कि शहर के फाटक पन्द्रह दिन और बन्द रखे जाएँ, और एक महीने तक प्लेग-निरोधक तरीक़े इस्तेमाल में लाये जाएँ, यह आशा प्रकट की गई थी कि लोग निश्चय ही इस क़दम की सराहना करेंगे। इस काल में अगर ज़रा-सा भी खतरा दिखाई दिया तो 'स्थाई आदेशों का कठोरता से पालन किया जाएगा और ज़रूरत पड़ने पर अगर अधिकारी-गण उचित समझेंगे तो इस अवधि को अनिश्चित काल के लिए बढ़ा दिया जाएगा।' लेकिन सब लोग सहमत थे कि ये वाक्य सिर्फ़ सरकारी शब्दाडम्बर हैं। २५ तारीख़ की रात को खूब जशन मनाये गए। लोगों की ख़ुशी से अपना सम्बन्ध जतलाने के लिए प्रीफ़ेक्ट ने आदेश दिया कि सड़कों पर पहले दिनों की तरह ही रोशनी की जाए। रोशनी से जगमगाती सड़कों पर प्रसन्न नगरवासियों के दल हँसते और गाते हुए परेड करने लगे।

यह सच है कि कुछ मकानों की खिड़कियों की सिटखनियाँ बन्द रहीं और भीतर से लोग ख़ामोशी से बाहर गूँजने वाली ख़ुशी की आवाज़ों को सुनने लगे। लेकिन इन घरों में भी जहाँ मातम छाया था, गहरी निश्चिन्तता की भावना छा गई थी; शायद इसलिए कि अब उन्हें यह डर नहीं रहा था कि उनके परिवार के और लोग उनसे अलग कर दिये जाएँगे या इसलिए कि उनके दिलों से व्यक्तिगत परेशानी की परछाईं दूर हो गई थी। जिन परिवारों का कोई सदस्य अभी भी अस्पताल में, क्वारंटीन कैम्प में या घर में बीमार पड़ा था, वे लोगों की इस ख़ुशी से अलग रहते थे और मजबूरी के एकान्त में इन्तज़ार करते थे कि प्लेग और लोगों की तरह उनका पिंड भी छोड़ दे। इसमें शक नहीं कि इन परिवारों के दिल में भी उम्मीदें थीं, लेकिन वे उन्हें बचाकर रखे हुए थे और उन्होंने अपने पर यह संयम कर लिया था कि जब तक उन्हें पूरी तरह यक़ीन नहीं हो जाएगा कि वे उम्मीदें सच्ची हैं, वे उन पर भरोसा नहीं करेंगे। वे निर्वासित लोग ख़ामोशी से

सुख और दुख की सीमा में अपनी मुक्ति की प्रतीक्षा कर रहे थे। उनके चारों तरफ़ खुशी का वातावरण छाया था, जिसे देखते हुए उनकी यह प्रतीक्षा और भी अधिक दुखदायी मालूम होती थी।

लेकिन इन अपवादों से अधिकांश लोगों के संतोष में कमी नहीं आयी। इसमें शक नहीं कि प्लेग अभी खत्म नहीं हुई थी—लोगों को इसका स्मरण करवाना होगा, लेकिन कल्पना में वे कई हफ़्ते पहले से ही ट्रेनों की सीटियों की आवाज़ें सुन रहे थे, ये ट्रेनें बाहर की दुनिया में जा रही थीं, जिसका कोई ओर-छोर नहीं था—चमकते हुए समुद्रों में बन्दरगाह से रवाना होते हुए स्टीमर सीटी बजा रहे थे; अगले दिन ये दिवास्वप्न खत्म हो जाते और संदेह की व्यथा लौट आती, लेकिन उस क्षण तो शहर के सारे लोग अँधेरे शोकपूर्ण क़ैदखानों से निकलकर जहाँ उनकी जड़ें पत्थरों की तरह जम गई थीं—बाहर आये और किसी जहाज़ दुर्घटना के बचे यात्रियों की भीड़ की तरह आशा के देश में जा रहे थे।

उस रात को कुछ देर के लिए तारो, रियो, रेम्बर्त और उनके साथी मार्च करती हुई भीड़ में शामिल हो गए और उन्हें भी ऐसा महसूस हुआ जैसे वे हवा पर चल रहे थे। मुख्य सड़कों से गुज़रने के बाद जब वे खाली गलियों में पहुँचे जहाँ घरों की खिड़कियाँ बन्द थीं, वहाँ भी लोगों के हर्षपूर्ण कोलाहल ने उनका पीछा किया। थकान की वजह से न जाने क्यों बड़ी सड़कों पर फैले हर्ष के कोलाहल और बन्द खिड़कियों के पीछे छाये शोक के फ़र्क का एहसास उन्हें न हो सका। इस तरह भावी मुक्ति के दो पहलू थे, एक खुशी का और दूसरा आँसुओं से भरा।

एक ऐसे क्षण में जब दूर खुशी का कोलाहल बढ़कर गर्जन का रूप धारण कर रहा था, अचानक तारो चलते-चलते रुक गया। सड़क पर कोई छोटी-सी चिकनी चीज़ भागी जा रही थी; वह एक बिल्ली थी, जबसे बहार का मौसम शुरू हुआ था उन्हें पहली बार बिल्ली दिखाई दी थी। बिल्ली सड़क के बीचोंबीच रुक गई, हिचकिचाई, उसने अपना पंजा चाटा और उसे अपने दाएँ कान के पीछे फेरा; फिर वह आगे बढ़कर अँधेरे में ग़ायब हो गई। तारो मन-ही-मन मुस्कराने लगा; उसने सोचा कि बालकनी

वाला बूढ़ा भी खुश होगा।

२

लेकिन उन दिनों में, जब मालूम होता था कि प्लेग पीछे हट रही थी और शरमिन्दा होकर उस अज्ञान माँद में घुस रही थी जहाँ से वह छिपकर आयी थी, कम-से-कम शहर में एक आदमी ऐसा था, जो प्लेग के पीछे हटने से क्षुब्ध था। और अगर तारो के नोट्स पर विश्वास किया जा सकता है तो यह आदमी कोतार्द था।

अगर सच पूछा जाए तो उस तारीख से जबसे मौत के आँकड़ों में भारी कमी हुई थी, इस डायरी के नोट्स में एक अजब परिवर्तन हुआ था। तारो की लिखाई पढ़ना मुश्किल हो गया है—हो सकता है इसका कारण थकान हो—डायरी-लेखक एक प्रसंग से दूसरे प्रसंग पर बिना किसी तारतम्य के पहुँच जाता है। इससे भी बड़ी बात यह है कि बाद के इन नोट्स में पहले की तरह की वस्तुपरक दृष्टि नहीं है, व्यक्तिगत विचार आ गए हैं। कोतार्द के केस के बारे में लिखे दो लम्बे पैराग्राफ़ों के बीच हम बूढ़े और बिल्लियों का संक्षिप्त विवरण पाते हैं। तारो हमें बताता है कि प्लेग ने बूढ़े के प्रति उसकी प्रशंसा को बिलकुल कम नहीं किया है, प्लेग ख़त्म होने के बाद भी बूढ़े में उसकी दिलचस्पी क़ायम थी। बदक़िस्मती से यह दिलचस्पी तारो की नेकनीयती के बावजूद जारी न रह सकी। उसने कोशिश की थी कि किसी तरह बूढ़ा उसे नज़र आ जाए। पच्चीस जनवरी के स्मरणीय दिन के बाद कितने ही दिनों तक वह तंग सड़क के एक कोने पर खड़ा रहा। बिल्लियाँ अपनी जगहों पर वापस आ गई थीं और धूप सेंक रही थीं। लेकिन जब वह वक्त आया, जब बूढ़ा बालकनी पर नियमपूर्वक आया करता था, दरवाजे बन्द रहे। इसके बाद कई दिन तक तारो ने दरवाज़ों को एक बार भी खुलते नहीं देखा। वह इस विलक्षण नतीजे पर पहुँचा कि बूढ़ा या तो मर गया है या चिढ़ा हुआ है। उसकी चिढ़ की वजह शायद यही होगी

कि उसने सोचा था कि उसके विचार सही हैं जबकि प्लेग ने यह साबित कर दिया था कि वह गलती पर है। अगर वह मर गया है तो सवाल उठता है (दया के बूढ़े मरीज़ की तरह) क्या वह भी संत था ? तारो ऐसा नहीं सोचता था, लेकिन बूढ़े में उसे एक 'संकेत' दिखाई दिया था, उसने लिखा है, "शायद हम संतपद के क़रीब ही पहुँच सकते हैं।" इस हालत में हमें शान्त और धार्मिक पैशाचिकता से कुछ समय के लिए काम लेना चाहिए।

कोतार्द का निरीक्षण करके लिखी गई टिप्पणियों के साथ-ही-साथ इधर-उधर हमें ग्रान्द के बारे में बिखरी हुई टिप्पणियाँ मिलती हैं—वह धीरे-धीरे स्वस्थ हो रहा था और पूर्ववत काम पर जाता था जैसे उसे कुछ हुआ ही न हो। रियो की माँ के बारे में कुछ बातें लिखी हैं। कभी-कभी तारो की बुढ़िया से बातचीत होती थी, जब वह रियो के घर में रहता था। प्लेग के बारे में बुढ़िया के दृष्टिकोण और विचार सभी चीज़ें ब्यौरेवार डायरी में दर्ज की गई हैं। तारो सबसे ज्यादा मदाम रियो के अहंकार-दमन और अत्यधिक सरल शब्दों में हर बात के बयान करने के ढंग पर ज़ोर देता है। मदाम रियो हमेशा एक खास खिड़की के आगे बैठती थीं, तनकर। बिना हाथ हिलाए उनकी नज़रें नीचे खामोश सड़क पर लगी रहती थीं वे तब तक कमरे में बैठी रहती थीं जब तक शाम कमरे में नहीं आ जाती थी और मदाम रियो एक निश्चल परछाईं बनकर दूसरी परछाइंयों के साथ धीरे-धीरे अँधेरे में नहीं खो जाती थीं। तारो ने उनकी 'फ़ुरती' के बारे में भी लिखा है। मदाम रियो बड़ी फ़ुरती से एक कमरे से दूसरे कमरे में आती-जाती थीं। उनकी दयालुता का भी तारो ने ज़िक्र किया है। हालाँकि वृद्धा की दयालुता की कोई खास मिसालें उसे दिखाई नहीं दी थीं, लेकिन उनके हर काम और हर शब्द में दयालुता की कोमल आभा थी। लगता था कि वे बिना सोचे-विचारे (बाहर से तो ऐसा ही दिखाई देता था) ही सब बातें बूझ लेती थीं। खामोशी और धुँधलेपन के बावजूद भी किसी रोशनी के सामने हतोत्साह नहीं होती थीं यहाँ तक कि प्लेग की चटकीली रोशनी के आगे भी नहीं। यहाँ आकर तारो की लिखावट में एक विचित्र अस्पष्टता आ गई थी। इसके बाद की पंक्तियाँ तो पढ़ी ही नहीं जा सकती थीं और

जैसे अपने आत्म-संयम खो देने का पक्का सबूत देने के लिए उसने डायरी की आखिरी पंक्तियों में पहली बार अपनी व्यक्तिगत ज़िन्दगी के बारे में लिखा। उसे देखकर मुझे अपनी माँ की याद आती है। मुझे माँ में सबसे ज्यादा यह बात पसंद थी कि उसने अपने आपको मिटा दिया था, जिसे 'धुँधला पड़ जाना' कहते हैं। मैं हमेशा माँ के पास जाना चाहता हूँ। यह बात आठ बरस पहले हुई थी, लेकिन मैं यह नहीं कह सकता कि वह मर गई। माँ ने अपने को पहले से भी ज्यादा मिटा दिया और जब मैंने मुड़कर देखा तो वह वहाँ नहीं थी।'

लेकिन हम कोतार्द की बात कर रहे थे। जब मौत के साप्ताहिक आँकड़ों में कमी होने लगी तो कोतार्द कई बार अनेक बहानों से रियो को मिलने गया। लेकिन साफ़ ज़ाहिर था कि वह दरअसल रियो से यह मालूम करना चाहता था कि उसकी राय में महामारी अभी और कितनी लम्बी चलेगी। "क्या सचमुच तुम्हारा ख़याल है कि बीमारी अचानक ख़त्म हो जाएगी ?" कोतार्द को इसमें शक था, कम-के-कम वह ज़ाहिर तो ऐसा ही कर रहा था। लेकिन चूँकि वह बार-बार यह सवाल पूछ रहा था, जिससे साबित होता था कि वह जितने विश्वास का दिखावा कर रहा था, उसे उससे कहीं कम विश्वास था। जनवरी के मध्य से रियो ने उसे आशाजनक उत्तर देने शुरू कर दिए, लेकिन वे उत्तर कोतार्द को सख्त नापसन्द थे। इसलिए हर बार उसकी प्रतिक्रिया अलग होती थी, कभी वह गुस्ताखी दिखाता था और कभी निराशा। एक दिन डॉक्टर ने द्रवित होकर उसे बताया कि आँकड़ों के आशाजनक होने के बावजूद अभी यह नहीं कहा जा सकता कि हम मुसीबत से बाहर निकल आये हैं।

कोतार्द ने फ़ौरन कहा, "इसका मतलब है कि ठीक से कोई नहीं जानता कि क्या होगा। बीमारी किसी भी वक्त फिर फूट सकती है।"

"बिलकुल ! यह भी मुमकिन है कि हालत में तेज़ी से सुधार हो।"

अनिश्चितता की यह हालत सब लोगों के लिए शोकपूर्ण होते हुए भी कोतार्द के लिए सुखद थी। तारो ने कोतार्द को अपने इलाक़े के दुकानदारों से बातें करते हुए देखा था। वह रियो की राय का प्रचार करने की इच्छा

से ऐसा कर रहा था। सचमुच उसे ऐसा करने में कोई दिक्कत नहीं हुई। प्लेग की हार की खबरों से पैदा हुआ जोश जब कम हो गया तो बहुत से लोगों के मन में फिर से शक पैदा हो गए। उनकी परेशानी को देखकर कोतार्द को सान्त्वना मिली। कई बार वह निराश हो जाता था। उसने तारो से कहा, "हाँ, जल्द ही एक दिन फाटक खुल जाएँगे और फिर देखना वे मुझे जलते हुए कोयले की तरह निकाल फेंकेंगे।"

जनवरी के पहले तीन हफ़्तों में कोतार्द का मूड अचानक इतना ज्यादा बदल जाता था कि सबको बड़ा ताज्जुब हुआ। आम तौर पर वह अपने पड़ोसियों और परिचितों में लोकप्रिय बनने के लिए कोई कोशिश नहीं छोड़ता था, लेकिन अब लगातार कई दिन तक वह जान-बूझकर उनसे मिलने से कतराने लगा। तारो को मालूम हुआ कि ऐसे मौक़ों पर कोतार्द अचानक बाहर की दुनिया से अपने सारे सम्पर्क तोड़ देता था और वह कुण्ठित भाव से अपने मन के घोंघे में घुस जाता था। वह रेस्तराँओं में, थियेटरों में या अपने प्रिय कॉफ़ी-हाउसों में भी दिखाई नहीं देता था। लेकिन मालूम होता था कि अब वह महामारी के पहले-जैसी अन्धकारमय और साधारण ज़िन्दगी फिर से बसर करने में असमर्थ था। वह अपने कमरे में ही बैठा रहता था और नज़दीक के एक रेस्तराँ से खाना ऊपर ही मँगवा लेता था। सिर्फ़ रात होने पर वह छोटी-मोटी चीज़ें खरीदने के लिए बाहर निकलता था, और दुकान से निकलकर अँधेरी सुनसान सड़कों पर छिप-छिपकर घूमा करता था। ऐसे मौक़ों पर एक या दो बार तारो से उसकी मुलाक़ात हो गई, लेकिन कोतार्द ने सिर्फ़ रूखा एकाक्षर उत्तर दिया। फिर वह अचानक एक ही दिन में मिलनसार हो गया, प्लेग के बारे में लम्बी-चौड़ी बातें करने लगा, हर आदमी से पूछता कि प्लेग के बारे में उसकी क्या राय है। और बड़ी खुशी से भीड़ में मिलता-जुलता था।

२५ जनवरी को जब सरकारी घोषणा की गई तो कोतार्द फिर छिप गया। दो दिन बाद तारो ने उसे एक दूर की सड़क पर चहलक़दमी करते देखा। जब कोतार्द ने तारो से कहा कि वह उसके साथ घर चले तो तारो हिचकिचाया, उस दिन वह काम करते-करते थक गया था। लेकिन कोतार्द

इन्कार सुनने के लिए राज़ी न हुआ। वह बहुत उत्तेजित दिखाई दे रहा था, ज़ोर से हाथ हिला रहा था और बहुत तेज़ी से और ऊँची आवाज़ में बोल रहा था। उसने सबसे पहले तारो से पूछा कि उसके खयाल में क्या सचमुच सरकारी विज्ञप्ति का यह अर्थ था कि प्लेग ख़त्म हो गई थी? तारो ने कहा कि यह साफ़ ज़ाहिर है कि सिर्फ़ सरकारी घोषणा से महामारी को खत्म नहीं किया जा सकता, लेकिन निश्चित रूप से ऐसा मालम होता है कि अगर कोई ऐसी-वैसी दुर्घटना न हुई तो कुछ ही दिनों में प्लेग खत्म हो जाएगी।

कोतार्द ने कहा, "हाँ, अगर दुर्घटनाएँ न हुईं, और दुर्घटनाएँ तो होंगी ही, क्यों?"

तारो ने बताया कि सरकार ने इस सम्भावना को नज़र में न रखते हुए ही और पन्द्रह दिनों तक फाटक खोलने से इन्कार कर दिया है।

"और वे कितने अक्लमन्द थे!" कोतार्द ने उसी तरह उत्तेजित स्वर में कहा। "हालत को देखते हुए तो मैं कहूँगा कि अधिकारियों को अपने शब्द वापिस लेने पड़ेंगे।"

तारो ने कहा, हो सकता है ऐसा हो; लेकिन उसके खयाल में ज्यादा अक्लमन्दी इस बात में होगी कि फाटकों के खुलने पर और निकट भविष्य में साधारण ज़िन्दगी के फिर से चालू होने पर भरोसा किया जा सके।

"मान लिया लेकिन 'साधारण ज़िन्दगी के फिर से चालू होने' का क्या मतलब है?" कोतार्द ने पूछा।

तारो मुस्करा दिया, "सिनेमाघरों में नयी फ़िल्में दिखाई जाएँगी।"

लेकिन कोतार्द नहीं मुस्कराया। उसने पूछा क्या लोग यह सोचते हैं कि प्लेग ने ज़िन्दगी को बिलकुल नहीं बदला और क्या शहर की ज़िन्दगी पूर्ववत जारी रहेगी जैसे कुछ भी न हुआ हो? तारो का खयाल था कि प्लेग ने ज़िन्दगी को बदला है और एक माने में नहीं भी बदला। यह स्वाभाविक ही था कि हमारे साथी नागरिकों की सबसे बड़ी ख्वाहिश यही थी और रहेगी कि वे इस तरह आचरण कर सकें जैसे कुछ हुआ ही न हो, इसी वजह से एक माने में कोई चीज़ नहीं बदलेगी। लेकिन इस बात को

अगर दूसरे दृष्टिकोण से देखा जाए तो हम पाएँगे कि इन्सान सब कुछ नहीं भूल सकता, चाहे उसके मन में भूलने की कितनी ही ज़्यादा ख्वाहिश क्यों न हो। प्लेग लोगों के दिलों में निशान ज़रूर छोड़ जाएगी।

इस पर कोतार्द ने साफ़ और रूखे ढंग से कह दिया कि उसे लोगों के दिलों में दिलचस्पी नहीं है; दरअसल सबसे कम परवाह उसे दिलों की है। वह तो यह जानने में दिलचस्पी रखता है कि सारे प्रशासन को नये सिरे से बदला जाएगा या नहीं, मिसाल के लिए क्या सार्वजनिक सेवा-कार्यों में आमूल परिवर्तन होगा या नहीं? तारो को क़बूल करना पड़ा कि उसे इस मामले का अन्दरूनी तौर पर कुछ पता नहीं है; लेकिन व्यक्तिगत रूप से उसका ख़याल है कि महामारी की उथल-पुथल के बाद इन सेवाओं को फिर से चालू करने में कुछ देर ज़रूर लग जाएगी। यह भी सम्भव मालूम होता है कि हर क़िस्म की नयी समस्याएँ पैदा होंगी, जिनसे प्रशासन-व्यवस्था का कुछ सीमा तक पुनर्संगठन करना पड़ेगा।

कोतार्द ने सर हिलाकर समर्थन किया, "हाँ यह तो नामुमकिन नहीं है; दरअसल सबको नये सिरे से ज़िन्दगी शुरू करनी पड़ेगी।"

वे कोतार्द के घर के नज़दीक पहुँच रहे थे। अब वह पहले से अधिक खुश दीख रहा था। उसने तय कर लिया था कि वह भविष्य को आशा-वादिता के दृष्टिकोण से देखेगा। साफ़ ज़ाहिर था कि वह यह कल्पना कर रहा था कि शहर को फिर से नयी बेदाग़ ज़िन्दगी मिलेगी, अतीत मिट जाएगा और फिर नये सिरे से सब कुछ शुरू होगा।

तारो मुस्कराया, "तो यह बात है! हो सकता है तुम्हारे लिए भी अच्छी परिस्थितियाँ पैदा हो जाएँ—कौन कह सकता है? हम सबको एक माने में नयी ज़िन्दगी मिलेगी।"

वे कोतार्द के दरवाज़े के आगे हाथ मिला रहे थे।

"बिलकुल ठीक! नये सिरे से बेदाग़ जिन्दगी शुरू करना कितनी बड़ी बात होगी!" कोतार्द की उत्तेजना बढ़ती जा रही थी।

अचानक अँधेरे हॉल से दो आदमी निकले। तारो ने मुश्किल से कोतार्द को यह बड़बड़ाते हुए सुना ही था, "ये लोग आख़िर क्या चाहते

हैं ? कि वे दोनों आदमी जो मामूली ओहदे के सरकारी कर्मचारी मालूम होते थे, और जिन्होंने अपनी सबसे बढ़िया पोशाक पहन रखी थी, पूछा कि क्या उसका नाम कोतार्द है ? कोतार्द ने दबी ज़बान में कुछ कहा और पीछे की तरफ़ घूमकर अँधेरे में ग़ायब हो गया। कुछ क्षणों तक तारो और दोनों सरकारी आदमी शून्य दृष्टि से एक-दूसरे को देखते रहे। फिर तारो ने उनसे पूछा कि वे क्या चाहते हैं ? निश्चित सूचना दिये बग़ैर उन लोगों ने बताया कि वे 'कुछ मालूम करने' आये थे और वे धीरे-धीरे उसी तरफ़ चले गए जिधर कोतार्द गया था।

घर लौटकर तारो ने इस विचित्र घटना का ब्यौरा लिखा और उसके बाद लिखा, "आज रात मुझे बेहद थकान महसूस हो रही है।" उसकी लिखावट इस बात की पुष्टि कर रही थी। उसने यह भी लिखा कि अभी उसे बहुत सा काम करना है, लेकिन यह कोई ऐसा कारण नहीं है जिसकी वजह से इन्सान 'अपने को तैयारी की हालत' में न रखे। उसने अपने-आप से सवाल पूछा कि वह तैयारी की हालत में है या नहीं। और फिर जैसे अतिरिक्त अंश के तौर पर—यहाँ आकर डायरी समाप्त हो जाती है—उसने लिखा कि दिन और रात के समय ज़रूर एक ऐसा क्षण होता है जब आदमी का साहस मन्द पड़ जाता है। वह इसी क्षण से डरता था।

३

अगले दिन, फाटक खुलने की निश्चित तारीख़ से कुछ दिन पहले, रियो जब दोपहर को घर आया तो वह सोच रहा था कि वह जिस तार का इन्तज़ार कर रहा था वह घर पहुँचा होगा या नहीं। हालाँकि आजकल भी दिन-भर उसे उतनी ही मेहनत करनी पड़ती थी, जितनी कि उन दिनों में जब प्लेग अपने शिखर पर थी, लेकिन निकट भविष्य में मुक्ति की सम्भावना ने उसकी थकान को मिटा दिया था। उसकी आशा लौट आई थी और उसके साथ ही ज़िन्दगी के प्रति एक नया उत्साह भी मन में पैदा हुआ

था। कोई इन्सान लगातार तनाव की स्थिति में नहीं रह सकता जबकि उसकी समस्त शक्ति और इच्छा-शक्ति चर्म-बिन्दु पर पहुँच चुकी हो—जब वह तनाव हट जाए और उन स्नायुओं और पुट्ठों को आराम मिले जो संघर्ष के लिए तने हुए हों, तो इन्सान को बेहद खुशी होती है। रियो जिस तार के इन्तज़ार में था अगर वह तार भी आ गया हो तो रियो नये सिरे से ज़िन्दगी शुरू कर सकेगा। सचमुच उसे ऐसा महसूस होता था कि उन दिनों हर आदमी नये सिरे से ज़िन्दगी शुरू कर रहा था।

वह हॉल में पोर्टर के कमरे के नज़दीक से गुज़रा। नया पोर्टर, जो बूढ़े माईकेल की जगह पर नियुक्त हुआ था, हॉल के सामने की खिड़की से चेहरा सटाकर खड़ा था। रियो को देखकर वह मुस्कराया। सीढ़ियाँ चढ़ते वक्त रियो की आँखों के आगे पोर्टर का मुस्कराता हुआ चेहरा घूम गया, जो थकान और अभाव से पीला पड़ गया था।

हाँ, वह नये सिरे से ज़िन्दगी शुरू करेगा, अगर एक बार 'बिछोह' का दौर खत्म हो गया और अगर वह खुशक़िस्मत रहा तो···इन विचारों के साथ वह दरवाज़ा खोल रहा था, जब उसने देखा कि उसकी माँ उससे मिलने के लिए नीचे हॉल की तरफ़ जा रही थी। माँ ने उसे बताया कि तारो की तबीअत अच्छी नहीं है। वे रोज़ की तरह ठीक वक्त पर उठे थे, लेकिन उसकी बाहर जाने की इच्छा नहीं हुई इसलिए वह फिर बिस्तर में लेट गया था। मदाम रियो बहुत परेशान थीं।

"हो सकता है, यह कोई संजीदा बात हो।" रियो ने कहा।

तारो पीठ के बल बिस्तर पर लेटा था, उसका भरकम सर तकिये में गहरा धंसा था और उसकी विशाल छाती पर चादर आगे की तरफ़ निकली हुई थी। उसके सर में दर्द था और टेम्प्रेचर बढ़ गया था। उसने रियो को बताया कि लक्षणों से तो कोई निश्चित बात नहीं कही जा सकती, लेकिन हो सकता है वे प्लेग के ही लक्षण हों।

उसकी जाँच करने के बाद रियो ने कहा, "नहीं, अभी तक तो कोई निश्चित लक्षण नहीं दीख रहा।"

लेकिन तारो को बेहद प्यास लग रही थी। बरामदे में आकर डॉक्टर

ने अपनी माँ से कहा कि हो सकता है तारो को प्लेग हो। "ओहो!" माँ बोली, "यह कैसे मुमकिन हो सकता है? और अब?" क्षण-भर के बाद उसने कहा, "बर्नार्द, हम उसे यहीं रखेंगे।"

रियो सोच में पड़ गया। उसने संदिग्ध स्वर में कहा, "सच पूछो तो मुझे ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं। फिर भी शहर के फाटक जल्द ही खुलेंगे। अगर तुम यहाँ न होतीं तो मेरा ख़याल है कि मैं इसकी ज़िम्मेदारी खुद ले लेता…"

"बर्नार्द, उसे यहीं रहने दो और मुझे भी यहीं रहने दो। तुम जानते ही हो कि मैंने हाल ही में प्लेग से बचने का एक और टीका लगवाया है।"

डॉक्टर ने कहा कि टीके तो तारो ने भी लगवाए थे, हो सकता है कि थकान की वजह से उसने आख़िरी टीका न लगवाया हो या ज़रूरी साव-धानियाँ न बरती हों।

रियो सर्जरी में चला गया और जब वह लौटा तो तारो ने उसके हाथ में एक सन्दूक देखा, जिसमें प्लेग के सीरम की बड़ी शीशियाँ थीं।

तारो ने कहा, "आह, तो 'यही' मामला है।"

"कोई ज़रूरी नहीं। लेकिन हमें कोई जोखिम नहीं उठानी चाहिए।"

बिना कुछ कहे तारो ने अपनी बाँह आगे बढ़ा दी और देर तक इन्जे-क्शन लगवाता रहा। ये वही इन्जेक्शन थे, जो उसने खुद बहुत बार दूसरे लोगों को लगाए थे।

"शाम तक हमें हालत का ज़्यादा अच्छी तरह पता चल जाएगा।" रियो ने तारो से नज़रें मिलाते हुए कहा।

"लेकिन, मुझे अस्पताल भेजने के बारे में क्या हुआ?"

"यह अभी तय नहीं हुआ कि तुम्हें प्लेग है।" तारो कोशिश करके मुस्कराया।

"ख़ैर, मैंने पहली बार तुम्हें मरीज़ को छूत के वॉर्ड में भेजने का हुक्म दिये बग़ैर ही इन्जेक्शन लगाते देखा है।"

रियो ने मुँह दूसरा तरफ़ फेर लिया।

"यहाँ तुम अच्छी तरह से रहोगे। मेरी माँ और मैं तुम्हारी देखभाल

करेंगे।"

तारो ने कुछ न कहा। डॉक्टर बक्स में शीशियाँ रख रहा था। वापस मुड़कर देखने से पहले वह इन्तज़ार करता रहा कि शायद तारो कुछ कहे, लेकिन तारो ख़ामोश रहा। रियो उसके बिस्तर के पास आया। मरीज़ टकटकी लगाकर उसकी तरफ़ देख रहा था, हालाँकि उसके चेहरे पर तनाव था, लेकिन उसकी भूरी आँखें शान्त थीं। रियो उसके ऊपर झुककर मुस्कराया।

"अब सोने की कोशिश करो। मैं अभी थोड़ी देर में लौट आऊँगा।"

जब वह बाहर निकला तो पीछे से तारो ने उसे आवाज़ दी। वह फिर कमरे में लौट आया। तारो अजब ढंग से पेश आ रहा था। लगता था वह किसी बात पर क़ाबू पाने की कोशिश कर रहा था, लेकिन उसे कहने के लिए मजबूर भी था।

उसने आख़िर कह ही दिया, "रियो, मुझे सच-सच बता देना, मुझे इसी पर भरोसा है।"

"मैं वादा करता हूँ।"

तारो के भारी चेहरे से जैसे कोई बोझ उतर गया, वह मुस्करा दिया, "धन्यवाद ! मैं मरना नहीं चाहता और मैं ज़िन्दा रहने के लिए लड़ूँगा। लेकिन अगर मैं मुक़ाबले में हार गया तो मैं चाहता हूँ कि उसका अन्त अच्छी तरह हो।"

आगे झुककर रियो ने उसका कन्धा दबाया, "नहीं, संत बनने के लिए तुम्हें ज़िन्दा रहना चाहिए। इसलिए लड़ाई करो।"

उस दिन मौसम बहुत सरदी के बाद कुछ गरम हो गया, ज़ोरदार आँधियों के साथ ओले पड़े और बारिश आयी। सूर्यास्त के वक्त आसमान कुछ साफ़ हो गया और फिर तेज सरदी हो गई। रियो शाम को घर लौटा। ओवरकोट उतारे बग़ैर ही वह अपने दोस्त के कमरे में आया। तारो जैसे निश्चल लेटा था, लेकिन उसके भिंचे हुए होंठों से जो बुख़ार से, सफ़ेद पड़ गए थे, मालूम होता था कि उसने लड़ाई जारी रखी थी।

"कहो, कैसे हो ?" रियो ने पूछा।

तारो ने चादर में से अपने चौड़े कन्धों को ज़रा-सा उठाया और कहा, "मैं मुक़ाबले में हार रहा हूँ।"

डॉक्टर उसके ऊपर झुका। तारो की जलती हुई त्वचा के नीचे गिल्टियाँ निकल आई थीं और उसके सीने में ऐसी आवाज़ आ रही थी जैसे वहाँ भट्ठी छिपी हो। अजब बात तो यह थी कि तारो में एक साथ दोनों क़िस्म की प्लेगों के लक्षण दिखाई दे रहे थे।

रियो सीधा खड़ा हो गया और उसने कहा कि अभी तक सीरम को असर करने का पूरा वक्त नहीं मिला। तारो ने कुछ कहना चाहा, लेकिन बुखार की तेज़ी ने उसके गले के शब्दों को दबा दिया।

खाने के बाद रियो और उसकी माँ मरीज़ के सिरहाने ड्यूटी देने बैठ गए। रात संघर्ष से शुरू हुई और रियो जानता था कि तड़के तक प्लेग की छूत के साथ यह भयानक कुश्ती जारी रहेगी। इस लड़ाई में तारो के हृष्ट-पुष्ट कन्धे और सीना ही उसकी सबसे बड़ी सम्पत्ति नहीं थे, बल्कि वह खून जो रियो की सुई के नीचे से टपका था। इस खून में कोई चीज़ थी, जो इन्सान की आत्मा से भी अधिक शक्तिशाली थी, इन्सान का कोई कौशल जिसके रहस्य का उद्घाटन नहीं कर सकता था। डॉक्टर का काम सिर्फ़ अपने दोस्त की लड़ाई का दर्शक बनना था। उसे अब क्या करना चाहिए, गिल्टियों को उत्तेजित करने के लिए कौनसे टीके देने चाहिएँ, लगातार कई महीनों की असफलताओं से रियो को इन साधनों की असलियत मालूम हो गई थी। दरअसल वह एक ही तरीक़े से मदद कर सकता था, भाग्य के अनुग्रह को अवसर देना—अगर भाग्य को उत्तेजित न किया जाए तो वह भी सोया रहता है। भाग्य ऐसा साथी था जिसे अलग नहीं किया जा सकता था। रियो प्लेग का ऐसा पहलू देख रहा था जिसने उसे स्तब्ध कर दिया था। वह फिर उन तमाम चालों को हराने की भरसक कोशिश कर रही थी, जो उसके खिलाफ़ बरती गई थीं, वह अप्रत्याशित स्थानों पर हमला कर रही थी और उन स्थानों से निकल रही थी, जो उसके रहने के निश्चित स्थान समझे जाते थे। एक बार फिर प्लेग तमाम योजनाओं को विफल करने पर तुली थी।

तारो बिना हिले-डुले संघर्ष करता रहा। रात में एक बार भी उसने बेचैनी से दुश्मन के हमलों का मुक़ाबला नहीं किया। सिर्फ़ अपने समस्त अचेत भरकम विस्तार से और खामोशी से उसने अपनी लड़ाई को जारी रखा, यहाँ तक कि उसने बोलने की कोशिश भी नहीं की। उसने अपने तरीक़े से यह सूचित किया था कि वह अब अपना ध्यान संघर्ष के अतिरिक्त कहीं और लगाने की स्थिति में नहीं है। रियो संघर्ष के उलट-फेरों को अपने दोस्त की आँखों में देख सकता था, जो कभी बन्द हो जाती थीं और कभी खुल जाती थीं; उन पलकों में देख सकता था, जो कभी कसकर पुतली के साथ जुड़ जाते थे और कभी फैल जाते थे। उसकी नज़रों में जो कभी कमरे की किसी चीज़ पर या डॉक्टर और उसकी माँ पर टिक जाती थीं। हर बार जब उसकी नज़रें डॉक्टर की नज़रों से टकराती थीं, तो बड़ी कोशिश करके तारो मुस्कराता था।

बीच में एक बार सड़क पर तेज़ कदमों की आहट सुनाई दी। दूर किसी कम्पन के डर से वे भाग रहे थे। धीरे-धीरे वह आवाज़ नज़दीक आती गई और ज़ोर से बारिश शुरू हो गई। शहर में फिर ज़ोर की बारिश और तूफ़ान आया था, फ़ौरन फुटपाथ पर तड़ातड़ ओले गिरने की आवाज़ आने लगी। खिड़कियों के आगे लगी तिरपालें हवा में ज़ोर से फरफराने लगीं। रियो का ध्यान कुछ क्षणों के लिए ओलों की आवाज़ों की तरफ़ चला गया था। उसने फिर तारो के चेहरे पर छाई परछाइयों को देखा। तारो के चेहरे पर पलंग के पास रखे एक लैम्प की रोशनी पड़ रही थी। उसकी माँ सलाइयों से ऊन की कोई चीज़ बुन रही थी और बीच-बीच में आँखें उठाकर मरीज़ की तरफ़ देख लेती थी। डॉक्टर ने अपना फ़र्ज भरसक निभा दिया था। तूफ़ान गुज़र जाने के बाद कमरे की खामोशी ज़्यादा गहरी हो गई। अब वहाँ सिर्फ़ उस अदृश्य युद्ध का उपद्रव छाया था। अनिद्रा से डॉक्टर के स्नायुओं में उत्तेजना पैदा हो गई थी। उसे लगा कि खामोशी की तीक्ष्णता में उसे वह मद्धम पैशाचिक 'सी-सी' की आवाज़ सुनाई दे रही है, जो महामारी के आरम्भ से ही उसके कानों में गूँजती आ रही थी। उसने अपनी माँ को इशारे से कहा कि वह सोने के लिए चली जाए। माँ ने सिर हिला-

कर इन्कार कर दिया और उसकी आँखों में चमक आ गई। फिर उसने सलाइयों की नोकों पर चढ़े एक फन्दे को ग़ौर से देखा। उसका खयाल था कि वह फन्दा शायद ग़लत हो गया था। रियो ने उठकर मरीज़ को पानी दिया और फिर बैठ गया।

फ़ुटपाथ पर फिर क़दमों की आवाज़ गूँज उठी। यह आवाज़ नज़दीक आती गई, फिर दूर चली गई। लोग तूफ़ान के थमने से फ़ायदा उठाकर जल्दी-जल्दी घर जा रहे थे। पहली बार डॉक्टर को एहसास हुआ कि एम्बुलेंसों की खड़खड़ाहट के बग़ैर यह रात, जिसमें देर से भी लोग आ-जा रहे थे, अतीत की रातों-जैसी थी; यह प्लेग से मुक्त रात थी। ऐसा मालूम होता था जैसे सरदी, सड़कों की रोशनी और लोगों की भीड़ ने मिलकर महामारी को खदेड़ दिया हो, और महामारी ने शहर की गहराइयों को छोड़कर इस गरम कमरे में शरण ले ली थी और वह तारो के निश्चल शरीर पर अपना आखिरी हमला कर रही थी। अब वह पहले की तरह घरों के ऊपर हवा में अपना मूसल नहीं घुमा रही थी, लेकिन वह मरीज़ के कमरे की गंदी हवा में धीरे-से सीटी बजा रही थी। जब से लम्बी जगार शुरू हुई थी, तभी से वह इस आवाज़ को सुनता आ रहा था। वह इन्तज़ार कर रहा था कि यहाँ भी वह विचित्र आवाज़ बन्द हो जाए और वह अपनी हार क़बूल कर ले।

प्रभात से कुछ पहले रियो अपनी माँ की तरफ़ देखकर फुसफुसाया, "अच्छा हो अगर तुम अब थोड़ा-सा आराम कर लो, क्योंकि रात को तुम्हें मेरी जगह यहाँ बैठना पड़ेगा। और देखो, सोने से पहले गोलियाँ ज़रूर खा लेना।"

मदाम रियो ने उठकर अपनी बुनाई तहा दी और वे मरीज़ के सिरहाने चली गईं। कुछ देर से तारो की आँखें बन्द थीं। उसके कड़े माथे पर पसीने से बाल चिपक गए थे। मदाम रियो ने एक ठंडी साँस ली और तारो ने आँखें खोलीं। उसने वृद्धा का दयालु चेहरा अपने ऊपर झुका देखा। बुखार के ज़ोर से तपे चेहरे के एक छोर से दूसरे छोर तक वही निश्चल मुस्कान फिर पैदा हो गई। लेकिन फ़ौरन उसकी आँखें बन्द हो गईं। रियो कमरे में

अकेला रह गया। वह जाकर उस कुरसी पर बैठ गया जहाँ से उठकर उसकी माँ अभी गयी थी। सड़क पर ख़ामोशी छाई थी और सोये शहर में से कोई आवाज़ नहीं आ रही थी। प्रभात की ठंडक का स्पर्श महसूस हो रहा था।

डॉक्टर की आँख लगी ही थी कि सड़क पर एक छकड़े के पहियों की आवाज़ से वह जाग उठा। उसे कुछ कँपकँपी महसूस हुई। उसने तारो की तरफ़ देखा, तूफ़ान कुछ थम गया था। वह भी सो रहा था। लोहे के पहियों की आवाज़ दूर जाकर गायब हो गई। खिड़की के शीशों पर अभी भी अँधेरा छाया था। जब डॉक्टर तारो के नज़दीक आया। तो तारो ने भावशून्य दृष्टि से उसकी तरफ़ देखा। वह उस आदमी की तरह था, जिसने नींद की सीमा को पार न किया हो।

"तुम्हें नींद आयी थी न ?" रियो ने पूछा।

"हाँ।"

"साँस लेने में कुछ आसानी हो रही है ?"

"थोड़ी-थोड़ी। क्यों, क्या यह किसी बात की निशानी है ?"

रियो कुछ क्षणों के लिए ख़ामोश रहा, फिर उसने कहा, "नहीं तारो! यह किसी बात की निशानी नहीं है। मेरी तरह तुम भी जानते हो कि अक्सर सुबह के वक्त आदमी की तबीअत अच्छी हो जाती है।"

"थैंक्स," तारो ने सर हिलाकर समर्थन किया, "हमेशा मुझे सही-सही बात बता दिया करो।"

रियो पलंग के एक ओर बैठा था। वह अपने नज़दीक बीमार की टाँगों का स्पर्श महसूस कर रहा था, जो किसी समाधि पर बनी मूर्ति की टाँगों की तरह सख़्त और अकड़ी हुई थीं। तारो को साँस लेने में दिक्क़त हो रही थी।

"बुख़ार फिर लौट आएगा न, रियो ?" उसने हाँफते हुए पूछा।

"हाँ, लेकिन दोपहर के वक्त हमें असली स्थिति मालूम हो जाएगी।"

तारो ने अपनी आँखें बन्द कर लीं। मालूम होता था कि वह अपनी सारी ताक़त को इकट्ठा कर रहा था। उसके चेहरे पर बेहद थकान नज़र

आ रही थी। वह बुखार बढ़ने का इन्तज़ार कर रहा था और बुखार ने अभी से उसके भीतर कहीं उभरना शुरू कर दिया था। जब उसने आँखें खोलीं तो उसकी नज़र धुँधली-सी दिखाई दी। जब उसने रियो को अपने ऊपर झुके देखा तो उसकी आँखों में चमक आ गई। रियो के हाथ में एक गिलास था।

"पियो।"

तारो ने पानी पीकर धीरे-धीरे तकिये पर अपना सर झुका दिया।

"यह लम्बा मामला है।" वह अस्फुट स्वर में बोला।

रियो ने कसकर उसकी बाँह पकड़ ली, लेकिन तारो पर, जिसका सर दूसरी तरफ़ हटा हुआ था, कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। फिर अचानक जैसे भीतर का कोई बाँध बिना सूचना दिये टूट गया, बुखार की तूफ़ानी लहर फिर लौट आई और तारो के गाल और माथा रक्तिम हो उठे। तारो की आँखें जब खुलीं तो उसने डॉक्टर को देखा, जो फिर झुककर उसे स्नेहपूर्ण प्रोत्साहन की दृष्टि से देख रहा था। तारो ने मुस्कराने की कोशिश की, लेकिन सूखे थूक ने उसके जबड़ों और होंठों को भींचकर बन्द कर दिया था, इसमें से मुस्कराहट अपना रास्ता न बना सकी। तने हुए चेहरे पर सिर्फ़ सजीव आँखें ही साहस से चमक रही थीं। सात बजे मदाम रियो फिर मरीज़ के शयनकक्ष में लौट आईं डॉक्टर अस्पताल में फ़ोन करने के लिए और अपनी जगह तारो की देखभाल के लिए किसी आदमी का प्रबंध करने के लिए सर्जरी में गया। उसने तय किया कि वह मरीज़ों को नहीं देखेगा। वह कुछ क्षण तक सर्जरी के कौच पर लेट गया। पाँच मिनट बाद वह मरीज़ के कमरे में गया। तारो का चेहरा मदाम रियो की तरफ़ मुड़ा था, जो पलंग के नज़दीक अपने हाथ गोद में रखे बैठी थीं। कमरे की मद्धम रोशनी में वृद्धा सिर्फ़ एक अँधेरी परछाईं की तरह दीख रही थीं। तारो इतने ग़ौर से उनकी तरफ़ देख रहा था कि मदाम रियो ने अपने होंठों पर उँगली रखी और उठकर सिरहाने रखा लैम्प बुझा दिया। परदों के पीछे दिन की रोशनी बढ़ रही थी और जब मरीज़ का चेहरा रोशनी में नज़र आने लगा, तो मदाम रियो ने देखा कि अभी भी तारो की नज़रें उसी पर

गड़ी हैं। पलंग पर झुककर वृद्धा ने चादर की सिलवटें ठीक कीं और जब वह सीधी खड़ी हुईं तो उन्होंने क्षण-भर के लिए तारो के गीले, उलझे बालों पर अपना हाथ रखा। फिर उसे जैसे कहीं दूर से दबी हुई एक आवाज़ सुनाई दी, 'थैंक यू' और किसी ने कहा कि अब सब खैरियत है। जब वृद्धा अपनी कुरसी पर वापस आकर बैठीं तो तारो ने अपनी आँखें बन्द कर ली थीं और भिंचे हुए मुँह के बावजूद उसके क्षीण चेहरे पर एक मंद मुस्कान मँडरा रही थी।

दोपहर के वक्त बुख़ार अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया। बलग़म-मिली खाँसी ने मरीज़ के शरीर को झकझोर दिया और अब वह खून थूक रहा था। गिल्टियों की सूजन ख़त्म हो गई थी, लेकिन वे अभी भी मौजूद थीं, जोड़ों में गड़े लोहे के टुकड़ों की तरह। रियो ने फ़ैसला किया कि गिल्टियों में नश्तर लगाना असम्भव होगा। रह-रहकर बुख़ार और खाँसी के दौरों के बीच तारो अभी भी अपने दोस्तों की तरफ़ देख रहा था। लेकिन जल्द ही उसकी आँखों का खुलना बहुत कम हो गया और पहचान के संक्षिप्त क्षणों में उसके बिगड़े चेहरे पर जो चमक आ जाती थी वह भी लगातार मद्धम होती गई। तूफ़ान के कोड़ों से उसका शरीर ऐंठ गया था और प्रकाश का कौंधना बहुत कम हो गया था। तूफ़ान के बीच वह धीरे-धीरे परित्यक्त भाव से बह रहा था। रियो के सामने अब एक नक़ाब की तरह चेतना-शून्य चेहरा पड़ा था, जिसमें से मुस्कराहट हमेशा के लिए चली गई थी। वह इन्सान का शरीर, उसके दोस्त का शरीर प्लेग की बरछियों से छिदकर, झुलसा देने वाली दैवी आगों में जल रहा था। वे तमाम हवाएँ इस आग को और भी भड़का रही थीं। रियो की आँखों के सामने उसका दोस्त महामारी की अंधकारमय बाढ़ में तड़प रहा था। रियो उसे तबाही से बचाने में असमर्थ था। वह सिर्फ़ निष्फल रूप से किनारे पर खाली हाथ, दुखित हृदय, निहत्था और असहाय खड़ा होकर मुसीबत के इस हमले का दृष्टि-मात्र रह सकता था और जब अन्त आया तो रियो की आँखें आँसुओं से भर गईं वे असहायता के आँसू थे। उसने तारो को लुढ़ककर, दीवार की तरफ़ मुँह किये खोखली कराहट के साथ मरते नहीं देखा, लगता था

जैसे उसके भीतर कोई ज़रूरी तार टूट गया था···

अगली रात संघर्ष की नहीं, बल्कि खामोशी की थी। ख़ामोश, मौत के कमरे में रियो लाश के सिरहाने बैठा था। लाश अब रोज़मर्रा के कपड़ों में थी। यहाँ भी रियो को उस तात्विक शान्ति का अनुभव हुआ, जो उसने कुछ रातें पहले प्लेग से दूर ऊँची छत पर बैठकर शहर के फाटकों पर हुए क्षणिक उपद्रव के बाद अनुभव की थी। साथ ही उसे उस ख़ामोशी का ख़याल आ रहा था जो अस्पताल में मरने वालों के बिस्तरों पर छाई रहती थी। वहाँ और यहाँ एक ही जैसा गम्भीर विराम था, एक ऐसी ख़ामोशी थी जो युद्ध के बाद छा जाती है; हार की खामोशी। लेकिन अब उसके मृत दोस्त को ख़ामोशी अपने में लपेट रही थी, इस घनी ख़ामोशी में और सड़कों और शहर में छाई ख़ामोशी में—जो कि अब आख़िरकार मुक्ति की साँस ले रहा था। इतनी सौम्यता थी कि रियो को यह निर्मम एहसास हुआ कि यह आखिरी हार थी; यह वह आख़िरी विनाशकारी मुठभेड़ थी, जिसके बाद युद्ध ख़त्म हो जाता है और जो स्वयं शान्ति को भी एक असाध्य बीमारी बना देता है। तारो ने शान्ति को प्राप्त कर लिया था या नहीं यह डॉक्टर नहीं बता सकता था, क्योंकि अब सब-कुछ समाप्त हो गया था। लेकिन डॉक्टर ने यह महसूस किया कि इसके बाद से उसके लिए शान्ति पाना असम्भव हो गया है, ठीक उसी तरह जैसे एक माँ के लिए, जिसने युद्ध में अपना बेटा खो दिया हो या एक ऐसे आदमी के लिए, जिसने अपने दोस्त को दफ़नाया हो, युद्ध-विराम नहीं होता।

रात फिर सर्द हो गई थी और जाड़े के साफ़ आसमान में पाले से धुँधले तारे चमक रहे थे। धुँधली रोशनी वाले कमरे में उन्हें महसूस हुआ कि जैसे जाड़ा आकर खिड़कियों के शीशों से टकरा रहा हो। उन्हें ध्रुवदेशी रात का लम्बा रुपहला दीर्घोच्छ्वास सुनाई दे रहा था। मदाम रियो हमेशा की मुद्रा में पलंग के नज़दीक बैठी थीं। पलंग के सिरहाने रखे लैम्प की रोशनी से उनके शरीर का दायाँ हिस्सा चमक रहा था। कमरे के बीचों-बीच रोशनी के छोटे वृत्त से बाहर रियो बैठा इन्तज़ार कर रहा था। रह-रहकर बीवी की याद उसके मन को घेर रही थी, लेकिन हर बार वह

उसे मन के एक कोने में धकेल देता था।

जब रात शुरू हुई तो पाले की ठंडी हवा में सड़क पर से गुज़रने वाले लोगों के क़दमों की आहट गूँजने लगी।

"तुमने सारे इन्तज़ाम कर लिए हैं न ?" मदाम रियो ने पूछा।

"हाँ, मैंने टेलीफ़ोन कर दिया है।"

दोनों ने फिर अपना खामोश जागरण शुरू कर दिया। बीच-बीच में मदाम रियो कनखियों से अपने बेटे को देख लेती थीं और जब भी रियो उन्हें ऐसा करते हुए देखता था तो वह मुस्करा देता था। बाहर सड़क पर लम्बी खामोशियों को रात की आवाज़ें ढक रही थीं। सड़कों पर फिर बहुत सी कारें चलने लगी थीं, हालाँकि सरकारी तौर पर अभी इसकी इजाज़त नहीं मिली थी। टायरों की फूत्कार करती हुई कारें तेज़ रफ्तार से आगे बढ़ जाती थीं, रुककर फिर लौट आती थीं। आवाज़ें, दूर से सुनाई देने वाली पुकारें सुनाई दीं, फिर खामोशी छा गई। घोड़ों के सुमों की आवाज़ें, मोड़ पर मुड़ती हुई ट्रामों की चीखें, अस्पष्ट बुदबुदाहटें सुनाई दीं और एक बार फिर रात खामोशी से साँस लेने लगी।

"बर्नार्द !"

"हाँ।"

"बहुत ज़्यादा तो नहीं थक गए ?"

"नहीं।"

इसी क्षण रियो ने जान लिया कि उसकी माँ क्या सोच रही है। वह यह भी जानता था कि वह उसे प्यार करती है। लेकिन उसे यह भी मालूम था कि किसी से प्यार करने का अपेक्षाकृत कम महत्त्व है, या यह कहना बेहतर होगा कि प्यार में कभी इतनी ताक़त नहीं होती कि वह अपने को व्यक्त करने के लिए उपयुक्त शब्द तलाश कर सके। इसलिए वह और उसकी माँ एक-दूसरे को हमेशा खामोशी से प्यार करते रहेंगे और एक दिन वह या उसकी माँ में से कोई मर जाएगा और वे ज़िन्दगी में अपने स्नेह को इससे ज़्यादा अभिव्यक्ति दिये बग़ैर ही मर जाएँगे। इस तरह वह भी तारो के पास रहा था और आज शाम को तारो मर गया था और उनकी दोस्ती

को पूरी तरह से एक-दूसरे की ज़िन्दगी में दाखिल होने का मौक़ा तक नहीं मिला था। तारो 'मुक़ाबले' में हार गया था, जैसा कि उसने ख़ुद कहा था। लेकिन रियो ने क्या जीता था ? सिर्फ़ प्लेग के परिचय और तारो की दोस्ती की याद का उसे अनुभव हुआ था। उसने स्नेह को पाया था और एक दिन वह भी एक स्मृति बनकर रह जाएगा। इसलिए प्लेग और ज़िन्दगी के संघर्ष में आदमी सिर्फ़ ज्ञान और स्मृतियाँ ही जीत सकता था। लेकिन शायद तारो इसे प्रतियोगिता जीतना कहता।

एक और कार सड़क पर गुज़री और मदाम रियो कुछ चौंक उठी। रियो उसकी तरफ़ देखकर मुस्कराया। माँ ने उसे यक़ीन दिलाया कि वह थकी नहीं है और उसने फ़ौरन यह भी कहा, "तुम्हें सामने पहाड़ों पर जाकर लम्बा आराम करना चाहिए।"

"करूँगा, माँ !"

ज़रूर वह सामने पहाड़ों में जाकर आराम करेगा, यह भी स्मृति के लिए एक बहाना बन जाएगा। अगर प्रतियोगिता में जीतने का यही मतलब है—तो सिर्फ़ अपने ज्ञान और स्मृतियों के बल पर अपनी आशाओं से अलग रहकर, जीना कितना मुश्किल होगा ! शायद तारो इसी तरह ज़िन्दा रहा था, और उसे मरीचिकाओं से रहित ज़िन्दगी की नीरस निरर्थकता का पूरा एहसास हो गया था। बिना आशा के कोई शान्ति नहीं हो सकती और तारो किसी को भी कसूरवार ठहराने के अधिकार से वंचित रहा था—हालाँकि वह अच्छी तरह जानता था कि कोई इन्सान इस अधिकार के बग़ैर नहीं रह सकता और कई बार अभिशप्त को भी जल्लाद बनना पड़ता है। तारो ने विरोधाभासों से पेचीदा ज़िन्दगी बसर की थी, और उसे कभी आशा की सान्त्वना का अनुभव नहीं हुआ था। क्या उसकी संत बनने की आकांक्षा का, दूसरों की सेवा करके शान्ति खोजने का यही कारण था ? दरअसल रियो को इस सवाल का जवाब बिलकुल मालूम नहीं था, और उसे इसकी ज्यादा परवाह भी नहीं थी। हमेशा उसके मन में तारो की तस्वीर एक ऐसे आदमी की तस्वीर के रूप में ज़िन्दा रहेगी, जो उसकी कार चलाते वक्त स्टीयरिंग ह्वील को कसके पकड़ता था, या उस हृष्ट-

पुष्ट शरीर की तस्वीर जो अब निश्चल पड़ा था, उसके मन में ताज़ा रहेगी। जानने का यही अर्थ है: एक सजीव उष्णता और मौत की एक तस्वीर।

निश्चय ही अगले दिन अपनी पत्नी की मृत्यु की ख़बर पाकर डॉक्टर रियो ने जिस संयम और धैर्य का परिचय दिया उसका भी यही कारण था। वह उस वक्त सर्जरी में था। उसकी माँ भागी हुई आयी और उसने बेटे के हाथ में एक टेलीग्राम पकड़ा दिया और फिर तारघर के लड़के को बख्शीश देने के लिए हॉल में वापस चली गई। जब वह लौटी तो उसके बेटे के हाथ में टेलीग्राम खुला रखा था। उसने बेटे की तरफ़ देखा, लेकिन बेटे की नज़रें खिड़की पर टिकी हुई थीं; बन्दरगाह से निकलते हुए सुबह के सूरज की दीप्ति ने खिड़की को आलोकित कर दिया था।

"बर्नार्द!" माँ ने कोमल स्वर में कहा। डॉक्टर ने मुड़कर माँ को इस तरह देखा जैसे वह किसी अजनबी को देख रहा हो।

"टेलीग्राम में कोई ऐसी-वैसी ख़बर थी?"

"हाँ…यही ख़बर थी…एक हफ्ता पहले।"

मदाम रियो ने खिड़की की तरफ़ मुँह फेर लिया। रियो कुछ देर तक ख़ामोश रहा। फिर उसने अपनी माँ को रोने से मना कर दिया। वह मन-ही-मन इस ख़बर का इन्तज़ार कर रहा था, फिर भी उसके लिए बरदाश्त करना बहुत मुश्किल था। यह कहते वक्त वह जानता था कि यह आघात उसके लिए नया नहीं है। पिछले कई महीनों से, पिछले दो दिनों से वह इसी तरह के शोक को लगातार झेलता आ रहा था। आख़िरकार फ़रवरी की एक सुहानी सुबह में, तड़के ही धूम-धाम से शहर के फाटकों को खोला गया। नगरवासियों ने, अख़बारों ने, रेडियो ने और सरकारी विज्ञप्तियों ने इस घटना का स्वागत किया। अब कथाकार सिर्फ़ उन समारोहों को ही बयान कर सकता है, जो फाटकों के खुलने के बाद आयोजित किये गए, हालाँकि वह खुद हार्दिक भाव से इन समारोहों में हिस्सा नहीं ले सका था।

बड़ी मेहनत से दिन और रात के उत्सवों का आयोजन किया गया। इसी वक्त स्टेशन पर खड़े इंजनों में से धुआँ निकलने लगा, जहाज़ हमारे

बन्दरगाह के नज़दीक पहुँच रहे थे। अलग-अलग तरीकों से वे सब याद दिला रहे थे कि पुनर्मिलन का चिर-प्रतीक्षित दिन आ पहुँचा था और तमाम बिछुड़े हुए लोगों के आँसू बन्द हो गए थे।

हम यहाँ आकर आसानी से बिछोह की भावना के परिणामों की कल्पना कर सकते हैं, जिन्होंने हमारे बहुत से शहरियों के दिलों में बहुत दिन से कड़वाहट पैदा कर दी थी। दिन-भर बाहर से आने वाली गाड़ियों में भी उतनी ही भीड़ रही जितनी कि शहर से जाने वाली गाड़ियों में थी। हर मुसाफ़िर ने बहुत पहले से ही अपनी सीट रिज़र्व करवा ली थी, और पिछले पंद्रह दिनों से इस डर से उनकी जान सूली पर टँगी हुई थी कि कहीं ऐन वक्त पर अधिकारी अपने फ़ैसले से मुकर न जाएँ। शहर में आने वाले कुछ मुसाफ़िर अभी भी घबराए-से थे। उन्हें अपने-अपने दोस्तों और रिश्ते-दारों के दुर्भाग्य का तो पता था, लेकिन बाक़ी लोगों और शहर की हालत का उन्हें कुछ पता न था। कल्पना में वे उसकी भयंकर और नीरस तस्वीर देखते थे। लेकिन यह बात सिर्फ़ उन लोगों पर लागू होती थी, जो लम्बे निर्वासन के दौरान शोक से सूख नहीं गए थे। बिछुड़े प्रेमियों पर यह बात लागू नहीं होती थी।

और सचमुच प्रेमी अपने निश्चित विचार में पूरी तरह से तल्लीन थे, उनके लिए सिर्फ़ एक ही चीज़ बदली थी। विरह के उन महीनों में वक्त उतनी तेज़ी से नहीं गुज़रा था जैसा कि वे चाहते थे। वे हमेशा वक्त की रफ़्तार को तेज़ करना चाहते थे। अब, जब उन्हें शहर नज़र आ रहा था और ट्रेन स्टेशन में दाखिल हो रही थी, इंजन की ब्रेकें लग रही थीं। अगर उनका बस चलता तो वे वक्त की रफ़्तार को धीमा कर देते और उत्सुकता के क्षणों को लम्बा कर देते; क्योंकि उन दिनों हफ़्तों और महीनों की अनुभूति ने, जिससे उनका प्यार वंचित रह गया था और जो धुँधली होते हुए भी तीखी थी, उनके मन में यह अस्पष्ट भावना जगा दी थी कि वे क्षतिपूर्ति के हक़दार हैं। हर्ष के इन क्षणों की रफ़्तार प्रतीक्षा के लम्बे घण्टों से आधी होनी चाहिए। प्लेटफ़ॉर्म या घर पर उनकी प्रतीक्षा करने वाले लोग भी अधीरता से क्षुब्ध हो रहे थे और उत्सुकता से काँप रहे थे। प्लेटफ़ॉर्म पर इन्तज़ार

करने वालों में रेम्बर्त भी था, जिसकी बीवी को पहले से ही फाटक खुलने की ख़बर भेज दी गई थी। उसने फ़ौरन तैयारियाँ शुरू कर दी थीं और वह पहली ट्रेन से आ रही थी। यहाँ तक कि रेम्बर्त भी यह सोचकर घबरा रहा था कि उसे एक ऐसे प्यार और निष्ठा का सामना करना पड़ेगा, जिसे प्लेग के लम्बे महीनों ने धीरे-धीरे परिष्कृत करके एकदम फीका कर दिया था; उसे हाड़-माँस की उस नारी का सामना करना था, जिसने इन भावनाओं को जागृत किया था।

काश ! वह वक्त की रफ़्तार को रोक सकता और एक बार फिर वही आदमी वन जाता, महामारी के फूटने पर जिसके मन में सिर्फ़ एक ही विचार और आकांक्षा थी; किसी तरह वह शहर से भागकर उस औरत के पास पहुँच सकता, जिसे वह प्यार करता था। लेकिन वह जानता था कि अब इस बात का कोई सवाल नहीं उठता; वह बहुत ज़्यादा बदल चुका था। प्लेग ने उसमें ज़बरदस्ती एक ऐसी अनासक्ति और उदासीनता भर दी थी जिसे वह अपनी पूरी कोशिश करके भी दिल से नहीं निकाल सकता था, और जो एक निराकार भय की तरह उसके मन में छायी हुई थी। उसे लगा जैसे प्लेग बहुत जल्दी अचानक ही ख़त्म हो गई थी और उसे अपने को सँभालने का वक्त ही नहीं मिला था। ख़ुशी पूरी रफ़्तार से उसके ऊपर पटकी जा रही थी, उसकी उम्मीद से कहीं ज़्यादा तेज़ी से। रेम्बर्त समझ गया कि प्रकाश के कौंधने की तरह उसकी छिनी हुई सब चीज़ें उसे वापस मिल जाएँगी और ख़ुशी एक ऐसी लपट की तरह उस पर टूट पड़ेगी, जिसके साथ कोई खिलवाड़ नहीं किया जा सकेगा।

सचमुच सब लोग कुछ हद तक चेतन रूप से रेम्बर्त की तरह ही सोच रहे थे। प्लेटफ़ॉर्म पर खड़े उन सब लोगों के बारे में ही हम कुछ कहना चाहते हैं। हर आदमी अपनी व्यक्तिगत ज़िन्दगी में वापस लौट रहा था, फिर भी मित्रता की भावना अभी ज़िन्दा थी और वे आपस में एक-दूसरे की ओर देखकर मुस्करा रहे थे। लेकिन ज्योंही उन्होंने नज़दीक आते हुए इंजन का धुआँ देखा तो तीव्र हर्षोन्माद के ज्वार के सामने निर्वासन की भावना ग़ायब हो गई और जब ट्रेन खड़ी हो गई तो एक

मादक क्षण में ही जब अपनत्व और अधिकार जताने की भूखी बाँहों ने उन शरीरों को आलिंगनबद्ध कर लिया जिनकी आकृतियाँ वे भूल गए थे, तो वे लम्बे बिछोह ख़त्म हो गए जिनके बारे में लोगों का ख़याल था कि वे कभी ख़त्म नहीं होंगे। रेम्बर्त को इतना वक्त ही नहीं मिला कि वह अपनी बीवी को देख सके जो उसकी तरफ़ दौड़ती आ रही थी। वह आकर सीधी उसके सीने से लिपट गई थी। रेम्बर्त ने उसे अपनी बाँहों में ले लिया था और उसके सर को अपने कन्धों पर दबा रहा था। उसे सिर्फ़ अपनी प्रेयसी के परिचित केश ही दिखाई दे रहे थे, उसने अपने आँसुओं को मुक्त भाव से बहने दिया। वह नहीं जानता था कि ये खुशी के आँसू थे या बहुत दिनों के दबे हुए दुख के आँसू। उसे सिर्फ़ यही एहसास था कि आँसुओं की वजह से वह अपने को यह तसल्ली नहीं दे सकेगा कि उसके कन्धे से चिपका चेहरा सचमुच वही चेहरा था जिसके बारे में उसने बहुत बार तमन्ना की थी या वह किसी अजनबी का चेहरा था। उस क्षण तो वह अपने आस-पास के लोगों की तरह ही व्यवहार करना चाहता था जिनका ख़याल था कि प्लेग इन्सानों के दिलों के भीतर कोई चीज़ बदले बग़ैर भी आकर चली जा सकती है—अगर वे ऐसा नहीं सोचते थे तो इसका अभिनय ज़रूर कर रहे थे।

एक-दूसरे से सटे हुए वे अपने घरों में गये, बाहर की दुनिया से आँखें मूँदकर। और ऐसा लगता था कि वे महसूस कर रहे थे कि उन्होंने प्लेग को हरा दिया है। वे हर उदासी को भूल गए थे और उन लोगों की दुर्दशा को भी भूल गए थे, जो उसी ट्रेन से आये थे, लेकिन प्लेटफॉर्म पर उनकी प्रतीक्षा करने वाला कोई नहीं था। वे घर जाकर उस भय की पुष्टि के लिए अपने को तैयार कर रहे थे जो लम्बी ख़ामोशी ने पहले से ही उनके दिलों में पैदा कर दिया था। इन लोगों के लिए, जिनका साथी केवल सद्य-जात शोक था, जो इस क्षण अपने को किसी प्रियजन की मृत्यु के शोक की आजीवन स्मृति के लिए समर्पित कर रहे थे—इन दुखी लोगों की दशा बिलकुल अलग थी। इनके विरह की कसक अपनी चरम सीमा तक जा पहुँची थी। उन माताओं, पतियों और पत्नियों के लिए, जो अपनी सारी खुशी

खो बैठे थे, प्लेग अभी भी ख़त्म नहीं हुई थी; क्योंकि उनके प्रियजन किसी गड्ढे में चूने की तह के नीचे दबे थे या राख के एक टीले में उनकी मुट्ठी-भर राख अवशेष रूप में जमा थी, जहाँ वह पहचानी नहीं जा सकती थी।

लेकिन मातम करने वाले इन एकाकी लोगों पर कौन ध्यान दे रहा था! तड़के से ही सर्द तीखी हवा के झोंकों को परास्त करके सूरज शहर पर शान्त, स्थिर प्रकाश की सतत धारा बरसा रहा था। क़िलों में, पहाड़ियों पर, निश्चल पवित्र नीले आसमान-तले लगातार तोपें गरज रही थीं। हर आदमी घर से बाहर निकलकर भीड़-भाड़ के उन क्षणों को मनाने के लिए आया था जब कठिन यंत्रणा का दौर ख़त्म हो चुका था और विस्मृति का ज़माना अभी शुरू नहीं हुआ था।

सड़कों और चौराहों पर लोग डान्स कर रहे थे। चौबीस घंटों में ही मोटरगाड़ियों का ट्रैफ़िक दुगुना हो गया और हर मोड़ पर खुशी मनाती हुई भीड़ें मोटरों को रोक लेती थीं। हर गिरजे की घंटी दोपहर-भर ज़ोर से बजती रही। नीला और सुनहरी आसमान घंटियों की आवाज़ से गुंजित हो उठा। हर गिरजे में ख़ुदा का शुक्रिया अदा करने के लिए प्रार्थनाएँ हो रही थीं। लेकिन साथ ही मनोरंजन के स्थानों में भी ठसाठस भीड़ें थीं। कॉफ़ी-हाउस कल की परवाह न करके शराब की आख़िरी बोतलें ग्राहकों को पेश कर रहे थे। हर शराब-घर के आसपास शोर मचाती हुई भीड़ें इकट्ठी थीं, जिनमें प्रेमियों के जोड़े भी थे, जो इस बात की परवाह किये बग़ैर कि लोग क्या कहेंगे, एक-दूसरे से लाड़ कर रहे थे। सब लोग हँस रहे थे या ख़ुशी से चिल्ला रहे थे। बहुत महीनों से उनकी ज़िन्दगी की लौ धीमी जल रही थी, इसलिए दबी हुई संचित भावनाएँ आज उनके ज़िन्दा रहने के सुनहरी पर्व पर मुक्त हृदय से लुटाई जा रही थीं। कल फिर असली ज़िन्दगी अपनी पाबन्दियों के साथ शुरू होने वाली थी, लेकिन इस क्षण अलग-अलग वर्गों के लोग भ्रातृ-भाव से एक-दूसरे के सम्पर्क में आ रहे थे। मौत का सामीप्य जिस ऊँच-नीच के भेद को मिटाने में असफल रहा था, वह भेद आनन्द के कुछ घंटों में मुक्ति के उल्लास में मिट गया था। लेकिन उस दिन का एक पहलू था। सूर्यास्त के समय काफ़ी लोग, जिनमें रेम्बर्त

और उसकी बीवी भी शामिल थे, मूक संतोष और खुशी के अत्यधिक सूक्ष्म रूप में छिपे थे। बहुत से जोडों और परिवारों को देखकर लगता था कि वे ऐसे ही टहलने निकले हैं। उससे ज़्यादा उनके बाहर निकलने का कोई प्रयोजन नहीं दीखता था, जबकि असल में वे भावुकता के कारण उन स्थानों की तीर्थ-यात्रा कर रहे थे जहाँ उन्हें दुख झेलने की शिक्षा मिली थी। वे शहर में आने वाले नये लोगों को प्लेग के आश्चर्यजनक या कम विख्यात स्मारक-चिह्नों और निशानियों को दिखा रहे थे। कई बार तो प्लेग में ज़िन्दा रहने वाला आदमी सिर्फ़ गाइड का रोल ही अदा करता था और 'आँखों देखे गवाह' का काम करता था, जो 'सारी घटना में से गुज़र चुका था' और अपने डर का ज़िक्र किये बग़ैर खुलकर ख़तरे का बयान करता था। ये खुशी हासिल करने के मामूली तरीक़े थे, जो मनोरंजन से कुछ ही अधिक महत्त्वपूर्ण थे। कुछ और लोग शहर में टहलते हुए भावुकता का अधिक प्रदर्शन कर रहे थे। मिसाल के लिए जब कोई आदमी किसी ऐसे स्थान की ओर इशारा करता था, जिसके लिए उसके मन में उदास, लेकिन कोमल स्मृतियाँ थीं, तो वह अपने साथ की लड़की या औरत से कहता, "इस जगह एक ऐसी ही शाम को मैं तुम्हारे लिए बेहद तड़प रहा था, लेकिन तुम वहाँ नहीं थी।" इन भावुक तीर्थ-यात्रियों को आसानी से पहचाना जा सकता था; वे भीड़ के उपद्रव में, आत्म-केन्द्रित, सबसे तटस्थ फुसफुसाहट के नख़लिस्तान-जैसे नज़र आते थे। चौराहों पर बजते हुए बैण्डों से भी ज़्यादा वे मुक्ति के अपार हर्ष का विश्वास दिला रहे थे। ये हर्षोन्मत्त जोड़े एक-दूसरे से लिपटे थे। वे बहुत कम बोल रहे थे। खुशियों के कोलाहल के बीच सुखी लोगों की अहंकारपूर्ण अहम्मन्यता और बेइन्साफी से घोषित कर रहे थे कि प्लेग ख़त्म हो गई है और ज़ुल्म का दौर बीत गया है। सब प्रमाणों के ऐन सामने भी वे साफ़-साफ़ इन्कार कर रहे थे कि हमने कभी ऐसी पागल दुनिया देखी थी, जिसमें लोग मक्खियों की तरह मारे गए थे या प्लेग ने कभी विधिवत् ऐसी कठोर पैशाचिकता दिखाई थी और जान-बूझकर ऐसा उन्मत्त रोष व्यक्त किया था और उन तमाम चीज़ों के प्रति, जो 'यहाँ और अब' मौजूद नहीं थीं, एक घृणित उच्छृंखलता

पैदा कर दी थी। वे इन्कार कर रहे थे कि कभी यहाँ श्मशान घर की बदबू भी फैली थी, जिससे ज़िन्दा लोग भी अवसन्न और विमूढ़ हो गए थे। संक्षेप में वे लोग इस बात से इन्कार करते थे कि कभी हम लोग पिशाच-ग्रसित शहरी थे, जनसंख्या का एक हिस्सा रोज एक भट्ठी में जलाया जाता था और चिपचिपी बदबू बनकर फैल जाता था और बाकी लोग बंधन में जकड़ी हुई बेबसी से अपनी बारी आने की इन्तज़ार करते थे।

कम-से-कम रियो को तो ऐसा ही मालूम हुआ जब वह दोपहर के बाद शहर के बाहरी हिस्से में जा रहा था। वह घंटियों, तोपों, बैण्डों और कान फाड़ देने वाली चिल्लाहटों के बीच अकेला पैदल चल रहा था। उसके लिए एक दिन की भी छुट्टी लेने का कोई सवाल नहीं उठता था। बीमारों को कोई छुट्टियाँ नहीं होतीं। ठंडी साफ़ रोशनी में नहाये हुए शहर में से भुनते हुए गोश्त और सौंफ़ की सुवासित शराब की परिचित सुगंधें उठ रही थीं। उसके आसपास खुश चेहरे चमकते हुए आसमान की तरफ़ उठे थे। मर्द और औरतें, जिनके चेहरे लाल हो गए थे, लालसा की मद्धिम और खिंची हुई आवाज़ों के साथ एक-दूसरे को आलिंगन में बाँध रहे थे। हाँ, प्लेग और उसका आतंक खत्म हो गया था और भावावेग से तनी वे बाँहें बता रही थीं कि उन्हें उस ज़माने में क्या-क्या सहना पड़ा था। निर्वासन और अभाव का जो भी गंभीरतम अर्थ हो सकता है, उसका उन्हें अनुभव हो चुका था।

पहली बार रियो को मालूम हुआ कि वह उस पारिवारिक साम्य को एक नाम दे सकता था, जिसकी झलक उसने पिछले कई महीनों से सड़क पर नज़र आने वाले चेहरों में पाई थी। उसे बस अपने गिर्द देखने-भर की ज़रूरत थी। प्लेग के खत्म होने पर इन मर्दों और औरतों के चेहरों पर उस पार्ट की झलक आ गई थी, जो वे बहुत दिनों से खेलते आए थे; वे स्वदेश त्यागे हुए लोगों का पार्ट अदा करते आए थे। पहले उनके चेहरे और अब उनकी पोशाकें उनके सुदूर स्वदेश से निर्वासन की कहानी कह रही थीं। जब प्लेग ने शहर के दरवाज़े बन्द कर दिए थे, तो वे बिछोह की ज़िन्दगी बसर करने लगे थे और ज़िन्दगी की उस गर्मी से वंचित हो गए

थे, जो हर चीज़ को भूलने की ताक़त देती है। विभिन्न मात्राओं में, शहर के हर हिस्से में मर्द और औरतें फिर से मिलने के लिए तड़पते रहे थे, हरेक की तमन्ना एक-जैसी नहीं थी, न ही हो सकती थी। अधिकांश लोग किसी अनुपस्थित प्रियजन के लिए, किसी शरीर की गरमी के लिए, प्यार के लिए या सिर्फ़ ऐसी ज़िन्दगी के लिए तड़प रहे थे जिसे आदत ने प्यारा बना दिया था। कुछ लोग दोस्तों की संगति से वंचित हो जाने की वजह से तड़प रहे थे, हालाँकि वे इस बात को नहीं जानते थे। वे इसलिए भी परेशान थे, क्योंकि वे दोस्तों से सम्पर्क स्थापित करने के साधारण साधनों—ख़त, ट्रेनों और बोटों–का इस्तेमाल करने में भी असमर्थ थे। कुछ और लोग, जिनकी संख्या अपेक्षाकृत कम थी—हो सकता है तारो भी इसी श्रेणी में हो। एक ऐसी चीज़ से पुनर्मिलन चाहते थे जिसकी व्याख्या करने में वे असमर्थ थे, लेकिन उनकी दृष्टि में धरती पर वही एकमात्र चाहने के क़ाबिल चीज़ थी। कई बार वे इस चीज़ को शान्ति कहते थे, क्योंकि इससे बेहतर नाम उन्हें नहीं सूझता था।

रियो चलता गया, आगे जाकर भीड़ें और भी बढ़ गईं, शोरशराबा कई गुना तेज़ हो गया और उसे ऐसा लगा कि बढ़ने के साथ-साथ उसकी मंज़िल पीछे हटती जा रही है। धीरे-धीरे उसने अपने को एक उत्तेजित, कोलाहल-भरी भीड़ की तरफ़ आकर्षित होते हुए पाया। उसमें से उठती हुई ख़ुशी की चीख़ों का अर्थ उसकी समझ में आ रहा था। कुछ हद तक यह उसकी अपनी थी। हाँ, उन्होंने एक साथ आत्मा और शरीर के दुख झेले थे। उन्हें निर्दयी अवकाश ने, ऐसे निर्वासन ने जिसकी क्षतिपूर्ति भी नहीं थी और ऐसी प्यास ने सताया था जो कभी नहीं बुझ पाई थी। लाशों के ढेरों में, एम्बुलेन्सों की टनटनाती घण्टियों में, उन चेतावनियों में जिन्हें भाग्य का नाम दिया जाता है, भय और यन्त्रणापूर्ण विद्रोह की निरन्तर लहरों में, इन तमाम चीज़ों के आतंक में, हमेशा इन असहाय आतंकित लोगों के कानों में एक महान् आवाज़ गूँजती रहती थी, जो उन्हें अपने आकांक्षाओं के देश, अपनी मातृभूमि में वापस बुला रही थी। यह भूमि दम और गला घोटे हुए शहर की दीवारों से बाहर, पहाड़ियों की सुवासित

झाड़ियों में, समुद्र की लहरों में, आज़ाद आसमानों तले और प्यार की संरक्षा में थी। वे यहीं अपनी खोई मातृभूमि में, सुख में लौटना चाहते थे और बाक़ी की सभी चीज़ों के प्रति ग्लानि-भरी उपेक्षा दिखाते थे।

उस निर्वासन और पुनर्मिलन की आकांक्षा का क्या अर्थ था, यह रियो नहीं जानता था। लेकिन जब वह आगे बढ़ रहा था और उसके चारों तरफ़ धक्का-मुक्की हो रही थी, बीच-बीच में लोग उसका रास्ता रोक लेते थे, और वह धीरे-धीरे कम भीड़ वाली सड़कों पर आ रहा था, तो उसके मन में ख़याल उठा कि इन चीज़ों का कोई अर्थ हो या न हो इसका कोई महत्त्व नहीं। इन्सानों की उम्मीद का जवाब मिलता है, हमें तो उसी के बारे में सोचना चाहिए।

अब वह जान गया था कि वह जवाब क्या है। शहर के बाहरी हिस्से में, जहाँ सड़कें क़रीब-क़रीब खाली थीं, उसे यह बात ज़्यादा अच्छी तरह समझ में आ गई। वे, जिनका दिल अपने छोटे घरबार से चिपका था, सिर्फ़ यही चाहते थे कि वे अपने प्रियजनों के पास लौट जाएँ। कई बार उन्हें सफलता मिल जाती थी। हालाँकि उनमें से कुछ अभी भी अकेले ही सड़कों पर चल रहे थे—उन प्रियजनों के बग़ैर, जिनकी उन्होंने इन्तज़ार की थी। वे लोग भी खुश थे जिन्हें दोहरा बिछोह नहीं सहना पड़ा था, हममें से कुछ लोगों की तरह जो महामारी से पहले के ज़माने में शुरू से ही अपने प्यार को पक्की नीवँ पर खड़ा करने में असफल रहे थे और कई सालों तक अन्धों की तरह उस समझौते को टटोलते रहे थे, जिसे पाना बहुत मुश्किल है और जिसमें बहुत देर लगती है, जो अन्ततः बेमेल प्रेमियों को सामंजस्य के सूत्र में बाँधता है। ऐसे लोगों ने समय पर ज़रूरत से ज़्यादा भरोसा करने का उतावलापन दिखाया था; और अब वे हमेशा के लिए जुदा हो गए थे। लेकिन रेम्बर्त की क़िस्म के लोगों ने, जिसे डॉक्टर ने उस रोज़ सुबह कहा था, "हिम्मत से काम लो! अब यह साबित करना तुम्हीं पर निर्भर करता है कि तुम सही रास्ते पर हो।" बिना ठोकर खाए अपने प्रियजनों का स्वागत किया था, जिनके बारे में उनका खयाल था कि वे हमेशा के लिए खो गए हैं। जो भी हो, कुछ समय के लिए तो वे ख़ुश रहेंगे। वे अब जानते हैं

कि ज़िन्दग़ी में सिर्फ़ एक ही ऐसी चीज़ है जिसे पाने की तमन्ना इन्सान हमेशा कर सकता है और कभी-कभी उसे पा भी सकता है—वह चीज़ है इन्सान का प्यार।

लेकिन उन लोगों को जो इन्सान और व्यक्ति से ऊँची किसी ऐसी चीज़ की आकांक्षा करते थे, जिसकी वे कल्पना भी नहीं कर सकते थे, कोई जवाब न मिला। ऐसा आभास हो सकता है कि तारो ने उस दुर्लभ शान्ति को प्राप्त कर लिया था जिसकी वह चर्चा किया करता था। लेकिन यह शान्ति उसे सिर्फ़ मौत में मिली थी, और इतनी देर से मिली थी कि उससे कोई फ़ायदा नहीं उठाया जा सकता था। रियो घरों के दरवाज़ों में प्रेमियों के जोड़ों को डूबते सूरज की मन्द रोशनी में एक-दूसरे को आकांक्षा-भरी नज़रों से देखते और आलिंगनबद्ध होते देख रहा था—अगर उन्हें मनचाही चीज़ मिल गई थी तो उसका कारण यह था कि उन्होंने वही चीज़ माँगी थी, जो उनके अपने बस में थी। और जब वह उस सड़क के मोड़ पर मुड़ा, जहाँ ग्रान्द और कोतार्द रहते थे, तो वह सोच रहा था कि अगर उन लोगों को, जिनकी आकांक्षाएँ इन्सान और उसके साधारण, किन्तु दुर्लभ प्यार तक ही सीमित रहती हैं, कभी-कभी उनका पुरस्कार मिल जाता है तो यह मुनासिब ही है।

५

यह वृत्तान्त खत्म होने वाला है और डॉक्टर बर्नार्द रियो के लिए यह क़बूल करने का उपयुक्त क्षण है कि वही कथाकार है। लेकिन अन्तिम दृश्यों को बयान करने से पहले जो काम उसने उठाया था, उसका औचित्य सिद्ध करने के लिए और दावे से यह कहने के लिए कि उसने यह तय कर लिया था कि वह एक निष्पक्ष द्रष्टा का लहज़ा अपनाने की पूरी कोशिश करेगा। उसका पेशा ऐसा था कि वह प्लेग के ज़माने में हमारे शहरियों की बहुत बड़ी संख्या के सम्पर्क में आया था और उसे लोगों की अलग-अलग

रायों को सुनने का मौक़ा मिलता था। इसलिए उसने जो भी देखा या सुना वह उसे सही बयान करने की अनुकूल स्थिति में था। लेकिन ऐसा करने में उसने वांछनीय सीमाओं में रहने की पूरी कोशिश की है। मिसाल के लिए आम तौर पर उसने अपने को उन्हीं बातों तक सीमित रखा है जिन्हें वह खुद देख सका था। उसने अपने सह-पीड़ितों पर वे विचार नहीं आरोपित किये, जो तमाम बातों के बावजूद अनिवार्यत: उनके नहीं हो सकते थे। जहाँ तक दस्तावेज़ों का सम्बन्ध है, उसने सिर्फ़ उन्हीं दस्तावेज़ों का इस्तेमाल किया है जो भाग्य या दुर्भाग्य से उसके हाथ लग गए थे।

उसे एक किस्म के जुर्म में गवाही देने के लिए बुलाया गया था। उसने इतने संयम से काम लिया जो अपनी अन्तरात्मा के मुताबिक आचरण करने वाले गवाह को शोभा देता है। फिर भी अपने दिल की आवाज़ का कहना मानकर उसने जान-बूझकर मुजरिमों का पक्ष लिया है और अपने साथी नागरिकों के साथ उन आश्वासनों में हिस्सा बटाने की कोशिश की है, जो सबकी एकमात्र साँझी चीज़ें थीं—प्यार, निर्वासन और दुख। इस तरह वह सचमुच कह सकता है कि लोगों की कोई ऐसी परेशानी नहीं थी, जो उसने महसूस नहीं की थी; कोई ऐसी दुर्दशा नहीं थी, जिसमें उसे भी मुसीबत न झेलनी पड़ी हो।

ईमानदार गवाह होने के लिए यह उसका फ़र्ज़ था कि वह अपने को मुख्य रूप से उन बातों तक सीसित रखता जो लोगों ने की या कहीं, या जो दस्तावेज़ों से बटोरी जा सकती थीं। जहाँ तक उसकी व्यक्तिगत मुसीबतों और लम्बी अनिश्चितता का सम्बन्ध था, उसका फ़र्ज़ था कि वह ख़ामोश रहता। कभी-कभी जब वह इन बातों की ओर इशारा करता है तो सिर्फ़ इसलिए ताकि इन बातों से उसे अपने साथी नागरिकों की ज़िन्दगी पर प्रकाश डालने में मदद मिले और वह यथासम्भव इस बात की सही तस्वीर पेश कर सके कि अधिकांश समय शहर के लोग घबराए ढंग से क्या सोचते थे। दरअसल अपने पर जान-बूझकर खामोशी की यह पाबन्दी लगाने में उसे ज़्यादा कोशिश नहीं करनी पड़ती थी। जब भी उसके मन में प्रलोभन उठता था कि वह प्लेग-पीड़ितों की असंख्य आवाज़ों में अपना व्यक्तिगत

स्वर भी जोड़ दे, तो वह यह सोचकर रुक जाता था कि उसका एक दुख भी ऐसा नहीं जो सब लोगों का दुःख न हो और ऐसी दुनिया में, जहाँ अक्सर आदमी अकेला ही दुख झेलता है, यह एक सुविधाजनक बात थी।

लेकिन हमारे शहर के लोगों में कम-से-कम एक आदमी ऐसा था, जिसके पक्ष में डॉक्टर रियो कुछ नहीं कह सकता था। वह वही आदमी था, जिसके बारे में एक दिन तारो ने रियो से कहा था, "उसका एकमात्र क़सूर यही है कि उसने अपने दिल में एक ऐसी चीज़ का समर्थन किया, जिसने मरदों, औरतों और बच्चों के प्राण लिये थे। मैं बाक़ी बातों को तो समझ सकता हूँ, और सिवा 'उस' बात के मैं उसे माफ़ कर सकता हूँ।" यह सर्वथा उचित ही है कि यह वृत्तान्त उस आदमी के ज़िक्र से खत्म हो, जिसके दिल में अज्ञान अर्थात् एकाकीपन था। मुख्य सड़कों से निकलकर, जहाँ खुशियाँ ज़ोर-शोर से जारी थीं, जब डॉक्टर रियो उस सड़क पर दाखिल हुआ जहाँ ग्रान्द और कोतार्द रहते थे, तो पुलिस के सिपाहियों की एक क़तार ने उसे रोक लिया। डॉक्टर के लिए इससे ज़्यादा हैरानी की बात कोई नहीं हो सकती थी। शहर का यह खामोश हिस्सा दूर से आती हुई रंगरेलियों की वजह से और भी खामोश मालूम हो रहा था। डॉक्टर को वहाँ शान्ति के साथ-साथ सुनसान भी नज़र आया।

एक पुलिसमैन ने कहा, "मुझे अफ़सोस है डॉक्टर! लेकिन मैं आपको आगे नहीं जाने दे सकता। एक पागल आदमी बंदूक लेकर सब पर गोली चला रहा है। लेकिन बेहतर होगा कि आप यहीं रुक जाएँ। हो सकता है हमें आपकी ज़रूरत पड़ जाए।"

इसी वक्त रियो ने ग्रान्द को अपनी तरफ़ आते देखा। ग्रान्द को भी नहीं पता था कि क्या हो रहा है। पुलिस ने उसे भी रोक दिया। उसे बताया गया कि बन्दूक की आवाजें उसी घर से आ आ रही थीं जहाँ वह रहता था। वे सड़क पर कुछ दूर घर का अगला हिस्सा देख सकते थे, जो शाम की ठंडी रोशनी में नहाया हुआ था। सड़क पर आगे चलकर पुलिस के सिपाहियों की एक और क़तार थी—ठीक वैसी ही क़तार जिसने रियो और ग्रान्द को आगे बढ़ने से रोका था, और क़तार के पीछे मुहल्ले के

कुछ लोग तेज़ी से सड़क को बार-बार एक छोर से दूसरे छोर तक पार करते हुए दिखाई दे रहे थे। घर के ऐन सामने सड़क खाली पड़ी थी और सुनसान चौराहे के बीचों-बीच एक हैट और गन्दे कपड़े का एक टुकड़ा पड़ा था। ग़ौर से देखने पर उन्हें और पुलिस के सिपाही नज़र आए जो हाथ में पिस्तौलें लिये घर के सामने के दरवाज़ों की हिफ़ाज़त कर रहे थे। ग्रान्द के घर की सारी खिड़कियाँ बन्द थीं, सिर्फ़ दूसरी मंज़िल की एक खिड़की खुली थी, जो एक ही क़ब्ज़े पर लटकी मालूम होती थी। सड़क पर एक भी आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी—सिर्फ़ बीच में शहर के केन्द्र से आते हुए संगीत के स्वर कानों में पड़ते थे।

अचानक रिवॉल्वर की दो गोलियाँ छूटीं; गोलियाँ सामने वाली इमारतों में से किसी एक इमारत से आई थीं और ढीली खिड़की की कुछ खपच्चियाँ उड़ा ले गईं। फिर खामोशी लौट आई। दूर से देखने पर दिन के कोलाहल के बाद यह सारा मामला रियो को सपने की किसी घटना की तरह अवास्तविक मालूम हो रहा था।

ग्रान्द ने अचानक कहा, "अरे, वह तो कोतार्द की खिड़की है! कुछ समझ में नहीं आता। मेरा ख़याल था कि वह कहीं ग़ायब हो गया है।"

"वे लोग गोली क्यों चला रहे हैं?" रियो ने पुलिसमैन से पूछा।

"ओह, सिर्फ़ उसे उलझाए रखने के लिए। हम गाड़ी का इन्तज़ार कर रहे हैं, जिसमें ज़रूरी सामान होगा। अगर कोई सामने के दरवाज़े से भीतर जाने की कोशिश करता है तो वह आदमी गोली छोड़ देता है। अभी उसने हमारे एक आदमी पर गोली चलाई है।"

"लेकिन उसने गोली क्यों चलाई?"

"यह भी कोई पूछने की बात है? कुछ लोग सड़क पर रंगरेलियाँ मना रहे थे, उसने उन पर गोली चलाई। पहले तो उन्हें पता न चला कि गोली कहाँ से आ रही है। जब उसने फिर फ़ायर किया तो उन्होंने चिल्लाना शुरू कर दिया। एक आदमी जख्मी हो गया और बाक़ी वहाँ से भाग गए। मेरा ख़याल है कि कोई पागल हो गया है।"

दोबारा छाई खामोशी के क्षण अनन्त मालूम हो रहे थे। फिर उन्हें

सड़क के पार एक कुत्ता दिखाई दिया। कई महीनों के बाद पहली बार रियो ने कुत्ता देखा था। वह कीचड़ में लथपथ स्पेनियल जाति का कुत्ता था। शायद उसके मालिकों ने उसे कहीं छिपा रखा था। वह मज़े में दीवार के साथ-साथ चलने लगा। फिर दरवाज़े पर रुककर अपने पिस्सू निकालने लगा। कुछ पुलिस वालों ने सीटी बजाकर उसे वहाँ से हटाना चाहा। कुत्ते ने अपना सर उठाया और सड़क पर आकर हैट को सूँघने लगा। इसी वक्त दूसरी मंज़िल की खिड़की से किसी ने रिवॉल्वर चलाया। कुत्ते ने उछाली हुई पैनकेक की तरह एक कलाबज़ी खाई, हवा में टाँगें मारने लगा और फिर बग़ल के बल गिरकर तड़पने लगा। उसका शरीर दर्द से ऐंठ रहा था। फिर जैसे बदला लेने के लिए सामने के घर से पाँच या छः गोलियों ने खिड़की की और खपच्चियाँ उड़ा दीं। इसके बाद फिर खामोशी लौट आई। सूरज कुछ आगे बढ़ा था और छाँह की लकीर कोतार्द की खिड़की के क़रीब पहुँच गई थी। डॉक्टर के पीछे सड़क पर किसी गाड़ी की ब्रेकें लगाने की मद्धिम आवाज़ आई।

"लो वे आ गए।" पुलिसमैन ने कहा।

वैन में से बहुत से पुलिस के अफ़सर कूदकर बाहर निकले और उन्होंने गाड़ी में से लिपटे हुए रस्से, एक सीढ़ी और मोमजामे में लिपटे दो बड़े विषम भुजाओं वाले चौकोर पुलिन्दे निकाले। फिर वे ग्रान्द के मकान के सामने वाले मकानों की क़तार की पिछली सड़क पर मुड़ गए। क़रीब एक मिनट बाद हलचल-सी होती मालूम हुई, हालाँकि घरों के दरवाज़ों में साफ़ नहीं दिखाई दे रहा था। फिर इन्तज़ार का संक्षिप्त दौर आया। कुत्ते ने हिलना-डुलना बन्द कर दिया था; अब वह एक छोटी गहरे रंग की चमकदार तलैया में पड़ा था।

अचानक उस मकान से, जहाँ पुलिस के अफ़सर पिछले रास्ते से दाखिल हुए थे, मशीनगन की गोलियाँ दनादन चलने लगीं। उनका निशाना अभी भी खिड़की पर था, खिड़की का पुरज़-रपुज़ा उड़ गया था और अँधेरी ख़ाली जगह नज़र आ रही थी, जिसे ग्रान्द और रियो अपनी जगह से नहीं देख सकते थे। जब पहली मशीनगन ने फ़ायर करना बन्द किया तो दूसरी

मशीनगन ने सड़क के कुछ दूर एक मकान से फ़ायरिंग शुरू कर दी। मालूम होता था वे खिड़की पर ही निशाना लगा रहे थे। कुछ ईंटों और चूने का ढेर गिरकर फुटपाथ पर जमा हो गया। इसी वक्त तीन पुलिस-अफ़सर सड़क पार करके दरवाज़े में गायब हो गए। मशीनगन ने फ़ायर करना बन्द कर दिया। इसके बाद फिर इन्तज़ार का एक दौर शुरू हुआ। घर के भीतर से दो दबे हुए विस्फोट सुनाई दिए, एक अस्पष्ट कोलाहल सुनाई दिया, जो धीरे-धीरे तेज़ होता गया। फिर उन्हें एक नाटा आदमी दिखाई दिया, जिसने कमीज़-पतलून पहन रखी थी और जो अपनी पूरी ताक़त से चिल्ला रहा था। उसे दरवाज़े के बाहर घसीटा नहीं जा रहा था, बल्कि उठाकर लाया जा रहा था।

फिर जैसे किसी प्रतीक्षित इशारे से सड़क की सारी खिड़कियाँ खुल गईं और खिड़कियों में उत्तेजित चेहरों की क़तारें नज़र आने लगीं। घरों से लोगों की भीड़ सोते के पानी की तरह फूटकर बाहर आ गई और पुलिस की क़तारों को धक्के देने लगी। रियो को उस नाटे आदमी की थोड़ी-सी झलक दिखाई दी। वह सड़क के बीचों-बीच खड़ा था, दो पुलिस-अफ़सरों ने उसकी बाँहें पीछे की तरफ़ बाँध दी थीं। वह अभी भी चिल्ला रहा था। एक पुलिसमैन ने आगे आकर शान्त-भाव से और अपने फ़र्ज़ के एहसास से जमकर उस आदमी को दो मुक्के जमाये।

"यह तो कोतार्द है! पागल हो गया है!" ग्रान्द की आवाज़ उत्तेजना से बुलन्द हो गई थी।

कोतार्द पीछे की तरफ़ गिर गया था। ज़मीन पर गिरे अस्त-व्यस्त ढेर को पुलिसमैन ने ज़ोर से ठोकर मारी। लोगों की एक छोटी-सी भीड़ डॉक्टर और उसके बूढ़े दोस्त की तरफ़ बढ़ने लगी।

"दूर खड़े रहो!" पुलिसमैन ज़ोर से चिल्लाया।

जब कोतार्द और उसे क़ैद करने वालों का झुंड रियो के नज़दीक से गुज़रा तो रियो ने दूसरी तरफ़ मुँह फेर लिया।

जब ग्रान्द और डॉक्टर वहाँ से चले और साँझ का अँधेरा गहरा होकर रात बन गया, तब कहीं ग्रान्द और डॉक्टर वहाँ से चले। कोतार्द कांड ने

अड़ोस-पड़ोस का आलस दूर कर दिया था और शहर की इन दूरदराज़ सड़कों पर भी शोर और रंगरलियाँ मनाने वालों की भीड़ें जमा हो गईं। अपने दरवाज़े के आगे पहुँचकर ग्रान्द ने डॉक्टर को गुडनाइट कहा। उसने कहा कि वह शाम-भर काम करेगा। सीढ़ियाँ चढ़ते वक्त उसने कहा कि उसने जीन को खत लिखा था और वह पहले की अपेक्षा अब ज़्यादा खुशी महसूस कर रहा था। साथ में उसने अपने वाक्य को भी नये ढंग से लिखना शुरू कर दिया था, "मैंने सब विशेषणों को काट दिया है।"

उसकी आँखों में चमक आ गई, उसने अपना हैट दरबारी अंदाज़ से उतारकर हाथों में ले लिया। लेकिन रियो कोतार्द के बारे में सोच रहा था। जब वह अपने दमे के पुराने मरीज़ को देखने जा रहा था तो उस अभागे आदमी के चेहरे पर पड़ने वाली मुक्कों की मार की मन्द भरकम आवाज़ अभी भी उसके मन में गूंज रही थी। शायद किसी मरे हुए आदमी की बजाय क़सूरवार आदमी के बारे में सोचना ज़्यादा तक़लीफ़देह होता है।

जब वह मरीज़ के घर पहुँचा तो काफ़ी अँधेरा हो चुका था। सोने के कमरे में दूर से नयी आज़ादी की खुशियाँ मनाने की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं और बूढ़ा हमेशा की तरह एक पतीले से दूसरे पतीले में मटर डाल रहा था।

उसने कहा, "ये लोग मौज मनाकर अच्छा ही कर रहे हैं। कहते हैं कि हर क़िस्म के लोगों से ही दुनिया बनती है और डॉक्टर, तुम्हारे साथी का क्या हाल है?"

"वह मर गया है।" डॉक्टर अपने मरीज़ की छाती की घरघराहट को सुन रहा था।

"आह—सच?" बूढ़ा जैसे सकपका गया।

"उसे प्लेग हुई थी।" डॉक्टर ने बताया, "हाँ," बूढ़े ने एक मिनट की खामोशी के बाद कहा, "हमेशा सबसे अच्छे आदमी ही इस दुनिया से चले जाते हैं। ज़िन्दगी ऐसी ही है। लेकिन वह ऐसा आदमी था जिसे मालूम था कि वह क्या चाहता है।"

"तुम ऐसा क्यों कह रहे हो ?" डॉक्टर अपना स्टेथोस्कोप वापस अपनी जगह पर रख रहा था।

"ओह, इसकी कोई ख़ास वजह नहीं। सिर्फ़—ख़ैर वह बातें करने की ख़ातिर ही बातें नहीं करता था। मुझे उससे लगाव-सा हो गया था। लेकिन यही तो बात है ! ये सब लोग कह रहे हैं कि यह प्लेग थी। यहाँ प्लेग आ चुकी है।" सुनकर आदमी सोचता है कि शायद उन लोगों को उम्मीद है कि इस बात के लिए उन्हें तमग़े दिये जाएँगे। लेकिन इसका क्या मतलब है ?—"प्लेग ?" सिर्फ़ ज़िन्दगी, उससे ज़्यादा कुछ नहीं।

"ख़याल रखना, नियमित रूप से भाप लेना !"

"मेरी चिन्ता न करो डॉक्टर ! बूढ़े कुत्ते में अभी बहुत सी ज़िन्दगी बाक़ी है और मैं सब लोगों को क़ब्र में पहुँचाकर जाऊँगा।" वह दबी हुई हँसी हँसा। "इसी जगह तो मैं उन्हें मात देता हूँ। मैं जानता हूँ कि ज़िन्दा किस तरह रहा जाता है।"

दूर से आती हुई ख़ुशी की चिल्लाहटें भी जैसे डींग का समर्थन कर रही थीं। कमरे का आधा रास्ता पार करके डॉक्टर रुक गया।

"अगर मैं ऊपर छत पर जाऊँ तो तुम्हें एतराज़ तो नहीं होगा ?"

"बिलकुल नहीं। तुम लोगों को देखना चाहते हो—क्यों ?...लेकिन वे सचमुच हमेशा की तरह ही हैं।" जब रियो कमरे से जा रहा था तो बूढ़े के दिमाग़ में एक नया विचार आया, "मैं कहता हूँ डॉक्टर, क्या यह सच है कि उन लोगों का एक स्मारक बनाया जाएगा जो प्लेग से मरे थे ?"

"अख़बार तो यही कहते हैं। स्मारक बनेगा या सिर्फ़ यादगार का पत्थर।"

"वह तो मैं पहले से ही जानता था। और भाषण भी दिये जाएँगे।" बूढ़ा फिर पूरे गले से हँसा, "मैं अभी से बता सकता हूँ कि वे भाषणों में क्या कहेंगे, 'हमारे प्यारे मृतक...' फिर वे जाकर शानदार दावत खाएँगे।"

रियो इस वक्त तक आधा जीना पार कर चुका था। ऊपर सर्द,

अथाह आसमान की गहराइयाँ जगमगा रही थीं और पहाड़ियों की चोटियों के पास तारे चकमक पत्थर की तरह चमक रहे थे। यह बहुत-कुछ वैसी ही रात थी, जब वह और तारो प्लेग के भूलने के लिए छत पर आये थे। फर्क इतना था कि आज समुद्र की लहरें ज़्यादा ज़ोर से चट्टानों से टकरा रही थीं, हवा शान्त और पारदर्शी थी। उसमें नमक की वह गंध नहीं थी, जो पतझड़ की हवा अपने साथ लाई थी। शहर का कोलाहल अभी भी लहरों की तरह छतों की लम्बी कतारों से टकरा रहा था, लेकिन आज वह विद्रोह की नहीं, मुक्ति की सूचना दे रहा था। दूर केन्द्रीय सड़कों और चौराहों पर एक लाल रोशनी फैली थी। नयी आज़ादी की इस रात में आकांक्षाओं का कोई अन्त नहीं था और रियो को उन्हीं आकांक्षाओं का कोलाहल सुनाई दे रहा था।

अँधेरे बन्दरगाह में से म्युनिसिपैलिटी द्वारा आयोजित आतिशबाज़ी का पहला रॉकेट छूटा। शहर ने खुशी की एक लम्बी आह के साथ उसका स्वागत किया। कोतार्द, तारो और वह औरत, जिसे रियो ने प्यार करके खो दिया था, मृतक, कसूरवार सब एक साथ भुला दिये गए थे। हाँ, बूढ़े ने ठीक कहा था, "लोग हमेशा एक-जैसे रहते हैं।" लेकिन यही उनकी ताक़त और मासूमियत है। इसी स्तर पर, जो सब दुखों से ऊपर था, रियो अपने को उन्हीं में से समझता था। लहरों की तरह छत की दीवार से टकराती हुई हर्ष-ध्वनियों में, जो प्रतिक्षण लम्बी और तेज़ होती जा रही थीं और अँधेरे में गिरते रंगीन आग के घने प्रपातों को देखकर डॉक्टर रियो ने इस वृत्तान्त को तैयार करने का फ़ैसला किया, ताकि वह खामोश लोगों में शामिल न होकर प्लेग-पीड़ित लोगों के पक्ष में गवाही दे सके, ताकि उनके साथ हुई ज़्यादती और बेइन्साफ़ी का एक स्थायी स्मारक बन सके। हम महामारी के ज़माने में जो सबक़ सीखते हैं, उन्हें वह सरल भाषा में बयान करना चाहता था और बताना चाहता था कि इन्सानों में घृणा करने योग्य बातों की अपेक्षा प्रशंसनीय गुण अधिक मात्रा में हैं।

फिर भी उसे मालूम था कि वह जो कहानी बयान करने जा रहा है वह अन्तिम गीत की कहानी नहीं हो सकती। वह सिर्फ यादगार के लिए

एक प्रमाण होगा कि अगर फिर इन्सान को आतंक और उसके निष्ठुर हमलों के ख़िलाफ़ निरन्तर संघर्ष करना पड़े तो क्या कुछ करना पड़ेगा और अतीत में क्या कुछ किया गया है। किस तरह अपनी व्यक्तिगत मुसीबतों के बावजूद वे सब लोग, जो संत बनने में असमर्थ हैं, लेकिन महामारियों के सामने सर झुकाना मंज़ूर नहीं करते, लोगों को रोग से मुक्ति दिलाने की भरसक कोशिशें करते हैं।

और सचमुच जब रियो ने शहर से उठती हुई ख़ुशी की आवाज़ों को सुना तो उसे याद आया कि ऐसी ख़ुशी हमेशा ख़तरे का कारण होती है। उसे वह बात मालूम थी जिसे ख़ुशियाँ मनाने वाले नहीं जानते थे, लेकिन किताबें पढ़कर जान सकते थे। वह बात यह थी कि प्लेग का कीटाणु न मरता है, न हमेशा के लिए लुप्त होता है। वह सालों तक फ़रनीचर और कपड़े की अलमारियों में छिपकर सोया रह सकता है; वह शयनगृहों, तहख़ानों, सन्दूकों और किताबों की अलमारियों में छिपकर उपयुक्त अवसर की ताक में रहता है; और शायद फिर वह दिन आयेगा जब इन्सानों का नाश करने और उन्हें ज्ञान देने के लिए वह फिर चूहों को उत्तेजित करके किसी सुखी शहर में मरने के लिए भेजेगा।